



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



## अनुक्रमणिका.

माथा

|  |    |
|--|----|
| संगच्छाचरणनां श्री महावीरस्वामी प्रते नमस्कार.       | १  |
| वेनयनुं स्वरूप.                                      | ६  |
| वेनयविशे लौकीक द्रष्टांत.                            | ७  |
| पुत्रमहाराजनुंनहातम्य.                               | ८  |
| भाचारबना गुण.  | ११ |
| विं उपर श्री चंदनवाळाजीनो द्रष्टांत.                 | १३ |
| गोनयनुं स्वरूप.                                      | १४ |
| विमनेविशे पुरुषनुं प्रधानपणुं.                       | १६ |
| विं सत्त्व साखे धर्म.                                | २० |
| विं रहीत वेशनुं अप्रमाणपणुं.                         | २१ |
| विं पाने करीने शुभाशुभ कर्मनो वंघ.                   | २४ |
| पुल्लभ वीधो पुरुषनां लक्षण.                          | २८ |
| पुल्ल दुखनुं स्वरूप.                                 | ३० |
| गारे कर्म बीदनुं लक्षण.                              | ३१ |
| पुल्लदम्भीधी नीपन पतां दुःख.                         | ३२ |
| पुल्ल महाराजनो शीष्य प्रते उपदेश.                    | ३३ |
| गुनिमारग तथा परीगृहनुं स्वरूप.                       | ५१ |
| विंदीखेपजीनो द्रष्टांत.                              | ५४ |
| विनाने विशे गजमुकुमालनो द्रष्टांत.                   | ५५ |
| विने विशे धैर्यपणा उपर श्रीपुल्लभद्वीजीनो द्रष्टांत. | ५६ |

स्त्रीना संसर्गपी यता दुरगुणो.

गुणतं पुरुषोना अनुरागनुं फळ.

पीठ माहापीठनुं द्रष्टांत.

अनर्णवाद बोलनार पुरुषनी गती.

गुणने उदवेगनुं स्थानक.

वाल्तर उर तामलीतामनो द्रष्टांत.

शालीभद्र तथा भेतारस मुनीनो द्रष्टांत.

गुरुना वचननुं बहु मान्यपणुं.

धर्माचारसनी सेवा तथा सूत्र अनुसारे भाषानुं बोलवुं.

धर्म कथी-कराव्यो तथा अनुमोदना करवा मांडवो एवो

रग्या वतम फळमने आपेले ते उपर द्रष्टांत.

सांगणा महीत धर्मनुं अंगीकार करवुं.

एक स्थानकेक्यारेरहेवुं ते उर संगमनामा आचारसनी द्रष्टांत.

एव माधुनां लक्षण.

समनानुं फळ.

आशस्त्री महीत भोगनुं भोगवुं.

प्रसादनुं नीरगुणपणुं.

मुनीमाहात्मनी आचरणा.

संसारनां कुटुंबी लोकपी उत्पन्न पनां दुःख.

मुनीश्रेष्ठुं नीगळंवनानुं.

मेवकुमारनो द्रष्टांत.

सत्तुं दत्तानुं दुःख.

सावु मुनीसासनो विनय.

|  |     |
|--|-----|
| १. पूर्व संचीत पुन्यनुं नाश धवुं.  | १७० |
| २. हलु कर्मिं जीवनुं लक्षण.  | १७२ |
| ३. चेलाती पुत्रनो द्रष्टांत.   | १७४ |
| ४. परजीवने पीडा न करवी ते उपर मरुदेवी मातानो द्रष्टांत.  | १७९ |
| ५. प्रत्येकबुधनो स्वरूप.   | १८० |
| ६. ससक भसक नामे वे भाइनो द्रष्टांत.  | १८२ |
| ७. इंद्रोओने वश करवापी आ लोक तथापरलोकनुं सुधरवुं.  | १८६ |
| ८. संसारी सुखनुं स्वप्न तुल्यपणुं.   | १८९ |
| ९. मंगु नामा आचारजनो द्रष्टांत.  | १९३ |
| १०. जीनराजना धर्मनुं अंगीकार करवुं ते.   | १९४ |
| ११. संतोष धारण करवाना मुल हेतु.  | १९८ |
| १२. मोह कर्मनुं माहात्म्य.   | २०५ |
| १३. जीवीतनुं चंचलपणुं.   | २०८ |
| १४. पांच इंद्रोओना वीपयना वीपाक.   | २१० |
| १५. प्रतीश्रोत धर्मनुं पामवुं तथा मोक्षनुं कारण.   | २१७ |
| १६. ज्ञान दर्शन तथा चारीत्रनुं स्वरूप.   | २१८ |
| १७. मनुष्यपणानुं सार्थक.   | २२० |
| १८. कर्मनी वृद्धिनुं तथा कर्मनी हानीनुं कारण.  | २२८ |
| १९. आवकना गुण वीशे.  | २३० |
| २०. धकवर्ती राजा पोतानी रोधी न्होडवा समर्थ धाय पण चारी-<br>त्रयी पडेलो एवो जे साधु ते पोतानुं सीधिलपणुं त्याग<br>नथी करी शकतो ते विशे. | २५५ |
| २१. दासीप्रभ राजानो द्रष्टांत.   | २५६ |

મોક્ષના ત્રણ મારગ

સંસારના ત્રણ મારગ.

દ્રવ્યલિંગીનું લક્ષણ.

સાધુનું લક્ષણ.

સંવેગવક્ષણનાં દુર્લભણું.

શુધ પ્રરુપકણનો ગુણ.

આત્માર્થિ પુરુષ હાથ સ્વરાજાતનો વીચાર કરે.

સંવેગવક્ષીની જાતનાં પ્રમાણણું.

મારે કર્મવણનો સ્વરુપ.

આ ઉપદેશમાળા ગુણીજનને હીતકારીછે.

વૈરાગ્યની વાર્તા સર્વેને સારી નથી લાગતી તે વીશે.

આ ઉપદેશમાળા મળવાનો ગુણ.

આ ઉપદેશમાળાના કર્તા પુરુષનું નામ આ ગાથામાં ગર્ભ  
રીતે મુચવ્યુંછે તે કહેછે.

જીનરાજના વચનનું મહાતમ્ય.

આ ઉપદેશમાળા જોગ્ય પુરુષને આપતી.

આ ઉપદેશમાળાનું મહાતમ્ય.

આ ઉપદેશમાળા મળવાથી શું ગુણ નીવડે છે તે.

આ ઉપદેશમાળાની ગાથાની સંખ્યા.

આ ઉપદેશમાળા પ્રતે આશીર્વાદ.

આ યંયનાં તે ઓરું અધીકું કહ્યું હોય તે વીશે કર્તા  
મદ્ય સમાવના સના કહેછે તે.

# उपदेशमाला.

बालावबोध.

श्रीगुरुभ्योनमः

नमिऊणः जिणवरेंदे । ॥ इंदानेरेंदाधिए १ तिलोअगु

रु २ ॥ उवएसमाल १ मिणमो १ ॥ बुच्छानि १ गुरुवएसेणं १ ॥ २ ॥

अर्ये ॥ १ ॥ इंद्र एटलें देवताओना इंद्र जे तेंमणे ॥ नरेंद्र

एटलें नरना इंद्र एटलें चक्रवर्त्यादिक जे तेंमणे अरचित

एटले पूजेला एहवा ॥ २ ॥ त्रण लोकना गुरू एटलें त्रण

लोकना जीवोनें हितकारि उपदेशना दातार एहवा

॥ ३ ॥ जिनवरेंद्र प्रते जिन एटलें अवधिज्ञानि मन पर्य-

वज्ञानि तेंमनि मध्ये वर एटलें श्रेष्ठ एटले सामान्य

केवालि तेंमनि मध्ये इंद्र समान एटलें तीर्थकर प्रते ॥ ४ ॥

नमस्कार करिने ॥ ५ ॥ अने गुरूना उपदेशे करिने एटलें

तीर्थकर गणधरना उपदेशे करिने पण पोतानि बुद्धिए

करिने नहि ॥ ६ ॥ आ उपदेशमाला प्रते एटलें उपदे-

शानि श्रेणि प्रते ॥ ७ ॥ हुं धर्मदासगणि क्षमा श्रमण एवे

नामे ॥ ८ ॥ कहिश. आ प्रथम गाथाए करिने मंगला-

चरण जणावुं छे अने वळी स्वच्छंदपणुं टाळुं छे ॥ ९ ॥

जगचूडामणिभूँ ॥ उसभो १ वीरो १ तिलो असिरति  
 लउ १ ॥ एगो १ लोगाइचो १ ॥ एगो १ चखवू १ तिहुअणस्स ॥ २

अर्थ. ॥ १ ॥ जगतनि मध्ये चूडामणितुल्य एटले मुग  
 सदृश एहवा ॥ २ ॥ श्रीरुपभदेवस्वामि ॥ ३ ॥ त्रण लोक  
 मस्तकनें विशें तिलक समांन एहवा ॥ ४ ॥ श्रीवीरस्वां  
 एटले जेंम तिलकें करिनें मूख शोनेछे तेंम वीरस्वामि  
 करिनें जगत शोभेछें ॥ ५ ॥ ए वे तीर्थकरनि मध्ये ए  
 श्री रुपभदेवा ॥ ६ ॥ लोकनि मध्ये सूर्य समांन जांण  
 केंमजे समस्त मारगना देखाडनारा छे ए कारण म  
 ॥ ७ ॥ एकअन्य श्री वीरस्वामि ॥ ८ ॥ त्रिण भुवनना एट  
 त्रिण भुवनना रेहेनार लोकोने ॥ ९ ॥ नेत्र तुल्य जांण  
 केंमजे नव्य प्राणियोने ज्ञानरूप नेत्रना दातारछे  
 कारण माटे ॥ २ ॥

संवत्सर १ मुसभजिणो १ ॥ च्छुम्मासे १ वदुमाणाजिणचंदो १

॥ इय १ विहारिया १ निरसणा १ ॥ जइब्जए १ उवमाणेणं ८ ॥ ३

अर्थ. ॥ १ ॥ रुपभजिन एटले श्री प्रथम तीर्थकरा  
 संवत्सर सुद्धि एटले एक वरप सुद्धि ॥ ३ ॥ वर्धमानजि  
 चंद्र एटले सामान्य केवल्लिनि मध्ये चंद्रमा सम  
 एहवा वर्धमानस्वांमि चोवीसमातीर्थकर सर्व गुणें करि  
 छे ए कारण माटे चंद्रमानु उपमान दिधुंछे ॥ ४ ॥

नास सुद्धि ॥५॥ ए प्रकारे ए वे तीर्थकर ॥६॥ भोजन  
रहित एटले द्रव्य थकी आहार रहित अने भाव  
थकी मुर्छा रहित एटले तप सहित ॥७॥ विचरचा  
॥८॥ भगवतना दृष्टांते करिने ॥९॥ हे शिष्य तप  
कर्मेने विशेष उद्यम करय ए जाव ॥६॥

जहना तिलोयनाहो ॥ विस्वह इन्द्राहो ॥ अचरिचज

पात्त ॥ इयत्तीयंतकराहो ॥ एतत्तमा ॥ स्वचाहूण ॥ ॥१॥

अर्थ ॥१॥ जो ॥२॥ प्रथमा ॥३॥ अण लोकना नाथ एटले

त्रिण भुवनना स्वांनि ॥४॥ नीच जन संबंधि एटले दुष्ट

जनना करेला एहवा ॥५॥ जीवितना अंत करनारा एटले

जीवितना नाश करनारा एहवा ॥६॥ यणा एहवा उपसर्ग

ते प्रतो ॥७॥ विशेषे करिने सहन करेछे एटले भगवत

जे तेनणे संगनादि देवताना करेला उपसर्ग क्षमाये

करिने सहन करचा ॥८॥ तो ए प्रकारे ॥९॥ आ ॥१०॥

क्षमा ॥११॥ सर्व साधुअने करवा जोग्यछे एटले भग

वतनु अनुष्ठान हृदयने विशेषे स्थापन करिने सर्वसाधुओं

ए पण नीच लोकोनुं करेलुं ताडनादिक सहन करवुं

एजाव ॥१२॥

नचइ नइ चालेउं ॥ नइ नइ नइ नइ नइ नइ नइ ॥



उपसर्गसहस्रेहिविंशतिमेरु १० बहावायगुंजनाहिं ९ ॥५॥

अर्थ ॥१॥ मोक्षने विशेष करिछे मति ते जे एण एटले स  
कर्म रहित धवाने तत्पर थयेला एहवा ॥२॥ ज्ञान  
गुणे करिने मोहोटा एहवा ॥३॥ वर्द्धमान जिन चंद्र  
वीरस्वामि ॥४॥ उपसर्गोना सहश्रे करिने पण  
हज्जारी उपसर्गाये करिने पण ॥५॥ ध्यान थकि  
पुरुष जे तेणे पण चलाववाने ॥६॥ नहि ॥७॥  
थइये एटले कोइ पुरुष पण वीरस्वामि प्रते उ  
करवे करिने पण ध्यान थकी चलावि शके नहि  
जेम ॥८॥ वायुना गुंजारवजे तेमणे ॥९॥ मेरु पर्व  
ते न चलावि सकिये एटले जेम शब्दे करिने  
वायुना समूह मेरु पर्वत प्रते न चलावि सके ते  
रस्वामी प्रते कोइ चलावि शके नहि तेहनि पठम  
साधुओएपण ॥१०॥ एहवो उपसर्ग  
सते पण ॥११॥ नहि ए उपदे

## उपदेशमाला.

६

एहवा॥३॥अने सम्यक् प्रकारे पांम्योछे श्रुत ज्ञाननो  
पार ते जेणे एटले सर्व शास्त्रना पारगामि एटले श्रुत  
केवली एहवा॥४॥ प्रथम गणधर एटले श्री गौतम  
स्वांमी एहवे नामे मुख्य गणधारी॥५॥ ते एटले पूर्वे  
पूछेलो पछी जगवंते कहेलो एहवो॥६॥जे अर्थ ते प्रते  
॥७॥ जाणतो सतो पण ८॥विस्मितछे हृदय ते जेहनं  
एटले सांचलवानी उतावलें करिने विकस्वर थयां छे  
लोचन ते जेहनां एहवो सतो॥९॥सर्व अर्थ प्रते॥१०॥  
सांभलेछे.गौतम स्वांमीनिपठम बीजाये पण विनये क-  
रिने पुछवुं अने विनये करिने सांचलवुं ए उपदेश ॥६॥

॥ विनय विज्ञे लौकिक दृष्टांत. ॥

नं आणावेइ राया ॥ पगडं तं चिरेण इच्छंति ॥

इयं गुरुजनमुहभाषियं ॥ कयं जालिउडोहिं सोयं ॥ ७ ॥

अर्थ॥१॥ राजा॥२॥ जे कार्य प्रते॥३॥आज्ञा करे  
छे एटले बतावेछे॥४॥ते राजाना अनुधर एटले सेवक  
जोक ॥५॥ ते कार्य प्रते ॥६॥ मस्तके करिने ॥७॥  
करवाने इच्छेछे एटले हाथ जोडिने ते कारज प्रते प्र  
माण करेछे॥८॥ए प्रकारे एटले राजाना दृष्टांतें करिने  
॥९॥गुरुजनना मुखें कहेलुं एटले गुरु महाराजे बतावेलुं

एहवुं जे कार्ज ते प्रते ॥१०॥ करचोछे श्रंजलि पुते  
जेंमणे एटले हाथ जोडिने आगल उभा रहिने ॥११॥  
विनय सहित सांभलवुं. केमके धर्मने विशे विनयर्न  
मुख्यता छे ए कारणमाटे विनय करवो ते श्रेय छे ॥१२॥

जह १ सुरगणाण १ इंदो १ ॥ गहगणतारागणाण १ जह १ चंदो १ ॥ त  
ह १ य १ पयाण १ नरिंदो १ ॥ गणस्सवि १ गुरु १ तहा १ ॥ नंदो १ ॥ ८

अर्थ ॥१॥ जेंम ॥ २ ॥ देवताओना समूहनि मध्ये ॥ ३ ॥  
इंद्र श्रेष्ठछे ॥ ४ ॥ अने जेंमा ॥ ५ ॥ ग्रह एटले मंगलादिक  
ठ्यासी ग्रह । गण एटले अजिच्यादिक नक्षत्र ॥ ता  
एटलें कोटा कोटि संख्य तारा तेमनो गण एटले समू  
तेनि मध्ये ॥ ६ ॥ चंद्रमा श्रेष्ठछे एटले सर्व ज्योतिर्पा  
मध्ये चंद्रमा अतिशय मोहटोछे ॥ ७ ॥ बलि ॥ ८ ॥ जे  
॥ ९ ॥ प्रजानि मध्ये एटले रहियतनि मध्ये ॥ १० ॥ रा  
श्रेष्ठछे एटलें मोहटो छे ॥ ११ ॥ तेंमा ॥ १२ ॥ गच्छनि म  
पण एटलें सम्यगज्ञानादिगुण सहित साधुना समूदा  
नि मध्ये पण ॥ १३ ॥ आणंदना उपजावनार एटले स  
क्त्वादि गुणना पमाडनार एहवा ॥ १४ ॥ गुरु श्रेष्ठछे ॥ ८

बालुत्ति १ माहिपालो १ ॥ न १ पया १ परिभवइ १ एस १ गुरु १ उवमा १ ॥  
नं १ वा १ पुरउंकाडं १ ॥ विहरंति १ मुणी १ तहा १ सोवि १ ॥ ९

अर्थ. ॥१॥ प्रजा एटले नगरना रेहेनार लोका॥२॥  
 नि राजा एटले पृथविपाला॥३॥ बालकछे ए प्रका-  
 नि बुद्धियेकरिने ॥४॥ ना॥५॥ पराजव करे एटले ती-  
 स्कार करे नहि बालक एहवो पण राजा प्रजा लोकने  
 मानवा जोग्य होय॥६॥ आ॥७॥ आचारजने विशेष॥८॥  
 पमा देवि एटले अवस्तार्ये करिने तथा चारित्र परजा  
 करिने नाहाना पण ज्ञान गुणे करिने मोटा एहवा जेहे  
 रुते राजानि पठन मानवा जोग्यछे॥९॥ तालि॥१०॥ जे  
 तितार्य प्रते॥११॥ मुनि जे ते॥१२॥ अग्रेसर करिने एटले  
 तृपणं अंगिकार करिने॥१३॥ विचरेछे॥१४॥ तेनज ए  
 टले गुरुनि पठन॥१५॥ तेपुरुष पण मानवा जोग्यछे॥१६॥

पंडितो तैयस्वी॥ कुलगुरुपागनो महारक्षो॥

मेभीनो धिदंतो॥ उग्रस्तोऽयं आरिर्द॥ ॥२०॥

अर्थ. ॥१॥ प्रतिरूप एटले तीर्थंकर गणधरादिकने  
 रूप एहवा॥२॥ तेजस्वी एटले देदिप्यमान एहवा॥३॥  
 कुग एटले वर्तमान कालने विशेष प्रधान एटले अन्य  
 लोकनि अपेक्षायें करिने उत्कृष्ट एहवुं आगम एटले  
 मुनछे जेहने एटले वर्तमान कालने विशेष वर्तनुं जे आ-  
 म तेना पारगानि एहवा ॥४॥ मधुरछे वाक्य ते जे

## उपदेशमाला.

हनुं एटले सुंदर वधनना बोलनार एहवा ॥५॥ गंज  
 एटले श्रुतुच्छ एटले विजा लोकोए नथि जाण्युं हव  
 ते जेहनुं एहवा ॥६॥ धीरजवंत एटले संतोपवंत एट  
 स्थिर चित्त वाला एहवा ॥७॥ बलि ॥८॥ उपदेश दे  
 ने तत्पर एटले सत्य वचनोये करिने नव्य प्राणियं  
 मारगने विशे प्रवर्तावनार एहवा ॥९॥ आचारज हे  
 एटले पंचाचार पालवाने विशे तथा पलाववाने वि  
 तत्पर होय ॥१०॥

### ॥ आचारजना गुण ॥

अपरिसावी<sup>१</sup> सोमो<sup>२</sup> ॥ संगहसीलो<sup>३</sup> अभिगहमइ<sup>४</sup> ॥ ५ ॥

॥ अविकथनो<sup>५</sup> अचबलो<sup>६</sup> ॥ पसंतहिगर्भगुरु<sup>७</sup> होइ<sup>८</sup> ॥ ११ ॥

अर्थ. ॥१॥ अप्रतिस्त्रावी एटले ठिद्र रहित पथ्यर  
 नाजननि पठम बीजा पुरुपोये कहेलुं पोतानुं गुप्तं ते  
 पांणिते नस्त्रवे एटले परनिछानि वात बीजानि आ  
 ल न कहे ॥२॥ सोम्य एटले प्रथम देखवे करिने  
 श्रानंद उपजावनारा एहवा ॥३॥ शिष्यादिकने छ  
 वस्त्र पात्र पुस्तकादिकनो संग्रह करनारा एहवा ॥४॥  
 बलि ॥ ५ ॥ अजिग्रह करवानिछे मति ते जेहां  
 एटले द्रव्य क्षेत्रकालने जावे करिने अजिग्रह करन

हवा॥६॥ अने बहु न बोले अथवा पोतानि प्रसंशा करे  
हि एहवा॥७॥ अने अचपल एटले चंचल परिणाम रहित  
हवा॥८॥ अने वली प्रशांत छे हृदय ते जे हनुं एटले क्रोधा  
कें करिने रहित छे चित्त ते जे हनुं एटले शांत मूरति एहवा  
ने गुरुना गुणे करिने सहित एहवा गुरु॥९॥ होय. ए  
गण माटे एहवा जे गुरु ते विशेषे करिने मानवा  
गेय जाणवा. ए उपदेश ॥११॥

कइयावि<sup>१</sup> जिणवरिंदा<sup>१</sup>॥ पत्ता<sup>१</sup> अयरामरं<sup>१</sup> पहं<sup>१</sup> दाउं<sup>१</sup>॥

आयरि एहिं<sup>१</sup> पवयणं<sup>१</sup>॥ धारिज्जइ<sup>१</sup> संपयं<sup>१</sup> सयलं<sup>१</sup>॥१२॥

अर्थ.॥१॥ जिनवरेंद्र एटले तीर्थकर जिनशासननि म  
र्नादाना करनारा एहवा॥२॥ कोइ कालने विशे पण॥३॥  
मार्ग एटले सम्यक ज्ञान दर्शन चारित्र रूप मोक्ष मा  
र्ग प्रते॥४॥ भव्य प्राणियोने आपिने एटले पमाडिने॥५॥  
अजरामरप्रते एटले मोक्षप्रते ॥६॥ पांम्या॥७॥ त्यार  
पछि एटले तीर्थकरना मोक्ष गया पछि आचारज जे ते  
मणे॥८॥ प्रवचन एटले चतुरविध संघ अथवा द्वादशां  
गिरूप॥९॥ आ कालने विशे॥१०॥ समस्त प्रकारे॥११॥  
धारण करि एछीए एटले हमणां आ कालने विशे तीर्थ  
करनो विरह थये सते समस्त शासन आचारजोये करिने

चालेछे एटले तीर्थकरनो अनाव सते आचारज  
चलावेछे ए नाव ॥१२॥

अणुगमई १ भगवई ५ ॥ रायसु १ अज्जा १ सहस्सविंदेहि १ ॥ तह  
वि १ न ८ करेइ १ माणं १ ॥ पारेयच्छई १ ३ तं १ ० तहा १ १ नुणं १ १ ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ राजानि पुत्रि एटले दधिव न राजानि वेदा  
एहवि ॥ २ ॥ आर्या एटले साध्वी चंदन बाला नामे  
सहस्रचंदे करिने एटले हजारो गमे लोकना  
करिने ॥ ४ ॥ अनुसरेलि एटले परिवरेलि एहवि ॥  
पूज्य एटले पूजवालायक अने सौजाग्यादि गुण  
एहवि सति ६ ॥ तोये पण ते साध्वि चंदनबाला जे ते  
मानप्रते एटले अहंकार अजिमान प्रते ॥ ८ ॥ न ॥ ९ ॥  
एटले आहवि पूजनिक थइने पण गर्व नथि करति ते  
आश्चर्यछे ते स्युं जाणिने अहंकार नथि करति ते कहेछे  
॥ १ ॥ ते पूजनिकपणाना माहात्म्य प्रते ॥ १ ॥ ते प्रकारे  
॥ १२ ॥ निश्चे ॥ १३ ॥ जाणेछे एटले जे आ पूजनिक  
छे ते ज्ञान दर्शन चारित्रादि गुणोनुं माहात्म्यछे पण  
माहरु माहात्म्य नथि. ए प्रकारे जाणेछे ते माटे अहं  
कार नथि करति तेहनि पठम बीजि साध्विओ ए तय  
आविकाओ ए अहंकार न करवो ए उपदेश ॥ १३ ॥

## ॥ विनयनो स्वरूप. ॥

दिणदिल्लकयस्स दुमगस्स १॥ अभिमुहा २ अज्ज चंदणा ३ अज्जा ४  
 ॥ ने च्छट्ठ आसणगहणं १॥ सो २ विणडं १ च्छव अज्जाणं १॥ २४॥  
 अर्थ ॥ १॥ एक दिवसनो दिक्षित एटले तेज दिवसे  
 प्रवर्जित थएलो एहवो ॥ २॥ द्रुमक एटले जिहु एटले  
 निखारि, गीतार्थनि पासे साधुनो वेप लेइने पोतानि  
 समिपे आव्यो तेहना विनयने अर्थ ॥ ३॥ सन्मुख आवि  
 एहवि ॥ ४॥ डाहि एहवि चंदना एटले चंदनवाला नामे  
 ॥ ५॥ साध्वी ॥ ६॥ आसन ग्रहण करवा प्रते पण ॥ ७॥  
 न ॥ ८॥ इच्छे एटले जिहां सुधि साधु पोताना सन्मुख  
 उभा रह्या तिहां सुधि आसन छेटे मुकीने उजि रहि  
 पण वेठी नहि ॥ ९॥ ते ॥ १०॥ विनया ॥ ११॥ सर्व साध्वी  
 योने जाणवो एटले सर्व साध्वीयोयें चंदनवालानि पठेंम  
 साधु मुनिराजनो विनय करवो. ए उपदेश ॥ १२॥

वरिससयदिस्सियए १ अज्जा २ अज्जदिल्लकयस्स ३

अनिगनचंदननमंठपेज ४ ॥ विणएण सो सुज्जो ॥ २५॥

अर्थ ॥ १॥ सोवरसन दिक्षा वालि एटले जेने दिक्षा  
 लिधा पछि सो वरस थएलां एहवी ॥ २॥ साध्वी जे  
 तेणिए ॥ ३॥ जे आजनो दिक्षित साधु एटले एक दिवसनो



दिक्षितं जे साधु॥४॥ अभिगम एटले सामुं जवुं-वंद  
 एटले द्वादशवृत्तवंदन करवुं-नमंसण एटले अंतरप्री  
 ए करिने नमस्कार करवो ते पूर्वोक्तरूप ॥५॥ विन  
 करिने एटले आसनादि आपवे करिने एटले आचार  
 नें तुल्य भक्ति करवे करिने ॥६॥ ते मुनि॥७॥ पूज  
 जोग्यछे एटले एक दिवसनो प्रवर्जित एहवोय पा  
 मुनि, साध्विओने पूजनिक जाणवो. ए जाय ॥१५॥

धम्मो<sup>१</sup> पुरिसप्पभूवो<sup>२</sup> ॥ पुरिसवरदेसिउं<sup>३</sup> पुरिसजिओ<sup>४</sup> ॥

लोए<sup>५</sup> वि<sup>६</sup> पहू<sup>७</sup> पुदेसो<sup>८</sup> ॥ किं<sup>९</sup> पुण<sup>१०</sup> लो गुत्तमे<sup>११</sup> धम्मो<sup>१२</sup> ॥ १६ ॥

अर्थ॥१॥ धर्म एटले दुरगतिमां पडता जीवने रा  
 एहवो जे धर्म ॥ २ ॥ पुरुषथकि उत्पन्न थएलो  
 हवो॥३॥ पुरुष एटले गणधर तेमनि मध्ये वर एट  
 ओए एटले तीर्थकर तेमणे देखाडेलो एटले कहेलो  
 हवो॥४॥ पुरुषछे जेए एटले उत्तम ते जेहने विशे  
 टले श्रुत चारित्र रूप धर्मनो पालनार पुरुषज प्रा  
 होय॥५॥ अने लोकने विशे॥६॥ पण॥७॥ पुरुष॥८॥ प्र  
 एटले स्वांमी होय पण स्त्रि स्वांमि न होय॥९॥ तेथ  
 लोकने विशे उत्तम एहवो॥१०॥ धर्म तेहने विशे॥११॥  
 वली॥१२॥ स्युं केहवुं एटले जो लोकने विशे पण पुरु

वांमिछे तारे लोकने विशे श्रेष्ठ एहवा धर्मने विशे वलि  
युं केहवुंतेम धर्मने विशेतो विशेपे करिने पुरुषज श्रेष्ठ  
येय.केमके पुरुषविना धर्म चाली शके नहि.ए जावा १६।

संवाहनस्स ३२ त्रो ॥ तइया १ वाणारसीयनयारिए १ ॥

कन्नासहस्स ७ महियं ५ ॥ आसी ५ किर ९ रूपवंतीणं ६ ॥ १७ ॥

तहवि १ य २ सा ३ धरायसिरी ५ ॥ उल्लटंती ३ न ७ ताइया ५ ता

हिं ५ ॥ उयरट्टिएण ९ इक्केण १० ॥ ताइया १२ अंगवीरेण ११ ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ ते कालने विशे ॥ २ ॥ वाणारसी नगरिने  
विशे ॥ ३ ॥ संवाहननांमे ॥ ४ ॥ राजा तेहने ॥ ५ ॥ रूपनि  
शोभाए करिने अधिक एहवि ॥ ६ ॥ रूपवंती एटले सोभा  
ग्यपणाए करिने सहित एहवि ॥ ७ ॥ कन्याओनुं सहस्र  
एटले घणि रूपवंति अने सोभाग्यवंति एहवि हजार  
कन्याओ ॥ ८ ॥ हती ॥ ९ ॥ एहविरिते सांचली एछीए १७ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ तोयें पण ॥ २ ॥ वलि ॥ ३ ॥ नाश पांमति एटले  
बीजा राजाए लुटवा मांडेलि एहवि ॥ ४ ॥ ते ॥ ५ ॥ राज्यनी  
लक्ष्मी ॥ ६ ॥ ते कन्याओए ॥ ७ ॥ न ॥ ८ ॥ राखी एटले  
हजार कन्याओ पण राज्यनि संपदा प्रते न राखी श  
कि ॥ ९ ॥ अने गरजनें विशेरहेलो एहवो ॥ १० ॥ एक ॥ ११ ॥  
अंगवीरजनांमा पूत्र जे तेणे ॥ १२ ॥ राखी ए कारण माटे

लोकने विशे पण पुरुषज प्रधानछे. आ वे गाथानो जे  
संबंध जाणवो ॥१८॥

महिलाण<sup>१</sup> मुग्रहुयाण<sup>२</sup> वि<sup>३</sup> ॥ मद्राउं<sup>४</sup> इह<sup>५</sup> समस्तवरसारो<sup>६</sup> ॥  
राणुरिमोहि<sup>७</sup> निमज्जई<sup>८</sup> ॥ जणे<sup>९</sup> वि<sup>१०</sup> पुरिसो<sup>११</sup> नहिं<sup>१२</sup> नथि<sup>१३</sup>

अर्थ. ॥१॥ आ लोकने विशे पण ॥२॥ अतिशैं घणि  
हवि ॥३॥ पण ॥४॥ स्त्रीयो तेमनि ॥५॥ मध्येथी ए  
तेमने देखते ॥६॥ ममस्त घरनु सार एटले सर्व द्रव्य  
समूह ॥७॥ राजाना पुरुषोयें एटलें राजाना सेवको ए  
लेइ जई एछी ए एटले अपूत्रीयानु धन राजा लेछे  
लोकने विशे ॥१०॥ पण ॥११॥ जे घरने विशे एटलें  
हने घर ॥१२॥ पुरुष ॥१३॥ नथि तेहना घरनु समस्त  
राजा लेइ जायछे. ए कारण माटे पुरुषनुं ज प्रधान प  
तेम ज धर्मने विशे पुरुषनुं ज अग्रेसर पणुछे. ए नाव ॥१४॥

॥ आत्म साखे धर्म करवो ते कहेछे ॥

किं<sup>१</sup> पद<sup>२</sup> अग्रहुयाणाहिं<sup>३</sup> ॥ वर<sup>४</sup> मणमस्त्रियं<sup>५</sup> मुकयं<sup>६</sup>

॥ इह<sup>७</sup> भरहचक्रतई<sup>८</sup> ॥ मत्रचंद्रो<sup>९</sup> य<sup>१०</sup> दिवंता<sup>११</sup> ॥२०॥

अर्थ. ॥१॥ हे आत्मन् बीजा लोकोने घणुं जणाव  
रिने एटले आज में तप करयोछे ए प्रकारे बीजा लं  
नि आगत कहवे करिने ॥२॥ स्युं होय अपितु कांइ फल

थाय ए कारण माटे॥३॥हे आत्मन् पोतानि साखे  
॥जे सुकृत करयुं ते॥५॥श्रेष्ठे एटले रुडुंछे॥६॥आ  
रथने विशे॥७॥अरत चक्रवर्तिनुं॥८॥अने वलि॥९॥  
सन्न चंद्र राजरूपितु॥१०॥दृष्टांत जाणवुं एटले जेंम  
रत राजाए तथा प्रसन्न चंद्रराजरूपिये पोतानि सा  
आतम धरम प्रगट करिने मोक्ष पांम्या तेंम बीजा  
व्य प्राणिओए पण लोक संज्ञा मुकिने पोतानि साखे  
आतम धरम प्रगट करवाने विशे उद्यम करवो केमके  
आत्मधरम प्रगट थया विना सर्व व्यर्थछे. ए जाव॥२०

वेसो<sup>१</sup>वि<sup>२</sup>अप्पमाणो<sup>३</sup>॥असंजमपहेसु<sup>४</sup>वडमाणस्स<sup>५</sup>॥

किं<sup>६</sup>परिवर्त्तियवेसं<sup>७</sup>॥विसं<sup>८</sup>न<sup>९</sup>मारइ<sup>१०</sup>खज्जंतं<sup>११</sup>॥२१॥

अर्थ॥१॥असंजममारगने विशे एटलेछकाय जीवना  
प्रारंभादिकने विशे॥२॥वर्ततो एहवो जें साधु तेहनो  
॥३॥वेप जेते॥४॥पण एटले रजोहरणादि रूपलिंग  
नेते पण॥५॥अप्रमाणछे एटले गुणविना एकला वेपे  
करिने आत्मानि शुद्धि न थाय; इहां दृष्टांत कहेछे॥६॥  
फेरव्योछे वेप ते जेणे एटले एक वेप मुकिने बीजो वेप  
नेणे ग्रहण कर्योछे एहवा पुरुष प्रते॥७॥खावामांडेलुं  
हवुं॥८॥विप एटले काल कुटादिक जेहेर॥९॥स्युं

॥૧૦॥ ॥૧॥ મારે, અપિતુ મારેજ તે પ્રકારે મલિ  
ચિત્તરૂપવિપે અસંજમનેવિશે વર્તતો જે પુરુષ તેહને  
રેછે એટલે ચ્યાર ગતિમાં જમાવેછે ॥૨૧॥

તારે ડહાં કોડ કહેશે જે, એક જાવનિ શુદ્ધિજ  
કરવી વેપે કરિને શું કામછે તેહને આગલિ  
ગાથાએ કરિ ગુરુ ઉત્તર કહેછે.

મમં' રમ્યદ' વેમો' ॥ મંકદ' વેમેણ' દિલ્લિવર્ડમિ' અહં'

॥ ડમમેગ' પડેનં' ॥ રમ્યદં' ॥ રાયા' ॥ મળવડ' ॥ ૪ ॥ ૨૨

અર્થ. ॥૧॥ વેપ જેને એટલે જ્ઞાનાદિક ગુણે કરિને સ  
ત વેપ જેને ॥૨॥ ધર્મપ્રતે એટલે ચારિત્રરૂપ ધર્મપ્રતે ॥  
રક્ષાકરેછે ॥૪॥ અતે વેપે કરિને ॥૫॥ ઝંકા પામેછે એ  
પાપ કરતાં લગ્યા પામેછે ॥૬॥ હું ॥ ૭॥ દિક્ષિતછું  
લે મુનિના વેપનો ધરનારછું એ કારણ માટે મને  
કર્ણું ન થટે નમ વિચારેછે ॥૮॥ આ ઉપર દ્રષ્ટાંત, ૬  
॥૯॥ ડનમારગને વિશે ॥૧૦॥ પડતો એહવો જે ॥૧૧  
દેશ એટલે દેશને વિશે રહેલો એહવો લોકનો સ  
ને પ્રતે ॥૧૨॥ ગજા ॥૧૩॥ રક્ષા કરેછે એટલે નિવારણ ક  
તેન ડનમારગમાં પડતો એહવો જે સાધુ તેહને વેપ વા  
એટલે કોડ વચ્ચન કર્મના ઉદ્યે કરિને જ્ઞાનાદિક ગુ

इत साधुनुं चित्त असंजमादिकने विशे प्रवर्तन क-  
तो तेवा साधुने स्थीर करवानुं निमित्त वेश थाय  
एटले रजोहरण मुखवस्त्रीकारुप वेश देखीने चित्त  
णो आवेछे. ए नाटे गुण सहीत पुरुशनो वेश गु-  
जरीछे अने गुण रहीत पुरुशनो वेश विटंबना रुप  
ए भाव ॥२२॥

प्राज्ञाप्रदः अन्तः ॥ महर्षिर्देवः अप्सरस्त्रिवरः धर्मो ॥

प्राज्ञाकरेवः तं ब्रह्म ॥ महर्षिः अप्सरसुहृद्वहं ब्रह्म ॥ २२ ॥

त्ये ॥१॥ आत्मा जे तो ॥२॥ यथास्थित एटले आ आ-  
शुभ परिणाम वालोछे अथवा अशुभ परिणाम वा-  
छे ए प्रकारो ॥३॥ आत्मा प्रते ॥४॥ जाणैछे एटले आ  
हरो आत्मा शुभछे वा अधवा अशुभछे ए प्रकारे पो  
ना आत्मा प्रते पोते जाणैछे केनजे बीजाना चित्तने  
जे जांणि सके नहि ए कारण नाटे ॥५॥ जे कारण नाटे  
आत्मा तादिक एटले पोतानि साखे ॥६॥ जे धर्मछे ए  
ते जे धर्म करवो ते प्रमाणछे ॥७॥ ते कारण नाटे हे  
त्मन् ॥८॥ ते एटले सन् अनुष्ठानादिक प्रते ॥९॥ ते  
कारो ॥१०॥ करवो ॥११॥ जे प्रकारे ॥१२॥ आत्माने सुखनु  
रनार एहवुं ॥१३॥ याय एटले जे क्रिया अनुष्ठान आ

त्माने परभवने विशेषसुखकारि थाय; तेज अनुष्ठान ५  
तुं करय. ए जाव ॥२३॥

ज्ञं१ जं१ समयं१ जीवो१॥ आवसह१ ज्ञेण१ ज्ञेण१ भावेण१॥ सो१  
तम्मि१० तम्मि११ समये१२॥ सुहासुहं१३ बंधए१४ कम्मं१५॥२४  
अर्थ॥१॥ जीव एटले आ आत्मा जे ते॥२॥ जे॥३॥ जे॥  
समयने विशेष॥५॥ जे॥६॥ जे॥७॥ भावे करिने एटले जे  
वा जेहवा प्रणामे करिने॥८॥ वत्तेछे एटले आसक्त थ  
छे ॥९॥ ते आत्मा ॥१०॥ ते॥११॥ ते ॥१२॥ सम  
विशे तद्रूप पणे प्रणमतो सतो ॥१३॥ शुचाशुभ  
धुं॥१४॥ कर्म प्रते॥१५॥ बांधेछे एटले शुच परिणा  
विशे वरततो सतो, शुच कर्म प्रते बांधेछे अने अशु  
परिणामने विशेष वरततो सतो अशुभ कर्म प्रते बांधे  
ए भाव ॥२४॥

धम्मो१ मण१ जंतो१॥ तो१ नवि१० सीउजवायावेहामिउ१॥

संवत्तर१ मणसिउ० ॥ बाहुवलि१ तह१ किलिस्संतो१॥२५

अर्थ ॥१॥ जो, मदे करिने एटले अहंकारे करिने ॥  
धर्म एटले श्रुत चारित्र रूप धर्म ॥३॥ होत ॥४॥ तो ॥  
शीत अने उष्ण एटले ठाढा हुंन वायरायें करिने  
शेषे करिने हणायो एटले पराजव पांम्यो एटले श

ए परीसह सहन करतो एहवो॥६॥ एक वरप सुधि  
आआहार रहित एटले वरप शुधि उपवास सहित  
वो॥८॥ बाहूवली नामामुनि “नाहांना जाईयोने केम  
न करुं” ए प्रकारे रहेजो सतो॥९॥ ते प्रकारे॥१०॥  
हेज ॥११॥ केश पांमत एटले पिड्या प्रतेपांमत,  
अहंकारे करिने धर्म होततो वरप शुधि बाहूवलीजी  
वल ज्ञान पांम्या विना रहत नहि अने जे वखत अ  
कार मुंकयो तेज वखत केवल ज्ञान पांम्या; ए कार  
माटे सम्यक् ज्ञान पूर्वक अहंकारादिकनु छोडवुं ते  
धर्मछे. ए उपदेश ॥२५॥

नियगमइविगापियाचिनिण्ण ॥ छंदबुद्धिरइण्ण ॥

॥ कत्तो ‘आरत्तहियं’ ॥ कीइ ‘गुरुअणुत्तरेणं’ ॥२६॥

अर्थ ॥ १ ॥ गुरुना उपदेशने अजोग्य एटले गुरुना उ  
देशने न ग्रहण करतो एटले भारे करमी जे जीव  
णे ॥२॥ पोतानि मति ए करिने एटले पोतानि बु  
द्धि करिने स्युल विचारवुं तथा सुक्ष्म विचारवुं ए  
टले पोतानि मति कल्पनाए नाहनो मोहटो विचार  
करवे करिने ॥३॥ स्वछंद बुद्धि ए आचरण करवे क  
रने ॥४॥ परलोकने विशे हित जे ते एटले परभवने



विशे पोतानुं हितकारि अनुष्ठान ॥५॥ कथां थाकि  
 टले शी रिते ॥६॥ करि शकिए एटले पोतानि इच्छ  
 प्रमाणे वर्तता एहवा जे पुरुष ते पर लोकना हित  
 ते न पांमे. ए जाव ॥२६॥

यदो निरोब्यारी ॥ अविनीतं गन्विडं निरुवणामो ॥  
 साधुजनस्स गरहिडं ॥ जणे विवयणिडनयं ॥ लहइ ॥ २७  
 अर्थ. ॥१॥ स्तब्ध एटले न नमतो एहवो एटले  
 रेहेतो एहवो ॥२॥ निरुपकारि एटले करेला ७५॥  
 प्रते न जाणतो एहवो ॥३॥ अविनीत एटले गुरुने  
 सन बेसण न आपतो एहवो ॥४॥ अहंकारि एटले  
 ताना गुणे करिनं उछांछलो एहवो ॥५॥ गुरु महाराज  
 पण न नमस्कार करतो एहवो जे पुरुष ॥६॥ सा  
 जननि मध्ये ॥७॥ गरहित एटले निंदित थायछे ए  
 साधुजन तेनि ग्रहा करेछे एटले पोतानि टोलिमां  
 काहाडि मुंकेछे ॥८॥ लोकनि मध्ये ॥९॥ पण ॥१०॥  
 निंदाप्रते एटले आ दुष्ट आचारवालो पुरुषछे ए प्र  
 रे हीलनाप्रते ॥११॥ पांमे ए कारण माटे विनीत जे ते  
 वखांणवा जोग्य छे, माटे विनीतपणु अंगिकार कर  
 ए उपदेश ॥२७॥



विवेण वि० सप्युरिसा १ ॥ सणकुमारुव ० केइ १ बुझति १ ॥  
देहे ० खणपरिहाणी १ ॥ नं ० किर १ ० देवेहि १ ० सेकहियं १ ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ केटला एक ॥ २ ॥ सत्पुरुष एटले सुलभवोधि  
रूप ॥ ३ ॥ थोडास्या निमित्तें करिने ॥ ४ ॥ पण ॥ ५ ॥  
नत कुमार चक्रवर्तिनि पठम ॥ ६ ॥ बोधप्रते पामेछो ॥ ७ ॥  
कारण माटे ॥ ८ ॥ देहने विशे ॥ ९ ॥ क्षण मात्रमां  
टले थोडा कालें करिने परिहाणी एटले रूपनि हां  
एटले नाश थायछे ए प्रकारे ॥ १० ॥ ते सनत कुमार  
॥ ११ ॥ देवता जे तेमणे ॥ १२ ॥ कहयुं ॥ १३ ॥ एम  
जांजलिएछो एतेज तेने बोधनुकारण थयुं ए जाव ॥ २८ ॥

नइ १ सा १ छवसत्तमसुर ॥ विमाणवासी १ वि ० परिवडंति १  
सुरा १ ॥ चित्तिज्जं ० तं ० सेसं १ ॥ संसारे ० सात्तयं १ ० कयरं १ ॥ २९ ॥  
अर्थ ॥ १ ॥ जो ॥ २ ॥ प्रथम ॥ ३ ॥ सात लवनुछे आउपु ते  
मनु एहवा जे देव तेमना विमानना रहेनारा एटले  
नुत्तर विमानना रहेनारा एहवा ॥ ४ ॥ पण ॥ ५ ॥ देव  
॥ ६ ॥ समस्त प्रकारे पडेछे एटले आउपानो क्षय थ  
सते ते देवलोक थकि चवेछे एटले देवलोकनां  
ए आउपां पुरां थायछे ॥ ७ ॥ त्यारें ॥ ८ ॥ विचारवा  
डिहुं एहवुं ॥ ९ ॥ संसारने विशे ॥ १० ॥ बाकि रहेलुं

बीजं ॥११॥ स्युं वस्तु एटले कियुं पदार्थ ॥१२॥  
स्वतुंछे अपितु कांइ पण शास्वतुं नथी; ए कारण  
धर्म एज नित्यछे ए जावा ॥२९॥

कह<sup>१</sup> तं<sup>१</sup> भवइ<sup>२</sup> सुखं<sup>३</sup> ॥ सुचिरेण<sup>४</sup> वि<sup>५</sup> जस्स<sup>६</sup> दुखं<sup>७</sup> मुहुरि<sup>८</sup>  
इ<sup>९</sup> ॥ जं<sup>१०</sup> च<sup>११</sup> मरणावसाने<sup>१२</sup> ॥ भवसंसारणुबंधं<sup>१३</sup> च<sup>१४</sup> ॥

अर्थ ॥१॥ ते ॥२॥ सुख ॥३॥ शी रिते ॥४॥ व  
॥५॥ बहुकाले करिने एटले पल्योपम सागरोपम  
सुख जोगविने ॥६॥ पण ॥७॥ जे सुखने अंते  
दुःख ॥८॥ ग्रहण करिइ एटले पांमिये एटले जे  
जोगव्या पछि दुख उपजे ते सुख दुखरूपज ॥  
॥९०॥ जे कारण माटे ॥११॥ बलि ॥१२॥ मर  
अवस्थाने विशे एटले मरवाने अवसरे ॥१३॥ ए  
टले नारकादिकनो अवतार तेहने विशे संसार  
परिभ्रमण करवु तेहनो अनुबंध एटले संसार  
मवानु करम बंधायछे एटले जे सुखना पछवाडे  
जावासादिकनां दुख पांमिये ते कारण माटे देव  
पण शिरिते सुख कहिये ॥१४॥ निश्चे ॥३०॥

उवणममहस्सेहि<sup>१</sup> वि<sup>२</sup> ॥ ओहिजंतो<sup>३</sup> न<sup>४</sup> बुझइ<sup>५</sup> कोइ<sup>६</sup> ॥

बह<sup>७</sup> भंभदत्तराया<sup>८</sup> ॥ उदायनिवमारउ<sup>९</sup> चेव<sup>१०</sup> ॥३१॥

॥१॥ कोई पण जारे कर्म जीव ॥२॥ उपदेशना  
करिने एटले हज्जारो उपदेश देवे करिने ॥३॥  
॥४॥ प्रतिबोध करवा मांड्यो एटले प्रतिबोधवा  
रो सतो पण ॥५॥ न ॥६॥ प्रतिबोध पांमे एटले  
बोध नथि पांमतो ॥७॥ जेम ॥८॥ ब्रह्मदत्त राजा  
ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति अने वलि ॥९॥ उदाइ राजानो  
नार ते वेजण हज्जारो उपदेशे करिने पण प्रतिबो  
पांम्या तेंम बीजाय पण प्रतिबोध नयी पांमता  
॥ निश्चे ए जाव ॥३१॥

कनकचंचला ॥ अपरिचिता ॥ रायलछि ॥

वत्सकम्मकालिमल ॥ भरियभरनोपडंति अहे ॥ ३२ ॥

॥१॥ हाथीना कांननि पठम चंचल एटले चपल  
वि ॥२॥ अने वली न त्याग करेलि एहवि ॥३॥ राज्य  
सी तेणियें करिने ॥४॥ पोताना कर्मरूप कलिमल  
ले मलिनपणुं तेहनो नस्थोछे एटले पूरण करयो  
नर एटले जारे ते जेमणे एटले पोताना कर्मना  
रे करिने निचि गतिमा जवानुंछे शील ते जेमनुं ए  
॥५॥ जीव एटले प्राणि ॥६॥ अधोगतिने विशे  
ले नरक भूमिने विशे ॥७॥ पडेछे एटले जायछे

ए कारण माटे राज्य लक्ष्मीए करिने स्युं. अपितु  
इ सार नथि ए भावा॥३२॥

॥ गुरु माहाराज शिष्यप्रतें कहेछे ॥

वृत्तण<sup>१</sup>वि<sup>२</sup>जीवाणं<sup>३</sup>॥ सुदुकराईं<sup>४</sup>ति<sup>५</sup>पावचरियाईं<sup>६</sup>॥

भयवं<sup>७</sup>जा<sup>८</sup>सा<sup>९</sup>सा<sup>१०</sup>सा<sup>११</sup>पद्याएसो<sup>१२</sup>हु<sup>१३</sup>इणमो<sup>१४</sup>ते<sup>१५</sup>॥३॥

अर्थ ॥१॥ हे शिष्य जीवोनां एटले प्राणीयोनां ॥

अतिशे ॥३॥ पापनां आचरण एटले माठां आच

॥४॥ केहवाने ॥५॥ पण ॥६॥ अतिशे दुष्करछे ए

मुखे करिने पण कहां न जाय. हवे इहां द्रष्टांत

छे॥७॥ हे जगवत् ॥८॥ जे स्त्रि में धारण करिछे ए

परणीछे ॥९॥ ते स्त्रि माहरि वेहेनछे? तारें जग

कह्युं जे ॥१०॥ ते स्त्रि ॥११॥ ते ताहरि वेहेनछे ॥१२॥

निश्चे ॥१३॥ हे शिष्य ताहरि आगला ॥१४॥ आ ॥१५॥

द्रष्टांत कह्युं एटले कर्मनी विचित्रता उपर ताहार

द्रष्टांत कही देखाड्युं एज रीते सर्व प्राणीओनां कर्म

विचित्रगति जाणवी के वहेन हती ते स्त्री थइ एक

विचित्रपणुं छे. एम सर्व माता पीता वहेन स्त्रीरुपे ह

छे ते फरी माता होयछे ते स्त्रीरुपे थायछे एवी रीते प्र

करिने उलटा पालटी संसारमां वरते छे. ए

माटे पापनां आचरण करवां नहि.ए उपदेश॥३३॥

पाडिवाडिजळण<sup>२</sup> दोसे<sup>१</sup>॥नियए<sup>१</sup> सम्मं<sup>१</sup> च<sup>१</sup> पायवाडिआ

ए<sup>१</sup>॥तो<sup>१</sup> किर<sup>१</sup> मिगावइए<sup>१</sup>॥उपन्नं<sup>१</sup> केवलं<sup>१</sup> नाणं<sup>१</sup>॥३४॥

अर्थ ॥१॥पोताना॥२॥दोप प्रतें एटले पोताना अप

पध प्रतें॥३॥ सम्यक् प्रकारे एटले मन वचन काया

ते शुद्धि करिने ॥४॥ अंगीकार करिने श्रेटले माह

जेज आ दोपछे श्रे प्रकारे ग्रहण करिने॥५॥निश्चे॥६॥

गने विशे पडति श्रेटले गुरूना चरण कमल सेवति

प्रेहवि ॥७॥ मृगावति नामा साध्वी तेहने ॥८॥ केव

त्र श्रेटले संपूर्ण जेहवुं ॥९॥ ज्ञान ॥१०॥ उत्पन्न थ

श्रेटले आवरण रहित पांचमुं ज्ञान प्रगट्युं ॥११॥

त्य ॥१२॥ ते कारण माटे विनय जेज सर्व गुणनो

नवासछे ॥३४॥

सक्ता<sup>१</sup> दुत्तुंजे<sup>१</sup>॥सरागधर्मांनि<sup>१</sup> कोइ<sup>१</sup> अकटाई<sup>१</sup>॥

पुण<sup>१</sup> धरिडन<sup>१</sup> धणिअ<sup>१</sup>॥दुवयणुतालिए<sup>१</sup> स<sup>१</sup> मुणी<sup>१</sup>॥३५॥

अर्थ॥१॥ सराग धर्माने विशे श्रेटले कपाय सहित

रित्रने विशे, केनजे दशमा गुणठाणा सुधि कपा

नो संभवछे, श्रे कारण माटे॥२॥ कोइ पण साधु

३ ॥ सर्वथा कपाए रहित जेहवो ॥ ४ ॥ कहेवा

ने ॥ ५ ॥ शिरिते ॥ ६ ॥ समर्थ थईए श्रेटले स  
 घर्मने विशे सर्व प्रकारे कपायनो अभाव श्रेटले क  
 ये करिने रहितपणुं कयांथी होय ॥ ७ ॥ बलि ॥ ८ ॥  
 साधु ॥ ९ ॥ अतिशे करिने ॥ १० ॥ माठा ॥  
 लाकडाना समुहे करिने देदिप्यमान कर्या  
 जे कपाय ते प्रते ॥ ११ ॥ धरि राखे श्रेटले  
 आवेला एहवाय पण कपाय प्रते प्रगट करे न  
 टले निष्फल करे ॥ १२ ॥ ते ॥ १३ ॥ मुनि कहीए  
 माहापुरुष कहीए सर्वथा प्रकारे कपायनो  
 बहु दुर्लभछे ए कारण माटे ए जावा ॥ १४ ॥

कडुअकसायतरुणं ॥ पुष्पं च फलं च दोषं विरसाद् ॥

पुष्पेण ज्ञाद् १० न विद १ ॥ फलेण ११ पावं १२ समायरद् १३ ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ कडुआ, केमजे संजमना सुखनो  
 करनारछे; ए कारण माटे एहवा जे कपायरूप  
 तेमनु ॥ २ ॥ फुल ॥ ३ ॥ बलि ॥ ४ ॥ फल ॥ ५ ॥ निशे  
 वे पण एटले फुल तथा फल एछे पण ॥ ७ ॥ रस  
 तछे एटले कपायरूप वृक्षनां फुल तथा फल  
 र जाणवां ॥ ८ ॥ फुल रूप कारणे करिने ॥ ९ ॥  
 प्यो सतो ॥ १० ॥ विच्यारेछे एटले बीजा पुरुषो

वादिकना उपाय प्रते चिंतवेछे एटलेजे मने करिने परनु  
 अनर्थ चिंतवुं तेज कपायनु फुल जाणवुं ॥११॥ फ  
 करिने ॥१२॥ पाप प्रते ॥१३॥ आचरेछे एटलेजे परने  
 ढना तर्जनादिक एटले मारवुं कुटवुं तेज कपायनु  
 ल जाणवुं. ए कारण माटे कपायरुप दृक्षनु फुल प  
 कडवुंछे अने फल पण कडवुंछे एटले फुले करिने  
 ए अने फले करिने पण नरकनि गति थाय. ए का  
 ए माटे कपाय त्यागवा ज्योग्यछे ए उपदेश ॥३६॥

संते १ वि० को १ वि० उ० भई ५ ॥ को ५ वि० असंते ५ वि०  
 अहिंसे ११ भोए १० ॥ चयइ १४ परपञ्च एण १२  
 वि० १३ ॥ पभवो १५ दृष्टुण १० जह १५ जंबू १५ ॥

॥३७॥

अर्थ ॥१॥ कोइ ॥२॥ पण महापुरुष ॥३॥ सता एह  
 ॥४॥ पण एटले पोताने मिलेला एहवा पण भोग  
 ते ॥५॥ त्याग करेछे एटले द्रव्य जाव वे प्रकारे त  
 छे ॥६॥ कोइ ॥७॥ पण नीच कर्मी जीव ॥८॥ अस  
 एहवा ॥९॥ पण ॥१०॥ भोग एटले संसारिक  
 ख ते प्रते ॥११॥ अनिलाप करेछे एटले वांछा  
 रेछे ॥१२॥ कोइक जीव परना निमित्ते करिने एटले  
 जा जीवनो वैराग्य देपनि ॥१३॥ पण ॥१४॥ भोग प्र



तें त्याग करेछे एटले भोग प्रतें त्याग करतो ।  
 बीजो पुरुष देखीने पोते प्रतिबोध पांमेछे. इहां ५  
 कहेछे ॥१५॥ जेम ॥१६॥ जंबू कुमार प्रते ॥१७  
 खीने ॥१८॥ पांचसे चोरे करिने सहित एहवो प्र  
 नामे चोर प्रतिबोध पांम्यो ॥३७॥

दीसंति परमघोरा वि॥ पवरधम्मपभावपाडिबुद्धा ॥

सहस्रो चिलाइपुत्तो ॥ पाडिबुद्धो सुसुमाणा ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥१॥ अतिशय रौद्र ध्याने करिने सहित  
 वा ॥२॥ पण घणा प्रांणि ॥३॥ विशेष एहवो जे  
 नो प्रभाव तेणे करिने प्रतिबोध पांम्या एटले ।  
 त् दरशनना माहात्म्यथकि नाश पांमीछे मि  
 रूप निद्रा ते जेमनि, एहवा थया सता ॥४॥ व  
 छीए ॥५॥ जेम ॥६॥ ते ॥७॥ चिलाति पुत्रनामा  
 कर्मनो करनारो एटले घनावाह सेठनी दासीनी  
 नारो एहवो सतो ॥८॥ सुसुमानामा कन्याए क  
 ॥९॥ प्रतिबोध पांम्यो एटले मुनिने देखवे क  
 तिबोधपांम्यो. तेहनो विस्तार कथाथकि जाणवो ।

पुष्पि ॥ फालि ॥ तह ॥ पिउथरंमि ॥ तद्वा ॥ छुहा ॥ समणुवडा ॥

टंटेण ॥ तहा ॥ विसदा ॥ ॥ विसदा ॥ नह ॥ सफला जाया ॥

॥ १०० ॥

अर्थ ॥१॥ पुष्पे करिने सहित एहवुं ॥२॥ अने फले क  
 सहित एटले धनधान्यादिके करिने सहित एहवुं  
 ॥ अने वली प्रसिद्ध एहवुं ॥४॥ पितानुघरसते एटले  
 पुदेवनु घरसते पण ॥५॥ निरंतर ॥६॥ त्रपा ॥७॥  
 ॥८॥ ते प्रकारे करिने ॥९॥ ढंढण कुमार माहा  
 प जे तेणे ॥१०॥ विशेषे करिने सहन करी एटले  
 ज्ञान परीसह सहन करवे करिने त्रपा क्षुधा सह  
 करि ॥११॥ जे प्रकारे करिने ॥१२॥ सफल थड ए  
 ते केवल ज्ञान उत्पन्न थवानु कारण थड ए प्रकारे  
 ॥१३॥ त्रपा क्षुधा अनुभवि. एम बीजाओ ए पण सम  
 वे करिने परिसह सहन करवा. ए उपदेश ॥३९॥  
 गहारेसु<sup>१</sup> सुहेसु<sup>२</sup> अ<sup>३</sup> ॥ रम्मावसहेसु<sup>४</sup> काणणसु<sup>५</sup> च<sup>६</sup> ॥  
 गहुण<sup>७</sup> ना<sup>८</sup> हिगारो<sup>९</sup> ॥ अहिगारो<sup>१०</sup> धम्मकड्ढेसु<sup>११</sup> ॥४०॥  
 अर्थ ॥१॥ साधू मुनिराजनो ॥२॥ शुभ एटले अतिशे  
 ने करिने सहित एहवा ॥३॥ आहारने विशेषे एटले  
 शन पांन खादिम स्वादिम ए चार प्रकारना आहार  
 विशेषे ॥४॥ अने वलि ॥५॥ मनोहर वस्तिने विशेषे एटले  
 गश्रयने विशेषे ॥६॥ अने वलि ॥७॥ वनने विशेषे एटले  
 ना प्रकारना उद्यानने विशेषे ॥८॥ अधिकार ॥९॥

न होय एटले ए पूर्वे कहेलां स्थांनकोने विशे साधु  
 अधिकार न होय एटले आसक्ती न होय, ममत  
 हितछे ए कारण माटे. त्यारें साधुनो अधिकार स  
 विशे होय ते कहेछे॥१०॥धर्मकार्यने विशे एटले  
 त्म स्वरूपनुं चिंतवन करवुं तेहने विशे ॥११॥साधु  
 निराजनो अधिकारछे.इंद्रियोनेसुखकारिएहवां व  
 पदारथने विशेआसक्त न थाय एहवासाधु होय॥१२॥  
 साहू<sup>१</sup>कंतारमहाभएसु<sup>१</sup>॥अवि<sup>१</sup>जणवए<sup>१</sup>वि<sup>१</sup>मुदयंमि<sup>१</sup>॥

अवि<sup>१</sup>ते<sup>१</sup>शरीरपीडं<sup>१</sup>॥सहंति<sup>१</sup>न<sup>१</sup>लहंति<sup>१</sup>अ<sup>१</sup>विरुद्धं<sup>१</sup>॥

अर्थ ॥१॥मोहोटी अटविने विशे मोहोटा भयसते  
 ले राजादिकनो जयसते ॥२॥ पण ॥३॥ साधू ए  
 मोहटा मुनिराज ॥४॥ रिद्धियें करिने निश्चल ए  
 जय रहित एहवा ॥५॥ जनपद एटले देश तेहने  
 ॥६॥ जेंम वरतता ॥७॥ निश्चे ॥८॥ ते साधु  
 शरीरनी पीडाप्रतें॥१०॥सहनकरेछेएटलेखमेछे॥  
 बलि पण॥१२॥विरुद्ध एटले बेहेतालिस दोष  
 आहार पाणिप्रतें ॥१३॥ न ॥१४॥ग्रहण करे;क  
 ग्रहण करचुं होय तोपण वावरे नहि:जेंम भय रा  
 देशने विशे निर्जयपणे वरतता होय तेहवि रिते मो

उविने विरो तथा मोहटा भयोने विरो जय रहित  
 जे वृत्ता जे मुनिराज ते कोइ उपसर्ग आवेसते  
 ज शरिरनि पिडाप्रते समताये करिने सहन करेछे  
 ज अशुद्ध आहार पांणि वस्त्र पात्रादिक लेता नयि.  
 ज वात केहवे करिने मुनिराजने आहारादिकने वि  
 प्रतिबंध न होय एन जणाव्युं ॥४१॥

तेहिं पेलिया विहुं ॥ खंडगतीना नचेव परिकुचिया •

॥ चिद्वरनथत्ताय ॥ खंडगती ॥ ते पांडिया ॥ हुंति ॥ ॥४२॥

अर्थ ॥ १ ॥ खंडक नाने आचारजना पांचसे बेला ॥ २ ॥  
 एक नाने दुष्ट पुरुष जे तेणे बांणिये करिने एटले  
 पाणिनां नांखिने ॥ ३ ॥ पील्या एटले पिड्याप्रते पा  
 ड्या सत्ता ॥ ४ ॥ पण ॥ ५ ॥ निश्चे ॥ ६ ॥ नहिज ॥ ७ ॥  
 जे पांन्या एटले क्रोधने वडा यया नहि, केनजे ॥ ८ ॥  
 जे पांन्योछे परनार्य एटले सार तेजेनणे एटले तत्त्व ज्ञान  
 जे एहवा ॥ ९ ॥ जे ॥ १० ॥ पंडित एटले पापयि डर  
 रा ॥ ११ ॥ होय ॥ १२ ॥ ते ज्ञानि पुरुषो पीड्या प्र  
 सहन करेछे एटले पोताना प्राणनो नास यये सते  
 ज वीतरागनो कहेछो द्रव्य भाव वे प्रकारनो जे  
 गे ते याकि चलायनान यता नयी ए भाव ॥ १२ ॥

जिणवयणशुद्धसकन्ना१॥अवगयसंसारघोरपेयाला१॥

वालाण१स्वमंति१नइ१॥नइन्ति१किं१इत्थ१अच्छेरं१॥४३

अर्थ ॥१॥जो॥२॥जिनराजनं वचन सांजलवे कां  
कांन सहित केमजे लोक रुढिये करिनेतोकांन सां  
सर्व होयछे,ते परमारथे कांन सहित केहेवाय नहि  
कारणमाटे एहवा॥३॥अने जाण्योछे जयंकर संसार  
विचार ते जेमणे एटले आ संसार असारछे ए प्र  
विचारवंत एहवा ॥४॥ जति एटले साधु ॥५॥ व  
एटले अज्ञानि मिथ्या द्रष्टि तेमना संबंधि माठां  
त एटले माठा अपराध प्रते ॥६॥ खंधक आचारज  
शिष्यनि पठम समजावे सहन करेछे॥७॥एहमां ।  
स्युं॥९॥आश्रयछेएटलेसाधुमुनिराजने दुष्ट लोकं  
करेला अपराध तेहनं सहन करवुं ते घटीतछे॥८॥

न१कुलं१इत्थ१पहाणं१॥हरि१एसिवलस्स१किं१कुलं१आसि१

॥आकंपिया१०तवेणं१॥सुरा११वि१२नं११पज्जुवासांते११॥४४

अर्थ॥१॥इहां धर्म विचारने विशे॥२॥कुल उग्रजो  
दिका॥३॥ नथी ॥४॥ प्रधान एटले मुख्य नथि ए  
उग्रजोगादिक कुल विना धर्म न होय. ए प्रकारे  
अथ नथि. हवे द्रष्टांत कहेछे॥५॥ हरिकेसिवल

नामि महापुरुष जे तेनु॥६॥स्युं॥७॥कुला॥८॥हनुं एटले  
ब्रंडालकुलनेविशे अवतरेलाछे,ए कारण माटे उत्तम  
कुल नयि तोयें पण॥९॥तपे करिने ॥१०॥ वश करयुं  
हें हृदय ते जेमनु एहवा॥११॥ देवता जे ते ॥१२॥पण  
॥१३॥जे हरिकेसि नामे साधु प्रते ॥१४॥ पर्युपासना  
करेछे एटले सेवेछे तारे मनुष्यनुं स्युं केहवुं;ए कारण  
माटे धर्म विचारने विशे कुलनु प्रधानपणु नथि॥१४॥

देवो<sup>१</sup>नेरडउ<sup>२</sup>त्ति<sup>३</sup>य<sup>४</sup>॥कीड<sup>५</sup>अयंगु<sup>६</sup>त्ति<sup>७</sup>भाणुसोवेसो<sup>८</sup>॥सुव  
स्तिअ<sup>९</sup>विस्वो<sup>१०</sup>॥सुहभागी<sup>११</sup>दुखभागी<sup>१२</sup>अ<sup>१३</sup>॥१४॥

अर्थ ॥१॥ आ जीव देवता थयो॥२॥ ए प्रकारे॥३॥  
लि॥४॥ नारकि थयो॥५॥ कीडों थयो एटले कमिया  
क थयो॥६॥पतंगियो थयो॥७॥ बलि ए प्रकारे॥८॥  
नुष्य रूपछे वेप ते जेहनो एहवो थयो एटलेमनुष्य  
यो ॥९॥ रूपवालो थयो एटले सुंदर शरीरवालो  
यो ॥१०॥ रूप रहित थयो ॥११॥ सुखनो भोगी थ  
ये एटले सुखी थयो ॥१२॥ बलि॥१३॥दुखनोभोगी  
एटले दुखि थयो;एहवि रिते संसारमां जीव नाना प्र  
शरणा रूप करतो सतो परिभ्रमण करेछे ॥१४॥

सिड<sup>१</sup>त्ति<sup>२</sup>य<sup>३</sup>धमगुत्ति<sup>४</sup>अ<sup>५</sup>॥सु<sup>६</sup>सगुत्ति<sup>७</sup>अ<sup>८</sup>वियविड<sup>९</sup>॥ना

मी० दासो० पुन्नो० स्वलो० त्ति० अधणो० धणवइत्ति०

अर्थ॥१॥ आ जीवा॥२॥ राजा थयो ॥३॥ ए वलि॥५॥ जिस्वारि थयो॥६॥ वलि॥७॥ चंडाल थयो  
आ जीवा॥९॥ चारवेदनोजांणत्रां हण थयो॥१०॥ स  
थयो एटले नायक थयो॥११॥ दास थयो॥१२॥  
थयो॥१३॥ स्वल एटले दुरजन थयो ॥१४॥ ए  
॥१५॥ धन रहिव थयो॥१६॥ अने वली धन ति  
ए प्रकारे जीव संसारने विशेष परिभ्रमण करेछे

न० वि० दूथ० को० वि० नियगो० ॥ सकम्माविणि विट्टसरि सक्क

चिद्धो० ॥ अनुन्नस्ववेसो० ॥ नडुव० ० परियत्तए० ॥ नीवि० ॥ ४०

अर्थ ॥१॥ इहां एटले जिनशासनने विशेष ॥२॥ कोडा  
पणा॥४॥ नियम एटले निश्चया॥५॥ नथिज एटले पु  
रिने पुरुषज थाय अने पशु मरिने पशुहिज थाय,  
निश्चय नथी ते न ॥ ६॥ पोताना  
उदय प्रमाणे एटले जेवो  
करमनो उदय

ह ० ५ ० ५ ०

जेहने एहवो जे ॥ १० ॥ नट तेहनि पठम ॥ ११ ॥ परिभ्र  
करेछे. ते माटे आ संसारनु स्वरूप विचारिने सर्व  
उपर समजाव राखवो अने पोताना स्वजावमां रे  
एज विवेकि पुरुपने घटितछे ए भाव ॥ ४७ ॥

होडिस एहिं<sup>१</sup> धनसंचयस्स<sup>२</sup> ॥ गुणसुभारियाए<sup>३</sup> कत्राए<sup>४</sup> ॥ न<sup>५</sup>  
वे<sup>६</sup> लुद्धो<sup>७</sup> वयरारिसि<sup>८</sup> ॥ अलोभया<sup>९</sup> एस<sup>१०</sup> साहूणं<sup>११</sup> ॥ ४८ ॥  
अर्थ ॥ १ ॥ धनना समूहानि ॥ २ ॥ सैकडो कोडियो  
करिने सहित एहावि ॥ ३ ॥ गुणे करिने एटले रूप  
वण्यादिके करिने अतिशय नरेलि एहावि ॥ ४ ॥  
कन्या एटले अ परणेलि तेहने विशे ॥ ५ ॥ वयर  
मि एटले वज्रमुनि ॥ ६ ॥ नहिज ॥ ८ ॥ लुब्ध थया  
ले लोभ न पाम्या ॥ ९ ॥ गुरु शिष्य प्रते केहेछे ॥  
पूर्वे कही ए प्रकारे ॥ १० ॥ अलोचपणुं एटले नि  
चपणुं ॥ ११ ॥ साधुओने करवा जोग्यछे एटले स  
मुनियोयें निलोचि थवुं. ए जाव ॥

अंतेंडरपुरवलवाहणेहिं<sup>१</sup> ॥ वरासरिघरोहिं<sup>२</sup> मूणिवस्सहा<sup>३</sup>  
॥ कामेहिं<sup>४</sup> बहुविहोहिं<sup>५</sup> य<sup>६</sup> छंदिब्जंतावि<sup>७</sup> नेछंति<sup>८</sup> ॥ ४९ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ राजानिराणिओ तेहना समुह ॥ नगर से  
॥ हाथि घोडादिक तेमणे करिने ॥ २ ॥ प्रधान ए



हवा लक्ष्मीना जंडारे करिने ॥३॥ बहू प्रकारना  
 टले नाना प्रकारना ॥४॥ कामे करिने एटले शब्द  
 दिक विषयोअे करिने ॥५॥ निमंत्रण करचा सताप  
 एटले प्रार्थना करचा सतापण ॥६॥ श्रेष्ठ मुनियो जे  
 ॥७॥ नथि इछता एटले पूर्वे कहेला अंतःपूर बल वा  
 नादिक प्रते नथि अभिलाप करता ॥८॥ निश्चे ॥ एना

॥ परिग्रह अनर्थनु मूलछे ते कहेछे ॥

हेउ भेउ वसणं ॥ आयाम ॥ किलेस ॥ भय ॥ विनागो ॥ अ ॥

मरणं ॥ धम्म भं सो ॥ अरइ ॥ अथाउ ॥ सवाइ ॥ २० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ छेद एटले नाक अने कांननु कातरवुं ॥ २ ॥ अ

जेद एटले करवतादिके करिने चीरवुं वा अथवा स्वज  
 दिकुनिसाथे टुटक पाडवि ॥ ३ ॥ अने कठ एटले आप

॥ ४ ॥ अने नापार ॥ अथ ॥ ५ ॥ नन करय ॥ अर्थ ॥

नानि मेले ॥ ६ ॥ अने ॥ अने किले ॥ ७ ॥

ले पीडा ॥ ८ ॥ अने ॥ ९ ॥

॥ १० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥

लां वानां ॥१३॥ धनधकि धायछे एटले परिग्रहछे  
अनर्थनुं मूलछे. ए कारण माटे साधुमुनिराजने स  
या प्रकारे परिग्रह त्याग करवो ए श्रेयछे ॥१०॥

दोससयमूल १ जालं १ ॥ पुद्गरिसिद्धिजयं १ नइ १ वंतं ॥ अथं  
वहासे १ अणथं १ ॥ कीस १ अणथं १ ० तवं १ १ चरासे १ ॥ ५१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जो हे साधु ॥ २ ॥ राग द्वेषादिक सैकडो दोषनुं  
तरण एहवुं ॥ ३ ॥ जाल सरखु एटले मछनि जाल सर  
नु कर्मबंधननुं कारण एहवुं ॥ ४ ॥ पूर्वना रिपियोयें एटले  
यरस्वाम्यादिक मूनिओये त्याग करेलुं एहवुं अने ह-  
णांना नांमधारि साधुओ कर्मना वश थकि तथा दश  
॥ अछेराणा प्रभावधकि हाथी घोडाने विशे तत्पर  
टले हाथी घोडाना राखनारा एहवा अने आचारज  
नांम धरावनारा अने केटला एक पीला कपडा करिने  
मना सेवक थइने रहेला एहवा पाखंडि जैना चास  
मणां आ पंचमकालमां घणा वर्ते छे ते विवेकी पुरुषोये  
॥ श्रय करवा जोग्य नथि ॥ ५ ॥ वली दिक्षा ग्रहणने अ  
मरे त्याग करेलुं एहवुं ॥ ६ ॥ अने अनर्थनुं मूल एहवुं ॥ ७ ॥  
अर्थ एटले धन ते प्रतो ॥ ८ ॥ धारण करेछे तो ॥ ९ ॥ स्या वा  
॥ १० ॥ निःप्रयोजन एटले फोगटा ॥ ११ ॥ तप प्रतो ॥ १२ ॥

करेछे एटले जे 'साधु' नाम धरावेछे अने धन राखे  
ना तप जप कष्ट क्रिया सर्व फोगट छे. ए परमार्थ.

बहवंधणमारणसेहणाउ१॥काउ१परिग्रहे१नथि१॥तं१जइ१

परिग्रहु१धिय॥जइधम्मो१०तो१नणु११फंचो११॥५२॥

अर्थ॥१॥परिग्रह सते एटले परिग्रह राखे सते॥

वध एटले लाकडियादिके करिने ताडण करवुं।

ए एटले दोरडादिके करिने बांधवुं। मारण एटले प्र

थकि जुटुकरवुं ए रीते नाना प्रकारनि कदर्थनाओ

केइ ॥४॥ नथि अपीतु सर्वेछे एटले परिग्रहनो सं

करे सते केइ पीडाओ न थाय॥५॥ते कारण माटे

जो ए प्रकारे जाणिने पण॥७॥परिग्रह राखिये ए

परिग्रह राखे ते॥८॥निश्चे॥९॥ते परिग्रहराखवा१

॥१०॥जति धर्म एटले साधुनो धर्म॥११॥निश्चे॥१२॥

पडपंच रूपछे एटले विटंवना तुल्यठे ए कारण

साधुने परिग्रह राखवा जुक्त नाथे. ए भाव ॥५२॥

विज्जाहरिहिं१सहरिसं१॥नरिंदुहियाइं१अहमहंतीहिं१॥

जं१पथिजइ१तइया१॥वसुदेवो१तं१तवस्स१०फळं११॥५३॥

अर्थ ॥१॥ते कालने विशेष॥२॥मांहो मांहे स्पर्धा ए

इर्पा करति एटले एक जाणे हुं पेहलि परणुं बीजि

ए हुं पेहलि परणुं, ए प्रकारे इर्पा करति एहवि ॥

विद्याधरिओ एटले विद्याधरनाकुलमां उत्पन्न थये  
 यो एहवि जे कन्याओ तेमणियो ॥४॥ अने राजानि पुत्रि  
 तेमणियो ॥५॥ हरपे करिने सहिता ॥६॥ जे ॥७॥ वसु  
 नामा कुमार ॥८॥ प्राथर्ना करि एछीए एटले विद्याध  
 पुत्रियो तथा राजानि पुत्रियो जे वासुदेव कुमार  
 हर्ष सहित पोतानि मेले वंछेछे ॥९॥ तेसर्व ॥१०॥ त  
 ॥११॥ फल जाणवुं एटले पुर्व जवमां करचा एहवा  
 ॥वचादिक तपनु फल जाणवुं. ते कारण माटे परिग्र  
 याग करिने परजावनि आशंसा रहित तपने विशे  
 म करवो. ए जावा ॥५३॥

तत्र आसि नंदिसेणस्त कुलं ॥ जं हरिकुलस्त विडलस्त ॥

गसी १ १ पियामहो १ सुचा ॥ रिणं वसुदेवनामुत्ति ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥१॥ नंदिसेण जे तेमनुं ॥२॥ रुचुं ॥३॥ सुंद  
 कुल ॥४॥ हतुं अपितुं कांडरुडु कुल न हतुं क्येमजे  
 ह्यण जातिमां अवतरचा हता ए कारण माटे, तोयें  
 ॥५॥ जे कारण माटे ॥६॥ सारा अनुष्ठानो करवे  
 रिने आनंदिसेणनो जीव ॥७॥ वसुदेव एहवे नामे  
 ८॥ विस्तारवंत एहवो ॥९॥ जादववंश जे तेहना एट  
 जादवकुलमां उत्पन्न थएला लोकोना ॥१०॥ व

द्व एटले पूजनिक ॥११॥ थया ते जला अनुग्रह  
माहात्म्यछे.ते कारणमाटे आत्मार्यि पुरुषोये पुद्गलसु  
निद्रहा रहित रूडां अनुष्ठानसेववां. ए उपदेशा॥१॥

सपरक्रमराडलवाइएण॥सीसे॥पलाविए॥निअए॥गय  
सुकुमालेण॥खमा॥तहा॥कया॥जह॥सिं॥पत्तो॥॥५५॥

अर्थ॥१॥पराक्रम सहित एहवो अने वली राजानो  
धव एहवो सतोयपण॥२॥गजसुकुमाल मुनिस्वर जे  
ए॥३॥पोतानु॥४॥मस्तका॥५॥बले सते एटले सोम  
सुसरे मस्तकने विशे पेरना अंगारा जरे सते ॥६॥  
प्रकारे॥७॥क्षमा॥८॥करि॥९॥जेम॥१०॥ मोक्ष पां  
ते माटे उत्तम प्राणीयोयें क्षमा करवि एज सारछे॥५॥

रायकुलेसु॥वि॥जाया॥भीया॥जरमरणगभवसहीणं॥

साधु॥सहंति॥सर्व॥नीयाणवी॥पेसपेसाणं॥५६॥

अर्थ ॥१॥ राज कुलने विशे एटले उत्तमकुलने  
शे ॥२॥ उत्पन्न थया एहवा ॥३॥ पण ॥४॥ साधु  
निराज एटले उत्तमकुलने विशे उत्पन्न थइने साधु  
एला एहवासतापण॥५॥जरण एटले वयनिहानि  
मरण एटले प्राणनोविजोग अने गर्जवसती एटलेग

एटला वानां थकी ॥६॥ भय पानेला एहवा स  
 ॥७॥ नाच एहवा ॥८॥ अने सेवकना सेवक एट  
 चुच्छ पुरुषो जे तेननो करेलो उपसर्ग ॥९॥ सर्व ॥१०॥  
 ए करिने सहन करेछे एटले मुनिराज एन जाणे  
 जे जोहूं ते लोकोनि उपर क्रोध करीश तो फारि न  
 कर्मे बंधारो एवुं जाणिने समभावनां वर्तेछे ॥१६॥  
 नते भय भुवदरे ॥ कुलया न नमते ॥ अकुलया पुरेला ॥  
 नते भुवि ॥ इह नह ॥ कणत्त ॥ नह ॥ चक्रवर्ति नुपी ॥ १७  
 यथे ॥१॥ जला कुलनां उत्पन्न यएला एहवा जे ॥२॥  
 या ॥३॥ प्रयना ॥४॥ ननेछे एटले पोताथकि अधिक गु  
 ने वंदन करेछे ॥५॥ बलिादि ॥ निच कुलनां उत्पन्न  
 एला एहवा पुरुष ॥६॥ नयिा ॥७॥ ननता एटले पोतायि  
 थिक गुणीने वंदन नयि करता ॥८॥ आ जगनने वि  
 ॥९॥ जिना ॥१०॥ दिना पजाये करिने मोटा एहवा  
 नान्य लावुने ॥११॥ चक्रवर्ति नुनि एटले प्रयन चक्र  
 ने हना अने पछी छखंडनुराज्य छोडीने नुनि यथे  
 एवा नवा पया ॥१३॥ प्रयन ॥१४॥ नन्या ॥१५॥

नह चक्रवर्ति नुनि ॥ नन इयन नुनि ॥ निच वर ॥ ननि  
 नने ॥ चक्रवर्ति नुनि ॥ नह ॥ इह नह ॥ नुनि ॥ १६॥

अर्थ ॥१॥ जैम ॥२॥ चक्रवर्त्ति साधु सरलपदे  
 ने प्रथम मोटा साधु प्रते नमस्कार न करतो हवो  
 ॥३॥ सामान्य साधु एटले दिक्षा प्रजाये करिने  
 ना एहवा साधु जे तेंणें ॥४॥ निष्ठुर वचने करि  
 ले टुंकारो करिने ॥५॥ कह्युं के तुं आ साधु प्रते  
 रथ! एहवि रिते कह्युं, तोये पण ॥६॥ न ॥७॥  
 ॥८॥ कोप्या ॥९॥ ज्ञानादिक गुणना एटलें  
 चरित्रना ॥१०॥ बहु पण करिने एटले ज्ञानादि  
 करिने अधिक एहवा साधुओ प्रते ॥११॥ नम्या  
 ते १ धन्या १ ते १ साधु १ ते सि १ नमो १ जे १ अकबजपरिवि  
 ॥धीरा १ वय १ मसिहारं १ चरंति १ नह १ भूलिभद्रमुणी ॥५॥  
 अर्थ ॥१॥ जे पुरुषा ॥२॥ अकारजथकि वीराम पा  
 हवा ॥३॥ धीर एटले धीरजवंत एहवा सता ॥४॥  
 सदृश ॥५॥ चोयाव्रत प्रते ॥६॥ पालेछे कोनी पठमा  
 मा ॥८॥ यूलिजद्र मुनीअें पाल्युं तिमा ॥९॥ ते पुरुष  
 धन्यछे ॥११॥ ते पुरुषा ॥१२॥ उत्तमछे ॥१३॥ ते पु  
 ॥१४॥ नमस्कार याओ ॥५९॥

विमयासिपंजरामिव ॥ न्योए १ असिपंजरामि १ तिरुस्वामि १ ॥

निहा १ व १ पंजरगया १ ॥ नमंति १ तनपंजरे १ साहू ॥ ६० ॥

र्थ॥१॥लोकनि मध्ये॥२॥तिक्ष्ण एटले आकरु एह  
 ॥असिनु पांजरु एटले तरवारनो समूह ते थकि वि  
 एहवा॥४॥सिंह॥५॥जेमा॥६॥लाकडाना पांजरामां  
 सता॥७॥रहेछे एटले जेम सुजट लोकोए उगाम्या  
 वा तरवारना समूह ते थकि बिन्हा सता सिंह लाक  
 ना पांजरामां वसेछे ते प्रकारे॥८॥विषय एटले शब्दा  
 क पांच विषय ते रूप खडगनुं पांजरु तेहने तुल्य स्त्रि  
 क ते थकि जय पांम्या एहवा॥९॥साधु मुनिराज जे  
 पण॥१०॥तपरूप पांजराने विज्ञे वसेछे एटले गुरु  
 आज्ञा लेइने वारे जेदे तपने विशेषतेछे एजावा॥६०॥  
 ॥कुण्ड॥अपमाणं॥१॥गुरुवचनं॥२॥लहेइ॥उवएसं॥३॥सो॥  
 च्छा॥तह॥४॥सोअइ॥५॥उवकोउवरे॥६॥जह॥७॥तवस्ती॥८॥६१॥  
 प्रर्या॥१॥जे गुरुपा॥२॥गुरुनु वचना॥३॥अप्रमाण॥४॥  
 रेछे एटले गुरुनु वचन प्रमाण करतो नथी॥५॥ते पु  
 रा॥६॥उपदेश प्रते एटले गुरुनि आज्ञा प्रते॥७॥ना॥८॥  
 मे एटले न अंगिकार करो॥९॥पछि॥१०॥ते प्रकारे  
 ॥१॥शोक करो॥२॥जेम॥३॥उपकोशाने घेरे एट  
 कोशानि बेहेनने घेरे गुरुनि आज्ञा विना आव्यो ए  
 वो॥१४॥तपस्वी एटले सिंह गुफावासि साधु शेष



प्रते पांम्या.तेम ते माटे गुरुनि आज्ञामां वर्तवुं॥२॥

जिह्वयपत्रयभर॥ समुद्रहणवसिअस्स३अद्यंतं॥

जुवइवणसंवइयरे॥ जइत्तणं२उभउभइं॥६२॥

अर्थ॥१॥अतिशय करीने॥२॥पर्वतना चार सद  
हाव्रत धारण करवाने विपे उद्यमवंत एहवो जे

तेहने॥३॥स्त्रीजननो संसर्ग करेसते॥४॥जतीपणु

ले साधुपणु॥५॥द्रव्यजाव वे प्रकारे नाश पांमे

स्त्रीना संसर्ग करिने जतिपणुं रहे नहि. ए जाव॥६॥

तइ॥टाणि२जइ॥मोणी॥तइ॥मुंडी॥वकली॥तवस्सी॥वा॥अर्थ

तो॥२अ॥२अद्यंतं॥॥जंभावि॥न॥२॥तो॥२मज्जं॥॥६३॥

अर्थ॥१॥जो॥२॥कायोत्सर्ग करेछे॥३॥जो॥४॥म

णु धारण करेछे॥५॥जो॥६॥मस्तक मुडावेछे॥७॥

वा॥८॥छालनां वस्त्र पेहरेछे॥९॥नपरुया करेछे

॥१०॥ब्रह्मा जे ते पिण॥११॥मेथुनजाव प्रते॥१२॥

छतोसतो॥१३॥बलि॥१४॥मने॥१५॥नथी॥१६॥

एटले मेथुननो अजिलापी सतो जे कष्टक्रिया क

ते सर्व फोगटछे. जाव मिथ्यात आवेछे माटे॥६३॥

तो॥२॥अर्थ॥२॥मुणियं॥॥नो॥२॥मुणियं॥॥तो॥२॥अ॥२॥चेइं॥२॥

॥१॥आवडिअवडिपामंतिउ॥वि॥तइ॥न॥कुणइ॥अकवतं॥॥

॥१॥ जो ॥२॥ आपदाने विशे पड्यो एहवो पण  
स्त्रीयोये निमंत्रण कर्यो सतो ॥३॥ पिण ॥४॥ मैथुन  
तादि ॥५॥ नयी ॥६॥ करतो ॥७॥ त्यारो ॥८॥ भणेलुं  
णा ॥९॥ त्यारो ॥१०॥ गुणेलुं प्रमाण ॥११॥ त्यारो ॥१२॥  
पणु प्रमाण एटले शास्त्रना अर्थनु जाणपणु प्रमाण  
॥१३॥ त्यारो ॥१४॥ वली ॥१५॥ आत्मा ॥१६॥ चेताव्यो  
जे आत्म स्वरूपनुं चित्त्वन करवुं एटले आत्मा अने  
गजनी वेहेचण करवी ते प्रमाण छे ॥१७॥

गोडियमइच्छो ॥ गुणदनुत्तने ॥ लहइ ॥ साहुचं ॥ अ  
वेचुदस्त ॥ न ॥ वइ ॥ गुणदोहे ॥ तत्तिया ॥ वइ ॥ ॥६५॥

थो ॥१॥ गुण महाराजनी सनीपे ॥२॥ प्रगट करयुंछे  
ले आलोयुंछे सर्वेश्वर एटले पाप ते जेणे एहवो जे  
पा ॥३॥ साधुपणा प्रते ॥४॥ पानेछो ॥५॥ अने नयी आलो  
पाप ते जेणे एहवो जे पुरुष तेहने ॥६॥ गुणनी श्रेणी  
॥७॥ आत्रि पाने ॥८॥ तेतलीज ॥९॥ आहे ॥१०॥

इ ॥ दुकरदुकरकारल ॥ ति ॥ भपिड ॥ जहडि ॥ साहू ॥ तो ॥  
ते ॥ अडतसंभू ॥ अविजयसीतेहि ॥ न ॥ वि ॥ खनिदं ॥ ॥६६॥

प्रथो ॥१॥ जो ॥२॥ अतिपयदुकरदुकरनो करनाराश ॥  
प्रकारे बहु नांनपूर्वका ॥३॥ ययार्थ ॥४॥ युलिभद्र नाने



न करतो॥७॥ते पुरुष॥८॥परचवने विपे॥९॥पुरुष  
मूकीने स्त्री वेद पांमेछे॥१०॥जेमा॥११॥पीठमहापीठ  
धु मच्छरना प्रजावथकी स्त्री वेदपणुं पांम्या॥६८॥  
परिवायंगिण्हइ<sup>१</sup>॥अठमयविरल्लणे<sup>२</sup>सया<sup>३</sup>रमइ<sup>४</sup>॥

इइ<sup>५</sup>य<sup>६</sup>परसिरि<sup>७</sup>॥सकसाउ<sup>८</sup>दुखित्वउ<sup>९</sup>निचं<sup>१०</sup>॥६९॥  
अर्थ॥१॥ जे पुरुष पारका अवर्णवाद बोलेछे अने  
२॥आठमदना विस्तारने विपे एटले आठमद क  
वाने विपे॥३॥नीरंतर॥४॥आसक्त थायछे॥५॥बली  
६॥परनी लक्ष्मी देखवे करीने॥७॥बलेछे॥८॥एह  
कपाय सहीत॥९॥नीत्य॥१०॥दुखि जांणवो.ते मा  
पारका अवर्णवाद बोलवा नहीं॥६९॥

वेगहविवायरुइणो<sup>१</sup>॥कुलगणसंघेण<sup>२</sup>वाहिरकयस्स<sup>३</sup>॥न  
ध<sup>४</sup>किर<sup>५</sup>देवलोए<sup>६</sup>वि<sup>७</sup>॥देवसमिइसु<sup>८</sup>अवगासो<sup>९</sup>॥७०॥

अर्थ॥१॥जुद्ध करवानि तथा विवाद करवानीछे रुची  
हेनी एहवो अने॥२॥कुल ते नागेद्रादी गण ते कु  
मुदाय संघते चतुर्विधसंघ तेमणे॥३॥वाहिर करे  
टले काहाडी मुकेलो एहवो जे पुरुष तेहनो॥४॥  
गेकने विपे॥५॥पणा॥६॥देव सनाने विपे॥७॥प्रवे  
॥नथी॥९॥निश्चे जे कारण माटे अवर्णवादनो वो

लनारो तथा कलेश करनारो किलविखिया देवता.  
विपे अवतरेछे एटले ढेड देवता थायछे. ॥७०॥

जइ<sup>१</sup>ता<sup>२</sup>नणसंववहार<sup>३</sup>॥वज्जिय<sup>४</sup>भकज्ज<sup>५</sup>

मायरइ<sup>६</sup>अन्नो<sup>७</sup>॥जो<sup>८</sup>त्तं<sup>९</sup>पुणो<sup>१०</sup>वि<sup>११</sup>कथइ<sup>१२</sup>

॥१२स्स<sup>१३</sup>वसणेण<sup>१४</sup>सो<sup>१५</sup>दुहिउ<sup>१६</sup>॥७१॥

अर्थ॥१॥अन्य जे पुरुष एटले बीजो कोइ पुरुष॥  
जो॥३॥प्रथम॥४॥लोक व्यवहारने विपे॥५॥निषेध  
रेलु एहवुं॥६॥अकार्ज प्रते॥७॥करेछे॥८॥जे पुरुष॥  
तेना पाप कर्म प्रते॥१०॥वली॥११॥बीजानी  
कहेछे॥१२॥ते पुरुष॥१३॥पारका ॥१४॥ दुखे  
॥१५॥दुखीओ थायछे ते वापडो फोंगट पारकी नि  
करवे करीने पाप सहीत थायछे॥७१॥

मुटु<sup>१</sup>वि<sup>२</sup>उज्जवमाणं<sup>३</sup>॥पंचेव<sup>४</sup>करंति<sup>५</sup>गरित्तियं<sup>६</sup>समणं<sup>७</sup>॥अ

णभू<sup>८</sup>परनिंदा<sup>९</sup>॥निओ<sup>१०</sup>बल्ला<sup>११</sup>कसाया<sup>१२</sup>य<sup>१३</sup>॥७२॥

अर्थ॥३॥सम्यक् प्रकारे करीने तप संजमने विपे  
उद्यम करतो एहवो॥३॥पिए॥४॥साधु प्रते॥५॥  
वस्तुहीजा॥६॥खाली॥७॥करेछे ते पांच वस्तु  
कहेछे॥८॥पोतानी स्तुती॥९॥परनिंदा॥१०॥  
ने विपे अथीलपणु॥११॥पुरुष स्त्रीना चिनने

नो अनिलापा॥१२॥वली॥१३॥चार कसाया॥७२॥

परपरिवायमईउ॥॥दूसइ वयणोहें॥जेहिं॥जेहिं॥परं॥ते॥

ते॥पावइ॥दोते॥परपरिवायइय॥अपिच्छो॥॥७३॥

अर्थ॥१॥ पारको अवर्णवाद बोलवानीछे मती ते जे

एहवो जे पुरुपा॥२॥जे॥३॥जे॥४॥वचनोयें करीनें

॥बीजापुरुष प्रते॥६॥दुपीत करेछे॥७॥ते॥८॥ते॥९॥

यो प्रते॥१०॥पोते पांमेछे ए कारण माटे॥११॥पर अ

दनो बोलनारो पुरुपा॥१२॥नधी देखवा जोग्या॥७३॥

धदा॥छिद्रपेही॥अवन्नवाइ॥स्यंनई॥चवला॥॥

का॥कोहणसीला॥सीता॥उहेअगा॥गुरुणो॥॥७४॥

अर्थ॥१॥अहंकारी एहवा॥२॥छिद्रना खोलनारा ए

वा॥३॥अवर्णवाद बोलवाने तत्पर एहवा॥४॥ पोता

मतीए चालनारा एहवा॥५॥चपल स्वभाववाला

हवा॥६॥वांका॥७॥क्रोधी एहवा॥८॥जे शीप्य॥९॥गु

माहाराजने॥१०॥उदवेगना करावनारा थायछे॥७४॥

जस्स॥गुरुसिने॥न॥भक्ती॥॥न॥य॥बहुमाणो॥न॥

गउरवं॥न॥भयं॥॥न॥वि॥लज्जा॥न॥वि॥

नेहो॥॥गुरुकुलवासेन॥किं॥तस्स॥॥७५॥

अर्थ॥१॥जे शिष्यने॥२॥गुरु माहाराजने विज्ञे ॥३॥

नक्ती एटले गुरु माहाराजने देखीने उजा थवु  
न आपवादीक विनया॥४॥नथी॥५॥वली॥६॥अंत  
ति॥७॥नथी॥८॥मोटाइपणु॥९॥नथी॥१०॥गुरुयकी  
या॥११॥नथी॥१२॥गुरुनी लज्या॥१३॥नथी॥१४॥  
उपर स्नेह॥१५॥नथीज॥१६॥जे शिष्यने पूर्वे क  
टलां वांनां गुरु संबधी नथी ते शिष्यने॥१७॥  
समीप रेहवे करीने॥१८॥स्युं॥१९॥

रुसद<sup>१</sup>चाई<sup>२</sup>नंतो<sup>३</sup>॥वहइ<sup>४</sup>हियण<sup>५</sup>अणुसयं<sup>६</sup>भाणउ<sup>७</sup>॥न<sup>८</sup>  
कम्म<sup>९</sup>करणिये<sup>१०</sup>॥गुरुस्स<sup>११</sup>आलो<sup>१२</sup>न<sup>१३</sup>सो<sup>१४</sup>सीसो<sup>१५</sup>॥  
अर्थ॥१॥जे शिष्य गुरु माहाराजे प्रेरणा करये  
॥२॥रोप करेछे ॥३॥बोलाव्योसतो॥४॥हृदयने  
॥५॥क्रोध प्रते॥६॥धारण करेछे॥७॥वली॥  
ग्य एहवुं॥९॥कार्ज॥१०॥न करे॥११॥ते  
गुरुने॥१३॥आलरूपजाणवो॥१४॥शिष्य एटले  
मणनो माननारो॥१५॥न जाणवो ते माटे दुर्वि  
णुं त्याग करवुं ए श्रेयछे॥१६॥

दविछणसूअणपरिभवेहिं॥अइभाणिय<sup>१</sup>दुइभाणिएहिं॥

सत्ताहिया<sup>१</sup>सुविहिया<sup>२</sup>॥न<sup>३</sup>चेव<sup>४</sup>भिदंते<sup>५</sup>मुहरागं॥७॥

अर्थ॥१॥प्राक्रमे करीने अधिक एटले क्रोधादि

ने समर्थ एहवा॥२॥ नला शिष्य ते जे ते॥३॥ उद  
पमाडवे करीने तथा दोष प्रगट करवे करीने त  
तर्जनाए करीने॥४॥ अति सिपांमण देवे करीने॥५॥  
ति आकरां वचन केहेवे करीने॥६॥ ना॥७॥ हीज॥८॥  
खना रंग प्रते॥९॥ पालटे एटले जे सुशिष्य होयछे  
गुरु माहाराजना उपदेशे करीने काला मुखवाला थ  
नथी अपीतु खुसी थायछे॥७७॥

माणंसेणो<sup>१</sup> वि<sup>२</sup> अवमाण<sup>३</sup> ॥ वंचणा<sup>४</sup> ते<sup>५</sup> परस्स<sup>६</sup> ते<sup>७</sup> न<sup>८</sup> क  
रंति<sup>९</sup> ॥ सुहृदुखवागिरणत्वं<sup>१०</sup> ॥ साहुउं<sup>११</sup> अहिबगंभीरा<sup>१२</sup> ॥ ७८॥  
अर्थ॥१॥ इंद्रादिके मान्या सता एहवा॥२॥ पिण॥३॥  
मुद्रनी पेठे गंजीर एहवा॥४॥ प्रसीद्ध एहवा॥५॥ ते॥६॥  
धु॥७॥ सुख दुःख एटले पुन्य पाप क्षय करवाने अ  
॥८॥ परथकी अपमान थए सते॥९॥ अपराधना कर  
ार पर पूरुपने॥१०॥ ठगवुं एटले पीडा॥११॥ नथी॥१२॥  
रता॥७८॥

मउआ<sup>१</sup> निहुअसहावा<sup>२</sup> ॥ हासद्वविवद्विनया<sup>३</sup> विगहमुक्ता<sup>४</sup> ॥ अ  
समंजस<sup>५</sup> मइवहुअं<sup>६</sup> ॥ न<sup>७</sup> भणंति<sup>८</sup> ॥ अपुच्छिया<sup>९</sup> साहू<sup>१०</sup> ॥ ७९॥  
अर्थ॥१॥ अहंकार रहित एहवा॥२॥ शांत सन्नाववाला  
३॥ सामान्य प्रकारे हसवु पर उपर ईर्ष्यादिकनु करवुं



तेणे करिने रहित एहवा॥४॥विकथा रहित एहवा  
॥५॥साधु मुनीराज॥६॥पुछ्या वीना॥७॥अघटतु  
अणमीलतु॥८॥वणुं॥९॥ना॥१०॥बोले तारे ते साधु पु  
सता केवि रीते बोले ते आगलि गाथामां कहेछो॥११॥

महुरं॥निउणं॥धोने॥॥कडतावडिअं॥अगविय॥मनुच्छं॥॥

पुं॥मइसंकळियं॥भणंति॥१॥धम्मसंजुत्तं॥॥८०॥

अर्थ॥१॥मधुर एटले परने हर्ष उपजावनाहार  
तुराइपणाए सहित॥३॥थोडुं एटले मतलब जेटु  
कारज पडे सतो॥५॥अहंकार रहित॥६॥टुंकारादि  
रीने रहित॥७॥बोलवाथी पेहेला॥८॥बुद्धिए करिने  
चारेलुं एहवुं॥९॥जे॥१०॥धर्म सहित वचन ते  
हा पुरुषो॥११॥बोलेछे पण अधर्म संजुक्त वचन  
नही ए रहस्य॥८०॥

साठवाममहम्मा॥॥निमत्तगुत्तो॥दणधोण॥अणु

विचं॥नामळिणा॥॥अन्नाणववुत्ति॥अणफळो॥॥८१॥

अर्थ॥१॥नांमलि तापस जे तेंणे॥२॥साठ ह  
रपमुची छट छटने पारणे॥३॥इकवीसवार  
कर्गने धोयुं एहवुं जे अत्र तेणे करीने॥५॥आय  
टले तप कट करयुं ते॥६॥अज्ञान तपछो॥७॥ए हेतु

८॥फल रहित जाणवुं॥८१॥

छज्जोवकायवहगा॥हिंसकसत्थाइ॥उवइसंति॥पुणो॥

सुवहुं॥तवकिलेसो॥वालतवस्तीण॥अणफलो ॥८२॥

अर्थ॥१॥छजीव कायना वध करनारा एहवा॥२॥बली  
॥लोकोनी आगल हिंसकशास्त्र प्रतो॥४॥प्रकाश क  
उ एहवा जे॥५॥वाल तपस्वी एटले अज्ञानी पुरुषो  
॥६॥अतिपय करीने घणो एहवोय पण॥७॥तपे क  
ने जे केश एटले जे कष्टा॥८॥फल रहित जाणवुं ते  
टे द्रव्यभाव वे प्रकारे हिंसा त्याग करीने तप कर  
ते मोहोटा फलवालोछे॥८२॥

परियच्छंति॥सं॥जहइयं॥अदितहं॥असंदिहं॥तो॥

तिपवयनातेहिनु॥उहंते॥बहुअस्स॥बहुआए॥८३॥

अर्थ॥१॥जे साधु जयाये एहवुं॥२॥सत्य एहवुं॥३॥सं  
ह रहित एहवुं॥४॥सर्व जीवाजीवादी पदार्थना समु  
प्रतो॥५॥जाणोछे॥६॥ते कारण नाटो॥७॥जिन वचननी  
धिना जाण एटले सिद्धांत मार्गना जाण एहवा स  
॥८॥बहु ज्ञानान्य एटले नीच लोकोना॥९॥घणांदु  
वनादी प्रतो॥१०॥तन्मावे करीने सहन करेछे ते ना  
एहवा मुनीराजनुं जे तप ते मोटा फलने अये एट

ले मोक्ष फलने अर्थे थायछे॥८३॥

जो १ जंस्स १ वट्टए १ हियं १ ॥ सो १ तं १ ठावेइ १ सुंदर सहावं १ ॥

वग्धी १ छावं १ १ जणणी १ ॥ भइं १ सोमं १ १ च १ मन्नेइ १ ॥

अर्थे ॥ १ ॥ जे ॥ २ ॥ जेहना ॥ ३ ॥ चितने विपे ॥ ४ ॥ वत्तें  
ते पुरुष ॥ ५ ॥ ते प्रते ॥ ७ ॥ सुंदर सजाववालो ॥ ८ ॥

॥ ९ ॥ जेम वाघेण ॥ १ ० ॥ माता ॥ १ १ ॥ पोताना वा

ते ॥ १ २ ॥ नद्र ॥ १ ३ ॥ वली ॥ १ ४ ॥ शांत एहवुं १ ५ ॥

टले जेम वाघेण अज्ञानपणाथकी अन्नद्र अने

अने घणा जीवोनु नक्षण करनारुं एहवुं जे पो

लक ते प्रते नद्र अने शांत अने जीव रक्षणनु

एहवुं मानेछे तेहनी पठम अज्ञानी जीव कुगुरु

रु करीने मानेछे अने पोताना अज्ञान तप अ

करीने मानेछे माटे वीवकी पुरुषोये सीधांत उपर

देइने गुण अवगुणनुं जथार्थ जाणपणुं करवुं ए जा

मणि रुण गरयण धन पुरयंमि १ ॥ भवणंमि १ सा छि भइो वि १ ॥

वि १ किर १ मझ वि १ सामि उ १ त्ति ८ ॥ जाउ १ १ विगय कामो १ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ मणिकनक रत्न धन तेणे करिने जं

वुं ॥ २ ॥ घर तेहने विपे रहेतो एहवो पण ॥ ३ ॥ स

वहेवारियो ॥ ४ ॥ माहरे पण ॥ ५ ॥ निश्चे ॥ ६ ॥ विजो

आवच्छेदे ए प्रकारे विचारतो सतो॥१॥ विषयना श्र  
जप रहित एहवो॥१॥ यायो ते नाटे सन्यक् वि  
करवो ए श्रेष्ठो॥८५॥

॥ कपंते हे त्वं संनं च ॥ ति दुष्टयान्तिपनं ॥ तुरे  
त ननु ते तनं ॥ ॥ अस्त ॥ ते तनं ॥ तुरे ते ॥ ॥ ८६ ॥

यो॥१॥ पुत्र्य॥ शातप वार प्रकारो॥१॥ वली॥१॥  
न सतर प्रकारे ते प्रदो॥५॥ नयी॥१॥ करता॥१॥ आते  
॥ पुत्र्य॥१॥ तरखाछे हाय पग ते जेनना एहवा श्र  
१॥ वरोवर अकारना धारण करनार एहवा पूरु  
ता॥१॥ दासपला प्रतो॥१॥ शानिश्चो॥१॥ शानिछे ते  
॥ विवेकी पुत्र्योये सनक्ति पूर्वक तय संजनने वि  
व्यन करवो ए कस्यांकारिछे ए उपदेशा॥८७॥

॥ तुरे तुरे ननु ते तनं ॥ ॥ विवेहेहे तनं ते ते हे ॥ ॥ तह  
॥ तनं ते तनं ॥ ॥ तह ते ते ॥ ॥ तनं ते ते ॥ ॥ ८८ ॥

यो॥१॥ रूपवांत एहवो कोन छ शरीरवाछो एहवो॥१॥  
इने उचीत एहवो जे शाखिन्द्र ते नाना प्रकारना  
१॥ अठनादिका॥ शातप विवेने करिनी॥१॥ प्रकारो॥१॥  
ना प्रदो॥५॥ सुकवतो हवो एटछे बाह्ययकी शरीर  
॥ अंतरयकी कर्म दुर्वल करतो हवो॥१॥ आनेना॥ आयोता

ना घरने विशे॥१॥पण॥३०॥नहिज॥११॥उल  
ले पोताने घेरे जे अवसरे गोचरी आव्या ते  
पोताना सेवक लोकोए पण उलप्या नही ए  
ते तपे करीने सरीर सुकव्युंछे. अहो! एहवा अ  
कुमाल थइने पण एहवो कठण तप आचर्यो

दुकर मुद्धोसकरं॥अवंतिसुकुमालमहरिसीचरीयं॥

अप्पाविशनाम॥तह॥तब्ज॥इति॥अच्छेरयं॥एयं॥८॥

अर्थ॥१॥डुप्कर एटले दुखे करीने करवा जो  
एहवुं अवंति सुकुमाल नामे माहारूपीनुं जे  
प्रते सांचलनारा पुरुपोने पण॥३॥रोमांतकंप  
रोमराय विकस्वर करनारछे॥४॥ते अवंति सुकु  
निराज जे तेंमणे पण पोतानो आत्मा जे ते॥५॥  
॥६॥तेजप्रकारे॥७॥दम्यो॥८॥ए हेतु माटे॥९॥  
ती सुकुमालनु चरीत्रा॥३०॥आश्रयकारीछे॥८॥

आच्छूढसरीरधरा॥अन्नो॥नीवो॥सरीर॥मन्नंति॥४॥

ममस्स॥कारणे॥सुविहिया॥सरीरं॥वि॥च्छुद्धंति॥५॥

अर्थ॥१॥त्याग कर्योछे शरीरनो मोह ते जे  
हवा॥२॥शुविहितगीतार्थ महाराजा॥३॥धर्म  
अर्थ॥४॥आ जीवा॥५॥जुदोछे॥७॥अने आ शरीर

प्रकारे वीचारीने॥९॥शरीर प्रते॥१०॥पण॥११॥  
कदेछे, केमजे धर्म त्यागकर्यो सतो फरीने ते पां  
र्लनछे. द्रव्य प्राणतो बीजा जन्मने विपे पण  
६. एहेतु माटे प्राणनो जंग थये सते पण धर्म  
ग करवो ए श्रेयते॥८९॥

द्वसं<sup>१</sup>पि<sup>२</sup>जीवो<sup>३</sup>॥१॥वज्र<sup>४</sup>मुवागओ<sup>५</sup>अनन्नमणो<sup>६</sup>॥जइ  
१॥पावइ<sup>१</sup>मुखवं<sup>८</sup>॥अवस्तं<sup>१</sup>वेमाणिओ<sup>२</sup>होइ<sup>३</sup>॥९०॥  
॥१॥एकाग्रचित्तवालो एहवो॥२॥जीव जे तो॥३॥  
देवसा॥४॥पण॥५॥प्रवर्ज्या एटले चारित्र प्रते॥६॥  
ते सतो॥७॥जो पण॥८॥मोक्ष प्रते॥९॥न॥१०॥  
तोए पण॥११॥निश्चो॥१२॥वैमानिका॥१३॥थाया॥१४॥  
वेढेण<sup>१</sup>सिरिमि<sup>२</sup>वेढि<sup>३</sup>॥१॥निगयाणि<sup>४</sup>अच्छिणि<sup>५</sup>॥मेय  
त्त<sup>१</sup>भगवर्त्त<sup>२</sup>॥१॥नय<sup>३</sup>सो<sup>४</sup>मणसावि<sup>५</sup>परिकुविर्त्त<sup>६</sup>॥१॥९१॥  
१॥१॥पूज्य एहवा॥२॥मेतार्जनामे मुनीना॥३॥ली  
वांमडानी वाधरडीए करीने॥४॥मस्तक जे ते॥५॥  
सते ते लीलुं चांमडुं सुकाया पछी॥६॥आरव्यो जे  
॥निकलि पडी॥८॥तोपिण ते मेतार्जमुनि महारा  
५॥ मने करिने पण॥१०॥ नहिजा॥११॥ कोप्या ते  
: आत्मायी पुरुषोए क्षमा करवी ए श्रेष्ठछे॥९१॥

जो १ चंदणेण २ बाहुं ३ ॥ आलिंपइ ४ वासिणावि ५ तच्छेइ ६ ॥ १३  
 जो ८ अ ९ निंदइ १० ॥ महारिसिणो १२ तथ्य १३ समभावा १४ ॥ १२  
 अर्थ ॥ १ ॥ जे कोइ पुरुषा २ ॥ वावना चंदने करिने  
 लावीने ॥ ३ ॥ भुजा प्रते ॥ ४ ॥ विलेपन करेछे ५ ॥  
 पुरुष वांसलारूप शस्त्रे करीने ॥ ६ ॥ छेदन करेछे ७ ॥  
 ॥ ८ ॥ कोइ पुरुषा ९ ॥ स्तवना करेछे १० ॥ अने ॥ १० ॥  
 रुप निंदा करेछे ॥ ११ ॥ तोय पण ते ठेकांणे ॥ १२ ॥  
 पि एटले मोटा पुरुषा ॥ १३ ॥ ॥ ववाला ॥ १४ ॥  
 शत्रु मित्र उपर सम्चितदाला थायछे ए जाव  
 सीहगिरिसुसीसाणं ॥ भइ ॥ मुखवयण सहहंतानं ॥ १५ ॥  
 र १६ ॥ हाही ॥ वायण १७ ॥ नवि १८ ॥ कोविअं १९ ॥ वयणं २० ॥ १२३  
 अर्थ ॥ १ ॥ आ वज्रनामा शिष्य ॥ २ ॥ निश्चय ॥ ३ ॥  
 एटले सिद्धांतना पाठ प्रते ॥ ४ ॥ तनने आपरो ॥  
 प्रकारनी ॥ ५ ॥ गुरु महाराजना वचन प्रते श्रद्धा  
 एहवा ॥ ६ ॥ सीहगीरी आचारज महाराजना मजा  
 ले विनीत शिष्य तेमनुं ॥ ७ ॥ कल्याण थाओ ॥ ८ ॥  
 प्योयेनहिज ॥ ९ ॥ गुरु महाराजनुं वचना ॥ १० ॥  
 करयुं एटले आ बालक अमने इयुंवाचना आपरो  
 न विचारयुं ते माटे ॥ ११ ॥

नमो नमो मुनिहो ॥ गनेहि वा दंतचक्रा इत्येव  
उति भागिजनं ॥ चबहुं ॥ त एव १२ कापते ॥ ९४ ॥  
यी ॥ २ ॥ हे शिष्यो आंगलियोए करिना ॥ २ ॥ आसर्प  
॥ ३ ॥ नाप करो ॥ ४ ॥ अथवा ॥ ५ ॥ ते सर्पना ॥ ६ ॥ दांतना  
नक प्रतो ॥ ७ ॥ आगणो एवि रिते गुरु महाराजे कहे सते  
शिष्यो जेतो ॥ ८ ॥ तहतिए प्रकारे बोलीने ॥ ९ ॥ ते गुरु  
राजना वचन प्रते करवाने इच्छेछे अने मननां एन  
रिछेने ॥ १० ॥ कारज तो ॥ ११ ॥ ते गुरु महाराज ॥ १२ ॥  
ता ॥ १३ ॥ जाखेछे ते नाटे जळा शिष्योये गुरु महारा  
वचन करवाने वोखेंव न करवो ए भावा ॥ १४ ॥  
कारणाविषय कथाई ॥ १५ ॥ तेदं कायं वंदेते आयारिया ॥  
तं नृह ॥ १६ ॥ हिंदुई ॥ १७ ॥ मदीइ ॥ १८ ॥ कारणेज ॥ १९ ॥ तही ॥ २० ॥  
यी ॥ २१ ॥ कारणनाजाण एहवा ॥ २२ ॥ आचारज महारा  
॥ २३ ॥ कोडेक अवतरे ॥ २४ ॥ कागडा प्रते ॥ २५ ॥ उजलोछे  
॥ २६ ॥ एन बोलेछो ॥ २७ ॥ ते गुरुना वचन प्रतो ॥ २८ ॥ ते प्रका  
॥ २९ ॥ लइहवुं एटले मानवुं ॥ ३० ॥ ते ठेकाणे ॥ ३१ ॥  
रण विप्रेने करीने ॥ ३२ ॥ यवा जोखेछे एटले कारण  
ना आचारज महाराज नहिज बोले एन विचारवुं ॥ ३३ ॥  
जे ॥ निन्द ॥ गुरुवर्य ॥ भक्त ॥ भक्त ॥ विद्वान् ॥ उत्त  
हिन ॥ विद्वान् ॥ भक्त ॥ भक्त ॥ सुहृद् ॥ हेइ ॥ ३४ ॥



अर्थ॥१॥जावे करिने॥२॥विरुद्ध मनछे जेहनुं ।  
 ॥३॥जे शिष्य॥४॥केहेवामाडेलुं एहवुं॥५॥गुरु महाराज  
 वचन ते प्रते॥६॥अंगिकार करेछे॥७॥ते गुरु महाराज  
 जनुं वचन॥८॥औपधनी पठमा॥९॥पीवा मांड  
 ते शिष्यने॥१०॥सुखनु आवहन करनार एहवुं॥  
 थायछे आ शब्दार्थनो उडी रीते विचार करवो॥११॥

अणुवत्तगा<sup>१</sup> विणिया<sup>२</sup>॥बहुस्वमा<sup>३</sup> निचभस्तिमंता<sup>४</sup> य<sup>५</sup>॥गुरु  
 कुलवासी<sup>६</sup> अमुई<sup>७</sup>॥धन्ना<sup>८</sup> सीसा<sup>९</sup> इह<sup>१०</sup> सुसीला<sup>११</sup>॥

अर्थ॥१॥गुरु महाराजना वचन प्रमाणे चालता  
 वा॥२॥द्रव्यजाव वे प्रकारे विनय सहित एहवा  
 बहु क्षमावंत एहवा॥४॥निरंतर नक्तिवंत एहवा  
 वली॥६॥गुरु महाराजनी समीपे रेहेता पण  
 इच्छायेन चालता एहवा॥७॥ज्ञानादीक कारण  
 थये सते पण गुरुना समीपपणा प्रते नमुंकता  
 ॥८॥जला आचारवंत एहवा॥९॥आजगतने विपे  
 जे शिष्यछे॥१०॥ते धन्यछे; ते माटे आत्मार्थी  
 एहवोज गुणअंगिकार करवो एपरमार्थ॥११॥

मविंतस्स<sup>१</sup> इह<sup>२</sup> जसो<sup>३</sup> कीत्ति<sup>४</sup> य<sup>५</sup> मयस्स<sup>६</sup> परभवेधम्मो<sup>७</sup>॥३०॥  
 य<sup>८</sup> निगुणस्स<sup>९</sup> य<sup>१०</sup>॥अयसो<sup>११</sup> कीत्ति<sup>१२</sup> अहम्मो<sup>१३</sup> य<sup>१४</sup>॥

यो॥शा॥मजो गुणवंत एहवो जे॥शाजीवतो जे पुरु  
हन्तो॥शा॥लोकोने विषो॥शा॥जस्तत्रने॥शा॥वली॥६॥  
ते थायछे॥शा॥त्रने मरण पान्यो एहवो जे गुणवंत पु  
तेहने परनवने विषो॥आ॥धर्म निप्पन्न थायछे॥शा॥त्रने  
तो॥१॥गुणरहित एहवो जे पुरुषा॥१॥आ॥लोकोने  
अपजस्ता॥२॥त्रने वली॥३॥अ॥कीर्ति पानेछे॥१॥४॥  
तो॥१॥५॥परनवने विषे अ॥धर्म थायछे॥ते नाटे गुण  
नस करवो ए उपदेशा॥१॥८॥

हुहुवाले विषे अ॥धर्म निप्पन्न थायछे॥ते नाटे गुण

नस करवो ए उपदेशा॥१॥८॥

यो॥शा॥वृद्धा अवस्थाने विषे पण चाखवाना अस्त  
करीने विषिपूर्वक एक क्षेत्रने विषो॥२॥रहेछा ए  
॥शा॥अथवा॥शा॥निंदवाड सहित एहवा॥५॥गुरु ना  
ज प्रते॥६॥द्वन्द्वाना शिष्यनी पठना॥आ॥ने परा  
करेछे एदछे अवगणना करेछे॥आ॥धर्म विचारवे क  
॥शा॥ने पला॥३॥कुवेचिते एदछे नाहुं आवरणछे ना  
रु नाहाराजनी हीछना न करवो एहीन धर्मछे॥१॥९॥

अ॥धर्म निप्पन्न थायछे॥ते नाटे गुण

नस करवो ए उपदेशा॥१॥८॥

अर्थ॥१॥ सुनक्षत्र नामे मोटा रुपिना सरखो॥  
 चार्ज उपर जाकिराग एटले अभ्यंतर स्नेह॥३॥  
 कोइने नथी॥४॥ नीश्वे॥५॥ जेणे जीवीत॥६॥  
 रघु पण॥७॥ गुरु महाराजनो पराजव एटले  
 करयो जेतिरस्कारा॥८॥ नहीज॥९॥ सहन करयो॥१०॥

पुन्नेहिं चोइआ पुरकडेहिं॥१॥ सिरिभायणं भविअसत्ता  
 गुरु भागमेसि भदा देवयामिव पद्मवासंति॥१०॥१०॥

अर्थ॥१॥ पुरवजवने विपे करेलां एहवां॥२॥  
 तेमणे॥३॥ प्रेरणा कर्या एटले शुभ पुण्यना  
 एहवा॥४॥ लक्ष्मीनुजाजन एटले लक्ष्मीवंत  
 आगामिकालने विपे॥५॥ छे कल्याण ते जेमेने  
 ॥७॥ जठ्य प्राणीयो॥८॥ पोताना धर्माचारज  
 देवनी पठमा॥१०॥ सेवा करेछे एटले जेम देव  
 करीए तेम गुरुनी सेवा करीए ए उपदेश॥१०॥

बहुमुखसयसहस्साण॥१॥ दायगा मो भगा दुहसयाणं  
 आयारिया फुड भेअं॥१॥ केसि एणसि अ॥१॥ तेहेऊ॥१॥

अर्थ॥१॥ घणा लखो गमे सुखना॥२॥ दातार  
 ॥३॥ सडकडो गमे दुख थकी॥४॥ मुकावनारा  
 आचारज माहाराजाछे॥५॥ ए वात ॥

नथी॥८॥जेम प्रदेसि राजाने॥९॥केसि कुमार  
रज महाराज॥१०॥ते सुखना कारणिक थया ते  
॥नीश्वे॥१०२॥

यगइगमणषडिहथएकए॥तह<sup>१</sup>एसिणा<sup>२</sup>रन्ना<sup>३</sup>॥

मरविमाणं<sup>४</sup>पत्तं<sup>५</sup>तं<sup>६</sup>आयरियप्पभावेणं<sup>७</sup>॥१०३॥

॥१॥तेमज॥२॥॥३॥प्रदेसि राजा जे तेणे॥४॥

गतिने विपे गमन एटले जवुंतेने विपे पस्तानुं  
सते एटले जवानीतइयारीकरये सते॥५॥जे अमर  
न॥६॥पांम्यु एटले प्रदेशी राजा देवलोक गया॥

॥८॥आचारज महाराजना प्रजावेकरीने॥१०३॥

म्ममइएहिं<sup>१</sup>अइ सुंदरेहिं<sup>२</sup>॥कारणगुणोवणीएहिं<sup>३</sup>॥

हायंतो<sup>४</sup>य<sup>५</sup>मणं<sup>६</sup>सीसं<sup>७</sup>चोएइ<sup>८</sup>आयरिउ<sup>९</sup>॥१०४॥

॥१॥हितना वंछक एहवा आचारज महाराज जे

॥धर्म सहित एहवो॥३॥अति शुंदर एटले दोष

एहवा॥४॥ज्ञान दर्शन चारित्ररूप जे कारण ते

जे गुण तेहणे करिने सहित एहवां वचनोए करि

॥शिष्यना मन प्रते॥६॥आनंद उपजावता सता

शीष्य प्रते॥८॥शिखांमण देछे॥९॥नीश्वे॥१०४॥

॥काऊण<sup>१</sup>पणं<sup>२</sup>॥तुरमाणि<sup>३</sup>दत्तस्स<sup>४</sup>कालिअब्जेण<sup>५</sup>॥अवि



॥१॥साधु मुनीराज जे ते॥२॥दीनपणुं, रुदन क  
एगार, हाव जाव, राजादीकनो नय अने जीवितनु  
हरनार एटलांवानां एकरीने एटले अनुकुल प्रति  
उपसर्गो ए करीने॥३॥वली॥४॥कदाचीत जीवित  
ग करेछे॥५॥पण॥६॥पोताना व्रत प्रते॥७॥नहिज  
वेराधे एटले खंडित करे॥१०७॥

हेय<sup>१</sup>मायरंतो<sup>२</sup>॥अणुमोअंतो<sup>३</sup>अ<sup>४</sup>सुगइ<sup>५</sup>लहइ<sup>६</sup>॥रह  
दाणअणुमोअगे॥मिगो<sup>७</sup>जह<sup>८</sup>य<sup>९</sup>वलदेवो<sup>१०</sup>॥१०८॥

॥१॥आत्माने हितकारी एहवा तप संजम प्रते  
राचरतो सतो एहवो॥३॥वली॥४॥दानादीक घ  
ने अनुमोदना करतो सतो एहवो जे पुरुषा॥५॥ज  
ति प्रते॥६॥पांमे॥७॥जेमा॥८॥मुनिने दाननो दे  
एहवो सुतार अने दाननी अनुमोदना करनार ए  
॥९॥मृगलो॥१०॥वली॥११॥वलदेव नामा मुनी  
गे जण पांचमे देवलोके गया तेम धर्म कर्यो क  
ने अने अनुमोदना कर्यो सतो बहु फल आप  
थायछे ए जावा॥१०८॥

कयं<sup>१</sup>पुण<sup>२</sup>पूरणेन<sup>३</sup>॥अइदूकरं<sup>४</sup>चिरकालं<sup>५</sup>॥जइ<sup>६</sup>तं<sup>७</sup>  
रो<sup>८</sup>इह<sup>९</sup>॥करितु<sup>१०</sup>तो<sup>११</sup>सफल्यं<sup>१२</sup>हुंतं<sup>१३</sup>॥१०९॥

पोताने विशे साधुपणुं मांनेछे ते असंजत जाण  
ले पाप साधु जाणवा॥११२॥

घोबो विगिहिसंगो॥ नइणो सुदुस्स पंक मावहइ  
सो नारत्तिरिसि॥ हसीउ पज्जोयनरनयणा॥१  
अर्थ॥१॥ शुद्ध एहवा॥२॥ मुनिराज महाराजने  
डोया॥३॥ पणा॥४॥ ग्रहस्थनो प्रसंग जे ते  
फादय प्रते॥ ७॥ वहन करेछे॥ ८॥ जेम॥ ९ चंड  
राजा जे तेंणे॥ १०॥ ते॥ ११॥ वार्त्तिक नामा रिसि  
॥१२॥ हस्या एटले वार्त्तिकनामा रुपीनी चंड  
रानाए जेम हांसी करी केहे नैमीत्तिक तमने बंद  
छुं ए प्रकारे हांसी करी ते माटे थोडोशोय ग्रह  
प्रसंग हतो त्यारे हांसी थइ ते माटे मुनीराज  
ग्रहस्थनीनो प्रसंग त्यागवा जोग्यछे ए उपदेश॥

सम्भावो वीसंभो॥ नेहो रद्वयरो मुवइणो॥  
सयगयर संभारो॥ तवसीलवयाइ फेडिजा॥११४॥  
अर्थ॥१॥ स्त्रीयोनी आगल छांनी वार्त्तानु के  
स्त्रीयोनी वीस्वास राखवो॥३॥ स्त्रीयोनी साथे  
खवो॥४॥ स्त्रीयोनी आगला॥५॥ काम कथानु  
सग्नन कुटुंब घर तेमनु बारवार संचारवुं एटलां

१॥ तपसील व्रतादीक प्रते॥८॥ नास करेछे ते माटे  
राग द्रष्टीए करीने मुनीराजने स्त्री तथा घर कुटुंब  
पर राग करवो नहि॥११४॥

जोइसनिमित्तअखखर॥कोउआएसभूइकम्मोहिं१॥करणा  
णुमोअणाहि१अ१॥साहुस्स१तवखउ१होई१॥११५॥

अर्थ॥१॥जोतिपशास्त्रनुकेहवुं,होरादिकनिमित्तनुकेहवुं,  
क्षर अनुजोगनु केहवुं एटले मंत्रादीकनु केहवुं,कौतु  
एटले समस्यादिकनु केहवुं, आदेश एटले फलांणी  
त फलांणे दीवशे थशेए प्रकारे केहवुंअने भूतीकर्म  
एटले मंत्रेली रक्षादीकनु आपवुं एटलां वांनांए करीने  
१॥वली॥३॥एटलां वांनांना करनारनी अनुमोदनाक  
वे करीने॥४॥साधु मुनीराजना॥५॥तपनो क्षय एटले  
१॥६॥थायछे ते माटे पूर्वे कहेलां पदार्थ मनाववा  
जाववानी इच्छाए करीने करवां कराववां अनुमोद  
घटीत नथी॥११५॥

तह२१कीरइ१संगो१॥तह२१पसरो१खणे२१होई१॥धोवो  
वे१होई११वहुउ१॥नय११लहइ११धिइं११निरुंभंतो१॥११६॥

अर्थ॥१॥जेम जेम॥२॥ग्रहस्थादीकनो संग एटले सं  
१॥३॥करीए छीए एटले जेम जेम साधुमुनीराज अ



हस्थनो संग करेछे॥४॥तेम तेमा॥५॥ते क्षण लपने।  
 ॥६॥विस्तारा॥७॥पांमेछे॥८॥थोडोय पणग्रहस्थन  
 वंध॥९॥घणो॥१०॥थायछे॥११॥ग्रहस्थनो जे संव  
 रनारो जे साधु ते गुरु महाराजे उपदेश करीनेरो  
 सतो॥१२॥धिरज एटले संतोष प्रते॥१३॥नहिजा  
 पांमेतेमाटेसाधुजेतेंणे ग्रहस्थनो संबंधनकरवो॥१४॥

सो१चयइ१उत्तरगुणे मूलगुणेवि१अचिरेण१सो१चयइ१॥  
 २१कुणइ१॥पमाय१पिल्लि१॥३१तह११कसाएहि१॥११॥

अर्थ॥१॥जे साधु॥२॥उत्तर गुणो प्रते एटले पि  
 शुध्यादिक गुणों प्रते॥३॥त्याग करेछे॥४॥ते साधु  
 मूलगुणों प्रते एटले प्राणातिपात विरमणादिक  
 महाव्रतादिक प्रते पणा॥५॥शीघ्र एटले जलदि॥६॥  
 ग करे एटले छांडे॥७॥जेम जेमा॥८॥प्रमाद प्रते॥  
 करेछे॥९॥तेम तेमा॥१०॥कपाय जे तेंमणे॥११॥  
 ए छीए एटले प्रमादना करनार साधु प्रते कपा  
 ते पीडेछे एटले कपाय थायछे ते माटे साधु जे  
 श्रहारादिकने विशेष दोष लगाडवो नहि॥१२॥

सो१निच्छण१गिणइ१॥देहद्याए१वि१नय१धिइ१मुअइ१सो  
 माहेइ१॥मकन१॥३॥तह११चंदवडि१॥राया१॥११॥

अर्थ॥१॥जे साधु॥२॥निश्चय करिने एटले स्थिरताए  
रेंने॥३॥व्रत प्रते ग्रहण करेछे॥४॥ते साधु॥५॥देहनो  
ग थये सते॥६॥पिण॥७॥धीरज प्रते॥८॥नहिज॥९॥  
ते अने॥१०॥पोताना कारज प्रते॥११॥साधेछे॥१२॥  
॥१३॥चंद्रावतंसका॥१४॥राजा एटले चंद्रावतंसक  
जा जे तेंणे ग्रहण करयो एहवो जे अग्निग्रह न मुंक्यो  
न बिजाये पण एम वर्तवुं॥१५॥

जीउण्हरवुपिवासं॥ दुस्तिज्जपरिचहं किलेसं च॥ जो सह  
तस्स धम्मो॥ जो धिइमं सो तवं चरइ॥१॥१२॥  
अर्थ॥१॥जे साधु॥२॥शीत, उष्ण अने क्षुधापिसासादिक  
ते॥३॥बली॥४॥दुष्टसय्या, त्रण संस्तारक रूप परीस  
प्रते॥५॥अने लोचादिक कष्ट प्रते॥६॥समताए करिने  
हन करेछे॥७॥ते साधुने॥८॥धर्म निष्पन्न थायछे॥९॥  
साधु॥१०॥निश्चल चित्तवालो होयछे॥११॥ते सा  
॥१२॥तप प्रते॥१३॥आचरेछे॥१४॥

धम्ममिणं जाणंतां॥ गिहिणो विद्वद्दया किमु असाहु॥  
मल्लमेलहरणे॥ सागरचंदेण इत्थु वमा॥१॥१२॥  
अर्थ॥१॥आ जिनराजे कहेलो एहवो॥२॥धर्म प्रते॥३॥  
णिता सता एहवा॥४॥श्रावक जेते॥५॥पण॥६॥द्रढ

व्रतवाला एटले व्रत धारण करवाने विशे ५७  
 होयछे॥७॥वली॥८॥क्यम॥९॥साधू मुनीराज जे  
 ढ व्रतवाला न होय अपितु होयज॥१

नामनी कन्या तेहना संबंधने विषे॥११॥इहां॥१२  
 रचंद्रनामाकुमारनी॥१३॥उपमा एटले दृष्टांतछे॥१४

देवोहिं<sup>१</sup>कामदेवो<sup>२</sup>॥गिही<sup>३</sup>वि<sup>४</sup>नय<sup>५</sup>चालिउ<sup>६</sup>तवगुणेहिं<sup>७</sup>  
 ॥मत्तगदं<sup>८</sup>दभुयंगम॥रखसघोर<sup>९</sup>दहासेहिं<sup>१०</sup>॥१२१॥

अर्थ॥१॥काम देव नामा॥२॥आवक जे ते॥३॥  
 ॥४॥देवता जे तेंमणे॥५॥मदोन्मत्त गजेंद्र, सर्प,  
 तेमना जयंकर अट्टहास एटले घणुं हसवुं तें  
 रीने॥६॥तपरूपगुणोथकि॥७॥नहिज॥८  
 माटे व्रतने विशे दृढपणुं करवुं ए श्रेयछे॥१२१॥

भोगेअ<sup>१</sup>भुंजमाणा<sup>२</sup>वि<sup>३</sup>॥किइ<sup>४</sup>मोहा<sup>५</sup>पडंति<sup>६</sup>अहा<sup>७</sup>गदं<sup>८</sup>॥  
 कुविठ<sup>९</sup>आहारथी<sup>१०</sup>॥नत्ताइ<sup>११</sup>जणस्स<sup>१२</sup>दमगव<sup>१३</sup>॥१२२॥

अर्थ॥१॥केटलाएक पुरुष॥२॥जोगी प्रते॥३॥  
 गवता सता॥४॥पण मनने विशे जोगीनी इच्छा  
 ता सता॥५॥मोहयकी एटले अज्ञानथकी॥६॥  
 तिने विशे॥७॥पडेछे॥८॥आहारनो अरथी जीवु  
 दुमक जेम ॥९॥जात्राने विशे गयेलो एहवो॥१०॥

तेनी उपरा॥१२॥कोप्योजेम ते द्रुमक मनने विशे  
न चितववै करीने दुरगति रूप फल पांम्यो ते  
त्मां दुरध्यांन करवाथकी बीजो पण दुर्गती पां  
५ जाव॥१२२॥

उपसहस्सदुल्लहे॥जाइतरामरणसागरुत्तारे॥जिण  
मि॥गुणापर॥खणमावे॥माकाहिसि॥पमायं॥१२३॥

र्थ॥१॥हे गुणना समुद्र॥२॥लस्खो गमे जवने  
दुर्लेज एहवुं॥३॥जन्म जरा अने मरण रूप समु  
ही पार उतारनार एहवुं॥४॥जिनराजनुं वचन सते  
तणमात्र पण॥६॥प्रमाद प्रते॥७॥मकरिस एटले  
इ त्याग करिने जिनराजनुं वचन आराधवुं॥१२३॥

लहइ॥समस्तं॥लदूण॥वि॥मं॥न॥एइ॥संवेगं॥विसय  
१५॥१२४॥सो॥दोसो॥रागदोसाणं॥१५॥१२४॥

प्रर्थ ॥३॥आ जीव जे ॥२॥ समकित प्रते ॥३॥  
॥४॥ पांमतो ॥५॥ अने पांमीने ॥६॥ पण ॥७॥

८॥ वैराग्य प्रते ॥९॥ नयी ॥१०॥ पांमतो॥११॥  
बली॥१२॥कांन भोगादिक विषयोने विषे॥१३॥

छे एटले आसक्त थायछे ॥१४॥ ते ॥१५॥ दोष  
॥१॥ राग द्वेषनोछे ते माटे दोषनु कारण एहवा जे

राग द्वेप ते त्यागवा जोग्यछे ॥१२४॥

तो बहुगुणनासाणं ॥ समस्तचरित्तगुणविनासाणं

नहु वस मागंतवं ॥ रागदोसाणपावार्णं ॥ १२५

अर्थ ॥१॥ ते कारण माटे ॥२॥ घणा गु

करनार एहवा ॥३॥ सम्यक्त्व एटले शुद्ध श्रदां

रित्र एटले पांच आश्रवनु रोकवुं ते रूप

उत्तर गुण तेमनोविनाश करनारा ॥६५॥

रूप जे पाप तेंमने ॥५॥ नहि ॥६॥ निश्चिं ॥७॥ वश

यवुं एटले राग द्वेपने वस्यनहिज ॥ ६५ ॥ १२५

नवि तं कुणइ अभित्तो ॥ मुटुवि मुविराहि

ट समथो वि ॥ तं दोवि ॥ अणिग्गाहिया ॥

॥ करंनि ॥ रागो ॥ य ॥ दोसो ॥ अ ॥ १२६ ॥

अर्थ ॥१॥ अतिशय करिने ॥२॥ विराध्यो एटले

माध्यो एहवो ॥३॥ समर्थ एहवो ॥४॥ पण ॥५॥ श

अनर्थ प्रते ॥७॥ नहिज ॥८॥ करे ॥९॥ न निग्रह

टले न रोकेला एहवा ॥१०॥ वे जण पण ॥११॥

र्थ प्रते ॥१२॥ करेछे ते वे कोण ॥१३॥ एक तो रा

वली ॥१४॥ बीजो द्वेप एतावता एटले आ के

न्युं कहुं ते केहेछे वीराघना करचो एहवो ॥

नवनु मरण आपेछे अने राग द्वेशतो अनंता ज  
नरा अने मरण प्रते आपेछे ते माटे रांग द्वेप त्या  
जोग्यछे॥१६॥पाद पूर्ण॥१२६॥

हलोए<sup>१</sup>आयासं<sup>२</sup>अजसं<sup>३</sup>करंति<sup>४</sup>गुणविणासं<sup>५</sup>च<sup>६</sup>॥

सवंति<sup>१</sup>परलोए<sup>२</sup>॥सारीरमणे<sup>३</sup>गएदुखे<sup>४</sup>॥१२७॥

र्थ॥१॥आ॥२॥लोकने विशे राग द्वेपजेते॥३॥शरिर

मन संबंधि क्लेश प्रतेअने॥४॥अपजस प्रतेअने॥५॥

॥६॥ज्ञानदर्शनचारित्रादिकगुणोनोविनाश प्रते॥७॥

छे॥८॥परलोकने विशे॥९॥सरीर अने मन संबंधि

॥दुःखो प्रते॥१०॥उत्पन्न करेछे ते माटे राग द्वेप

र्थनाज करनारछे॥१२७॥

ढी<sup>१</sup>अहो<sup>२</sup>अकब्जं<sup>३</sup>॥जं<sup>४</sup>जाणंतो<sup>५</sup>वि<sup>६</sup>॥रागदोसेहिं<sup>७</sup>॥फल<sup>८</sup>

इलं<sup>९</sup>कडुअरसं<sup>१०</sup>॥तं<sup>११</sup>चेव<sup>१२</sup>निसेवए<sup>१३</sup>नीवो<sup>१४</sup>॥१२८॥

र्थ॥१॥अहो इति आश्चर्जनी वारताछे ॥२॥आ जी

द्विकार द्विकार पडो॥३॥जे कारण माटे॥४॥राग

करिने उत्पन्न थयुं एहवुं जे॥५॥अकारज प्रते अने व

॥६॥अतुलएटलेविस्तारवंतएहवुं अने॥७॥कडवो

छेजेहनो एहवुं॥८॥राग द्वेपनुं जे फल ते प्रते॥९॥

गतो सतो॥१०॥पण॥११॥॥१२॥तेहिज राग द्वेपनु

फल जे अकार्ज ते प्रते अमृत रसनी ॥ १८ ॥  
संसारी जीव जे ते ॥ १९ ॥ अतिशये करिने सेवे  
टे आ जीवने दीकार दीकार पडो ॥ २० ॥

को १ ॥ दुख १ ॥ पाविज्जा ॥ ॥ कस्स १ ॥ वि १ ॥ सुखेहि १ ॥ वि

द्विउ १ ॥ दुख्जा १ ॥ को १ ॥ न १ ॥ वि १ ॥ लभिज्जा १ ॥

मुख १ ॥ रागदोसा १ ॥ न १ ॥ दुख्जा १ ॥ ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जो ॥ २ ॥ राग द्वेष जे ते ॥ ३ ॥ नही ॥ ४ ॥

कोण पुरुषा ॥ ५ ॥ दुख प्रते ॥ ६ ॥ आपांमत अपितु को

मत ॥ ७ ॥ कोण पुरुषने ॥ ८ ॥ निश्चे ॥ ९ ॥ सुखे करिने

आश्चर्य ॥ १० ॥ थात ॥ ११ ॥ कोण पुरुषा ॥ १२ ॥

हिज ॥ १३ ॥ मोक्ष प्रते ॥ १४ ॥ आपांमत ॥ १५ ॥

माणी १ ॥ गुरुण्डिणीउ १ ॥ अण्णभरिउ १ ॥ अमगचारिय १ ॥

मोह १ ॥ किलेसनाळ १ ॥ सो १ ॥ खाइ १ ॥ नहेव १ ॥ गोसालो १ ॥ ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जे शिष्य अहंकारी ॥ २ ॥ गुरुनो प्रत्य

टले गुरुनो अवर्णवाद बोलनारो एहवो ॥ ३ ॥

स्वजावे करिने अनर्थनो नरेलो ॥ ४ ॥ उत्सूत्रनी प्र

रूप उन्मार्गने विशे चालनारो एहवोछे ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ फोगट एटले निष्फला ॥ ७ ॥ मस्तक मुढाव

करवो, भुइ सुइ रेहेवुं, बीहार करवो इत्यादिक

समुह प्रते॥८॥नोगवेछे॥ए॥जेम॥१०॥गोशालो  
ट छेश सहन करतो हवो तेम॥१३०॥

हलहणकोहणसीलो॥१॥भंडणसीलो॥विवायसीलो॥५॥

जीवो॥निचुड्ढालिड॥१॥निरथयं॥संजनं॥चरइ॥१॥३१॥

थ्य॥१॥वुम पाडवी क्रोध ते वुम पाडवानो तथा क्रो

करवानोछे स्वप्नाव ते जेहनो एहवो॥२॥लाकडी मु

यादिके करीने जुद्ध करवानो स्वप्नावछे जेहनो ए

॥३॥वचने करीने विवाद करवानो स्वप्नावछे जेह

हवो॥४॥वली॥५॥निरंतर क्रोधरूपि अग्निचे क

लेलो एहवो जे॥६॥जीवा॥७॥संजन प्रते॥८॥

॥९॥आचरेछे ए कारण माटे क्रोध त्याग करीने

र अंगीकार करवुं केमजे क्रोधयकी चारित्र नास

॥१३१॥

वणद्वो॥वर्ण॥१॥दवदवस्ल॥बलिड॥खणेण॥निदहइ॥१॥

कलायसरिणड॥१॥जीवो॥१॥तपसंजनं॥१॥दहइ॥१॥३२॥

॥१॥जेन॥२॥धोडिसि वेलामां॥३॥देदिप्यमांन

एहवो॥४॥वनधकी उग्यो एहवो जे दावानल ते

॥५॥वन प्रते॥६॥शीघ्र एटले जलदी॥७॥अतिश

रीने बालेछे॥८॥ए प्रकारें॥९॥कयाए करिने सहित



एहवो जे॥१०॥जीवा॥११॥तप संजम प्रतो॥१२॥  
 तेमाटे समता एहिज चारित्र धर्मनू मूल जाणवो  
 परिणामवसेण पुणो॥१॥आहिउ॥ऊणयरडव॥हुत्त॥खउ॥  
 हवि॥ववहारमिसेण॥१॥भन्नइ॥१॥इमं॥१॥जहा॥पूछं॥१॥१॥२॥३॥  
 अर्थ॥१॥वली॥२॥तित्रमंद अध्यवसायना वस  
 ने एटले तीव्रकपायना परिणामे करीने अने मं  
 ना प्रणामे करीने॥३॥अधिक एहवो॥४॥अतिश  
 टले ओछो एहवो॥५॥तपसंजमनो नारा जेतो  
 छे एटले निश्चय नय मते करीने जेवा जेवा क  
 परिणाम थायछे ते ते प्रमाणे तपसंजमनो क्षय  
 एटले आकरो कपाय थाय तो तपसंजमनो  
 थाय अने थोडो कपाय थाय तो थोडो त  
 क्षय थाय ए रहस्या॥७॥तोय पण॥८॥व्यवहार  
 रीने॥९॥जेम॥१०॥आ तपसंजमनो क्षया॥११॥  
 होयछे तेमा॥१२॥कहिबे छीये एटले व्यवहारमा  
 ये कदिने तपसंजमनो क्षय थायछे एम सामान्य  
 रे केहेवमां आवेछो॥१३॥

फरुसनयाणेण॥दिणतवं॥१॥अहिखावंतो॥हणइ॥मासतवं॥१॥  
 सतवं॥सवइमाणो॥१॥हणइ॥हणंतो॥१॥अ॥सामन्नं॥१॥१॥२॥३॥

॥१॥कठोर वचन बोलवें करीने॥२॥एक दिवसना  
ते नाश करेछे॥३॥अतिशये क्रोधे करिने लोकोना  
कुलना मरम प्रते बोलतो सतो॥४॥एक मासना  
ति॥५॥क्षय करेछे॥६॥सराप देतो सतो एटले  
असुभ थइ जाओ एमबोलतो सतो॥७॥एक व  
तप प्रते॥८॥नाश करेछे॥९॥वली॥१०॥लाकडी  
दीके करीने परजीवनो घात करतो सतो॥११॥  
गणा प्रते नास करेछे. आ सर्व व्यवहारीक वचन  
वा॥१३४॥

१जीविअं १निकितइ १हंनूण १य संजमं १मलं १चिणइ १

वो १पनायबहुलो १परिभमइ १नेण १संसारे १॥१३५॥

॥१॥हवे प्रमादनु निर्गुणपणुंकेहेछे॥२॥प्रमाद छे  
ते जेने एटले प्रमादने वस्य पडेलो एहवो॥३॥एह  
वे जेते॥४॥प्रमादे करीने॥५॥संसारने विशेष॥६॥  
प्रमण करेछे॥७॥वली ते जीव शुं करेछे॥८॥सत्तर  
रे संजम प्रते॥९॥नाश करिने॥१०॥पापकर्म प्रते  
॥एकठुं करेछे एटले पुष्ट करेछे वली॥१२॥संजम  
त प्रते॥१३॥छेदन करेछे माटे प्रमाद त्याग कर  
श्रेयछे॥१३५॥

अक्रोशतद्वनतादणअवमाणहीलणाउ१यमुणिणो१  
मुणियंपरभवा१॥दढण्हारि१विसहंति॥१३६॥

अर्थ॥१॥जाण्या छे परभव ते जेमणे एहवा॥२॥  
महाराज जे ते॥३॥आक्रोश एटले सरापनुं देवुं, त  
ले निर्भृसानुं करवुं, ता॥६॥ एटले लाकडे दिके  
कुटवुं, अपमान एटले अनादरपणु, हीलना २८  
त्यादीकनुं उघाडवुं एटलां वानां प्रते॥४॥क्षमां  
ने सहन करछे॥५॥निश्चे॥६॥द्रढ प्रहारीनी ४०  
ले जेम द्रढ प्रहारी जे तेणे क्षमाये करीने स  
रयुं तेम बीजा प्राणीओये पण सहन करवुं॥

अह१माहउ१त्ति१नय१पडिहणंति१ ॥६॥ १३६

॥मारि१वंततावि१॥नद१॥६॥

अर्थ॥१॥मुनिरा

मारयो एटले

पण ते मारनार

निराज महाराज

रुप प्रते

कोइके मारव

सहन व

ल साधु जे तेणे समताए करीने जेम कष्टप्रते  
करचुं तेम बीजाए पण सहन करवुंए अर्थ॥१३७॥

गमुहकोदंडा॥१॥वयणसरापुवकम्मनिम्माया॥

१३७॥ते३न२लगा०॥स्वतिफलियंवहंताणं॥१२३८॥

॥१॥क्षमारूपी वकतर धारण करता एहवा॥२॥

मुनीराज जे तेमने॥३॥ते॥४॥प्रथम कर्मे करीने नि

करेला एहवा॥५॥दुर्जनना मुखरूपधनूपथकी नी

॥ एहवां वचनरूपीवांण॥६॥नही॥७॥लाग्यां१३८

॥१॥हउ१कीवो॥१॥पथरं१डकु१मिच्छई॥

॥रिउ१सरं१पप१॥सरुपत्ति१०विमग्गइ११॥१३९॥

॥१॥कुतरो जे ते॥२॥पथराए करीने॥३॥मारचो

॥४॥पथरा प्रते॥५॥करडवाने॥६॥इच्छेछे अने॥७॥

जे ते॥८॥वांण प्रते॥९॥पांमीने॥१०॥वांणनी उत्प

ते॥११॥विचारेछे के आ वांण क्यांथी आव्युं तेमज

मुनीराज जे ते पण दुर वचनरूप वांण पांमीने मारे

॥१॥कर्मे करीने उपार्जन करे लो एहवो आवचननो प्रहार

॥१॥घातछे ए प्रकारे विचारेछे पण वचनना बोलनार

॥१॥द्वेष नथी करता ए मुनीनु लक्षण जाणवुं॥१३९॥

तह१पुवि१किं१न१कयं१॥न१०वाहए११जेण१

मे० समथो ५ वि० ॥ इण्हि १३ किं १३ कस्स १४ वि० १६

कुप्पिमु १५ स्ति १० ॥ नीरा १८ अणुप्पिच्छ १९ ॥ १४० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ हे जिव तें ते प्रकारे ॥ २ ॥ पूर्व जवने ॥ ३ ॥  
क्येम सुकृता ॥ ४ ॥ नही ॥ ५ ॥ करयुं ॥ ६ ॥ जे सुकृतवडे  
॥ ७ ॥ मने ॥ ८ ॥ समर्थ एहवोय ॥ ९ ॥ पणा ॥ १० ॥ नही ॥  
पीड्या करत एटले हे जीव जो पूर्व जवने विपे  
करयुं होततो तने कोण पीडत ए जावा ॥ १२ ॥ हमणां  
आर्युं अने ॥ १४ ॥ १५ ॥ कोनि उपरा ॥ १६ ॥ कोप  
॥ १७ ॥ ए प्रकारे ॥ १८ ॥ धीर पुरुषा ॥ १९ ॥ विचारते  
पूर्व करेलां कर्म उदय आवेछे ते वखते परती  
कोप करवो ते फोगट छे एम विचारीने कोप  
करता ए रहस्य. ॥ १४० ॥

अणुराण १३ इस्सवि १ ॥ सियायवत्तं १५ पिया १४ धरावेइ १ ॥

तहवि १५ अ १५ खंदकुमारो १ ॥ न १५ धुणासेहिं १५ डिबधो १ ॥ १५

अर्थ ॥ १ ॥ जति थएलो एहवो पोतानो पुत्र तेनी  
रा ॥ २ ॥ पुत्रपणाना अनुरागे करीने एटले स्नेहे  
॥ ३ ॥ पिता जेते ॥ ४ ॥ सपेत छत्र प्रते ॥ ५ ॥ पोताना से  
नी पासे धरावे छे ॥ ६ ॥ तोयपणा ॥ ७ ॥ खंधक कुमा  
मुनी जे ते एहवो पोताना पीतानो स्नेह सते ॥

व रूप पासलाये करिने ॥१५॥ नहि ॥१६॥ बंधाया  
नाटे बीजाये पण कुटवना स्नेहने विशे न मुआववुं  
॥१७॥ निश्चो ॥१८॥

गुरु'गुरुतरो'अइगुरु'॥पियमाइअनद्यापयजणसेणेहो'॥

चित्तिइनापगुविलो'॥वत्तो'अइवम्मत्तिदिहिं'॥१९॥

यो ॥१॥ बहु अने ॥२॥ ते थकी घणो बहु अने ॥३॥ ते थकी

अतिशे बहु एहवो ॥४॥ विचारवा मांड्यो सतो घह

एटले अनंत जवनो कारण एहवो ॥५॥ पितानो, मा

नो, पुत्रादिकनो अने बल्लभ लोकनो स्नेह जे ते ॥६॥

तेशे सनस्त प्रकारे धर्मना वांचक पुरुषोये ॥७॥ त्याग

यो तेम बीजाये पण त्याग करवो ॥८॥

अनुणिअरनथाप'॥वंधुनपासेणेइइयरो'होइ'॥

अवगयसंसारसहाच'निच्छयाप'सने'हियय'॥९॥

मर्य ॥१॥ नथी जाण्या परमार्थ ते जेंमणे एहवा जे पु

तेनने ॥२॥ वंधुजननो जे स्नेह तेहनो जे व्यतिकर

ले संबंध जे तो ॥३॥ धायछे एटले अज्ञांनी जीवोने

वादिकना स्नेहे करिने बंधाववुं धायछे अने ॥४॥ जां

छे संसारना स्वरूपनो निश्चय ते जेंमणे एहवा जे

मिति पुरुषो तेननु ॥५॥ इहय एटले मन जे ते ॥६॥ समजाव

વાલું હોયછે એટલે શત્રુ મિત્ર ઉપર સરસું હોયછે ॥ ૧ ॥

માયા ૧ પિયા ૨ ય ૩ ભાયા ૪ ॥ મજ્જા ૫ પુત્તા ૬ સુહીય ૮ નિયમા ૯ ૧૦ ॥  
દહ ૧૧ ચેવ ૧૨ વહુ વિહા ૧૩ ॥ કરંતિ ૧૪ ભયવે મળ સાર ૧૫ ૧૬ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ આ સંસારને વિપે ॥ ૨ ॥ માતા ॥ ૩ ॥ પિતા  
વલી ॥ ૪ ॥ ભાઈ ॥ ૫ ॥ સ્ત્રી ॥ ૬ ॥ પુત્ર ॥ ૭ ॥ મિત્ર ॥ ૮ ॥ વલી  
પોતાના સંબંધી એ સર્વ ॥ ૧૧ ॥ વહુ પ્રકારના ॥ ૧૨ ॥  
નાદિક ભય, અને મન સંબંધી દુઃખ પ્રતે ॥ ૧૩ ॥  
આગલી ગાથાએ કરીને કેહેછે ॥ ૧૪ ॥ નિશ્ચે ॥ ૧૫ ॥

માયા ૧ નિયમ ૨ મહાવિગપિયંમિ ૩ ॥ અથે ૪ ય ૫ પૂરમાણંમિ ૬ ॥  
પૂત્તસ્સ ૭ કુળદ્વસણં ૮ ॥ ચુલણી ૯ જહ ૧૦ વંભદત્તસ્સ ૧૧ ૧૨ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ માતા જે તે ॥ ૨ ॥ પોતાની મતિયે કરી  
ધાર્યો એહવો જે અર્થ એટલે કારજ ॥ ૩ ॥ અપૂ  
સતે એટલે મને કરીને ચિંતવ્યું એહવું જે  
નિષ્પન્ન થઈ સતે ॥ ૪ ॥ પોતાના પુત્રને ॥ ૫ ॥ કષ્ટ પ્રતે  
રહે એટલે કષ્ટ પ્રતે પમાડે છે ॥ ૬ ॥ જેમ ॥ ૭ ॥ ત્રહ  
કર્વત્તિને ॥ ૮ ॥ ચુલણીનામા માતા જે તે અર્થ  
તો હવો ॥ ૯ ॥ વલી આગલી ગાથા મધ્યે પિ  
વંચ જણાવેછે. ॥ ૧૦ ॥

સંગોવંગાવેગતણાઓ ૧ ॥ નગડણાવેહેડણા ૨ ૩ ૪ ૫ ૬ ૭ ૮ ૯ ૧૦ ॥

सी<sup>१</sup>य<sup>२</sup>र<sup>३</sup>ज<sup>४</sup>ना<sup>५</sup>ति<sup>६</sup>सि<sup>७</sup>उ<sup>८</sup>॥ पुं<sup>९</sup>त्तो<sup>१०</sup>ण<sup>११</sup>पि<sup>१२</sup>या<sup>१३</sup>क<sup>१४</sup>ण<sup>१५</sup>य<sup>१६</sup>के<sup>१७</sup>उ<sup>१८</sup>॥ १४६॥  
 र्थ ॥ १॥ राजनी तृष्णा वालो एहवो॥ २॥ पिता॥ ३॥  
 क केतुराजा जे ते॥ ४॥ पोताना पुत्रोना॥ ५॥ सर्व अं  
 पांगनुं छेदन करतो हवो॥ ६॥ वली॥ ७॥ कदर्थनाओ  
 अने नाना प्रकारनी पीडाओ प्रते॥ ८॥ करतो हवो  
 नीश्चे ते माटे मातापितादिकनो जे स्नेह ते कृत्रि  
 एटले स्वार्थ सरे त्यांसुधी जाणवो॥ १४६॥

सयसुहरागवसड<sup>१</sup>॥ घोरो<sup>२</sup>भाया<sup>३</sup>वि<sup>४</sup>भायरं<sup>५</sup>हणइ<sup>६</sup>॥  
 तहविउ<sup>७</sup>वहथं<sup>८</sup>॥ जह<sup>९</sup>वाहुवलस्स<sup>१०</sup>भ<sup>११</sup>हवइ<sup>१२</sup>॥ १४७॥  
 र्थ॥ १॥ विषयसुखनो राग तेने वस्य थयो सतो एह  
 अने॥ २॥ जयंकरशस्त्र ग्रहणकरयांछे एहेतु माटे॥ ३॥  
 करवाने अर्थे॥ ४॥ सनमुख आव्यो एहवो॥ ५॥ भाइ  
 ते॥ ६॥ पिण॥ ७॥ जाइ प्रते॥ ८॥ हणेछे एटले मारेछे  
 ॥ जेमा॥ ९॥ वाहुवलजिनो वध करवाने अर्थे॥ ११॥  
 तचक्रवर्ति जे ते सन्मुख आव्या ते माटे जाइनो  
 ह पण तेमज कृत्रिम जाणवो॥ १४७॥

ज्जा<sup>१</sup>वि<sup>२</sup>इंद्रियविगार॥ दोसनाडिया<sup>३</sup>करेइ<sup>४</sup>पइयावं<sup>५</sup>॥  
 तह<sup>६</sup>सो<sup>७</sup>एसिराया<sup>८</sup>सूरियकंताइ<sup>९</sup>तह<sup>१०</sup>वाहिउ<sup>११</sup>॥ १४८॥  
 र्थ॥ १॥ इंद्रियोनो जे विकार तेहनो जे दोष तेंणेक



रीने पीडाइ सती एटले इंद्रियोना विषयने वत्स  
 सती एहवी॥२॥एम पोतानी स्त्री जे ते॥३॥  
 पोताना पतिनु जे पाप ॥४॥पोताना ॥५॥  
 प्रते॥६॥करेछे एटले विषयने लिधे पोताना ॥  
 मारी नांखेछे॥७॥जेमा॥८॥सूरिकंता जे स्त्री ते ॥  
 तेप्रकारे एटले विष देवादि प्रकारे करिने॥९॥  
 प्रदेसिराजा जेते॥१०॥हण्यो एटले मारि नांखे  
 राजानिराणी सरखी विषयने श्रर्थे नीच काम  
 नीच स्त्रीयोनु स्युं केहेवुं माटे स्त्रीनो स्नेह जुठोछे।

सासयसुखतरसी॥नियअंगसमुझवेण ॥वेयपुत्तो॥  
 बह॥सो॥सेणियराया॥कोणियरन्ना॥खयं॥नीउ॥१४॥  
 श्रर्थ॥१॥जेमा॥२॥मोक्ष सुखनो अजिलापि एहके  
 ॥३॥प्रसिद्ध एहवो॥४॥श्रेणिक राजा जे ते॥५॥  
 शरीरथकी उत्पन्न थएलो एहवो॥६॥छन पुत्र  
 ॥७॥कोणिक राजा जे तेंणे॥८॥क्षय प्रते॥९॥  
 एटले राज्यनी इच्छाए करीने कोणिक राजा जे  
 पोताना पीतानो क्षय कर्यो ए कारण माटे  
 स्नेहे करीने सरयुं॥१४९॥

हुडा॥सकजतुरिआ॥मुहिणोवि॥विसंवयति॥कयकजा॥

चंदगुप्तगुरुणा ॥ पद्मइउ ॥ घाइउ ॥ राया ॥ १५० ॥

॥ १ ॥ लोलपि एहवा ॥ २ ॥ पोतानुं कारजं करवाने  
वलीआ एहवा अने ॥ ३ ॥ करचुंछे पोतानुं कारज ते जेम  
एहवा जे पुरुष ते जे ते ॥ ४ ॥ मित्र प्रते पिण ॥ ५ ॥  
रित वोलेछे ॥ ६ ॥ जेमा ॥ ७ ॥ चंद्र गुप्त गुरु एटले चा  
न्य जे तेंणे ॥ ८ ॥ पर्वत नामा ॥ ९ ॥ राजा ॥ १० ॥ मारयो  
जे जेम राजनो लोलपि एहवो चाणाक्य जे तेंणे  
ननो मित्र एहवो पर्वतनामा राजा मारी नांख्यो तेम  
यायपण पोताना स्वारथने लीधे मीत्र प्रते मारी नांखे  
माटे संसारमां सो स्वारथनुं संगुंछे एम जाणवुं १५०  
॥ १ ॥ विनियय कब्जो ॥ २ ॥ विसंबयंतं मि ॥ ३ ॥ हुंति ॥ ४ ॥ खरफरसा ॥

॥ १ ॥ रामसुभूमकड ॥ २ ॥ ब्रंभखचत्त ॥ ३ ॥ आसि ॥ ४ ॥ खड ॥ ५ ॥ १५१ ॥

॥ १ ॥ ॥ २ ॥ पोताना संवंधि एहवाय पण पुरुषो  
॥ ३ ॥ पोतानुं कारज जे ते ॥ ४ ॥ न थये सते ॥ ५ ॥ रू  
करम करनारा एहवा अने कठोर वचनना वोलेना  
एहवा ॥ ६ ॥ थायछे ॥ ७ ॥ जेना ॥ ८ ॥ परसुरांम अने आठ  
सुभुमनाना चक्रवर्ति ते वे जणोए करयो एहवो  
ब्राह्मणनो अने क्षत्रियोनो ॥ ९ ॥ नाश एटले क्षय  
॥ १० ॥ होतो हवो एटले जेम परसुरांम अने सुभुम च

क्रवर्तिये पोताना स्वारथने अर्थे ब्राह्मणनो ॥  
 योनो क्षय करयो तेम बीजाए पण स्वारथने ॥  
 इ० जलुं बुरुं जोता नथी ए जावा ॥ १५१ ॥

कुलघरानिययसुहेसु१अ१॥सयणे१य१जणे१  
 अ१०नेच्छ॥मुणिवसहा॥विहरंति१अणिस्सा  
 ए०॥जह११अक्षमहागिरि११भयवं११॥१५२॥

अर्थ॥१॥महंत मुनि महाराज जे ते॥२॥कुटुंब  
 ताना संबंधि गांम देशथकी उत्पन्न थयुं जे  
 लांती मध्ये॥३॥बली॥४॥बंधु वर्गनी मध्ये॥  
 ॥६॥सामान्य लोकनी मध्ये॥७॥निश्चा रहित  
 कोइना पण आलंबन विना॥८॥निरंतर॥९॥वि  
 टले विहार करेछे॥१०॥नीश्चे॥११॥जेमा॥१२॥  
 त एहवा॥१३॥आर्जमाहागिरिनामा आचारज  
 विनाविचरता हवा तेम विजाए पण एम विच  
 स्वेण१मूत्रेण१य१॥कक्षाहिं१सुहेहिं१वरसिरि१य१॥  
 १८॥भंति१०सुविहिया१॥निदरसणं११जंजूनामोत्ति११॥१५३॥  
 अर्थ॥१॥सुविहित मुनिराज महाराज जे ते॥२॥  
 रिने॥३॥जवांनोपणे करीने गुणवांन एहवी॥४॥  
 ॥५॥श्रोए करीने॥६॥बली॥७॥संसारिक शुखे का

आं लक्ष्मीए करीने॥८॥वली॥९॥नहीजा॥१०॥लो  
य एटले लोचन प्रते न पांमे॥११॥इहां जंबूकुमार  
मा महा मुनिनुं ए प्रकारे॥१२॥द्रष्टांत जाणवुं एटले  
जंबूकुमारनामा मुनी जे ते कन्यादीके करीने न लो  
या तेम बीजाय जे मुनीछे तेन लोनाय ए जावा॥१५३॥

उत्तमकुलपसूया<sup>१</sup>॥रायकुलवाडिसगा<sup>२</sup>वि<sup>३</sup>मुणिवसहा<sup>४</sup>॥

महुजणजइसंघट्टं॥मेहकुमास्व<sup>५</sup>विसहंति॥१५४॥

प्रर्थ॥१॥उत्तम कुलने विपे उत्पन्न थएला एहवा॥२॥

नकुलने विपे मुगट समान एहवा॥३॥पिणा॥४॥मुनि

निमध्ये श्रेष्ठ एहवा मुनिराज जे ते॥५॥न्यारा न्या

कुलमां उत्पन्न थया एहवा घणा जतीजन एटले

धुजन तेमनु संघट्टं एटले पगनी ठोकरनु वागवुं ते

॥६॥विशेपे करीने समता सहित सहन करेछे॥७॥

कुमारनी पठमा॥१५४॥

अवरुणरसंवाहं<sup>१</sup>॥सुखं<sup>२</sup>तुच्छं<sup>३</sup>सरीरपीडा<sup>४</sup>य<sup>५</sup>॥सारण<sup>६</sup>

सारण<sup>७</sup>चोयण<sup>८</sup>॥गुरुजणआयत्तया<sup>९</sup>य<sup>१०</sup>गणे॥१५५॥

प्रर्थ॥१॥गच्छने विपे वस्तो एहवो जे साधु तेहने घ

गुण निरुपन्न थायछे ते कहिएछिए॥२॥परस्पर ए

मांहोमांहि संघट्टन एटले मिलवुं थाय॥३॥पोता

नी इच्छा परमाणे प्रवर्तवा रूप सुख जे ते  
 एहवुं थाय एटले इंद्रिय जनित सुख घणुज  
 या॥५॥वली॥६॥परीसहादीकनु सहन करवुं ॥  
 जारी आपवुं थाय एटले आ कांम तें न करवुं  
 ते संजारी आपवुं थाय॥८॥प्रमाद थकी ॥१०॥  
 ॥९॥धर्म कारजने विपे प्रेरवुं थाय॥१०॥वली॥  
 रु महाराजने आधिनपणु थाय एटले गुरु  
 आज्ञामां रेहेवुं थाय पूर्व कक्षां एटलां बांनां  
 मुनियोना समुदायरूप गच्छने विपे वसनार  
 थायछे ते माटेजिन आज्ञा सहित गच्छने विपे वसवुं

इकरस<sup>१</sup>कओ<sup>१</sup>धम्मो<sup>१</sup>॥सच्छंदगइंमइप्पयारस्स<sup>१</sup>॥किं<sup>१</sup>  
 वा<sup>१</sup>करेइ<sup>१</sup>इको<sup>१</sup>॥परिहरउं<sup>१</sup>कह<sup>१</sup>मकब्बं<sup>१</sup>वा<sup>१</sup>॥१५॥

अर्थ॥१॥स्वछंदपणे करीने गति एटले चालवुं  
 पेछे बुद्धिनो प्रचार ते जेंनो एटले स्वछंदपणे  
 रो एहवो अने॥२॥सुविहित मुनिना गछने छो  
 कलो रेहेतो एहवो जे साधु तेने॥३॥क्यांथकी  
 होय अपीतु न होया॥५॥अथवा॥६॥एकलो साधु  
 स्युं तपादिक प्रते॥८॥करे अपितु न करे ॥९॥  
 ॥१०॥सिरितो॥११॥अकारज प्रते॥१२॥

अपितु न थाय ते माटे गुरुनी समीपे रेहेवुं ॥६॥

ते सुतथागम ॥ पडिपुच्छणा ॥ चोयणा ॥ य ॥ इकस्स ॥

ओ ॥ वेयावच्च ॥ आराहण्या ॥ य ॥ मरणते ॥ ॥ १५७ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ एकलो रेहेतो एहवो जे साधु तेने ॥ २ ॥

अने अर्थ तेनी प्राप्ति ॥ ३ ॥ संदेहनु वली पुछनुं ॥

वली ॥ ५ ॥ प्रमादमां पडेलाने शिळानुं देवुं ॥ एटले

मणनु पामवुं ॥ ६ ॥ क्यांथी होय ॥ पुर्वे कहां एटलां

॥ एकला साधुने नाहिज संचवे ॥ ७ ॥ एकला साधुने

य क्यांथी होय ॥ ८ ॥ वेयावच्च क्यांथी होय, एटले

लो रेहेतो एहवो जे साधु विनय वेयावच कोनो

॥ ९ ॥ वली ॥ १० ॥ मरणने अवसरे ॥ ११ ॥ आरा

॥ क्यांथी होय, एटले एकला साधुने, आराधना

॥ करावें ते माटे, साधुना समुदायने विपे वसवुं ॥ १५७

॥ जिजे ॥ सुणामि ॥ हो ॥ ॥ पइ नमयानणाड ॥ निचभयं ॥ काडं

॥ वि ॥ अकच्चं ॥ ॥ न ॥ तरइ ॥ काऊण ॥ बहुमझे ॥ ॥ १५८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ उत्तम साधुना समुदायने छोडीने एकलो

तो एहवो जे साधु ॥ २ ॥ एपणा एटले हारादिकनी

हे प्रते ॥ ३ ॥ उलंघन करे एटले कदाचित् अशुद्ध

॥ रादिक प्रते ग्रहण करे ॥ ४ ॥ एकला साधुने एकली

ફરતી એહવીજે પ્રમદાઓ એટલે સ્ત્રીયો તે રૂપ જા  
લોક એટલે સ્ત્રી લોક તે થકી એટલે ફરતો એહવો  
કથકી ॥૫॥ નિરંતર જય હોય એટલે ઉપવાત હો  
અકાર્જ પ્રતે ॥૭॥ કરવાનુછે મન તે જેહનું એહવો  
પિણ ॥૯॥ ઘણા સાધુઓની મધ્યે રેહેતો સતો ॥૧૦॥  
જ કરવાને ॥૧૧॥ નહીં ॥૧૨॥ સામર્થ થાય એટલે  
ન કરી શકે એ માટે સ્ત્રીવર કલ્પીને ગછમાં રહે

ઉદ્ધારણ સવળવંત પિત્ત ॥ મુચ્છાદ મોહિઓ ૧૬૬ ૧

યણ વિહથો ૧ ॥ નિહિલ સ્વદ ૪ ૬ ૭ ૮ ૯ ૧૦ ૧૧ ૧૨ ૧૩ ૧૪ ૧૫ ૧૬ ૧૭ ૧૮ ૧૯ ૨૦ ૨૧ ૨૨ ૨૩ ૨૪ ૨૫ ૨૬ ૨૭ ૨૮ ૨૯ ૩૦ ૩૧ ૩૨ ૩૩ ૩૪ ૩૫ ૩૬ ૩૭ ૩૮ ૩૯ ૪૦ ૪૧ ૪૨ ૪૩ ૪૪ ૪૫ ૪૬ ૪૭ ૪૮ ૪૯ ૫૦ ૫૧ ૫૨ ૫૩ ૫૪ ૫૫ ૫૬ ૫૭ ૫૮ ૫૯ ૬૦ ૬૧ ૬૨ ૬૩ ૬૪ ૬૫ ૬૬ ૬૭ ૬૮ ૬૯ ૭૦ ૭૧ ૭૨ ૭૩ ૭૪ ૭૫ ૭૬ ૭૭ ૭૮ ૭૯ ૮૦ ૮૧ ૮૨ ૮૩ ૮૪ ૮૫ ૮૬ ૮૭ ૮૮ ૮૯ ૯૦ ૯૧ ૯૨ ૯૩ ૯૪ ૯૫ ૯૬ ૯૭ ૯૮ ૯૯ ૧૦૦

શ્રય ॥૧॥ ઠંડીલ એટલે વડીનીત, લઘુનીત, ૧૧  
મુર્છાદિકે કરિને મુજ્જાયો એહવો ॥૨॥ ૧૧  
જે જાજના તેણે કરીને વ્યગ્રછે હાથ તે જેહનો  
ણીએ કરીને જરેલું એહવું જે જાજન તેણે કરિને  
છે હાથ તે જેહનો એહવો ॥૩॥ એકલો સાધુ  
દિકને વિશે ફરતો સતો ॥૪॥ તે પાત્ર પ્રતે નાસી  
હાયમાંથી પડી જાય ત્યારે સંજમ વિર ધના પ્રતે  
શ્રને તે પાત્ર પડ્યા પછી જો ઠંડીલાદિક કરેતો  
શાસનની લઘુતા થાય તે કારણ માટે એકલા  
ઘણા જ દોષ નિષ્પન્ન થાય છે તે માટે એકલા ન રહે

कदिवसेण बहुया १॥ सुहाय्य असुहाय्य नीवपरिणामा २॥

को असुहापरिणओ १॥ चइडन १२ आलंबणं १० लब्धुं ११ ॥ १६० ॥

अर्थ ॥ १॥ एक दिवसनी मध्ये ॥ २॥ जीवना परिणाम

ले अध्यवसायना स्थानक ॥ ३॥ घणां ॥ ४॥ शुभ एटले

मा ॥ ५॥ वली ॥ ६॥ अशुभ एटले मध्यम थायछे ॥ ७॥

घि ॥ ८॥ अशुभ परिणामे करीने सहित एटले अशु

परिणामने विषे वर्ततो सतो एहवो जे ॥ ९॥ एकलो

धु ॥ १०॥ आलंबण एटले कारण प्रते ॥ ११॥ पांमीने

२॥ संजम प्रते त्याग करेछे एटले एकलो साधु कां

वाहानुं काढीने संजम प्रते वीराधे छे ॥ १६० ॥

हाजिणपडिकुडं १॥ अणवथा २ धेरकप्पमेउ ३ अ ४॥

को अ १० सुहाउत्तोवि १॥ हणइ १२ तवसंजम अइरा १॥ १६१ ॥

काकिपणुं सर्व तिर्थंकर महाराजाये निपेध कहयुंछे ते

एकाकि विहार करये सते ॥ २॥ अनवस्था एटले एके

धुं देपीने बीजो पण करे बीजानु देखीने बीजो पण

एवी रीते मर्जादानो जंग थाय ॥ ३॥ वली ॥ ४॥ स्थवीर

पनो जेद थाय एटले गच्छवासी साधुओना आचार

नाश थाय ॥ ५॥ जो पिण शुभ अध्यवसाय सहित एह

र पिण ॥ ६॥ एकलो साधु ॥ ७॥ शीघ्र एटले थोडा का



થણા એહવા જે તેમણે ॥ ૪ ॥ નયંકર  
સાર સમુદ્રને વિષે પરિભ્રમણ કરતો એહવો  
કુગુરુ એટલે પૂર્વજવના અંગારમર્દક આપ  
વ એહવો ॥ ૬ ॥ ભારે કરિને નરેલો એહવો ॥  
લો ॥ ૮ ॥ દેસ્યો અને દેસ્યા પછી મુકાબ્યો

સંસારવેચણા નવિગ્ગણંતિ ॥ સંસારસૂત્રા નીવા ॥  
સુમિગ્ગણ નવિલેકેદ ॥ બુદ્ધંતી પુષ્પચૂલા ૦ વા ૧ ॥ ૧ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ સંસારને વિશે મુંડસરીઆ સમાન  
સંસારને વિશે પાંચ ઇન્દ્રિયોના વિષય તેને વિશે  
આશક્ત એહવા ॥ ૨ ॥ જે જીવ તે જે તે ॥ ૩ ॥ સંસારને  
વિષયના જોગે કરિને જે ઠગાવું તે ૪ ॥  
ગણતા એટલે વિષય એજ સાર ગણેછે ૫ ॥ ૫ ॥  
ણતા જે પૂર્વજવનું વાંધેલું જે પુન્ય તે હારિ જ  
॥ ૬ ॥ કેટલા એક હલુઆ કર્મિ જે જીવ તે જે  
સ્વપ્રત્ને વિશે પાંચ્યુ એટલે દેસ્યું એહવું જે ન  
કનુ સ્વરૂપ તેણે કરિને ॥ ૮ ॥ પણ ॥ ૯ ॥ ત્રુણેછે  
તિવોધ પ્રતે પાંમેછે કોની પઠમા ॥ ૧૦ ॥ પુષ્પચુ  
॥ ૧૧ ॥ જેમ એટલે જેમ પુષ્પચુલાનામે રાણી  
ધ્યે નારકાદિક સ્વરૂપ પ્રતે દેસીને પ્રતિવોધ

म बीजाय पण उत्तम प्राणिनो थोडाशा वैराग्य  
रणे करीने प्रतिबोध पांमेछे ए उपदेश॥१७०॥

प्रविकलं तव संयमं च ११॥ साहू १ कारिद्र १ पच्छावि ३॥

यसुअव १२ सो १ नियग ॥ महु १ माचिरेण १ साहेइ १०॥ १७१॥

॥१॥ जे ॥ २॥ साधू ॥ ३॥ अंतकालने विशे पण ॥ ४॥ सं

एहवा ॥ ५॥ तप संयम प्रते-तप ते वार प्रकारे, सं

सतर प्रकारे ॥ ६॥ करे एटले पाले ॥ ७॥ ते साधू

पोताना अर्थ प्रते एटले परलोकना साधन प्रते

तोडा कालमां ॥ १०॥ साधेछे ॥ ११॥ निश्चे कोनी पठ

॥ १॥ अणिका पुत्र आचारजनी पठेमा ॥ १७१॥

१०॥ चयइ १ भोए १॥ चयइ १ नहा १ दुखिखड १ ति १ अलिय १०

चेकणकम्मोलित्तो ११॥ १३॥ इमो १३॥ इमो १०॥ पारिचयई १४॥ १७२

॥ १॥ जेमा ॥ २॥ दुखि पुरुष जे ते ॥ ३॥ नोगो प्रते ॥ ४॥

करेछे ॥ ५॥ तेम सुखि पुरुष जे ते नोगो प्रते ॥ ६॥

॥ ७॥ त्याग करतो ॥ ८॥ ए प्रकारे लोक बोलेछे ते

आ लोकनु वचना ॥ १०॥ जुठुंछे केम जुठुंछे ते केहेछे

चिकणा कर्मे करिने व्याप्त एहवो ॥ १२॥ आ दुखि

जे ते भोगो प्रते ॥ १३॥ नथी ॥ १४॥ त्याग करतो

॥ चिकणा कर्मे करीने सहित एहवो आ सुखि पु

रूप जे ते भोगो प्रते नथि त्याग करतो ए का  
 टे हलुआ कर्मिजे जीव दुखि होय अथवा सुखि हो  
 ये पण भोगो प्रते त्याग करवाने समर्थ थायछे॥१॥

जह<sup>१</sup>चयइ<sup>२</sup>चक्रवर्ती<sup>३</sup>॥पाविथरं<sup>४</sup>तत्तियं<sup>५</sup>मुहुत्तेण<sup>६</sup>॥न<sup>७</sup>

चयइ<sup>१</sup>तहा<sup>२</sup>अहन्नो<sup>३</sup>॥दुबुद्धी<sup>४</sup>खण्णरं<sup>५</sup>दुमगड<sup>६</sup>॥१॥

अर्थ॥१॥जेम एटले जे प्रकारे॥२॥चक्रवर्ति जे

मुहुत्त मात्रमां एटले क्षण मात्रमां॥४॥तेटलि

समस्त एहवि॥५॥विस्तारवंत एहवि जे लक्ष्मी

ते॥६॥त्याग करेछे॥७॥तेम एटले ते प्रकारे॥८॥

एटले पून्य रहित एहवों॥९॥दुबुद्धी एटले माळ

वालो एहवो॥१०॥दुमक एटले भीक्षु जे ते॥११॥

रं प्रते एटले पोताना खावाना ठीकरा प्रते॥१२॥

थी॥१३॥त्याग करता नीवीड कमें करीने सहै

हेतु माटे॥१७३॥

देहो<sup>१</sup>पिपीलियाहि<sup>२</sup>॥चिलाइपुत्तस्स<sup>३</sup>ता<sup>४</sup>चालणिव<sup>५</sup>कओ<sup>६</sup>

तगुओवि<sup>७</sup>मणपडसो<sup>८</sup>॥न<sup>९</sup>चालिउ<sup>१०</sup>तेण<sup>११</sup>ताणुवारं<sup>१२</sup>॥

अर्थ॥१॥किडियो जे तेमणियोए एटले किडि

चिलाति पुत्र नामे महामुनि जे तेमनु॥३॥शरीर

॥२॥जावत्ता॥५॥चालणिनी पठम एटले चालणि

तो॥७॥तोंएपण ते चेलाति पुत्र जे तेंणे॥८॥ते  
ति उपर ॥९॥ थोडोय पण॥१०॥ मनने विशे  
ते अंप्रीति मात्र पण॥११॥ना॥१२॥चलाव्यो ए  
उत्पन्न करयो॥१३॥

धविःपावं॥॥पिविलियाए॥वि१॥जे१॥न॥इच्छंति॥ते१॥  
इ१अपावा१॥पावाइं१॥करंति१॥अन्नस्व१॥॥१३॥५॥  
१॥जे॥२॥पाप कमें करीने रहीत एहवा॥३॥सा  
ज जे ते॥४॥पोताना प्राणनो नाश थये सते  
॥६॥किडियोनी उपर ॥७॥ पापकर्म प्रते॥८॥  
।वांछे एटले ते कीडियोनुं पण माठुं न इच्छे  
॥९॥ते साधु मुनिराज जे ते॥१०॥ कयम  
वेजानि उपरा॥११॥पापकर्म प्रते॥१२॥करे एट  
यनि उपर सर्वथा प्रकारे प्रतिकुल नहिज क  
टे आत्मार्थि पुरुषोये परजीवने पीड्या मात्र  
नाववी ए उपदेशा॥१३॥

इअपांडिआणं॥॥पाणहराणं॥पि॥पहरमाणाणं॥॥न१॥  
११य॥पानाइं॥॥गवस्स१फलं१वियाणंता१॥॥१३॥६॥

॥१॥पापना॥२॥फल एटले नरकादिक रूप वि  
प्रते॥३॥विशेषे करिनें जाणता सता एहवा सा

अर्थ॥१॥निरंतर॥२॥ ५ साहत ५ एला अने  
 हित एहवो अने॥३॥निरंतर॥४॥अशुच  
 एहवो॥५॥जीव जे ते वर्तेछे॥६॥एटलुं विशेष  
 अवकाश॥८॥पमाडिये एटले जो आत्माने  
 किये॥९॥त्यारे॥१०॥संसार समुद्रनी मध्ये  
 रुध तथा आगम वीरुद्ध एहवा कारजोने विप  
 विशय कशायादि रूप प्रमाद प्रते॥११॥माडे  
 रण माटे अनादि कालनो राग द्वेष सहित  
 जीव मोकलो मुक्यो सतो राग द्वेषना कारण  
 ने पोते ते रूप थायछे माटे आत्मार्थी पू  
 अवलंबन सेववूं एज सारछे॥१८६॥

अधियवंदियपूइया।सकारियणमिउमहग्धविउ'॥

તં'તહ'કરેઈ'જીવો'॥પા'ડેઈ'જહ'અપ્પણો'ઠાણ'॥૧

अर्थ॥१॥सुगंधादिके करीने अरचे लो एहवो अ  
 लोक जे तें मणे गुणनी स्तवना ए करीने वंदे लो ए  
 वे लो एहवो अने वस्त्रादिके कारिने पूजे लो एहवो  
 थवे करीने सत्कार करे लो एहवो अने आचारज  
 करीने मोहोटाइपणा अते पमाडे लो एहवो जे  
 अहंकारि थयो सतो॥३॥ते प्रमादादि रूप

॥ते प्रकारे॥५॥करेछे॥६॥जे प्रकारे॥७॥पोतानुं  
तेहोटाइपणारूप स्थानक प्रते॥९॥नास करेछे ए  
माटेजेजीवपूजावामनावादिकेकरिने अहंकारि  
ते जीव पूज्यपणाना स्थानक प्रते नाश करिने  
गतिनेविशेजायछेते माटे अहंकार नकरवो१८७

इयाए<sup>१</sup>जो<sup>१</sup>बहुफलाए<sup>२</sup>हंनूण<sup>३</sup>सुख<sup>४</sup>महिलसइ८॥

दुव्वलो<sup>५</sup>तवस्सी<sup>६</sup>कोडीए<sup>७</sup>कांगिणि<sup>८</sup>किणइ<sup>९</sup>॥१८८॥

॥१॥जे पूरुपा॥२॥धीरजे करिने एटले संतोपे क  
दुर्बल एटले असमर्थ एटले संतोप रहित एहवो  
तपसी एटले रांक थयो सतो॥४॥बहुछे स्वर्ग मो  
रूप फल ते जेमना थकि एहवा॥५॥जला आचा  
ने महाव्रतादिक प्रते ॥६॥हणीने एटले लोपिने  
विषय सुख प्रते॥८॥वांछेछे ते केवो न्यायकरेछे के  
कोटी मुल्य आपवे करीने॥१०॥एक रुपियानो ए  
नाग रूप कांगिणी प्रते॥११॥वेचार्थी लेछे एट  
रूप महाव्रतादि रूप कोटि मूल्ये करिने विषय  
रूप कांगिणी प्रते अंगीकार करेछे. विषय सुख  
महाव्रत तेवेनी मध्ये मोहोदो अंतरछे पण वालने  
भाववावास्तेआपूर्वकह्युंजे द्रष्टांत ते प्रकारेकरेछे

તે મૂરખ દજાનૂંકાંમ આચરેછે માટે શ્રેમ ન

તોરો<sup>૧</sup> જહામણસિયં<sup>૨</sup> ॥હિયદાચ્છિયપદ્ધિદાહિં<sup>૩</sup> મુલ્તો<sup>૪</sup>

તોમેડળ ન<sup>૫</sup> તોરદ<sup>૬</sup> ॥જાવજીવેણ<sup>૭</sup> સથેણ<sup>૮</sup> ॥૨૮૯॥

અર્થ ॥૧॥ આ સંસારિ જીવ જે તે ॥૨॥ જે પ્રકારે

મનને વિશે ચિંતવન કર્યાં એટલે મનને અનુજીવ

અને ૩ ॥ હિતકારી એહવાં, અને દુષ્ટેલાં એહવાં,

કરેલાં એહવાં ॥ ૪ ॥ સુખોયેં કરીને અને ॥ સમગ્ર ॥ ૫ ॥

એ કરીને પણ એટલે નિરંતર અનુજીવ્યાં ૬ ॥

મુલ્તે કરીને ॥ ૭ ॥ સંતોષ પામવાને ॥ ૮ ॥ નથી ॥ ૯ ॥

તો એટલે સુખ પ્રતે નથી પામતો ॥ ૧૦ ॥

મુમિગંનરાણુમ્યં<sup>૧</sup> ॥ મુમ્લ્યં<sup>૨</sup> સમડોધ્યં<sup>૩</sup> જહા<sup>૪</sup> નથિ<sup>૫</sup> ॥

અન<sup>૬</sup> મિમંસિ<sup>૭</sup> ધરંયં<sup>૮</sup> ॥ મુમ્લ્યં<sup>૯</sup> મુમિગોવમં<sup>૧૦</sup> જોરં<sup>૧૧</sup> ॥ ૨૯૦ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જેમા ॥ ૨ ॥ સ્વપ્નાંતરને વિશે એટલે

મધ્યે અનુજીવ્યુ એટલે જોગવ્યું એહવું જે ॥ ૩ ॥

જાગ્યા પછી ॥ ૪ ॥ નહાય એટલે નથી

આવતું ॥ ૫ ॥ પ્રકારે ॥ ૬ ॥ આ વિદ્યમાન એહવું

મુલ્ત ॥ ૭ ॥ અનિત થયું સતું એટલે જોગવાડ

॥ ૮ ॥ અન્વનની ઉપમા સરીતું ॥ ૯ ॥ આપણે એ

જોગવ્યું એહવું જે સુખ તે જોગવ્યા પછી

होयछे ए कारण माटे ते पुद्गलिक सुखने विशे  
र न करवो ए जाव॥१९०॥

नेदुमणे<sup>१</sup> जखलो<sup>२</sup> ॥ महुरामंगू<sup>३</sup> तहेवसुयनिहसो<sup>४</sup> ॥

इ<sup>५</sup> सुविहियजणं<sup>६</sup> ॥ विसूरइ<sup>७</sup> वहुं<sup>८</sup> च<sup>९</sup> हियएणं<sup>१०</sup> ॥ १९१ ॥

॥१॥ ते प्रकारेहीज एटले प्रसीद्ध एहवो सिद्धां  
कसोटी एटले बहू श्रुति एहवो॥२॥ मथुरा नगरी  
शे मंगु एहवे नामे आचारज रिद्धि गारव रस  
ने विशे लंपट थइने तिहांथी काल करीने॥३॥  
ना खालनि समिपे जक्षना प्रसादने विशे॥४॥

धयो सतो॥५॥ सुविहीत जन प्रते एटले पोताना  
ना समुह प्रते॥६॥ बोध करावेछे एटले जणावेछे॥७॥  
॥८॥ हृदये करीने॥९॥ बहु प्रकारे॥१०॥ मोच करेछे  
पश्चाताप करेछे ते आगलि गाथाए कहेछे१९१

तिण<sup>१</sup> घराओ<sup>२</sup> ॥ न<sup>३</sup> कउ<sup>४</sup> धम्मो<sup>५</sup> मण<sup>६</sup> जिणग्गवाओ<sup>७</sup> ॥

ससायगुरुत्तणेण<sup>८</sup> ॥ नय<sup>९</sup> चेइओ<sup>१०</sup> अण्णा<sup>११</sup> ॥ १९२ ॥

॥१॥ में जे तेणे एटले में॥२॥ घर थकि॥३॥ निक  
एटले चारित्र अंगिकार करीने॥४॥ रिद्धि एटले  
॥५॥ दिकने विशे ममत्व जाव, रस एटले मिठा आ  
दिकने विशे आशक्तिपणु, साता एटले सुहालि



संज्ञादिकनेविशे आशक्त ए <sup>१</sup>कल्यां ५०  
 सात्ता तेमने विशे गुरुपणाए करिने एटले  
 करिने॥५॥जिनराज महाराजे कह्यो एहवो॥६॥  
 ते॥७॥नही ॥८॥करयो अने॥९॥पोतानो आत्मा  
 नहीज॥१०॥चेताव्यो एटले सावधान करयो॥

उसन्नविहारेणं॥हा१जह१द्रोणंमि१आउए१सर्व१॥

किं११कहामि१२अहन्नो१संपद१सोयामि१०अ११११

अर्थ॥१॥हाइति खेदे॥२॥जे प्रकारे॥३॥चाहि  
 शे शिथिल विहारे करिने एटले सियलपणाए  
 ॥४॥सर्व॥५॥आउखुं॥६॥क्षयपणा प्रते पांम्बु  
 नाश थयुं॥७॥हमणां॥८॥अवन्य एटले नि  
 हवो सतो हुं॥९॥पोताना आत्मा प्रते ॥१०॥  
 रुंजुं जे॥११॥हुं स्युं॥१२॥करिइ एटले माहं  
 शे एहवि रिते मंगुनामा आचारजनो जयि  
 सतो पोताना शिष्योने जणावतो सतो सोच  
 टले पश्चात्ताप करेछे ते माटे जेम पश्चात्ताप  
 पडे तेम वर्तवुं ए उपदेश॥१३॥

हा१जीव१पावभामिहि१॥सि१०जाइनोणिसयइं१बहुइं  
 भवसयमहस्म१दुल्लहं१पि॥जिणमयं१एरिसं१छ१भुं१॥१४॥

॥१॥हा इति खेदे॥२॥हे जीव॥३॥लखो गमे न  
 करीने दुर्लभ एटले दुखे पांमवा जोग्य एहवोय  
 प्रने॥५॥अचिंत्य चिंतामणि तुल्य एहवो अने॥६॥जिन  
 कहेलो एहवो जे धर्म ते प्रते॥७॥पांमीनें ते धर्म  
 आराधवे करीने॥८॥घणा॥९॥एकंद्रियादिक जाति  
 एटले शित उष्णादिक जोनि तेमनां सइकंडो  
 वेपे एटले घणि जाति जोनियोने विपे॥१०॥न  
 एटले जिनेंद्र नाखित धर्मने न आराधवे करि  
 जीव तुं च्यार गतिने विपे परिभ्रमण करिश माटे  
 श्वर नापित धर्मने विशे उद्यम करवो एजाव१९४

॥१॥पमायवसउ॥१॥जीवो१०॥संसारकज्जमुमुक्षु॥॥

खोहिं१०॥नीविन्नो१॥सुखखोहिं१०॥नचेव॥परितुडो१॥१९५॥

॥१॥अतिशें करिने पापि एहवो अने॥२॥प्रमादने  
 प्रयो एहवो अने॥३॥संसारना कारजने विशे उद्यम  
 एहवो अने॥४॥दुःखो ए करिने॥५॥ना॥६॥खेद पांमेलो  
 एटले जे थकी दुख प्रते पांमछे तेहीज पाप प्र  
 रेछे ते हेतु माटे॥७॥सुखो ए करिने॥८॥नहिज॥९॥  
 प पांमेलो एहवो एटले जे कारण माटे नविन  
 प्रते वांछेछे एहवो॥१०॥आसंसारी जीवछे॥१९५॥

परितपिउण<sup>५</sup>तणुउं<sup>६</sup>॥साहारो<sup>७</sup>जइ<sup>८</sup>घणं<sup>९</sup>न<sup>१०</sup>उग्रमई<sup>११</sup>।  
सेणियराया<sup>१२</sup>तं<sup>१३</sup>तह<sup>१४</sup>॥परितपंतो<sup>१५</sup>गडं<sup>१६</sup>नरकं<sup>१७</sup>॥

अर्थ॥१॥जो तपसंजमने विपे॥२॥अतिशय  
थी॥६॥चम<sup>१८</sup>ते<sup>१९</sup>॥५॥तापादिक<sup>२०</sup>  
॥६॥थोडोसरस्वो॥७॥आधार थायछे एटले<sup>२१</sup>  
कर्मनो क्षय थायछे पण घणा कर्मनोक्षयथतो  
ते कारणमाटे॥९॥तेमज<sup>२२</sup>॥१०॥श्रेणिक<sup>२३</sup>राजा<sup>२४</sup>जेते  
पश्चात्ताप करतो सतो एटले में वीरपणुं न  
करथुंए प्रकारेशोच करतो सतो॥१२॥नरक प्र  
नरकने विशे॥१३॥गयो ए कारण माटे जांण  
हित अथवा जांणपणावाला पूरुपनी निश्रव  
तप संजमने विशे उद्यम करवो ए सारछे॥११

जीवेण<sup>२५</sup>नाणि<sup>२६</sup>विसंजितयाणि<sup>२७</sup>॥जाइंसएसु<sup>२८</sup>देहाणि<sup>२९</sup>॥

धोवेहिं<sup>३०</sup>तउ<sup>३१</sup>सयलंपि<sup>३२</sup>॥तिहुयणं<sup>३३</sup>हुड्ज<sup>३४</sup>पाडिहं<sup>३५</sup>॥

अर्थ॥१॥जीव जे तेंणे एटले दश प्राण धारण  
एहवो प्राणी जे तेंणे॥२॥सैंडकडो एकंद्रियादि  
तियोने विपे॥३॥जे॥४॥शरीर॥५॥मुख्यां एटले  
दीयां॥६॥ते॥७॥थोडाशा शरीरोए करिने पणा  
स्त॥९॥त्रण भुवन॥१०॥पूरण॥११॥थाय एटले

य तो समस्त शरीरोनु तो शुं केहवुं. एटलां आ  
री जीवे पूर्वे शरीर ग्रहण करीने मुक्यां तोपण शं  
प्रतेन पांम्यो माटे संतोश करवो ए चावा॥१९७॥

दंतमंसके सट्टिएसुं॥ जीवेण विष्णुमुकेसुं॥

वि० हविष्जा कइलास मेरुगिरि सान्निभा कूडा॥१९८॥

र्थ॥१॥ जीव जे तेंणे ॥२॥ पूर्व जवोने विशे ग्रहण  
करिने मुकेलां एहवां॥३॥ नख दांत मांस केश हा  
इत्यादिक शरिरना अवयव भूत, ते जो सर्व ए  
करीए तो॥४॥ ते नख दांत मांस हाडकादिके क  
॥५॥ पण॥६॥ कइलास पर्वत एटले हिमगिरी प  
सामान्य पर्वत तेमने तुल्य एटले ते सरखा ए  
॥७॥ दगला॥८॥ थाय एटलां शरीरना अवयव जी  
हण करिने मुक्यां तोपण संतोष न पांम्यो ए का  
माटे शरीरना अवयवोने विषे प्रतिबंध न करवो.

मंत मयल मंदर दिवोदहि धरणि सरिसरा सिउ॥

ही अथरो आहारो॥ उहि एणा हारिउं हुब्ब॥१९९॥

र्थ॥१॥ भुख्यो थएलो एहवो जे आ जीव तेंणे॥२॥

वंत पर्वत, मलयाचल पर्वत, मंदर एटले मेरु प  
द्विप एटले असंख्याता, द्वीप उदाधि एटले असं

रूपाता समुद्र, धरणि एटले रत्न प्रजादिक  
 थवी तेमना सदृश एटले शरिखा, रासिओ एटले  
 करीए एटले पूर्वे कहा तेना सरखा ७१॥  
 ढगलाथकि पण॥३॥अतिशे अधिक एटले  
 हवो॥४॥अशन पानखादिम स्वादिमरूप  
 ॥५॥नक्षण॥६॥कर्योछे एटले एक जीव जे  
 ता पुद्गलद्रव्य नक्षण कर्योछे तोएपण संतो  
 पांम्यो ते माटे तेने विशे आशक्ति करवी नहि

न॥त्रेण॥नलं॥पीयं॥॥धम्मायवत्तगाडेएण॥तं॥पिहं॥  
 वि॥अगडत्तलाय॥॥नईसमुद्रेसुनवि॥हुज्जा॥॥२॥

अर्थ॥१॥आ संसारने विशे॥२॥ग्रिप्मरुतु  
 ऋतु तेनो आतप एटले तडको तेंणे करिने  
 एहवो॥३॥आ जीव जे तेंणे॥४॥जे॥५॥पांणी  
 एटले पूर्व जवोने विशे पांन कर्युंछे॥७॥ने  
 ए जो सर्व एकठुं करिए तोपण॥८॥सर्व  
 पण॥९॥कुवा तलाव नदीयो समुद्र तेमने  
 नहिज॥१०॥होय एटले सर्व कुवादिकनां पांणी  
 जीव पूर्वे अनंतगणु पीधुंछे तोयपण संतो  
 म्यो माटे संतोश करवो एज सारछे॥२०॥

येयं धनयाच्छिरं ॥ सागरसलिलात् हुञ्जन् बहुयरं ॥

उंचारंमिअणंते ॥ नाऊणं अन्नमन्नाणं ॥ २०१ ॥

र्थ ॥ १ ॥ अनंत एटले नथी अंत ते जेहनो एहवा ॥ २ ॥

रने विपेआ जवि जे तेंणे ॥ ३ ॥ न्यारी न्यारी एटले

जुदि ॥ ४ ॥ माताओना ॥ ५ ॥ स्तननूं दुधजे ॥ ६ ॥ पूर्वज

विपे पीधुंछे ॥ ७ ॥ ते दूय समुद्रना पांणी धकी ॥ ८ ॥

शें घणुं ॥ ९ ॥ होय एटले समुद्रना पांणी धकी अनं

णुं पीवुछे ॥ २०१ ॥

१५५ कामभोगा ॥ काल भणंत इहं सउवभोगा ॥ अपुव्वं

१५६ नन्नइ ॥ तहविअ नीवो १० मणे ११ सुखं १२ ॥ २०२ ॥

१॥ आसंसारनेविशे आजीव जे तेंणे ॥ २ ॥ उपभोग

वारवार जे भोगववामां आवे ते घरेणां वस्त्र प्रमुख

गरिने सहित एहवा ॥ ३ ॥ कामभोग जे तो ॥ ४ ॥ अनंता ॥ ५ ॥

सुखी एटले अनंतिवारा ॥ ६ ॥ पांम्याछे एटले भोग

छे ॥ ७ ॥ निओ ॥ ८ ॥ वली ॥ ९ ॥ तोय पण ॥ १० ॥ आ

जे तो ॥ ११ ॥ मनने विशे ॥ १२ ॥ विशय धकी उत्प

वुं एहवुं जे सुखते प्रतो ॥ १३ ॥ अपूर्वनी पठमा ॥ १४ ॥

उं एटले जाणे ॥ पूर्वभोगव्युंज नथी एमजाणेछे ॥ २०२

इअ १५७ जहा भोगिइ ॥ संपयास्त्वमेव धम्मफलं ॥ तह

વિદ્મદમૂઢહિયયો ૮ ॥ પાવે ૧૦ કમ્મે ૧૧ જળો ૧૨ મદ ૧૩ ॥ ૨ ॥  
 અર્થ ॥ ૧ ॥ જેમ ॥ ૨ ॥ ઝોગ એટલે ઇન્દ્રિયો વધિ  
 થયાં જે સુખ રિદ્ધિ એટલે રાજ્ય લક્ષ્મી, સેવક  
 ધન ધાન્યાદિક એ સર્વ ॥ ૩ ॥ ૪ ॥ ધર્મનું ફલ છે  
 આ જીવ જાણે છે ॥ ૬ ॥ નિશ્ચો ॥ ૭ ॥ તોયે પણા ૮ ॥  
 મુઢ એટલે અજ્ઞાને કરિને ઢંકાયું છે ૯ ૫ તે જે હવું  
 જે ॥ ૧ ॥ જન એટલે લોક ॥ ૧૦ ॥ પાપ ૧૧ ॥  
 જે ॥ ૧૧ ॥ કર્મ તેને વિપે ॥ ૧૨ ॥ રમે છે એટલે કોઈ  
 ટલે પાપ કર્મ કરવાને વિશે ઉચ્છાહવંત

જાણિજનદ ૧ ચિંતિયદ ૨ ॥ જન્મજરામરણસંભવં ૧ દુસ્ત્રં  
 વિસયેસુ ૧ વિરજનદ ૨ ॥ અહો ૧ સુવદ્ધો ૧ કવડગંઠી ૧ ॥ ૨ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જન્મ એટલે અવતરવું । જરા એટલે  
 હાંનિ । મરણ એટલે પ્રાણનો ત્યાગ કરવો । તે  
 રાને મરણ થકી । ઉત્પન્ન થયું એહવું જે ॥ ૨ ॥  
 ॥ ૩ ॥ જીવ જે તેણે ગુરુના ઉપદેશે કરિને જા  
 એ ॥ ૪ ॥ અને મનને વિશે વિચારીએ છીએ એટલે  
 તે જન્મ જરા મરણ થકી ઉત્પન્ન થયું એહવું જે  
 પ્રતે ગુરુ મહારાજનો ઉપદેશ સાંજલવેં કરીને  
 અને મનને વિપે વિચારે છે તોયે પણ ॥ ૫ ॥ પાવ





मोहकर्मनुं माहात्म्य जाणो ए अर्थ॥२०५॥

दुष्पयं च उष्णयं ॥ बहुप्ययं च अपयं समिद्धं महणं ॥  
अणनकणं वि॥ कयंतो ॥ हरद ॥ हयासो ॥ अपरितो

अर्थ ॥ १॥ हणीछे एटले नाश करीछे आ  
ए एटले आशा रहित करनारो एहवो॥२॥  
एटले न थाकेलो एहवो॥३॥ कृतांत ॥  
॥४॥ पगवाला एटले मनुष्यादिक॥५॥  
एटले गाय, जेंस, घोडा प्रमुखा॥६॥ बहू  
ले भ्रमरादिक॥७॥ वली॥ ८॥ पग रहित  
दिक ॥९॥ धनाढ्य एटले धनवंत॥१०॥ वली  
करिने पंडित मुख सवं ग्रहण करवा ॥  
रहित एटले दरिद्र ते पुर्व कहा जे सर्वत  
अपराध करवा विनाय॥१३॥ पण एटले ते  
न्युनुं कांड बगाड्युं नथी तोये पण ते जीवो  
ण जे तो॥१४॥ हरेछे एटले मारेछे॥२०६॥

नय नवतद मो दियहो ॥ मरियव वा वमेण मो  
आमागमादो ॥ न ॥ करेद ॥ ज ॥ हिय ॥ वजो

अर्थ ॥ १॥ तो॥२॥ दिवस एटले मरणनो हि  
नहिना॥३॥ जाणिए एटले छदमस्य जीव न



नु॥८॥जाणिनुं जवांनीपणुंछे॥९॥अथेमा॥१०॥आ पू  
 हा ए प्रकारे जाणिने पण॥११॥नथी॥१२॥  
 हा हे ज्ञातानी जीव आ जीनीत अने जवांनीप  
 र्थां जाणिने पण केम प्रतिबंध नथी पांमनी  
 निबंध पांमनी ए जाणपणानुं सारछे॥२०॥

सं' तं' नगद' अगुं' ॥ अगिगद' कुव' अणिय' मेपनि' पां' न  
 गा' गद' ' अंमं' ' पां' नाद' ' मर्ग' ' अगुं' ' पडि' कुला' ' पां' र

अथ॥१॥ ॥२॥दे जिव जे जे ॥३॥अगुंची ॥४॥  
 रिद एहसां दारीगदिक प्रत्ये॥५॥तुं जाणेंछे  
 जे अगवित्र दारिगदिक देमये करीने तुं छात्र  
 छे॥६॥निदया तांम्य एहवुं॥ ॥७॥आया अगिगदिक  
 दि एहले अगो नाग दारिगदिकछे तीये ॥  
 ॥८॥ने॥१०॥अग एहले अगवित्र दारिगदिक  
 ॥११॥तुं अनित्याय करंछे एहले मृद थयो  
 छे ते मारे॥१२॥दहां॥१३॥हेवला॥१४॥मदक  
 कंदरे जे तेज दारिग॥१५॥प्रतिकूल एहले  
 वनेंछे एहले अगुं कंदरेना वगर्थां आ  
 ॥१६॥एहवुं जे दारिगदिक ने प्रत्ये अगिगदिक  
 ॥१७॥तुं मनेंछे मारे ए मृदवतुं एहले

करवा जोग्यछे ए उपदेश॥२०९॥

सबगहाणंपभवो॥महागहो॥सबदोसपायदी॥

कामगहो॥दुरप्पा॥जेण॥भिभूयं॥जगं॥सवं॥॥२१०॥

र्थ॥१॥सर्व ग्रहोनो एटले सर्व उनमादोनो प्रभव  
ले उत्तपत्तिछे जेहथकी एटले सर्व उनमादोनो उ  
करनार एहवो अने॥२॥मोटो ग्रह एटले मोटो  
माद एहवो अने॥३॥सर्व दोप पर स्त्रि गमनादिक  
नो प्रवर्तावनारो एटले सर्व दोपनो उत्पन्न करना  
एहवो॥४॥दुष्ट आत्मा एटले दुष्ट एहवो॥५॥काम  
ग्रह एटले काम समूद्रने विशे उत्पन्न थयो एहवो  
नो विभ्रमछे ते केवोछे ते केहेछे॥६॥जे काम ग्रह  
तेणे॥७॥सर्व एहवुं॥८॥जगत एटले जगतना रेहे  
लोक जाणवा॥९॥पराजव पमाडयोछे एटले सर्व  
तना लोक काम कंदर्पने वश थयाछे ए कारणमा  
कामरूपिग्रहजेतेजदुःखे त्यागवा जोग्यछे॥२१०॥

॥सेवइ॥किं॥लहइ॥॥शामं॥हारेइ॥दुञ्चलो॥होइ॥

वेद॥दिमणस्सं॥॥दुख्वाणि॥॥अ॥अत्तदोसेणं॥॥२११॥

र्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥पोताना दोपे करिने एटले पो  
ना अज्ञाने करिने॥३॥ते काम प्रत्ये सेवेछे॥४॥ते पु

रुप शुं॥५॥फल प्रत्ये पांमेछे ते कहेछे॥६॥ने  
 सेवनारो पुरुष वीरज प्रत्ये॥७॥हारेछे अने॥८॥  
 एटले क्षीण शरीरवालो॥९॥थायछे अने बलि  
 चितनाउदवेग प्रत्ये॥१०॥पामेछे॥११॥बलि॥१२॥  
 एटले खडरोग प्रत्ये पांमेछे॥१३॥

मह<sup>१</sup>कच्छुलो<sup>२</sup>कच्छुं<sup>३</sup>॥कंदुयमाणो<sup>४</sup>दुहं<sup>५</sup>मणइ<sup>६</sup>मुतं<sup>७</sup>॥  
 मोहाउरा<sup>८</sup>मणुस्सा<sup>९</sup>॥तह<sup>१०</sup>कामदुहं<sup>११</sup>सुहं<sup>१२</sup>बिनि<sup>१३</sup>॥१४॥  
 अर्थ॥१॥ जेम॥२॥खसवालो जे पुरुष॥३॥॥४॥  
 ॥५॥नखना अग्रे जागे करीने खणतो सतो॥६॥  
 थपुं जे दुःख ते प्रत्ये॥७॥ मुख एम॥८॥ ॥९॥  
 दुःखने सुख करी जांणेछे॥१०॥नेम॥११॥मोहे कां  
 नुर एटले मोहे करिने गांडा थपला एहवाते  
 मनुष्य जे ते॥१२॥कामरूप दुःख एटले विषय  
 ते रूप दुःख प्रत्ये ॥१३॥ मुख करीने ॥१४॥  
 एटले मांनेछे॥१५॥

विमयविमं<sup>१</sup>हालाहलं<sup>२</sup>॥विमय<sup>३</sup>विमं<sup>४</sup>ठकदं<sup>५</sup>पियंकारं<sup>६</sup>॥  
 विमयविमा<sup>७</sup>द्वयंविमं<sup>८</sup>॥विमयविमविमदया<sup>९</sup>होइ<sup>१०</sup>॥११॥  
 अर्थ॥१॥हलाहल झेहेर एटले तनकाल मा  
 हयं॥२॥द्वयं एहयं॥३॥विष एटले काम मे

एहवुं॥४॥उत्कृष्ट एटले आकरुं एहवुं॥५॥शब्दा  
पांच इंद्रियोना विषय ते रूप विष संजम जिवि  
नाश करनारछे ए हेतु माटे पांच इंद्रियोना वि  
विष कहिए ते विषय रूप विष प्रते॥६॥ पांन  
एटले विषयने सेवन करता एहवा जे प्राणी  
॥७॥अति सेवन करयुं एहवुं विषय रूप विष थकि  
विषय रूप विष जे तेनि विशुचिका एटले अजि  
१॥थायछे ते केवि रीते थायछे॥१०॥घणा आहा  
वा थकी जेम अजीरण थायछे तिंम त्वारे विष  
अजिरण थकि अनंता मरण पांमछे॥२१३॥

१तु १पंचहिं १आसवेहिं ॥२॥रय १मायणित्तु १अणुसमयं ॥

गइदुहपेरंतं ॥अणुपरिग्रहं १संसारे ॥२१४॥

यी॥१॥वली॥२॥आ कह्युं अने कहीशुं ए प्रकारे  
ने॥३॥पांचा॥४॥आश्रवे करिने एटले प्राणातिपात  
वांछ अदत्तादान मैथुन परिग्रहे करिने॥५॥समय  
प्रते॥६॥पापकर्म रूप रज प्रते॥७॥ग्रहण करी  
॥८॥चार गतिना दुःखना अंत सुधी एटले ज्यां  
॥९॥चार गतिमां जमवे करिने दुःखनो अंत आवे  
सुधी॥१॥संसारने विषे॥१०॥परिभ्रमण करेछे॥२१४॥

सत्त्वगदपस्त्वंदे१२॥काहिति११अणंतए११अकदुःख

य१न१सुणंते१धम्मं१॥सोउण१य१जे१पमा१यंते१११॥

अर्थ॥१॥जे॥२॥पुन्यानुबंधि पुन्य रहित ११

॥३॥दुर्गतिमां पडता जे प्राणि तेने पा११॥४॥

एहवो अने जिनराजे कहेजो एवो जे धर्म तेने

नथी॥५॥सांजलता॥६॥निश्चे॥७॥आवली॥८॥जाने

धर्म सांजलीने पण॥१०॥प्रमाद करेछे एह

प्रते श्राचरेछे ते पूरुप॥११॥अंत रहित एह

ने विपे॥१२॥सर्व गतिथीने विपे भ्रमण प्रवे

शे एहले जे प्रमादि पूरुप प्रति श्रोत रूप जे

प्रते शुधपूरुपक पूरुपनी समीपे निरंतर सां

ण प्रमाद प्रतेनथीछोडताते अनंतिवार १११॥

पे जमेछे माटे प्रमाद त्यागवा जांयछे एउपदे

अणुमिदा१य१बहुबहं१॥मिथादिदी१य१जे१नरा१अइने

बदलिकाइयकस्मा१॥मृगंनि११धम्मं१नय१क१नि११॥

अर्थ॥१॥बहु अकारे करिने॥२॥धर्मापदेशादि

करिने प्रेरणा करवा एहवा॥३॥आवली॥४॥जाने

एहले सम्यक ज्ञाने करिने रहान एहवा॥

अथम एहवा॥७॥अने बांध्युंछे निकीन रु





नाणे<sup>१</sup>दंसण<sup>२</sup>चरणे<sup>३</sup>॥तव संयमसमिद्धगुत्ति<sup>४</sup>पठिते<sup>५</sup>॥

दम<sup>६</sup>उत्सर्ग<sup>७</sup>ववाए<sup>८</sup>॥द्वद्वाइअभिग्गहे<sup>९</sup>चेव<sup>१०</sup>॥२१॥

अर्थ॥२॥ज्ञानने विशेष एटले सम्यक् ज्ञाने  
ज्ञानने विषे ॥२॥दर्शन एटले तत्त्वश्रद्धानं  
विषे॥३॥चारित्र्य एटले आश्रवनं रोकवुं ते  
विषे॥४॥तपवार प्रकारे संजम सत्तर प्रकारे  
एटले सम्यक् प्रवर्ति रूप इयां समित्यादिक  
सि एटले मन वचन कायाने अशु प्रवर्ति थकि  
वालवा ते रूप त्रण ते पूर्वे कह्या तप  
विषे॥५॥प्रायश्चित्तने विषे एटले पाप क्रिया  
छा वलवा रूप दश प्रकारनी ।लोचनाने  
दम एटले पांच इंद्रियोनूं दमवूं एटले बश  
हेने विषे॥७॥उत्सर्ग एटले शुद्ध मार्गनुं आचरण  
तेने विषे॥८॥अपवाद एटले रोगादिक कारण  
थये सते त्याग करेली वस्तूनुं ग्रहण करवूं ते  
हने विषे॥९॥द्रव्यादिक अजिग्रह एटले  
खेत्र थकि२ काल थकि३ जाव थकि४ एच्चार  
रना अभिग्रहने विषे॥१०॥निश्चे ॥२१८॥

सरहणाय<sup>१</sup>रणाय<sup>२</sup>॥निधं<sup>३</sup>उब्भुत्त<sup>४</sup>एसणा<sup>५</sup>इडिउ<sup>६</sup>॥

त' भवो अहिरण्यं १॥ प्रवक्ष्यामि ॥ १॥ कर्म ॥ सुधा ॥ २१९ ॥

प्राप्तार पूर्व कथां ज्ञान दर्शनादिक पदार्थेने वि  
 श्वा सहितार ॥ आचरण ए करिने ॥ ३ ॥ निरंतरा ॥  
 भवत एहवो ॥ ५ ॥ वेहेतालीत दोष रहित आहार  
 शुद्धिने विने रहेलो एटले दोष रहित आहार य  
 करतो एहवो जे साधु ॥ ३ ॥ ते ज्ञानादिक गुणे क  
 सहित एहवा साधुने ॥ ७ ॥ प्रवक्ष्या एटले विज्ञानुं  
 करवुं एटले विज्ञा लेवी ॥ ८ ॥ वली ॥ ९ ॥ जन्म एट  
 वि कथा एहवा जे श्रद्धा सहित गुणोयें करिने त  
 एहवुं ननुप्यपणुं ए प्रवक्ष्या अने ननुप्य जन्म ए  
 नां ॥ १० ॥ संतार सनुद्र धकी तारनार थायछे एट  
 मडा सहित शुद्ध संजन पाएवे करिने संतार सनु  
 वि तरेछे केनजे श्रद्धा विज्ञानुं चारित्र मोहनुं कार  
 थाय नहि अने फोगट थाय अने गुण विज्ञानुं ननु  
 पुं फोगटछे ते कारण नाटे प्रयत्न समकित्तो उ  
 करवो ए उपदेश ॥ ११ ॥ निश्चे ॥ २१९ ॥

॥ अहिरण्यकच ॥ ॥ उपदेश ॥ सहित ॥ अहिरण्य ॥

कर्म ॥ सुधा ॥ १॥ कर्म ॥ सुधा ॥ १॥ कर्म ॥ सुधा ॥ १॥

प्राप्तार ॥ यर उपाश्रितिकुं सोव करावुं तेहेने विने

टले साधु मुनिराज तथा सम्यक् दृष्टि श्रावक  
संसर्ग करता नथी ते निंदा कहिये ए भावा॥१॥  
तिनिश्चो॥२२५॥

निघं१संकिअ२भीउ३॥गम्भो४सवस्स ५ ॥ १॥  
जणस्स६अवमठ७॥मडावे१०पुण९दुग्गइं११जाइं१२॥२॥  
अर्थ॥१॥निरंतरा॥२॥शंका सहित एटले २३  
ए माहरी बातकरे एहवो॥३॥जय सहित ४  
लोक थकि डरतो एहवो॥४॥सर्व बालादिक जे  
पण॥५॥गम्य एटले पराजव करवाने जो ५  
व बालादिक थकि पराजव पांमतो एहवो॥६॥  
पमाड्युं छे एटले विराध्युं छे चारित्र ते जेणे ५  
ने बली॥७॥उत्तम पुरुषोने॥८॥अमान्य एटले ५  
रूपोए आदर नकरेलो एहवोसतो॥९॥बली॥१॥  
लोकने विशेषे मरण पांम्यो एहवो पण॥११॥३  
१२॥जायछे ए कारण माटे प्राणांत थये सते ५  
रित्र न विराधवुं ए उपदेश॥२२६॥

गिरिमुअपुण्यमुआणं१॥मुविहिय१आहरणं२कारण३विहिन  
वज्जिज्ज४सीलवीगळे५उज्जुअ६०सीले७हविज्ज११जइं१२  
अर्थ॥१॥हे सुविहित एटले हे नला शिष्या॥

क एटले पर्वतने विपे रहेनारो एहवो जे पोपट  
गिरिशुक एहवुं नाम पड्युं अने पुष्पशुक एट  
डिमां रहेनारो एहवो जे पोपट तेहनुं पुष्पशुक  
नाम पड्युं ते वे शुकनुं॥३॥उत्तम अधम पूरुष  
मसर्गे करिने गुण दोशनुं कारण एहवुं॥४॥उदाह  
एटले द्रष्टांत प्रते॥५॥जांणिने॥६॥साधु जे तो॥७॥  
ना आचारे करिने रहीत एहवा पुरुषों प्रते॥८॥  
एटले त्याग करे अने बलि॥९॥चारित्रने विशे  
॥१०॥उद्यमवांन॥११॥थाय एटले उद्यम करो॥२२॥७॥

चित्रचरणकरणं१॥जइणो१वंदंति१कारणं१पण१॥

१॥मुविइयपरमथा१॥ते१वंदंते१निवारंति१॥२२॥८॥

था॥१॥जति एटले साधु मुनीराज जे तो॥२॥सि  
चरण एटले पंच महाव्रतादि मूल गुण रूप क  
एटले पंच समीत्यादि उत्तर गुण रूपछे जेहने ए  
एटले चरण शितरि करण शितरिने विशे शिथि  
एटले जथार्थ उद्यम रहीत एहवो जे पूरूप एटले  
ग पक्षी ते प्रते॥३॥कारण प्रते॥४॥पांमीने एटले  
आदिक नएवानी अपेक्षाए करिने॥५॥नमस्कार क  
तेवारे॥६॥भलिप्रकारे जांण्याछे परमार्थ एटले

सिद्धांतनो सार ते जेंमणे एटले तत्वना जांण  
 ॥७॥जे शिथिल आचारवंत पूरूप एटले स  
 जे ते॥८॥वंदन करता एहवा॥९॥ते मूनीराज  
 निवारण करेछे एटले कहेछे जे मने वंदन  
 ही केमजे ते तत्वना जांण शुद्ध ४८५५  
 तने विशे विचारेछे जे सुविहीत मुनियोनि  
 कराववुं अमने घटतुं नथी ए प्रकारे  
 ऐछे ते कारण माटे निषेध करेछे॥२२८॥

मुविहियवंदावंतो॥१॥नासेइ॥अण्यं॥नु॥मुपहाउ॥  
 हविष्मको॥कह॥मण॥न॥याणई॥मूढो॥२२९॥

अर्थ॥१॥उत्तम साधुઓની પાસે વંદન કરા  
 ટલે વંદન કરતા એહવા જે તે ઉત્તમ સાધુઓ  
 નિવારણ કરતો સતો॥૨॥જલા મારગથકિ  
 ક્ષ મારગથકિ॥૩॥પોતાના આત્મા પ્રતે  
 છે॥૫॥નિઓ॥૬॥મૂર્ખેટલે સિદ્ધાંતના ત  
 એહવો॥૭॥ત્રે પ્રકારના મારગથકિ અષ્ટ થયો  
 ટલે સાધુ તથા શ્રાવકના મારગથકિ ચુક્યો  
 ॥૮॥પોતાના આત્મા પ્રતે॥૯॥ક્યમા॥૧૦॥નથી  
 ણતો જે હું વે મારગથકિ અષ્ટ થાઉં મારો

तो एम ते मूर्ख केमनधी वीचारतो एटले जेज्ञान  
चारित्र रहीत उत्सूत्र प्ररूपक अने वली पोताने  
गुणविना साधुपणु मानतो अने लोकोनी पासे  
तो ते पुरुषने पूर्वे कह्यो ते विचार आवेनही अने  
श्रावकना मार्गयकी चूकेछे ते संवेग पक्षी पण  
हीए ते सर्व पासथ्यो निध्याद्रष्टी कहीए॥२२९॥

इह भवकालं वि॥ चेइयाइं थययूईपरमो॥

निवरपाडिनावरहूवुप्फगं वच्चपुज्जुत्तो॥२३०॥

॥ हवे श्रावकना गुण वर्णवेछे ॥

॥३॥ चैत्य एटले जिनविंव ते प्रते॥२॥ वे कालने  
अने तेहना संबंधयकी मध्यांननुं ग्रहण करवुं ए  
त्रण कालने विशेष॥३॥ पण॥४॥ विधि सहित वंद  
रे ॥५॥ एहवो अने वली भक्तांमरादि स्तोत्र  
र दावादिक स्तूति तेमने विशेष प्रधान एटले स्त  
तूति गणवाने विशेष उत्कृष्टो एहवो॥६॥ सामान्य  
नी तेमनी नव्ये श्रेष्ठ एटले तिर्यंकर तेमनि प्रति  
॥ अने जिनघर एटले विधी सहित डेरासर तेमने  
धुप अगुरु प्रमूख माजतीनां फूल सुगंधि द्रव्य  
अप्रमूख तेमणे करीने पूजवुं एटले जिनघरनी प्रति

માની આગલ ધૂપનું કરવું અને ૧. સરને વિશે પૂ.  
અને જિન પડિમાની પુષ્પાદિકે કરીને પૂજા કરવી  
વિશે ઉચમવંત એહવો જે પુરુષ તે શ્રાવક કહી

સુવોળે છિય એમ મંદ ૧ ॥ ધર્મમાં ૨ અનન્ન દેવ ૩ ૫ ૪ પુણો ॥

નય ૮ કુસમ ૯ શુ ૧૨ ૩૩ ૬ ૧ ॥ પુત્રાવરવાહિય ૧૫ ૧૬ ૨૧ ૨ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ વલી તે શ્રાવક કેહેવો છે તે કેહે  
ને વિશે એટલે જિનરાજ જાપિત ધર્મને વિશે  
તિશય નિશ્ચલ એહવી અને એકાગ્ર એહવી છે  
જેહની એટલે જિન ધર્મને વિશે જ એક ૭  
હવો ॥ ૪ ॥ વલી ॥ ૫ ॥ નયી અન્ય એટલે જિનરાજ યી  
દેવ તે જેહને એટલે જિન વિના મન વચન ૧૫  
રિને વીજા દેવને ન માંનતો એહવો જે શ્રાવક ૧૬  
પર એટલે આગલ પાછલ વાધા સહિત એટલે  
ઘ એહવા છે અર્થ તે જેમને વિશે એટલે આગલ ૫  
અણમિલતા અર્થો એ કરિને સહીત એહવા ॥ ૭  
એટલે સ્વમત મિથ્યા ટ્રષ્ટી એટલે નિન્હવાદિક  
પાસંડી જે શાસ્ત્ર તેહેને

सुखं चालिङ्गइ १ ॥ देवेहि २ सुखं एहि ३ ॥ २३२ ॥

यो १ ॥ कुत्सित एटले माठुंछे लिंग एटले वेश ते  
ते एहवा जे पुरुष तेमनुं ॥ २ ॥ नांना प्रकारनुं ॥ ३ ॥

एटले बेरंद्रियादिक थावर एटले प्रयव्यादिक भू  
टले प्राणि तेमनुं मर्दन एटले विनाश प्रते ॥ ४ ॥

नो १ ॥ जिनराजेकहेजा एहवा धर्मयकी सन्यक्त्व  
सहीत श्रावक जे तो ॥ ५ ॥ इंद्र सहित एहवाया ॥ ७ ॥

॥ आदेवता जे तेनणे ॥ १ ॥ ना १ ॥ चलावि शकीए  
जे समकीत पूर्वक गुणोए करीने सहीत एहवो जे

क ते प्रते इंद्र सहित देवता जे ते पण शुद्ध धर्म  
चलावि शके नहि एतातपर्यो ॥ २३२ ॥

ते कहियुच्छइ १ ॥ पडुवातेइ १ ॥ नहून्ते १ ॥ सय १ ॥ नेइ १ ॥ च १ ॥ पडइ १  
इ १ ॥ गुणेइ १ ॥ य १ ॥ जगत्त १ ॥ धम्म १ ॥ परिकहेइ १ ॥ २३३ ॥

यो १ ॥ जलो श्रावक जे ते साधु प्रते एटले नो  
ना सायक एहवा नुनिराज प्रते ॥ २ ॥ निरंतरा ॥ ३ ॥

करेछे एटले विवि सहित प्रणाम करेछे अनेवली  
पीताना संदेह प्रते नुनिराजने पूछेछे अने वली

राज प्रते ॥ ५ ॥ प्रनुपासना करेछे एटले सेवेछे ॥ ६ ॥  
यो १ ॥ वली ते श्रावक शुं करेछे ते कहेछे ॥ आवर्त



शास्त्र प्रते भणोछे. अने वली॥९॥उत्तम पुत्र  
 से जिनराज जापित अर्थ प्रते सांजलेछे॥१०॥  
 ॥११॥जणेलुं जे शास्त्र ते प्रते अर्थ : वि  
 वली॥१२॥मध्यस्थ एटले हठ कदाग्रह रहित  
 लोकोनी आगला॥१३॥शुद्ध धर्म प्रते॥१४॥कहे  
 सिद्धांतने अनुसारे पोतानी बुधिये करिने बीजा  
 प्रते समाकित पूर्वक धर्म प्रते पमाडे छे ए जावा  
 ददसीलव्यानियमो॥१५॥पोसहआवस्सएसुअखखलिउ॥  
 महुमम्ममंसपंचविहवहुत्रायफलेसुपडिकंतो॥१६॥  
 अर्थ॥१॥वली ते आवक केहेवो होय ते केहे  
 शील एटले जलो आचार अने व्रत एटले  
 व्रत तेमनो नियम एटले निश्चय ते जेहने  
 सत आचारने विशेष अने अणुव्रतादिकने विशेष  
 यमवालो एहवो अने॥२॥पोषधवृत एटले  
 पुष्टिनो करनार एहवो आठम चौदशादिक पर्व  
 सावध बेपारनो त्याग करवो ते १० : नियम  
 एटले अवश्य करवा जोग्य सामायकादि छे तेम  
 ॥३॥अस्त्रलिखित एटले अतिचार रहित  
 ॥४॥मांखीनुं मद, मदीरा, मांस, पांच प्रकार



अर्थ॥१॥ तिर्यंकर महाराजनी॥२॥दिक्षा  
निवारण,जन्म तेमनि,भूमिओ प्रते एटले दिक्षा  
स्थानके दिक्षा लीधी होय ते स्थानक प्रते ए  
न भूमी प्रते, निवारण भूमी प्रते जन्म भूमी प्रते  
श्रावक जे ते वंदन करेछे एहवो ॥४॥साधुजने  
एटले मुनीराज महाराजना विहारे करिने ता  
कट्टी उत्तम पुरुषोये करिने रहित एहवो॥५॥  
णा गुणे करिने सहीत एहवोय पण ॥६॥ जे  
हने विज्ञे॥७॥नहिंज॥८॥वज्ञे एटले रहे केमने  
नके रेहेतां धर्मनी प्राप्ति थाय नही ए कारण  
हां न रहे एहवो श्रावक होय॥२३६॥

परतिस्थियाण<sup>१</sup>पणमन<sup>२</sup>॥उधावण<sup>३</sup>श्रूणण<sup>४</sup>भक्तिराग<sup>५</sup>  
सत्कारं<sup>६</sup>सम्मानं<sup>७</sup>दाणं<sup>८</sup>विणयं<sup>९</sup>च<sup>१०</sup>वस्त्रे<sup>११</sup>॥२३७॥

अर्थ॥१॥बली श्रावक शुं करे ते कहेछे,परति  
तेमने एटले वीतरागनी आज्ञायकी उलटा ए  
पुरुष तेमने॥२॥नमस्कारनुं जे करवुं ते प्रते वने  
नमस्कार न करे॥३॥ ते परतिर्थिना गुणनी  
करे॥४॥तेमना देवनीस्तवना नकरे॥५॥बली  
बहु मान न करे॥६॥तेमनो सत्कार एटले

बुं ते प्रते वर्जे एटले वस्त्रादिक आपे नहीं॥८॥ते  
 पन्मांन एटले आदर करे नहीं॥९॥तेमने दांन आपे  
 एटले धर्म बुद्धीए करीने आहारादिक आपे नहि  
 ॥बली॥११॥ते परतिथिना विनय प्रते॥१२॥वर्जे ए  
 तेमनो विनय करे नही एहवो आवक होय२३७

॥ कृष्णदासः ॥ अथ पणमिह पारिद ॥

इंअ सुनिहिआणं॥ भुंजइ ॥ कयदिसालोउ ॥ २३ ॥

॥१॥साधु मुनिराजने॥२॥पोतानी मेलो॥३॥नम  
करिने॥४॥प्रथम एटले पोतानेजमवार्थी पेहेला  
आहार पाणि आपीने॥५॥पछे पोते पारणु करे ए  
नोजन करे॥७॥जो साधु मुनिराज नहोयतो॥  
सुख चारित्रवंत मुनिराजनो॥९॥कर्योछे दिशा  
शालोक एटले देखवुं ते जेणे एटले जो साधु मु  
न पधारे तो घणुं सारुं एम तेमनी वाट जोइने  
॥१॥पछी भावना आवतो सतो पोते नोजन करे  
॥१॥आवक होया॥२॥८॥

॥ कृष्णपिङ्गः ॥ जं न्विद्वन्त्वाहिपि किंचित् तहिषा ॥

॥३॥कल्पतुं एटले शुद्ध एहवुं॥४॥थोडुं गुं प  
 आहारादिका॥६॥ते मुनीराजने॥७॥नयीज  
 एटले तेमने पात्रे नथी पड्युं॥९॥ते आहार  
 ॥१०॥धीर एटले सूरवीर एहवा॥११॥  
 हवुं पालनारा एटले जथार्थ : । वक मारगना  
 एहवा॥१२॥जला श्रावक एटले श्राज्ञावत  
 ते॥१३॥न॥१४॥जोजन करे एटले साधु  
 ज्यां सुधी थोडुंर्युंए पण आप्युं न होय  
 चीज पोते वावरे नही ए जाव ॥२३९॥

वसहिमयणामणभक्तगणभेसम्भवपत्ताइं॥

महावि१न१पञ्जत्तधणो१॥थोवावि१हु१थोवयं१दे१गार

अर्थ॥१॥वली श्रावक शुं करे ते कहेछे जो  
 संपूरण धनवालो ॥३॥ नथी तोपण॥४॥वस  
 रहेवानुं स्यानक, सयन एटले सुवाने अर्थ पा  
 एटले वाजठ पाटला प्रमुख, जक्त एटले  
 एटले जल, जेसज एटले ओसध वस्त्र पात्र  
 ॥५॥यांडामयेथकी पण॥६॥थोडुं॥७॥साधु  
 श्रापे एटले वस्त्र पात्रादिक संपूर्ण आपवा  
 एहवो सतोय पण श्रावक जे ते ॥३॥मां॥

जने तथा उत्तम पुरुषोने आप्याविना पोते वावरे  
[जावा॥८॥निश्चे॥२४०॥

अचाटं नासी एनु॥ अग्राहि आसु॥ अ॥ ति॥ हि॥ नु॥

रेण॥ अ॥ ग॥ इ॥ ॥ नि॥ व॥ र॥ पू॥ आ॥ त॥ व॥ गु॥ णे॥ नु॥ ॥ २४१॥

॥१॥ संवच्छरी अने चौमासि असाड चौमासादिक  
विशे॥२॥ वली॥३॥ चैत्र असाडादिक अठाइयोने  
४॥ आठम चौदसादिक तिथियोने विशे॥५॥ जि  
ती पूजा एटले नक्ति, तप छठ अठमादिक, गुण  
दिक तेमने विशे॥६॥ सर्व प्रकारे करीने॥७॥ लागे  
आसक्त थाय एटले तेजिनेंद्र पूजादिकने विशे  
त थकी आदरवालो थाय एहवो श्रावक होय वली  
होय ते कहे छे ॥२४१॥

ए॥ चे॥ इ॥ या॥ ण॥ य॥ ॥ प॥ डि॥ णी॥ यं॥ त॥ ह॥ अ॥ व॥ न्न॥ वा॥ यं॥ च॥ ॥

प॥ व॥ य॥ ण॥ स्त॥ अ॥ हि॥ अं॥ ॥ स॥ ह॥ थ॥ म॥ ण॥ व॥ रे॥ इ॥ ॥ २४२॥

॥१॥ साधुमुनीराजनो॥२॥ वली॥३॥ चित्यनो एटले  
असाद तथा प्रतिमानो॥४॥ प्रत्यनीक एटले उपद्रव  
हरनार एहवो॥५॥ तिमज॥६॥ वली॥७॥ अवर्णवाद  
मेलनारो एहवो अने ॥८॥ जिनशासननो ॥९॥  
तकारी एटले शत्रु एहवो जे पूरुष ते प्रते॥१०॥

एटले अनंतकायादिकनुं पचखाणकरवुं, शील  
 जलो आचार तेंमणे करिने सहित एटलेतप  
 शीलने विशे उद्यमवंत एहवा ॥ ३ ॥ जला छे  
 जेमने विशे एटले सम्यकत्वादिक गुणोए करिने  
 एहवा ॥ ४ ॥ जे ॥ ५ ॥ जला श्रावक एटले पोतना  
 सहित एहवा ॥ ६ ॥ छे ॥ ७ ॥ ते श्रावकोने ॥ ८ ॥ विमान  
 देवलोक तेमनां सुखा ॥ ९ ॥ नथी ॥ १० ॥ लंज एटले  
 कनां सुख जोगवीने अनुक्रमे करिने मोक्ष नते  
 सीद्धि ॥ ११ ॥ कयावि ॥ गुरु ॥ तं पि ॥ मुसीसा ॥ सुनिदुणमहुरेहि ॥  
 मगं ॥ टवंति ॥ पुणरवि ॥ मह ॥ १० ॥ सेलगवंधगो ॥ ११ ॥ १२ ॥  
 अर्थ ॥ १ ॥ कदाचित कर्मना विचित्रपणा थकि  
 गुरु जे ते ॥ ३ ॥ सीजाय एटले मार्ग थकी ॥  
 ॥ ४ ॥ ते सिथिल थया एहवा जे पोताना गुरु ते  
 उत्तम शीष्य जे ते ॥ ६ ॥ अतिशय निपुण एटले  
 एहवां अने मधुर एटले मीठां एहवां वचनोए  
 ॥ ७ ॥ फारिने पण ॥ ८ ॥ मार्गने विशे एटले संगम  
 विशे ॥ ९ ॥ थापे एटले उन्मार्ग थकि पाछा वापस  
 मार्गमां लावेछे ॥ १० ॥ जेमा ॥ ११ ॥ सेलग  
 दृष्टांत जाणवुं एटले शैलक नामे आचारजने

शेष्य जेम ठेकाणे लाव्या तेम विजा शिष्योए  
ताना गुरुने मीठावचनोए करिने ठेकाणे लाववा  
तां जो कह्युं न माने अने उलटुं बोले तो ते गुरु  
करवा ए जिनसासननी रीति छे ॥२४७॥

सधदिवसे १ दिवसे १॥ धम्मं १ बोहेइ १ अहव १ अहिअयरो १॥  
दिवसेणसत्ती १॥ तहविय ११ से ११ संजमविवत्ती १॥ ॥२४८॥  
१॥ दिवसने विशे ॥२॥ दिवसने विशे एटले निरं  
॥ दश ॥४॥ दश पूरूप प्रते ॥५॥ धर्म प्रते ॥६॥ बोध  
एटले धर्म पमाडेछे ॥७॥ अथवा ॥८॥ दश पूरूप  
रण अधिक पूरूपो प्रते वचन लब्धि ये करिने  
धि करेछे ॥९॥ ए प्रकारनी ॥१०॥ नंदिपेण नामा  
१ शक्ति अटले देशनानि लब्धि छे ॥११॥ तोये  
॥२॥ ते नंदिपेण नामा मुनिने ॥१३॥ संजमनो नाश  
एटले संजमथी पड्या ए कारण माटे नीकाचित्त  
जे भोग ते अतिशय बलवान्छे एटले निकाचित्त  
भोगव्या विना छुटेज नही ॥२४८॥

कउ १ अ १ किश्रीकउ १ अ १॥ खउरीकउ १ य १ मालिण्ड १  
कम्मोहि १ एस १ नीवो १॥ नाऊणवि १ मुझई १ जेण १ ॥२४९॥  
॥१॥ ज्ञाना वरणादि कर्म जे तेंमणे ॥२॥ मलीन क



धित्तूणवि१सामन्नं१॥संयमनोगेसु१होइ१नो१सिदिहो१॥  
नइ१वयणिज्जे१॥सोअइ१अ१गउ१कुदेवत्तं१॥२॥

अर्थ॥१॥जेपूरुप॥२॥चारित्र प्रते॥३॥गृहण  
॥४॥ संजम वेपारने विशे एटले पांच आश्रवणं  
चाय वे प्रकारे त्याग करवुं तेने विशे॥५॥अ  
थायछे एटले होय ॥७॥ वली ॥८॥जो॥९॥  
चावने विशे॥१०॥पडेछे एटले आ लोकने वि  
निक थायछे॥११॥ते पूरुप परचवने विशे  
प्रते एटले कील्वीशिकपणा प्रते ॥१२॥ पांम्यो  
॥१३॥सोच करे एटले पश्चातापमां पडेछे ॥१४॥

मुद्या१ते१जियलोए१॥जिनवरणं१जे१नरा१नयणांवि१॥  
मुद्याणवि१॥ते१मुद्या१जे१नाऊणं१नवि१करंनि१॥  
अर्थ॥१॥आ जीव लोकने विशे॥२॥जे॥३॥  
जिनवरना वचन प्रते॥४॥नथी जाणता॥५॥  
शोच करवा जोग्यछे एटले आ आविवेकी वचा  
वचन जाणता नथी तेमनी सी गति थजे ए  
नुकंषा करवा जोग्यछे॥८॥जे पूरुप ॥९॥  
वचन प्रते जांणीने॥१०॥नथिजा॥११॥करता  
मादि पणा थकी नथी पाछा फरता॥१२॥ने

करवा जोग्य पुरुषोनी मध्ये पण ॥१४॥ विशेष  
करवा जोग्यछे एटले विशेष प्रकारे अनुकंपा  
वा जोग्यछे केमजे जाण पुरुषोने पण प्रमाद महा  
यितुं कारणछे ए हेतु माटे ॥२६०॥

विकल्पधननिहिं ॥ तेभिं ॥ उपाडियाणि ॥ अर्थीणि ॥

जणावि ॥ तिणनयणं ॥ जे ॥ दृढ ॥ विहलंति ॥ धम्मभणं ॥ २६१ ॥

॥ १ ॥ जेम रांक पुरुषोने धनना चंडार प्रते ॥ २ ॥

डाडिने ॥ ३ ॥ ते रांक पुरुषोनां ॥ ४ ॥ नेत्र एटले आं

॥ ५ ॥ उपाडि नाख्यां एटले काढी लीधां ॥ ६ ॥ तेम

संसारने विशेष ॥ ७ ॥ जे पुरुष ॥ ८ ॥ जिन वचन प्रते

जांणीने पण ॥ ९ ॥ ० ॥ धर्म रूप धनप्रते ॥ ११ ॥ न सेव

करवा थकि निरुफल करेछे ते पुरुषोनी पूर्व दृष्टांत

साये उपमा करवी ते कहेछे जेम ते रांक पुरुषो

धन देखाडिने आंख्यो काढी लीधी त्यारे ते धन

कामनुं तेम जिन वचन जांणीने पण पोतानी श

प्रमाणे समकीत सहीत धर्म जे पुरुषोये न क

तेमनुं जाणपणुं शा कामनुं ते माटे जांणीने जां

णा सहीत धर्मने विशेष उद्यम करवो एज सारछे ॥

॥ उच्च ॥ चयं ॥ ॥ मझं ॥ हीणं ॥ च ॥ हीणतरं ॥ वा ॥

સંસારમાં જન્મજરા મરણના દુઃખે કરીને  
 મેલો એહવો॥૩॥એકપણ ॥૪॥ પ્રાણી પ્રતે  
 જીવને॥૫॥જિનં વચને કરીને એટલે જિનરાને  
 એહવા જે તત્ત્વ તેમણે કરીને॥૬॥બોધ કરાવે  
 સમકિત પમાડેછે॥૭॥આ લોકને વિશે રહે  
 ॥૮॥ તે સમકિત પમાડનાર પુરુષ જે તેણે॥૯॥  
 એહવો પણ॥૧૦॥જિવ લોકને વિશે એટલે  
 દ રાજલોકને વિશે॥૧૧॥અમારિપડો ૨૮૯  
 ॥૧૨॥વગાડ્યો એટલે અજયદાન દીધું॥૨૬

સમત્તદાયગાળં ૧॥દુષ્પટિયારં ભવેસુ ૧૭૫૫૫૫

સ્વગુણમેલિયાહેવિ ૧॥ઉવચારમહસ્તકોઢિહિ ॥૨૬

અર્થ ॥૧॥ઘણા એહવા ॥૨॥જીવોને વિશે ॥૩॥૪  
 કરીને સહીત એહવાય પણ એટલે વમણા ૩  
 નુંક્રમે કરીને જાવત અનંત ગુણો એ કરીને સર્વ  
 ય પણ ॥૪॥ઉપકારનાં હજાર તેની કોડીય  
 ને એટલે કરોડો ઉપગારે કરીને ॥૫॥ સમકી  
 પુરુષોનો એટલે સમકિત પમાડનાર ગુરુનો  
 ઉપગાર ન કરો ઠકી એ એટલે તેમના ઉપ  
 છો ન યાલી સકી એ જે કારણ માટે સમકી

जे तेमणे समकीत पमाडवे करीने जे उपगार क  
छे ते उपगारनो बदलो अनंतगुणी उपगारनी को  
णे करीने वाली न शकीए ए कारण माटे समकी  
माडनार गुरुनो वणीज भक्ति करवी ए जावा २६९

सन्तोंने उल्लेख ॥ ठइयाइ नरयतिरियदाराइ ॥

विज्ञाने भाषुसाणि ॥ य ॥ मुखवदुहाइ चहीणाइ ॥ २७० ॥

रिया ॥ १ ॥ हवे समकितना फल प्रते कहेछे जीव जे ते  
सनकित ॥ २ ॥ पांमे सते ॥ ३ ॥ नरक तिर्यचनां वारणां  
॥ रोक्यां एटले समकित पांम्यां पछी जीव नरकनुं  
॥ तिर्यचनुं आउखु बांधे नही केमजे समकित पांमे  
॥ ननुप्य देवतानुं आउखु बांधेछे अने देवता मनु  
॥ आउखु बांधेछे ए कारण माटे ए जावा ॥ ५ ॥ अने  
॥ सनकित पांमे सते देवता संवंधी सुखा ॥ ६ ॥ वली  
॥ ननुप्य संवंधी सुखा ॥ ८ ॥ मोक्ष संवंधी सुखा ॥ ९ ॥  
॥ जे आधीन थायछे एटले सनकितवंत पुरुष देव  
॥ तथा मनुप्यना तथा जावत् मोक्षना सुख प्रते पां  
॥ ए कारण नाटे पेहलां सनकितनो उद्यम करवी

सुखमयदुःखमहणं ॥ सनत्तं वस्तु सुखियं हियर ॥

वस्तु जगुद्योयकरांनाणं चरणं ॥ च भवमहणं ॥ २७१ ॥

अर्थ॥१॥जे पुरुषना॥२॥हृदयने विशेष एटले  
 विशेष॥३॥माठा दर्शनना सिद्धांतोनुं सांजलुं  
 श करनार एटले वीतरागनि आज्ञा रहित  
 रुपोनां रचेलीं जे शास्त्र तेहनुं जे सांजलुं  
 करनार एहवुं॥४॥समकिता॥५॥अतिशय स्थिर  
 ॥६॥ते पुरुषने॥७॥जगतने प्रकाश करनार  
 ज्ञान केवलज्ञान रुप होय॥८॥वली ते  
 जवनुं एटले संसारनुं नाश करनार एहवुं  
 त्र यथाख्यात् रूप होय केमजे समकितनो  
 सते ज्ञाननो अभाव अने ज्ञाननो अभाव सते  
 अभाव ए कारण माटे समकित सहित  
 एटले सर्व विरती पणाने विशेष उद्यम करवो

सुपरिच्छिद्यसमस्तो॥१॥नाणेणालोदयधसभावो॥१॥

निवृणपरणाठत्तो॥२॥इच्छियमर्थमपमाहेद॥२॥

अर्थ॥१॥अतिशये करिने निश्चितछे एटले  
 ते जेहने एटले दृढ समकितवंत एहवो अने  
 ने करिने जाण्योछे जीवा जीवादिक पदार्थनो  
 एटले स्वरूप ते जेणे एहवो एटले परमाय  
 जीवाजीवादिक नव तत्त्वना स्वरूपनो जाण

अतिचार रहित एटले निदोप एहवा चारित्रने  
उपयोगवंत एटले दुपण रहित चारित्रे करीने  
एहवो जे पुरुष॥४॥ मनवंछित एहवो॥५॥ अ  
टले नोक्षरूप प्रयोजन एटले कारज प्रते॥६॥ प्र  
करीने साधेछे एटले पांनेछे॥२७२॥

मुञ्जापार पुडराने॥ दुवन्नरागवन्नेहि॥

भञ्जा पडसोह॥ इय सम्मत्त पमाणहि॥२७३॥

॥१॥ हवे प्रमादे करीने समकित मलिन थायछे ते  
डेछे जेमा॥२॥ धोला एहवो॥३॥ मूलतांणो एटले सूत  
तांतणानो समूह तेहने विज्ञो॥४॥ दुष्ट एटले माठा  
वरण तथा लाल वरण तेमणे करीने॥५॥ वस्त्रनी  
॥६॥ अवरखाणवा जोग्य थाय तेहनो प्रगट अर्थ  
देखाडीये छीए जे वस्त्र कपडानो वणनारो वण  
पडु वणवाने अर्थ पेहेला सुतरनां धोला तांतणा  
छे तेनी मध्ये काला वरणना तथा लाल वरणना  
सुतरना तांतणामिलवे करीने जेम वस्त्रनी धोला  
रोवर रहेती नथी उलटुं कावरचीतरुं थायछे॥७॥  
कारो॥८॥ प्रमादे करीने एटले कुदेव कुगुरु कुधर्म  
सेवन करवुं तथा तेमना भक्तलोकनी साथे सा

धર્મિ પણું કરવું તે રૂપ પ્રમાદે કરીને॥૧॥  
 લિન થાયછે એટલે નાશ પામેછે તે કારણ માટે  
 તનો વૈરીરૂપ પ્રમાદ ત્યાગ કરવા જોગ્યછે  
 નરેસુરવેસુઅં॥જોબંધ૬સાગરોપમના  
 પાલિતવમાણબંધ૬૧૧કોડિસહસ્રાણિ૧૦દિવસે  
 અર્થ॥૧॥જે પુરુષ સૌં વરસના આડસાવલ  
 કર્મ પ્રતે આચરતો સતો તથા પુન્યકર્મ  
 તે॥૨॥ નરકને વિશે॥૩॥વલી॥૪॥દેવલોકને  
 એક॥૬॥સાગરોપમના આડસા પ્રતે॥૭॥વાંધે  
 જે પાપ કર્મ કરેછે તે નરકના આડસા પ્રતે  
 ને વલી જે પુન્યકર્મ પ્રતે કરેછે તે દેવલોકના  
 પ્રતે વાંધેછેતે પુરુષ પાપ કર્મનો કરનારો  
 કર્મનો કરનારો એક દિવશની મધ્યે ॥૧૫૫  
 ॥૧૦૥કોટિ સહસ્ર આડસા પ્રતે॥૧૧૥વાંધે  
 માં વગ્મના આડસા વાલો પાપકર્મ કરનારો  
 એક સાગરોપમનું આડસુ વાંધેછે તે પુન્ય  
 કર્મનો મધ્યે પાપોપમની હજારો કોટિ  
 આડસા પ્રતે વાંધેછે.દેવલોકને વિશે એક  
 દિવસે એક દિવશની મધ્યે જીવ પુન્ય

करेछे ए कारण माटे प्रमाद त्याग करीने आ  
तने विशे उद्यम करवो ए उपदेश॥२७४॥

उद्यमसंखिजं ॥ भागं १ नो १ बंधइ १ सुरगणेषु १ ॥

१ दिवसे १ बंधइ १ ॥ स १ वासकोडिअसंखिज्जा १ ॥ २७५ ॥

॥१॥ जे पुरुष सो वरसना आउखावालो ॥ २ ॥ पु

प्रते आचरीने मनुष्यना भवने विशे रह्यो सतो

ओना समूहने विशे ॥ ३ ॥ पल्योपमना संख्यातमा

नाग आउखा प्रते ॥ ५ ॥ बांधेछे ॥ ६ ॥ ते पुरुष ॥ ७ ॥ ८ ॥

दिवशने विशे एटले निरंतर ॥ ९ ॥ वरसनी कोडि

यातिओ एटले असंख्याति कोडि वरसना आ

प्रते निरंतर ॥ १० ॥ बांधेछे एटले उपाजर्न करेछे

मो १ नरएसु १ वि १ ॥ ब्रुहेण १ नाउण १ नाम १ एयंपि १ ॥

वि १ २ कह १ ३ पमाउ १ ४ निमेसामित्त १ ५ वि १ ६ कायवो १ ॥ २७६ ॥

॥१॥ नरकने विशे ॥ २ ॥ पण ॥ ३ ॥ आ ॥ ४ ॥ अनुक्रमछे

करनारो पुरुष निरंतर असंख्याता वरसनि

नरकना आउखा प्रते बांधेछे ॥ ५ ॥ ए अनुक्रम

॥ पंडित पुरुष जे तेणे ॥ ७ ॥ जांणिने ॥ ८ ॥ निश्चो ॥ ९ ॥

मीचिने उघाडिये एटलो काल ॥ १० ॥ पण एटले

काल पण ॥ ११ ॥ धर्मने विशे एटले क्षमादिक द



श विध जति धर्मने विशे ॥ १२ ॥ पादपूर्ण ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ प्रमाद ॥ १५ ॥ करवा जोग्य होय एटले

प पुन्य पापने उपार्जन करवाना स्वरूप

ने धर्मने विशे प्रमाद क्यम करे आपितु नदि

दिवालंकारावेभूषणाइं ॥ १६ ॥ रयणुज्जलाणि ॥ १७ ॥ घरा

रुवं भोगसमुदयडं ॥ १८ ॥ सुरलोगसमो ॥ १९ ॥ कठ ॥ २० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ प्रधान एहवा अलंकार एटले

त्रादिक अने विशेष भूषणादिक एटले

दिका ॥ २ ॥ वली ॥ ३ ॥ रत्ने करिने उज्ज्वल एटले

हवा ॥ ४ ॥ घरादिक ॥ ५ ॥ रूप एटले शरीरनु

पणुं ॥ ६ ॥ देवलोक सदृश एटले देवलोकना

हवो ॥ ७ ॥ जोगनो समुदाय एटले जोगनो

आ लोकने विशे एटले आ मनुष्य लोकने

क्यां थकि थाय एटले जो तुं धर्मने विशे

छे तो पूर्वे कहेली वस्तुतने शायीमलशे ते

टे प्रमाद छोडीने निरआशीजावे निर्जरा

पयोग सहित धर्म करणी करवी ए उपदेश

देवाण ॥ देवलो ॥ १ ॥ जं ॥ मुख्यं ॥ तं ॥ अरो ॥ सुभाणि ॥ २ ॥

वामसण ॥ ३ ॥ जस्स ॥ ४ ॥ वि ॥ जीहासयं ॥ ५ ॥ हुन्ता ॥ ६ ॥

॥देवलोकने विशेष॥२॥देवताओने॥३॥जे॥४॥  
छे॥५॥ते सुखा॥६॥ अतिशे करीने वाचाल  
॥पण॥८॥पुरुष॥९॥ सो वरसे करीने॥१०॥  
१॥ नहि॥१२॥ कही शके एटले सो वरस सु  
ना सुखनो वर्णव करे तोये पण पार न पां  
वली॥१४॥जे पुरुषने॥१५॥जीनिनुं सो एटले  
॥१६॥होय ते पुरुष पण सैकडो वरसोत्रे  
वताना सुखनो वर्णव करवाने अर्थे न समर्थ  
बीजा पुरुषनुं श्युं केहवूं;केमजे जे पुरुष पर  
आशा रहित वीतराग जापित धर्म प्रते सेवे  
पने देवलोकादिकनां सुख सरागिभाव पणा  
वे घासरुप उत्कृष्टां सुख निष्पन्न थायछे ते  
गटे॥२७८॥

जाइं<sup>५</sup>अइंकख्खडाइं<sup>१</sup>॥दुःख्खाइं<sup>५</sup>परमतिख्खा  
५वनेही<sup>१</sup>ताइं<sup>५</sup>॥जीवंतो<sup>५</sup>वासकोडीहि॥२७९॥

॥नरकने विशेष॥२॥अतिशय करकश एटले दु  
रीने सहन करवा जोग्य एहवां॥३॥अने विपा  
॥थकि उत्कृष्ट तिक्षण एटले अतिशय आकरा  
॥जे॥५॥दुख क्षुधा वृषा परवशपणा दिक वर्ते

छे॥६॥ ते दुखो प्रते॥७॥ वरसनी कोटि एटले  
 वर्षोए करिने पण॥८॥ जीवतो एहवो॥९॥ कोष  
 ॥१०॥ वर्षववाने एटले केहवाने समर्थ थाय  
 इ कही शके नहीं॥२७ए॥

कखडडाहं सामलि असिबणवेयरणि पहरण सयोहं॥

ना १ जायणा उध्पावन्ति ॥ नारया १ तं १ अहम्मफलं ॥ २८

अर्थ॥१॥ करकस एटले आकरो एहवो जे दाह  
 अग्नीनि मध्ये पचावा ॥ २॥ सामलि शब्दे करिने  
 एहवेनामे वृक्ष तेहनां जे पांनां तेणे करिने  
 करवुं, असिबण शब्दे करिने खड्गना जेहनां  
 जेहने विशे एहवुं जेवन तेहने विशे भमवुं, वेयर  
 करिने वैतरणीनां जे नदी तेहनं तपेला तरवा  
 पांणी तेहनं पांन करवुं, पहरण शब्दे करिने  
 क जे शस्त्र तेमनां सइकडो एटले सइकडो  
 राने शरीरादिकनं छेदन करवुं. ए पुर्वे कहा  
 नां ए कारन॥२॥ नरकने विशे नाराकि ॥ २७  
 जीव जे ते॥३॥ जे॥४॥ पीडाओ प्रते एटले  
 ॥५॥ पांमेछे एटल जागवंचे॥६॥ ते॥७॥ अय  
 वीतराग जापित जथार्थ स्वदया परदया

अवलुं करवुं ते रूप जे पाप तेहनं फल जाणवुं॥

या<sup>१</sup>कसंकुसारानि<sup>२</sup>वायवहबंधणमारणसयाइं<sup>३</sup>॥

इहयं<sup>४</sup>पावंता<sup>५</sup>॥परस्थ<sup>६</sup>जइ<sup>७</sup>नियमीया<sup>८</sup>हुंता<sup>९</sup>॥२८१॥

॥१॥आ लोकने विशे॥२॥केटलाएक तिजैच हा

रोडा प्रमुख ते जे ते॥३॥कशा शब्दे करीने फ

अंकुश,आर शब्दे करीने गोचवानो परुणो,निवा

ब्दे करीने भूमिने विशे पाडवुं,वध एटले लाक

दिके करिने कूटवुं,बंधन एटले दोरडा सांकोला

करिने बांधवुं,मरण एटले जीवथी जुडुं करवुं ते

सइकडो एटले पूर्वे कहेलां वध बंधन मरणादि

सइकडो वार पांमवुं ते प्रते॥४॥नहिज॥५॥पांम

वा॥६॥जो॥७॥परजवने विशे॥८॥नियमवंत ॥९॥

हवा एटले जो परजवने विशे नियम करयोह

आ जवने विशे कोइ कर्मना उदयथी तिजैचप

म्या तोये पण पूर्वे कहेलां दुख प्रते न पांम्या

टे जाण पुरुपनी नीआये जाणपणा सहित वर्त

ने विशे उद्यम करवो ए उपदेश॥२८१॥

विचंकिलेसो<sup>१</sup>॥सुखवं<sup>२</sup>बुच्छं<sup>३</sup>उवहवा<sup>४</sup>बहुया<sup>५</sup>॥

जगचिठ्यादिअ<sup>६</sup>॥अणिइवाचो<sup>७</sup>अ<sup>८</sup>माणुस्ते<sup>९</sup>॥२८२॥

अर्थ॥ १॥ मनुष्य जवने विशे जे दुखनां का  
 कहीए छीए॥ २॥ जावजीव सुधी संकेश एटले  
 बंधी चिंता॥ ३॥ तुच्छ एटले असार एहवुं॥ ४॥  
 ले विशय संबंधी सुख॥ ५॥ धना एहवां  
 गिन चौरादिकथकी उत्पन्न थएला॥ निष  
 ले अधम लोक तेमना आक्रोशादि दुर्वचन  
 रवुं॥ ८॥ बली॥ ९॥ अनिष्ट स्थानकने विशे परव  
 रिते रेहेवुं॥ आ पूर्वे कहां एहवां जे दुखनां  
 मनुष्य जवने विशे धर्म रहित प्राणिने थायछे॥

चारगरोहबहबंधरोगधनहरणमरणवसनाइ॥

मणसंतापो १ अज्ञसो २ विगोबणया ३ य ४ माणुस्से ॥ २३॥

अर्थ॥ १॥ बली मनुष्य जवने विशे जे दुखनां  
 थायछे ते कहेछे॥ २॥ बंधीखांनाने विशे कोइक  
 करीने पडवुं एटले रोकावुं, बध एटले  
 करीने ताडना, बंधन एटले दोरडा सांको  
 रीने बंधावुं, रोग एटले वात पित कफथकी  
 एली शरीरनी पीडा, धननुं हरण, मरण  
 की जुटु थवुं, वासन एटले कष्टादिक॥ ३॥  
 प एटले चित्तने विशे उदवेगा॥ ४॥ अपजश

॥५॥ वली ॥६॥ विगोवणा आ पूर्व कहां एहवां  
नां कारण मनुष्य जवने विशे धर्म रहित प्रां  
मेछे ते माटे धर्म रहित मनुष्य गति पांमवे क  
तुं अपितु कांइ नहि ॥२८३॥

संतविहिय ॥६॥ दाहिं दुस आहिं दुस उताहिं ॥

विमानुस्सं ॥ मरंते केई सुनिबिना ॥२८४॥

॥१॥ चिता, कुटुंबनुं जरण पोपण करवादिकथी

थएली; संताप, चोरादिकथकी उत्पन्न थएली ते

करिने अने वली ॥२॥ पूर्व जवने विशे करेलां एहवां

कर्म तेमणे प्रेरणा कर्यां एटले पूर्व जवने विशे

तां जे कर्म ते कर्मनां उदयथकी निष्पन्न थयां

॥३॥ दलिद्रपणु एटले निर्धनपणुं अने रोग जलो

ठोदर भगंदरादिक तेमणे करिने ॥४॥ अतिशये

खेद पांम्या सता एहवा ॥५॥ केइक पुरुषा ॥६॥

पणा प्रते ॥७॥ पांमीने पण ॥८॥ मरण पांमेछे ए

धर्म रहित प्राणी दूखी थया सता मनुष्यनोभव

गमावेछे ते माटे प्रमाद छोडीने निर्दभपणे शु

नि विशे उद्यम करवो ए श्रेयछे ए उपदेश ॥२८४॥

देवलो ॥१॥ दिवाभरणानुराजियसरिरा ॥

जं<sup>१</sup>परिपडंति<sup>२</sup>तत्तो<sup>३</sup>तं<sup>४</sup>दुखं<sup>५</sup>दाहं<sup>६</sup>तेसिं<sup>७</sup>॥२८॥

अर्थ॥१॥जे कारण माटो॥२॥देवलोकने वि.

व्य एटले प्रधान एहवां आभरण एटले धरं

णे करीने अनुरंजित एटले शोभायमानछे

मनां एहवां॥४॥देवता जे ते पण॥५॥ते .

॥६॥पाछा पडेछे एटले अशुचि एहवां

शे आवेछे॥७॥ते॥८॥दुख॥९॥ते देवताओने॥१०॥

शये करिने दुखे सहन करवा जोग्यछे ते .

देवलोकने विशेष पण सुख नथी ए भाव॥२८॥

तं<sup>१</sup>सुरविमाणविभवं<sup>२</sup>॥चितिय<sup>३</sup>चवणं<sup>४</sup>च<sup>५</sup>देवलोकात्<sup>६</sup>

यं<sup>७</sup>चिय<sup>८</sup>जं<sup>९</sup>नवि<sup>१०</sup>॥फुट्टइ<sup>११</sup>सयसकरं<sup>१२</sup>हियं<sup>१३</sup>

अर्थ॥१॥ते प्रसिद्ध आश्चर्यकारि एहवां॥२॥

विमाननुं विभव एटले ठकुराइपणुं ते प्रते .

रीने एटले मने करीने विचारीने ॥४॥वली॥

कथकी॥६॥चवन एटले पाछु गर्भावासने .

आववुं ते प्रते विचारीने शी रीते विचारीने .

क्यां विमाननुं ठकुराइपणुं ओने क्यां हमारे .

नकने विशेष अवतरवुं ए प्रकारे चिंतवता .

ओनुं पण॥७॥सो ककडा सहित .

युं सतुं॥१०॥नथिज॥११॥फुटतुं एटले हृदयना सो  
नथि थता ए कारण माटे ते देवताओंनुं हृदय  
॥अतिशय वळवंत एटलें अतिशय कठोरहिजछे  
॥निश्चे आ केहेवे करिने देवलोकने विशे पण मि  
ष्टि प्राणियोने दुखज वर्तेछे एम देखाड्युं॥२८६॥  
विज्ञायमयकोहमाणमायालोभोहे<sup>१</sup>एवमाईहिं<sup>२</sup>॥

॥३॥समभिभूया<sup>३</sup>॥तेसिं<sup>४</sup>कत्तो<sup>५</sup>सुहं<sup>६</sup>नाम॥२८७॥

॥१॥इर्पा एटले मांहोमांहि मत्सर,विपाद एटले  
नो करेलो पराभव,मद एटले अहंकार,क्रोध ए  
अप्रितिरूप,मांन एटले पारका गुणनुं असहनक  
या एटले सरलता रहितपणुं,लोचन एटले अ  
णुं तेमणे करीने अने॥२॥ए आदिके करीने एट  
तना विकारादिके करीने॥३॥पराभव पांम्या स  
टले पुर्वे कह्या एहवा इर्पा विखाद कपायादिकने  
डिला एहवा सता॥४॥देवता जें ते पण देवलो  
विशे वर्तेछे ए कारण माटे॥५॥ते देवताओंने॥६॥  
कि॥७॥सुख होया॥८॥निश्चे अपितु मिथ्या द  
वताओंने देव लोकने विशे पण सुख नहिंज हो  
कारण माटे मोक्षना अर्थि प्राणिओये तत्वज्ञां



नीनी समीपे तत्व बोधनो खप करवो १

धम्मं<sup>१</sup> पि<sup>२</sup> नाम<sup>३</sup> नाउण<sup>४</sup> ॥ कीस<sup>५</sup> पुरिसा<sup>६</sup> सहंति<sup>७</sup> पु<sup>८</sup>  
सामित्ते<sup>९</sup> ॥ साहीणे<sup>१०</sup> ॥ को<sup>११</sup> नाम<sup>१२</sup> करिब्ब<sup>१३</sup> दास<sup>१४</sup>

अर्थ ॥१॥ पुरुष जे ते ॥२॥ नाम एटले  
रना दूख निवारवे करिने मोक्षना सुख  
प्रसिद्ध एहवा ॥३॥ धर्म प्रते ॥४॥ जाणिने ॥५॥  
शाकारण माटे ॥६॥ बीजा पुरुषोना वचना ॥  
॥८॥ सहन करेछे एटले खमेछे एटले बी  
ने वश वर्ति केम थायछे ॥९॥ पोताने आधि  
पोताने वश एहवुं ॥१०॥ स्वांमिपणुं सते केम  
रिने पोताने वशपणु थायछे माटे ॥११॥ को  
रुप ॥१२॥ परना दासपणा प्रते ॥१३॥ करो  
परपुरुषनी आज्ञामां जिम वर्तेछे तिम जि  
ज्ञामां वर्ततो सतो स्वांमिपणा प्रते पामे ते  
नराजनी आज्ञा पालवानो खप करवो १

संसारचारण<sup>१</sup> चारण<sup>२</sup> ॥ आवोलियस्स<sup>३</sup> बंधेहि ॥  
उविग्गो<sup>४</sup> जस्स<sup>५</sup> भणो<sup>६</sup> ॥ सो<sup>७</sup> किर<sup>८</sup> आसन्नसिद्धे<sup>९</sup>

अर्थ ॥१॥ बंधीखाना तुल्य एहवा ॥२॥  
धीखानाने विशेष ॥३॥ कर्मरूप बंधने करिने

जीओओ करीने॥४॥समस्त प्रकारे पीडायेलो  
 मरुपी वेडीमां पडेलो एहवो ॥५॥जे पुरुष तेनुं  
 न एटले चित्त॥७॥उदविघ्न थयुं एटले क्यारे हूं  
 माररुप बंधीखांनाथकी छुटीने मोक्ष प्रते पांमी  
 ति रीते जेहनुं मन थयुछे॥८॥ते पुरुष ॥९॥  
 वर्तिछे सिद्धीपथ एटले मोक्षनो मार्ग ते जेहने  
 थोडा कालमां मोक्षमां जनारो एहवो जांणवो  
 केर इति सत्य हवे थोडाकालमां मोक्षजनार  
 लक्षण आगली गाथामां कहीओ छीओ॥२८९

कालभवात्सिद्धियस्त<sup>१</sup>॥जीवस्त<sup>२</sup>लख्यणं<sup>३</sup>इणमो<sup>४</sup>॥

हेसु<sup>५</sup>न<sup>६</sup>रज्जइ<sup>७</sup>॥सव्वथामेसु<sup>८</sup>उज्जमइ<sup>९</sup>॥२९०॥

॥१॥थोडा कालमांछे संसार थकि सिद्धी एटले  
 जेहनी एटले सीघ्र मुक्तिने विशे जनारा एहवा  
 वनुं एटले प्राणीनुं॥३॥आगल कहीशुं एहवुं॥४॥  
 जाणवुं केमजे लक्षणे करिने सीघ्र मोक्षगामि  
 लखायछे ए हेतुमाटे ते लक्षण प्रते कहेछे॥५॥वि  
 जेपांचइंद्रियोथकिउत्पन्न थया एहवा शब्दादि  
 यं तेमना सुखने विशे॥६॥ना॥७॥रीओ एटले आ  
 ही थाया॥८॥अने संजमादिक क्रिया अनुष्ठान

ने विशे सर्व बले करिने एटले पोतानी

॥१॥ उद्यमं करेछे पोतानी शक्ति गोपवतो न  
वा लक्षणे मोक्षगांमी पुरुष जाणवो॥२९॥

हुबल १ व १ न ४ व ५ देहबलं १ ॥ धिदमदसत्तेण १ २ जइ १ न १  
अधिहिसि १ ५ चिरंकालं १ ५ ॥ बलं १ च ८ कालं १ घ १ ॥ सोअंनो

अर्थ ॥१॥ शरीरनु सामर्थपणुं॥२॥ होया॥३॥

॥४॥ नहोय एटले शरीरनुं सामर्थपणुं पोताने  
होय कर्मने आधिनछे ए हेतु माटे ॥ ५॥

हे शिष्या॥७॥ शरीरना सामर्थपणा प्रते॥८॥

कालप्रते॥१०॥ नीश्चे॥११॥ सोच करतो सतो

हारे शरीरनुं सामर्थपणुं नथी एम विचारतो

ने बली हमणां अवसर नथी एम विचारतो

॥१२॥ धीरज एटले मननुं धैर्यपणुं मती

नी बुद्धि सत्व एटले पोतानुं साहसीकपणुं

नां ए करीने एटले धीरजे करीने तथा

करीने तथा पोताना साहसीकपणा ए करीने

थी॥१४॥ उद्यम करतो एटले हमणां धर्मने

जसु यायछे परंतु पछी तुं॥१५॥ घणा काळ

आ संसारने विशे रहीश ते कारण माटे

शक्तीने अनुसारे समकीत सहति धर्मने विशे उ  
रवो ए उपदेश॥२९१॥

हलियं च ११ बोहिं १॥ अकरितो ११ नागयं ११ च ११ पथितो १॥  
इदं ११ बोहिं १॥ लभसि ११ कयरेण ११ मुलेणं १॥ ॥२९२॥

॥१॥ आ जवने विशे पांमी एहवी ॥२॥ बोधी  
जैन धर्मनी प्राप्ति प्रते ॥३॥ न करतो एटले न  
तो सतो ॥४॥ वली ॥५॥ अनागत काल संबंधी ए  
नागामी जव संबंधी धर्मनी प्राप्ति प्रते ॥६॥ प्रा  
करतो एटले वांच्छा करतो सतो एहवो ॥७॥ हे  
तुं अन्य जवने विशे एटले आगामि जवने विशे  
तोधि एटले जैन धर्मनी प्राप्ति प्रते ॥८॥ कीया ॥  
मुल्ये करिने ॥९॥ पांमीश एटले हे मुख जो आ  
विशे पांमेलो एहवो जे धर्म ते प्रते नथी आ  
त्यारे आगामि भवने विशे शी रीते पांमीश  
॥१०॥ निश्चे ॥२९२॥

यगकालवल्लसमाख्यालं वण्डं ११ विच्छूणं १॥

वंधवियं नियमधुरं १॥ निरुद्धमाड ११ पमुच्छति १॥ ॥२९३॥

॥१॥ निरुद्धमि एटले आलसवंत एहवा जे प्रां  
॥ शरीरनुं संघवण कालवल्ल दुसमकाळ रोगा

दिक आलंबन प्रते एटले हमणां तेहवुं  
 अने हमणां काल पण दुकाल वर्तें छे अने  
 ल एटले सामर्थ्यपणुं पण तेहवुं नथी अने  
 एटले हमणां पांचमो आरौ वर्तें छे अने  
 रहितपणुं पण नथी ते माटे शी रीते धर्म  
 कीए ए प्रकारे आलंबन प्रते॥३॥ग्रहण करीने  
 संवयणना बलादिकनो वांक काडीने॥४॥मन  
 ॥५॥नियम रुपधुरा एटले चारित्रनी क्रिया  
 ख जे नियम एटले अजिग्रह तेहना चारु  
 रयुं ते रुप धूसरा प्रते॥६॥प्रकर्ष करीने  
 एटले जे आलशु पूरुप होयछे ते कालादि  
 काडीने पोताना ग्रहण करेलां व्रत प्रते मुह  
 ण उत्तम पूरुपोए तेम न करवुं पोतानी शक्ति  
 धर्मेने विशेष उद्यम करवो ए उपदेश॥७॥निर्भर

काष्ठमय परिहाणी॥संज्ञमत्तो गारं नलिपि  
 लयगारं वादियज्यं॥नहुं॥सयणा भंता॥अंभ

अर्थ ॥३॥ बली॥२॥कालनी ॥३॥ममन्त  
 नी एटले निरंतर कालनुं बटवापणुं वर्तें  
 म निर्वाहने जोग्य एटले संजम पालवाने

क्षेत्र पण हमणां॥६॥ नथि तारे शुं करवुं एवी  
रु महाराजनी आगल शिष्ये प्रप्न करवुं त्यारे  
हाराज उत्तर कहेछे॥७॥ हे शिष्य जतनाए क  
टले द्रव्य भाव वे प्रकारे जतना सहित॥८॥ वर्त  
ले प्रवर्तवुं॥९॥ जतना करवा मांडे सते एटले  
ने विशे उद्यम करे सते ॥१०॥ चारित्र रुप अंग  
१॥ नहिजा॥१२॥ जागे एटले विनाश प्रते न  
ए कारण माटे समकित सहित जतनाए करीने  
ने शक्ति प्रमाणे चारित्रने विशे उद्यम करवो  
मदकसायगारवइंद्रियमयवंभचेरगुत्तिसु१॥

भायविणयतवसत्तिउय१॥ जयणा सुविहियाणं१॥ २९५॥  
॥१॥ सुविहीत एटले जलुं विहित नाम आचरवुं  
चरणते जेणे एहवा साधु जे तेमने ॥२॥ समिति  
इर्या समितियादिक पांच समिति तेमनुं पाल  
य एटले क्रोधादिक च्यार कपाय तेमनो त्या  
वो, गारव शब्दे करीने रिद्धीगारव रसगारव  
गारव ए त्रण गारवनुं निवारण करवुं, इंद्रिय ए  
पांच इंद्रियोनुं वश करवुं, मद एटले जाति मदा  
आठ मदनुं निवारण करवुं ब्रह्मचरज निगुप्ति

एटले ब्रह्मचरजनी नव वाडनुं पालवुं; एटलां  
 ने विशे एटले ए पूर्वे कहां पदार्थेने आये  
 ली॥४॥ स्वाध्याय एटले वाचनादिक पांच  
 सइज्ञाय, विनय एटले दस प्रकारे विनय, तप  
 वाइझ अभ्यंतर वे प्रकारे करीने वारे नेदे  
 नानुं करवुं अने शक्ति एटले पोतानी शक्तिनुं  
 ववुं ए पूर्वे कहां सइज्ञायादिक पदार्थेने आये  
 जतना करवा जोग्य छे एटले पूर्वे कहां  
 क तथा सइज्ञायादिक पदार्थेने विशे भला स  
 मणे निरंतर जतना करवी ए भावा॥२९५॥

हवे जतनानुं स्वरूप आगली गाथाए करीने  
 युगमित्तरदिटि॥१॥ १यं १पयं १चखूणा १विसोहिनी॥  
 अवलिताउत्तो॥ १॥ इरियासमिउ १मुणी १होइं॥२९६॥

अर्थ ॥१॥ युगमात्र एटले साढा त्रण हाय १५

र हाय

क्षेत्र तेनी मध्ये थापी

१५

५ करीने एटले नेत्रे

१५

पगलो॥५॥

१५

करतो

१५

१५ने

१५

मुं मन ते जेणे एहवो, ए कारण गाटे उपयोग  
एले धर्म ध्यान सहित एहवो॥७॥ जे मुनि ते ॥

एटले चालवानो मारग अथवा मुनीनो आचार  
से सावधान एटले सम्यक प्रकारे उपयोगवंत  
॥१॥ होय एटले इर्या समिति नो पालनार कहीए॥

॥२॥ भासं ॥ अणद्वयं नकारणे ॥ न भासइ ॥ ५॥

मुत्तियपरिवर्जित ॥ ६॥ अथाजइ ॥ भासणात्तमिड ॥ १२९॥

॥१॥ कारज एटले ज्ञानादिकारज उत्पन्न धये

॥ जोपरहित एहवी ॥ ३॥ जापा एटले वचन प्रते

यण करेछे एटले बोले छे एहवो ॥५॥ वली ॥६॥

विना ॥७॥ नहिजा ॥८॥ बोले ॥९॥ वली ॥१०॥ विक

ले च्यार प्रकारनी विकथा तेणे करीने आगम

रुद वचननुं बोलवुं तथा चिंतवन करवुं तेणे क

हित एहवो ॥११॥ जे जति एटले जे साधु होय

॥१२॥ भाषण करवाने विज्ञे एटले बोलवाने

नमित एटले सावधान होय एटले जापा समि

पालनार कहीए ॥२९॥

॥ नेत्तणाड ॥ भोयन दोसे ॥ ५॥ पंच ॥ सोहेइ ॥

॥ नेत्तणाड ॥ आज्ञादि ॥ अत्रहा होइ ॥ १२९॥



अर्थ ॥१॥ बेतालीस प्रकारना॥२॥  
 टले आहारना दोष प्रते॥३॥वली॥४॥पांच  
 जनादिक पांच॥५॥भोजनना दोष एटले भो-  
 तीवखत लागेछे ते प्रते॥६॥जे साधुसोधेछे  
 छे॥७॥ते साधु॥८॥एपणाने विशेष एटले आहा-  
 करवाने विशेष समित्त एटले सावधान होय  
 पणा समितिनी पालनारो कहिये॥९॥जो  
 ले तो॥१०॥आजिविकानो करनारो एटले  
 ॥११॥होय एटले दोष सहित आहार ग्रहण  
 रिते पोतानी आजिविका चलावेछे ते केवण  
 रण करवे करिने पेट जरनारो कहिये ॥१२॥

पुर्वि चरुयूपरिखितय ॥१॥पमज्जितं ॥२॥जो ॥३॥वे ॥४॥  
 आयाणभंडनिखलेवणाइ समित्त मुणी होइ ॥१॥२॥१॥

अर्थ ॥१॥जे साधु॥२॥प्रथम एटले ग्रहण  
 कि पेहला॥३॥चक्षुत्रे करिने सम्यक प्रकारे  
 कन करिने॥४॥पछि रजोहरणादिके करिने  
 करिने एटले पुंजिने हरेक कोइ वस्तु प्रते  
 विशेष स्थापन करेछे एटले मुके  
 थाकि ग्रहण करेछे॥८॥ते मुनी ते साधु॥९॥

मि थकि वस्तुनु ग्रहण करवुं॥भांड एटले उप  
नूमिने विशे निक्षेप एटले मुकवुं तेहने विशे  
एटले सावधान॥१०॥होय एटले जतना पूर्व  
ण करतो अथवा मुकतो एहवो जे साधु ते आ-  
डनिक्षेपणा समितिनो पालनार कहिये॥२९९॥

आसवणखेलजल१॥सिंघाणएय२पाणविही३॥

इए४एसे५॥निसिरंतो६होइ७तस्समिउ८॥३००॥

॥१॥उच्चार एटले वडिनीत एटले ठंडीला॥पास  
टले लघुनीत एटले मात्रा॥खेल एटले मुखनो  
जल एटले शरीरनो मला॥सिंघाण एटले नासि  
मल एटला वानां प्रते॥२॥वली॥३॥परठववा  
य एहवो अशुद्ध आहार पांणिनो विधि ते प्र  
रुडी रीते जांणेलो एटले त्रसथावर प्रांणीये  
रहीत एहवा॥५॥भूमि प्रदेशने विशे एटले स्था  
विशे॥६॥परठवतो एहवो जे मुनी ते मुनी॥७॥  
वाने विशे सावधान एटले पारिष्ठापनीका समि  
पालनारो॥८॥होय॥३००॥

माणो२माया३॥लोभो४हासो५रई६अ७अरई८अ९॥

१०भयं११दुगंछा१२॥पचखकली१३इमे१४सवे१५॥३०१॥

२३०० ०००६०६३३



एटले मांन करेछे ते पूरुष प्रते मांन हस्ती जे  
ए रूप करेछे एटले चार गतिमां जमावेछे. ए  
मांनरूपहस्तीनो स्पर्श न करवो एजाव॥३१२॥

श्रीमहागहनं १॥जो १ पावेसइ १ साणुवायफारेसविसं १॥

चिरेण १ विणस्सइ १ माया १ विसवल्लीगहनसमा १॥३१३॥

॥१॥जे पुरुष ॥२॥ अनुकुल एहवो वायरो तेना  
थकीज उत्पन्न थयुं एहवुं जे विप तेहणे करीने  
एटले जे वनने विशे वायुना स्पर्श थकीज विप  
जे एहवुं॥३॥विपरूप वेला तेंमणे करीने मोहटुं  
घहन एटले सांकडुं एहवुं जे वन एटले विपरूप  
मोहटुं वन ते प्रते॥४॥प्रवेश करेछे॥५॥ते पूरुष  
मोडा कालमां॥७॥विनाश प्रते पांमेछे॥८॥ए प्रकारे  
जे ते पण॥९॥विपवल्लीना वन सरस्वी जांणवी.

भयागरे १ सागरंमि १॥तिमिमगरगाहपूरंमि १॥

विस्सइ १ सो १ पावेसइ १ ॥लोभमहासागरे १ भीमे १॥३१४॥

॥१॥जे पूरुष ॥२॥घोर एटले भयंकर एहवो॥३॥  
स्थानक एहवो॥४॥मच्छ मघघर जीवविशेष तेम  
ए ते जेहने विशे एटले विहांमणा एहवा जल  
करीने पूरण एहवो॥५॥समुद्र तेहने विशे ॥६॥

न होय॥९॥सुसाधु जे तेमने पूर्वे कहा ॥६॥  
ना प्रकार नथी सेवन करवा जोग्य एटले  
होय ते पुद्गलभावनेविशे रति करे नही ए म.

उधेवउ<sup>१</sup>अ<sup>२</sup>अरणामउ<sup>३</sup>अ<sup>४</sup>॥अरमंतिया<sup>५</sup>य<sup>६</sup>अरइ<sup>७</sup>य<sup>८</sup>  
कलमलउ<sup>९</sup>अणेगगया<sup>१०</sup>य<sup>११</sup>॥कत्तो<sup>१२</sup>सुविहियाण<sup>१३</sup>

अर्थ ॥१॥ उदवेग एटले धर्मनी समाधि थकी  
वापणुं॥२॥वली॥३॥पांच इंद्रियोना  
नुं जवुं॥४॥वली॥५॥धर्मने विशे मननुं नरमवुं  
धर्म थकि विमुखपणुं॥६॥वली॥७॥अरति  
शय चित्तनो उदवेग॥८॥वली॥९॥विशयने  
व्याकुलपणुं॥१०॥वली॥११॥अनेकाग्रपणुं  
मिलतुं मनने विशे विचारवुं ए पूर्वे कहा  
ना संकल्प एटले अरतिना प्रकार॥१२॥  
धुआने एटले उत्तम मुनीयोने॥१३॥क्याथकि  
पितु नहिंज होय ए जावा॥१४॥

सोगं<sup>१</sup>संतावं<sup>२</sup>अधिइं<sup>३</sup>च<sup>४</sup>॥मनुं<sup>५</sup>च<sup>६</sup>वेमणस्सं<sup>७</sup>च<sup>८</sup>  
काखनरुचभावं<sup>९</sup>॥न<sup>१०</sup>साहुधम्मंमि<sup>११</sup>इछंति<sup>१२</sup>॥३१॥

अर्थ ॥१॥ शोक एटले पोताना संबंधी लो  
ए थये सते शोक धरवो॥२॥संताप एटले

करवो॥३॥वली॥४॥अधिरज एटले हा इति खेदे  
म हूं एहवुं गाम अथवा उपाश्र प्रते मुकुं ए प्रका  
वेचारवुं॥५॥वली॥६॥मन्नुं एटले इंद्रियोनुं मोकलुं  
वुं॥७॥वली॥८॥मननुं उदासीपणुं एटले शोके क  
पोताना घातनुं विचारवुं॥९॥करुणापणुं एटले थो  
रुं रोवुं, मोटा शब्दे करीने रोवुं॥१०॥साधु धर्मने  
रहेला एहवा साधु जे ते आ पूर्वे कहा एहवा  
लोकना जेद तेहनी मध्येथी एक पण जेद प्रते॥११॥  
१२॥इछे एटले साधु मुनिराज जे ते पूर्वे कहा ए  
शोक प्रते न करे ए जाव॥३१९॥

संखोह विसाड॥मग्गाविभेड विभीसियाड॥अ॥

मग्गदंसणाणि॥अ॥१॥दढधम्माणं कड हंति॥१॥३२०॥

॥१॥ भय एटले कलीवपणे करीने अकस्मात  
॥२॥संक्षोज एटले चोरादिक देखीने नासवुं॥३॥  
द एटले दिनपणुं॥४॥मार्गनो विजेद एटले मार्ग  
वेशे सिंहादिक प्रते देखीने त्रास पांमवुं॥५॥विजि  
ग एटले वेतालादिक देवता प्रते देखीने जय पा  
॥६॥वली॥७॥परना एटले कुतीर्थीयोना जे मा  
मनुं जय थकी वा अथवा पोताना स्वार्थ थकी दे

દેઘાડવું એટલે પરુપવું અથવા પરને એટલે ૧૧  
 લનાર લોકોને જયેં કરીને મારગનું દેઘાડવું  
 કહ્યા એહવા સર્વે પણ મયના પ્રકાર ॥ ૮ ॥ ધર્મ  
 મેં તે જેમને એહવા જે સાધુ તેમને ॥ ૯ ॥ ૪૫૦  
 હોય અપીતુ નહીજ હોય ॥ ૧૧ ॥ નિશ્ચે ॥ ૩૨ ॥  
 કુચ્છા<sup>૧</sup> ચિલી<sup>૨</sup> ગમલ<sup>૩</sup> સંકડે<sup>૪</sup> સુ<sup>૫</sup> ॥ ઝેવડ<sup>૬</sup> અણિ<sup>૭</sup> સુ<sup>૮</sup> ॥  
 ચણ<sup>૯</sup> નિયત્ત<sup>૧૦</sup> મસુ<sup>૧૧</sup> મેસુ<sup>૧૨</sup> ॥ નથિ<sup>૧૩</sup> દેવે<sup>૧૪</sup> સુ<sup>૧૫</sup> દંતા<sup>૧૬</sup> નં<sup>૧૭</sup> ॥ ૨૨ ॥  
 અર્થ ॥ ૧ ॥ અપવીત્ર એહવો જે મલ તેણે ૪૫  
 લાં એહવાં મુએલાં કલેવર તેમને વિશે એટલે  
 ॥ ૨ ॥ જુગુપ્સા એટલે નિંદા ન કરવી ॥ ૩ ॥  
 વિશે એટલે મલિન દેહ વસ્ત્રાદિકને વિશે ॥ ૪ ॥  
 ગ ન કરવો ॥ ૫ ॥ અશુભ એટલે કીડાયો એ મત  
 લા એહવા ॥ ૬ ॥ દ્રવ્ય મુયેલાં કુત્રાદિક દ્રાપ્તિ  
 આવે સતે ॥ ૭ ॥ આંસ્વોનું પાછું વાલવું એટલે  
 એ કરીને ન જોવું એ પુર્વે કહ્યા જે નિંદાના  
 દાંત પૂરુપોને એટલે ઇન્દ્રિયો દમિ છે જેમણે  
 રુપોને ॥ ૯ ॥ ન હોય એટલે દાંત પૂરુપ જે તે  
 એહવી વસ્તુની નિંદા ન કરે અપીતું સમભાવ  
 ૧ ॥ ૧૦ ॥ આંખનાં નાકનાં ॥ મુઢિયનાં ત્તે ૧૧ ॥ નૂન ૧૨ ॥ જીવસ્થ ૧૩ ॥

पञ्चत्तीरद्व०॥अतिवलीड०॥कम्मसंघाड०॥३२२॥

॥१॥प्रसिद्ध एटले जिनराजे कहेलो एहवो॥२॥

वै कहेलो कपायादिकनो नियह करवो एटले

खूं त्यारे शीष्य बोल्यो जे पूर्वे कहेला कपाय

रूप प्रते पण॥३॥जांणीने ॥४॥जीवने गुं ॥५॥

॥६॥मुझावुं जोग्यछे?एटलेमुंढपणे धवुं घटीतछे?

मुझावुं घटीत नथी त्यारे कपायादिकना स्वरूप

जांणीने पण क्येम मुझायछे क्येम दुर नथी क

नो उत्तर कहीये छीये॥७॥जीव जे तेंणे फेडवा

जे कपायादिक दूर करवाने॥८॥न॥९॥समरथ थ

ए एटले जीव जेते कपायादिक प्रते दूर करवा

र्थ थतो नथी तेहने विशेष कारण कहेछे जे कारण

१०॥कर्मनो समूह एटले आठ कर्मनो समूदाया॥

गतिशय बलवान वर्त्ते छे एटले जिहां सुधी कर्मनुं

नपणुं वर्त्ते छे तिहां सुधि जीव जे ते कपायादिक

करवाने समर्थ थतोज नथी ए भाव॥३२२॥

इ०बहुतुड०३०सम्मउ०य०॥सीसगणत्तंपरिवुडो०अ०॥आविणि

०अ०समए०॥तह०॥तह०॥सिद्धंतणडिणीड०॥३२३॥

॥१॥जेमा॥२॥जेमा॥३॥बहुश्रुत थायछे एटले ब



हूश्रुत सांजल्युं छे जेंणे एहवो अथवा बहु  
 नारो थायछे॥४॥वली॥५॥सम्मत् एटले ५॥  
 लोकोने मान्य एटले वल्लभ थायछे॥६॥  
 प्यना समुहे करीने परवरेलो एटले बहु ५॥  
 ने परवरेलो एहवो थयो सतो पण जे  
 जिनमारगने विशे एटले जिनराजना सिद्धांतने  
 ॥१०॥निश्चय रहित एटले नथी जाण्यो रहस्य  
 एे एहवो एटले अनुभवज्ञान रहित एहवो हे  
 तीमा॥१२॥तीमा॥१३॥सिद्धांतनो एटले जीन  
 प्रत्यनीक एटले वयरी भुत जाणवो.जाण्यो  
 जेंणे एहवो थोडुं भणेलो छे तोये ५॥ मोक्ष मार्ग  
 राधक जाणवो ए भाव॥३२३॥

पवराइं<sup>१</sup> बध्यपायासणोवगरणाइं<sup>२</sup> एस<sup>३</sup> विभवो<sup>४</sup> मे<sup>५</sup>॥  
 अवि<sup>६</sup>य<sup>७</sup>११महानननेया<sup>८</sup>अहं<sup>९</sup>ति<sup>१०</sup>इह<sup>११</sup>इद्विगारविड<sup>१२</sup>॥  
 अर्थ॥१॥हवे रिधि गारवनुं ७॥५॥कहिये  
 रो॥२॥आ॥३॥प्रधान एहवा॥४॥वल्ल पात्र  
 करणादि रुपा॥५॥वैजव एटले संपत्ति वतें छे॥  
 ॥७॥हुं॥८॥महाजननो एटले मोहोटा शे  
 नेता एटले स्वांमिछुं॥९॥इहां॥१०॥ए प्रकारे

विचारवे करीने॥११॥रिद्धि गारववालो कहीये  
जे साधु पूर्व कह्यो एहवो विचार करे ते रोधी गा  
करनार कहीये॥३२४॥

सं'विरत्तं'लूहं'॥जहोवन्नं'च'निथ्यए भुत्तुं॥

पि'पेत्तलापि'१५१॥नगद'३रत्तगाखे'गिद्धो१३२५॥

॥१॥हवे रसगारवनुं लक्षण कहेछे रसगारवने  
॥२॥अथिल एटले लोलपि एटले सारा सारा  
र खावानी इच्छावालो थयो सतो एहवो जे ना  
त्र साधु॥३॥रसे करीने रहीत एहवुं॥४॥जुनुं एह  
॥लुरुं एहवुं॥६॥बली॥७॥ निक्षाने विशे नमवे  
जेहवुं मल्युं एहवुं अन्न पाणी ते प्रते॥८॥ खा  
॥१॥न इच्छे एटले न खाय त्यारे स्युं करे ते क  
॥३॥स्नेहे करीने सहित एटले बहुधीए करीने  
त एहवां॥११॥बली॥१२॥रूडां एटले पोताना श  
पुष्टकारी एहवां अन्न पांणी प्रते॥१३॥खोलेछे ए  
खावानी वंछा करेछे ते रसगारवनो करनारो कहीए.

सुद्ध'सुरीरं'॥सयगासपनाहपसंगयरो'॥

गारवगुत्तु'॥दुखवत्त'न'देइ'अप्यापं'॥३२६॥

॥१॥सातागारवनो लक्षण कहेछे पोताना शरी

बळ विद्याए करीने एटले बळे करीने अने १  
 ने ॥१०॥वली ॥११॥तपे करीने ॥१२॥वली ॥१३  
 ना मदे करीने एटले कोइक वस्तु पांमवाना  
 रे करीने पर पुरुष प्रते निंदेछे तेने शुं फळ  
 आवती गाथाए करीने कहेछे ॥३३१॥

संसार ३ मणवयगं ॥ नीयठाणाइं ३ पावमाणो ३ घ ॥  
 भमइ ३ अणंतं ३ कालं ॥ तद्वाउ ३ मए ३ विवग्निजा ॥ ३३२  
 अर्थ ॥१॥ अनंतो एटले नथी अंत ते जेहनो  
 ॥२॥ संसार एटले च्यार गतिमां भ्रमण रूप  
 शे पूर्वे कह्यो मदनो करनारो जे जीव ते ॥३॥  
 स्थानक प्रते एटले हीन जातीयादिक प्रते  
 तो सतो ॥५॥ अनंता ॥६॥ काल सुधी ॥  
 अनंतो संसार वधारेछे ॥८॥ नीश्वे ॥९॥ ते का  
 डाह्यो पुरुष ॥१०॥ मद प्रते ॥११॥ विशेषे  
 एटले मद प्रते न करे ए जाव ॥३३२॥

सुदुवि ३ नइ ३ नयंतो ३ ॥ जई मयाई सु ३ मुझइं ३ नोउ ॥

सो ३ मेअन्नरिसी ३ नहा ॥ हरिए सबलुव ३ परिहाइ ॥

अर्थ ॥१॥ अतिशय करीने पण ॥२॥ संजमने

॥३॥ यम करतो एहवो ॥३॥ जे ॥४॥ जति एटले सा

दिकने विशेष॥६॥मूझायछे एटले अहंकार क  
॥ते साधु॥८॥जेम॥९॥मेतारज रूपि जात्यादि  
नपणा प्रते पांम्यातेंम पांमिछे॥१०॥हरिकेशीवल  
पठम॥११॥प्रकर्षे करीने हीन थायछे॥३३३॥

मुसंकिलिहं॥१॥वसहिं॥इत्थिकहं॥च॥वज्जंतो॥५॥

णसंनिसिज्जं॥५॥निरुवणं॥अंगुवंगाणं॥३३४॥

॥१॥मनुष्य संवंधि तथा देवता संवंधी स्त्री पशु  
तिर्यंच तेंमणे करीने सहीत एहवी ॥२॥ वस्ती  
उपाश्रय ते प्रते॥३॥वली॥४॥स्त्रीनी कथा ते प्र  
वर्जे॥६॥ स्त्री जनना आसन प्रते वर्जे एटले जे  
स्त्री वेठी होय ते ठेकाणेंथी उठ्या पछी वे घ  
यी भ्रमचारी पूरुप तीहां वेसे नहीं॥७॥स्त्री जन  
गोपांग प्रते एटले चक्षु मुख हृदयादिक प्रते  
राग बुधीए करीने एटले कांम चेष्टानी बुधीए  
जुवे नहीं॥३३४॥

णुस्सरणं॥१॥इत्थिज्जणविरहरूपविलवं॥च॥॥

हुअं॥अइवहुसो॥५॥विज्जंतो॥अ॥आहारं॥३३५॥

॥१॥ शीलव्रत धारण करचायी पेहेला ग्रहस्य  
विशे जे कांम क्रीडा करी होय तेहनूं जे संज्ञा

खुं ते प्रते न करे एटले संभारे . . .  
 जनना विरहरूप एटले विजोग रूप . . .  
 ते त्याग करवा जोग्य छे एटले स्त्री  
 विजोगे करीने चिंता करे नही क्येम जे  
 कारणछे ए हेतु मांटे ॥४॥ अतिशे बहु एटले  
 धी ठांसीने आहार खाय नही ॥५॥ बली ॥६॥  
 स्नीग्ध मधुरपणादिके करीने बहु प्रकारे  
 एवहार एहवा ॥७॥ आहार प्रते ॥८॥ वजें . . .  
 वजेंतो ॥१॥ विभूषं ॥२॥ तद्वज ॥३॥ ह ॥४॥ बंधवेर गुत्तीमु  
 साहू ॥५॥ तिगुत्तिगुत्तो ॥६॥ निहुड ॥७॥ दंतो ॥८॥ पसंतो ॥९॥ य ॥१०॥  
 श्रया ॥११॥ बली ॥१२॥ विभुपा प्रते एटले शरीर  
 प्रते ॥१३॥ वजें एटले न करे ॥१४॥ बली ॥१५॥ त्रि  
 करीने एटले मन वचन कायाना गोपववे  
 करवाछे एटले रोक्याछे मन वचन काया ते  
 यो ॥१६॥ निश्चल एटले शांतपणे करीने  
 रहित एहवा ॥१७॥ पांच इंद्रियोने दमवाने तप  
 ॥१८॥ प्रकर्ष करीने शांत एटले जीत्युंछे कयाय  
 जेणे एटले ॥१९॥ साधु जे तो ॥२०॥ आ ॥२१॥  
 गुत्तीने चिंते एटले आ पूर्व कही जे . . .

विगे वृत्तनी रत्ना करवाने अर्थ॥१२॥उद्यम करे  
छे आलस न करे ए उपदेश॥३३६॥

बोद्धव्यं न लोकोत्तरे ॥ न ह्यप्यन्तरे ॥ ३३७ ॥

॥ ३३७ ॥ 'न ह्यप्यन्तरे' 'न ह्यप्यन्तरे' ॥ ३३७ ॥

॥ ३३७ ॥ गुञ्जल्यान एटले त्रिनुं चिन्ह, उरु एटले

बल्लुं जुगल, वदन एटले मुख, काख एटले वगल,

एटले हृदय एटलां वांनांनां अंतर एटले मध्य

प्रते॥१॥दिखीने॥३॥तेमजा॥१॥स्त्रीना स्तनना न

जाग प्रते देखीने॥५॥ते पूर्वे कहां एटलां वांनांय

॥६॥प्रीतानी द्रष्टि प्रते॥७॥ब्रह्मचारी पुरुष जे ते

॥८॥जे एटले पाछी वाले॥९॥स्त्रीनी द्रष्टि साये॥१०॥

॥११॥नहीजा॥१२॥वांधे एटले मेलवे मु

॥१३॥न जे ते कोइ कारण पडे सते निचुं मुख राखीने

॥१४॥प्रते बोलावे ए जाव गुप्तिद्वार सनातः॥३३७॥

॥ ३३७ ॥ 'न ह्यप्यन्तरे' 'न ह्यप्यन्तरे' ॥ ३३७ ॥

॥ ३३८ ॥ 'न ह्यप्यन्तरे' 'न ह्यप्यन्तरे' ॥ ३३८ ॥

॥ ३३८ ॥ स्वाध्याए करीने एटले वाचना पृच्छना

॥ ३३८ ॥ अतुप्रेक्षा धर्म कयादि पांच प्रकारे करीने

॥ ३३८ ॥ एटले रुडुं एहवुं॥३॥ध्यान एटले धर्म ध्या

नादि ते प्रते सिद्धांतनो जणनार मुनि  
 लो सिद्धांत जणवे करीने॥५॥सर्व परमार्थ प्रते  
 वस्तूना स्वरूप प्रते॥६॥जांणेछे॥  
 एटले सिद्धांतना जणवा गणवाने विशेषे॥  
 हवो जे साधु तेहने॥९॥क्षण॥१०॥क्षणमां  
 डी थोडी वेलामां॥११॥वैराग्य एटले परमा  
 मपणुं॥१२॥थायछे एटले राग द्वेषरूप विषयना  
 वा थकी ते सम्यक् प्रकारे सिद्धांतनो जाणनार  
 निर्विष थायछे ए जाव ॥३३८॥

उद्धमहतिरियलोए॥जोइसवेमाणियायमिडी॥५॥  
 मज्जे॥लोगालोगो॥१॥सुप्तायविउस्स॥पद्यस्सलो॥१॥३३॥

अर्थ॥१॥ स्वाध्यायनो जांण एटले सिद्धांतनो  
 एहवो जे मुनी तेहने॥२॥उर्द्ध लोकनुं स्वरूप  
 पणे वेंतेंछे॥३॥अथो लोक एटले अधो लोकनुं  
 पा॥४॥त्रिछा लोक एटले त्रिछा लोकनुं  
 ज्योतिष एटले चंद्र सूर्यादिक॥६॥बली॥७॥  
 एटले विमानवासि देवता॥८॥बली॥९॥मोक्षनु  
 ॥१०॥सर्व एहवो आ॥११॥लोका लोक एटले  
 चोइ राज प्रमाण लोक प्रमाण रहिन एहवो

॥१२॥ ए पूर्वे कक्षां एटलां वानां प्रत्यक्षपणे एट  
साक्षात्पणे वत्तेंछे एटले सिद्धांत नणवे करीने सा  
नीराज जे ते सर्व वस्तूना स्वरूप प्रते सम्यक्  
रि जाणेछे ॥३३९॥

निघकाल तव संजमुब्जुउ॥ नवि॥ करेइ॥ सद्यायं॥  
सं॥ मुहसीलज्जणं॥ नवि॥ तं॥ ठावेइ॥ साहुण॥ ॥३४०॥

॥१॥ निरंतर॥ २॥ तप संजमने विशे एटले वार  
तप अने सत्तर प्रकारे संजम तेमने विशे उद्यम  
एहवो ॥३॥ जे साधु॥ ४॥ स्वाध्याय प्रते एटले सि  
भणवुं नणाववुं ते प्रते ॥ ५॥ नथिज ॥ ६॥ करतो ए  
भणवा भणाववाने विशे उद्यम नथी करतो ॥ ७॥  
स सहीत एहवो ॥ ८॥ ते ॥ ९॥ सुख शील जन एटले  
लिक सुखने विशे लंपट एहवो साधु ते प्रते ॥ १०॥  
पदने विशे एटले साधु मारगने विशे ॥ ११॥ जि  
मारगना जाण एहवा जे पूरुप ते नहीज ॥ १२॥ था  
टले जिन सिद्धांतना परमारथना जाण एहवा जे  
तथा श्रावक ते ज्ञान रहित पोताने छंदे क्रिया  
आडंबरना करनार पूरुपने साधु पदमां न माने  
व स्वाध्याहार समाप्तः ॥ ३४०॥





एक दीशाने विशे व्यापे ते किर्ति कहीए ते प्रते  
॥१०॥ दुर्विनीत एटले विनय गुणे करीने रहित  
पुरुषा॥११॥ पोताना कारजनी सिद्धि एटले नि  
प्रते॥१२॥ कोई दहाडो पण॥१३॥ नही॥१४॥ पांमे  
अविनित पुरुषने पोताना कारजनी सिद्धि थाय  
कारण माटे गुणी पुरुषोनो विनय चूकवो नही.

बह१॥ खमइ१॥ सरीरं१॥ ध्रुवजोगा१॥ जहा१॥ जहा१॥ न॥ हायंति१॥ कम्म  
१॥ अ१॥ विउलो१॥ विविक्तया१॥ इंदिअदमो१॥ अ१॥ ॥३४॥

था॥१॥ जेमा॥२॥ जेमा॥३॥ शरीर॥४॥ खमे एटले जे  
करवे करीने बल रहीत थाय नही॥५॥ जेम॥६॥

॥७॥ निश्चल वेपार एटले निरंतर पोताने करवा  
प्रति लेपणा प्रतिक्रमण नणवा भणाववादिरू  
कया॥८॥ नही॥९॥ हांनि पांमे एटले हीन न थाया॥

वली ए प्रकारे तपना करनार पुरुषोने॥११॥ विस्ता  
एहवो॥१२॥ कर्मनो क्षय थायछे एटले वणा काल

गंधेलां कर्मनो नाश थाय छे॥१३॥ वली॥१४॥ जुदा  
करीने एटले आ जीव शरीर थकी न्यारो छे अने

रजीव थकी न्यारो छे ए प्रकारनी जावनाए करीने  
॥१५॥ इंद्रियोनुं दमवुं पण थायछे एटले इंद्रियो पोताना

विषयथकी पाछीवलेछे एटलेसमा ॥३॥

माटे समंता सहीत तपने विपे उद्यम करवोते

नइ<sup>१</sup>ता<sup>२</sup>असक्काणिज्जं<sup>३</sup>॥न<sup>४</sup>तरसि<sup>५</sup>काउण<sup>६</sup>तो

अप्पायत्तं<sup>७</sup>न<sup>८</sup>कुणासि<sup>९</sup>॥संजमजयणं<sup>१०</sup>जइजोगं<sup>११</sup>

अर्थ॥१॥जो॥२॥प्रथम हे शिष्य ॥३॥ नकरी

एहवो साधुनी प्रतिमा रूप जे तप ते प्रते ॥

॥५॥नथी॥६॥समर्थ एटले तुं न करीस

॥८॥प्रसिद्ध एहवी॥९॥अने पोतानेवश एहवी

धुने करवा जोग्य एहवी॥११॥संजमने विपे

एटले पछवाडे कह्या एहवा को ॥दिकना जपने

क्येम॥१३॥नथी॥१४॥करतो एटलेजो तारे

नी शक्ति नथी तो पांच समिति अने त गुति

शुं जोर पडे छे ते माटे संजमने विशे उद्यम

नायंमि<sup>१</sup>देहसंदेहयंमि<sup>२</sup>॥जइणाइ<sup>३</sup>किंचि<sup>४</sup>सेविज्जा॥अइ

मज्जो<sup>५</sup>अ<sup>६</sup>निरुद्धमो<sup>७</sup>अ<sup>८</sup>॥तो<sup>९</sup>संजमो<sup>१०</sup>कसो<sup>११</sup>

अर्थ॥१॥देहनो संदेह॥२॥थये सते एटले मो

दि कट उत्पन्न थये सते॥३॥जतनाए करीने

रागनी आजा सहित चित्तने विशे दाझ सहित

चित् एटले कांडक सावय प्रते पण एटले अगु

कप्रतेपण॥५॥साधु जे ते सेवे एटले ग्रहण करे॥६॥  
पछी॥७॥वलीजो॥८॥साजो थयो सतो एटले निं  
थयो सतो॥९॥पाद पूर्ण॥१०॥निरुद्यमी एटलेशु  
गहारादिक प्रतेग्रहण नथीकरतो अने अशुद्धज ग्र  
करेछे॥११॥त्यारे ते साधुने॥१२॥क्यांथकी॥१३॥  
म होय अपितु न होय॥१४॥निश्चे शा कारण माटे  
कहो छो उत्तर वीतरागनी आज्ञायी अवंली आ  
छे ए हेतु माटे ॥३४५॥

मट१॥जइ१॥तिगिच्छं१॥॥अहियासेऊण१॥जइ१॥तरइ१॥सम्मं१॥

वासंतस्स पुणो१॥॥जइ१॥से१॥जोगा१॥न१॥हायंति१॥॥३४६॥

यी॥१॥जो॥२॥जति एटले साधु मुनिराज जेत त रा  
त्यो॥३॥सम्यक प्रकारे एटले समता सहीत॥४॥स  
करवाने॥५॥समर्थ होय॥६॥वली॥७॥जो॥८॥सम  
हीत सहन करतो एहवो॥९॥ते साधुने ज्या  
एटले प्रतिलेपण प्रतिक्रमणादिक क्रियाओ॥१०॥॥१॥॥२॥॥

२॥हांनि पांमे एटले नाश नहीं धाय तो॥१३॥रा

उपाय प्रते॥१४॥न करे एटले औपध प्रते न करे

जो संजम जोग सीजाय एटले संजम साधनन वि

षांठो पडे तो स्थिवर कल्पी मुनि जे ते अपवादें

श्रौपत्र प्रते करे ए जाव ॥३४६॥

निधं१॥वयणसोहा॥कराण२॥धरणुज्जुयाण३॥साद्वं४॥

संविग्गविहारीणं५॥सवपयत्तेण६॥कायवं७॥३४७॥

अर्थ॥१॥निरंतरा॥२ जि. : ।सननी मे.

एहवा॥३॥चारित्रने विशे उद्यमना करनारा

मोक्षना अभिलापेकरीने विहारना करनारा

क्षना अभिलापना करनारा एहवा॥४॥सा.

सर्व प्रयत्ने करीने एटले जेटली पोतानि शक्ति

टली शक्ति बडे करीने॥५॥वियावच करवो ते

लस करवो नही ॥३४७॥

हीणस्स१॥विमुउ परवगस्स२॥नाणाहियस्स३॥कायवं४॥

मणचिन्तगहणथं५॥करंति ६॥लिंगा ७॥वसेसे ८॥३४८॥

अर्थ॥१॥चारित्रे करीने रहित एहवो एटले

आचारवंत एहवो॥२॥सम्यक ज्ञान गुणेकरीने

एहवो एटले सिद्धांतना जाणपणापें करीने

हवो॥३॥विशुद्ध प्ररूपक एहवो एटले विशेषे

द्धांतना अनुसारे स्यादवाद शीलिये करीने

पणाओ करनार एहवो जे पुरुष तेहनो विप

वाद पारगें करीने ज्ञानादि कारजने अरे

जोग छे केमजे क्रिया हीन एहवो पिण जे ज्ञा  
हनी वियावच करवी ते घटित छे॥५॥ वली॥६॥  
ना चित्त वश करवाने अर्थे एटले धन्य छे आ पू  
ने के गुणवंत सतापण उपकार बुद्धिये करीने नि  
नो पण वियावच करे छे ए प्रकारे लोकना चित्त  
सन्न करवाने अर्थे॥७॥केवल एक लिंग धारिनो  
थाइतर कारणे लोकापवाद टालवाने अर्थे कोइ  
बते कोइक देशमां॥८॥ संजमनो उपघात टाल  
अर्थे वियावच करे तेहनो विशेष विस्तार सि  
मी जाणवो ॥३४८॥

पुष्पफलं॥अणुसणिङ्गं॥गिहथकिच्चाइं॥

फाडिसेवती॥जइवेसंविडंवगानवरं॥३४९॥

॥२॥असंजत एटले नाम मात्र जे साधु॥२॥ स

पाणिनुं पीवुं ते प्रते॥३॥फुल फल प्रते एटले जा

फुल अने आंवादिकनां फल ते प्रते॥४॥अनेपणि

टले आधाकर्मादिक दीपे करीने दुष्ट एहवा आ

दि प्रते॥५॥ग्रहस्थना कारज प्रते एटले ग्रहस्थो

पापारादिक प्रते॥६॥सेवन करेछे एटले आचरेछे

ते असंजत केवला॥८॥जतिवेप विडंवक एटले मु

निराजना वेपने दूषित करनारा एहवा जे  
 लंगारे आतम साधन करनारा नहि जाणव  
 उसनया भवोही ॥१॥ पवयण उभावणा ॥ य ३ बोहि फलं  
 उसनो विवरं ॥ पि १० ॥ पवयण उभावणा परमो ॥ ३  
 अर्थ ॥ १ ॥ ए पूर्वे कहा एहवा भ्रष्टाचारिय  
 पणुं एटले सिथिलपणुं ॥ २ ॥ अवोधिनुं कार  
 एटले समकित न पांमवानुं कारण जाणव  
 रित्रने विशे आलसु थइने पोताने विशे सा  
 न करता एहवा जे प्राणी ते समकीत पांमे  
 पूर्वे पांमेलुं होय ते पण हारी जाय ए जाव  
 ॥ ४ ॥ जिन सासननी उदजावना एटले  
 ॥ ५ ॥ समकीत रूप फलनि पमाडनारीठे  
 शासननी उन्नति करघे सते समकित रूप  
 ए ए भाव ॥ ६ ॥ वली ॥ ७ ॥ जिनशासननी  
 ले शोचा वधारवाने विशे प्रधान एटले त  
 पुरुष ॥ ८ ॥ करम वशे करीने सिथील आचार  
 ॥ ९ ॥ श्रेष्ठे एटले वाख्यान चरचा वाता  
 जिनशासननो शोचावनार एहवो जे  
 ने विशे सिथिल होय तोयें पण श्रेष्ठ जाणव

॥ जोग्य जाणवो ए जावा ॥ १० ॥ निश्चे ॥ ३५० ॥  
 हीणो गुणरयणायेरेसु ॥ ॥ जो कुणइ तुल्य मष्णानं ॥  
 स्मिणो अहीलइ ॥ ॥ सम्मत्तं ॥ ॥ कोमलं ॥ ॥ तस्स ॥ ॥ ३५१ ॥  
 ॥ १ ॥ गुणे करीने एटले सम्यक् चारित्रे करीने  
 एटले रहित एहवो ॥ २ ॥ जे वेश धारि ॥ ३ ॥ गुणना  
 एहवा साधुओनी साथे ॥ ४ ॥ पोताना आत्मा प्र  
 तुल्य एटले वरोवर ॥ ५ ॥ करेछे एटले अमे पण  
 छीए ए प्रकारे मानेछे ॥ ७ ॥ वली ॥ ८ ॥ रुडा एहवा  
 मस्वी एटले उत्तम एहवा जे मुनिराज ते प्रते  
 हीलना करेछे एटले तेमना श्रवणवाद बोलेछे  
 ते पुरुषनुं ॥ ११ ॥ समकिता ॥ १२ ॥ असार थयुं एटले  
 मय मिथ्या दृष्टि थयो क्येम जे गुण अने श्रवगुण  
 रखा करचा ते माटे ॥ ३५१ ॥

अस्स गीहस्स व ॥ ॥ जिणपवयणतिवभाविमइस्स ॥

इ जं अणवजं ॥ ॥ ददसम्मत्तस्स वय्यामु ॥ ३५२ ॥

॥ १ ॥ चारित्रने विशे सिथिल एहवो जे पुरुष तेह  
 ॥ वा अथवा ॥ ३ ॥ जिन एटले तीर्थकर तेमनुं प्रव  
 एटले सिद्धांत तेणे करीने तिव्र एटले निविड जा  
 एटले वासितछे मति ते जेहनी एटले जिनराज



ના સિદ્ધાંતનો જાણ એહવો અને વ્રત પચસાં  
 ને આલસુ એહવો॥૪॥દ્રઢે એટલે નિશ્ચલ છે  
 તે જેહને એટલે દ્રઢ સમકીતવંત એહવો॥૫॥  
 ટલે શ્રાવક તેહનું કોઈક કાલને વિશે॥૬॥  
 વચા॥૭॥અવસ્થાને વિશે એટલે કોઈક ક્ષેત્રની  
 ઇક કાલની મધ્યે॥૮॥કરીએ તે॥૯॥પાપ રહિત  
 દૂષણરહિત જાણવું આ વાત ઘાડતર કારણ  
 પાસથોસત્રકુસીલ।નીયસંસત્રજનમહાઉત્તમ।  
 નાકળતંમુનિહિયા।સમપયતેજવદંતિયા॥૩૫॥  
 અર્થે॥૧॥પાસથો એટલે જ્ઞાન દર્શન પાસ  
 મિપે રહે તે પાસથો કહીએ એટલે જ્ઞાન  
 ત્રે કરીને રહિત એહવો, ઉસત્રો એટલે પાસ  
 સિયિલ આચારવાલો એહવો, કુસીલ એટલે  
 ણાના આચારકરીને રહિત એહવો, નીચ એટલે  
 યે કરીને જણવાયકી જ્ઞાનનો વિરાધક એહવો  
 એટલે તિહાં જેવો મિલે તિહાં તેની મંગલિય  
 તેવો થાય તે સંસક્ત કહીયે એટલે રાગીની  
 પાય અને વેરાગીની સાથે વેરાગી થાય એહવો  
 યા ઉદં એટલે પોતાની મતિયે કરીને ઉન્નત

॥३॥प्रसिद्ध एहवो॥४॥जन एटले लोक ते प्रते  
ते तेमना स्वरूप प्रते॥५॥जांणीने॥६॥उत्तम साधु  
ते पासध्यादिक पूर्वे कल्या ते प्रते॥७॥सर्व उद्य  
रीने एटले द्रव्यभाव वे प्रकारनी शक्तिये करीने  
वर्जे एटले तेमनी संगति प्रते न करे चारित्र वि  
करनारछे ए हेतु माटे॥३५३॥

मलयमेसणाउ<sup>१</sup>॥न<sup>२</sup>रखखड<sup>३</sup>धाइसिग्रपोंडं<sup>४</sup>च<sup>५</sup>॥

हारेइ<sup>६</sup>अभीख्वं<sup>७</sup>॥विगडउ<sup>८</sup>सन्निहिं<sup>९</sup>खाइ<sup>१०</sup>॥२५४॥

॥१॥हवे पासध्यादिकनां लक्षण कहीएछीए.वेता

एपणा प्रते एटले आहारादिकना वेतालिश दोष

॥२॥न॥३॥रक्षा करे एटले न निवारे॥४॥वली॥५॥

पिंड प्रत्ये एटले छोकरां रमाडिने पछी आहार

ते प्रते तथा सज्यात्तर पिंड प्रत्ये एटले निरंतर

न करीने आहार लेवो ते प्रते न निवारे॥६॥दुध

प्रमुखवि गयो प्रते कारण विना॥७॥निरंतर॥८॥

ए करेछे॥९॥सन्निधि एटले रात्रिनेविशेअथवारात्रे

ली वस्तू ते प्रते॥१०॥खायछे ते पासथ्यो कहीए.

पनापभोइ<sup>११</sup>॥आहारेइ<sup>१२</sup>अभिख्वं<sup>१३</sup>माहारं<sup>१४</sup>नय<sup>१५</sup>भंडली

हुगइ<sup>१६</sup>॥न<sup>१७</sup>य<sup>१८</sup>भिख्वं<sup>१९</sup>हिंडइ<sup>२०</sup>अलसो<sup>२१</sup>॥३५५॥

अर्थ॥१॥सूर्यना प्रमाण सुधी एटले सूर्यना  
मांडीने आथमतां सुधी चोजन करनारो॥२॥  
दि आहार प्रते॥३॥निरंतरा॥४॥खाय॥५॥वली  
धुनी मंडलीने विशो॥७॥ना॥८॥जीमे एटले  
जन करे॥९॥वलि॥१०॥आलसु सतो॥११॥  
एटले गोचरी प्रते॥१२॥ना॥१३॥जाय एटले  
रमांथी घणों आहार ग्रहण करे॥३५५॥ ते  
कीवो॥न॥कुणइलो॥अं॥लडजइ॥पडिमाइ॥जल  
वाहणो॥०॥अ॥हिंडइ॥१॥बंधइ॥कडिपड्य॥मकजे॥  
अर्थ॥१॥क्लीव एटले दीनपणाए करी॥१॥  
प्रते एटले केशना लोच प्रते॥३॥नथी ॥करतो  
उसग्ग प्रतेकरतो सतो॥६॥लज्या पांमेछे॥७॥  
मल प्रते॥८॥दुर करेछे हाथे करीने अथवा  
रीने शरीरना मल प्रते दुर करेछे॥९॥वली॥१॥  
डा मोजा सहीत॥११॥हीडेछे एटले साधु पडने  
तथा मोजा पेरेछे॥१२॥कारण विना॥१३॥प  
प्रते॥१४॥वांधे छे एटले कोइग्रहस्थ आन्या  
ल पटो पेहेरेछे॥३५६॥ ते पा०

गामं॥देसं॥च॥कुलं॥॥ममाए॥पीठफलपडिबडो॥

सज्जइ<sup>१०</sup>॥नेहरइ<sup>११</sup>य<sup>१२</sup>सकिंचणो<sup>१३</sup>रिक्को<sup>१४</sup>॥३५७॥

॥१॥गाम प्रते॥२॥देशप्रते॥३॥वली॥४॥कुलप्र  
ममताए करीने॥६॥विचरे छे एटले आगम त  
॥ तथा कुल हमारां छे ए प्रकारे ममत्व जावे  
सहीत वीचरे छे॥७॥वली॥८॥वाजठ पाट पा  
तेने विशे प्रति बद्ध एटले चोमासाना काल वि  
॥ शेष कालने विशे राखे ॥९॥नवीन घर उपा  
देके कराववाने विशे॥१०॥प्रसंग प्रते कहेछे ए  
मिनी चिंता करे छे॥११॥सुवर्णादि द्रव्य सहीत  
१२॥हूं द्रव्य रहित एहयो निरग्रंथछुं ए रीते लो  
आगळ कहेछे॥३५७॥ ते पा०

तकेत्तरोमे<sup>१५</sup>॥जमेइ<sup>१६</sup>अच्छोलदोअणो<sup>१७</sup>अजउ<sup>१८</sup>॥

य<sup>१९</sup>पलियंकं<sup>२०</sup>॥अइरेगपमाण<sup>२१</sup>पथरइ<sup>२२</sup>॥३५८॥

॥१॥नख,दांत, केश,मस्तक संवंधी रोम शरीर  
रुवाडां ते प्रते॥२॥भुपित करे एटले शोचावे॥३॥  
पाणीए करीने हाथ पगादिकनुं धोवुंछे जेहने एटले  
पाणीये करीने हाथ पगादिक धुवे॥४॥अजतनाए  
सहीत एटले द्रव्य जाववे प्रकारे जतना करे नहिं  
जी॥६॥पल्यंकं प्रते एटले मांचा प्रते॥७॥वहन क

रेछे एटले ग्रहस्थनी ५. : जोगवेछे

एटले प्रमाण थकि अधिक संथाराउत्तर

॥९॥ पाथरेछे अटले सुख सज्या प्रते करेछे ॥३॥

सोवइ १५ १ सवराइ ३ ॥ नीसइ १ मचेयणो १ न १ वा १ प्ररइ १

मडतंतो १ पविसइ १ ॥ निसहि यावस्सियं १ २ न १ १ करे १

अर्थ ॥ १ ॥ वली ॥ २ ॥ अतीशय ॥ ३ ॥ चेतना १

लाकडांती पठम ॥ ४ ॥ सर्व रात्रिने विशेषे एटले

च्यार पोहोर सुधी ॥ ५ ॥ सुइ रहे एटले १ ५ न

वली ॥ ६ ॥ न ॥ ८ ॥ स्वाध्याय करे एटले १ १ नीने

लुंगणे नहिं ॥ ९ ॥ प्रमार्जन करतो सतो ॥ १

प्रवेश करे एटले रात्रीने विशेषे रजोहर्णादिके

भूमि प्रते अप्रमार्जन करतो शतो उपाधयने

वेश करे ॥ १२ ॥ नीसहि यावस्सहि प्रते एटले

मां पेसवाने अवसरे निसहि केहवि अने

अवसरे आवस्सहि केहवि ते प्रते ॥ १३ ॥ न ॥ १

एटले आवस्सहि निस्सहि रूप साधु समा

नथी साचवतो ॥ ३५ ॥ ते पा०

पाय १ पहे १ न १ पमज्जइ १ ॥ जुगमायाए १ न १ सोहए १ दोरे १

पुढवोदग अगणिमारुअ ॥ वणस्सइ तसे सु १ निराविस्सो १

॥१॥मार्गने विशे चालतो सतो एटले गामनी सी  
 ॥२॥प्रवेश करतो सतो अथवा गांम थकि निक  
 ॥३॥प्रते ॥३॥न ॥४॥प्रमार्जे एटले पूजे  
 ॥५॥जुग प्रनाण भुमिने विशे एटले साडात्रण हा  
 ॥६॥च्यार हाथ भुमिने विशे ॥६॥इर्या प्रते एटले  
 ॥७॥नारग प्रते ॥७॥ना ॥८॥सोधे एटले जुवे नहि  
 ॥९॥अपकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, व  
 ॥१०॥अपे  
 ॥११॥एटले पृथव्यादिक छकाय जीव प्रते विराध  
 ॥१२॥तोसतो शंका पांमे नहि एटले बीहे नहि ॥३६०॥

॥१३॥उन्हें ॥१३॥न ॥१४॥नय ॥१५॥करें ॥१६॥तज्ञायं ॥१७॥

॥१८॥शंझकरो ॥१९॥लहुड ॥२०॥गणभेयतमिल्लो ॥२१॥३६१॥

॥१३॥सर्व ॥२॥थोडि ॥३॥उपधि प्रत्ये एटले थोडा  
 ॥४॥उपधि केवल मुख वल्लिका प्रते पण ॥५॥न  
 ॥६॥डिलेहवे एटले प्रतिलेपण करे नहि ॥६॥स्वाध्या  
 ॥७॥एटले जणवुं जणवुं ते प्रते ॥७॥नहिजा ॥८॥  
 ॥९॥एटले नथी करतो ॥९॥रात्रिने विशे सुतापछि घा  
 ॥१०॥प्रते करे ॥१०॥कलह प्रते करे ॥११॥हलको हो  
 ॥१२॥गंजीर गुणे करीने सहित नहोय ॥१२॥गण

नो जेद करवाने विशे एटले साधुना,  
करवाने विशे तत्पर होय॥३६॥

खित्ताइयं भुंजइ॥ कालाइयं तहेव अतिरिं  
गिण्हइ॥ अणुइयसूरे॥ असणाइ अहं॥

अर्थ॥१॥ क्षेत्रा अतिक्रांत एटले वे

त क्षेत्र थकि आणेला आहारादिक प्रते

टले खाया॥३॥ काला अतिक्रांत एटले

मां आणेलो आहारादिक प्रते ग्रण

जोगवे एटले खाया॥४॥ तेमजा

पेलुं आहारादिक जोगवे॥६॥ सूर्यन उगे

यं उग्याविना॥ अरानपांनखादिम

अथवा॥९॥ उपगरण प्रते एटले वल

१०॥ ग्रहण करे एटले अंगिकार करे ए पूर्

जे लक्षण तेणे करीने सहीत ए तेने पु

कहिएवली आगल पासथानां लक्षण

दवणकुळे न टवेइ॥ पामथेहि च मंगयं पुनं

निधमवभागर॥ न१२५ वेहरमवभागर

अर्थ॥१॥ स्थापना कुल प्रते एटले वृ

मायुने अर्थ अनिशे जकिनां करनारां ए

● विक्रया करवानો છે સ્વભાવ તે જેહેનો એટલે રા



जकथा-देश कथादिक विकथाओ करे॥३६॥

विद्युं<sup>१</sup>मंतं<sup>२</sup>योगं<sup>३</sup>तेगिछं<sup>४</sup>॥कुण्ड<sup>५</sup>भुङ्कम्मं<sup>६</sup>च<sup>७</sup>॥

अख्खरनिमित्तर्जावी<sup>८</sup>॥आरंभपरिग्गहे<sup>९</sup>रमइ<sup>१०</sup>॥३॥

अर्था॥१॥विद्या प्रते देविए करीने अधिष्टित

हित ते विद्या कहिए ते प्रते॥२॥मंत्र प्रते

करीने अधिष्टित एटले सहित ते मंत्र कहि

॥३॥जोग प्रते एटले चूर्णादिक अंजन करवे

दश करवुं ते प्रते॥४॥चिकित्सा प्रते एटले

पाय प्रते॥५॥करे॥६॥वली॥७॥भूतिकर्म प्रते

रख्या प्रते मंत्रीने ग्रहस्थ लोकोने आपे॥८॥

खववे करीने तथानिमित्त एटले शुभाशुभनुं

करीने प्रकाश करवुं तेणे करिने आजीवीका

छे शिल ते जेहनं एटले अक्षर शिखववे करे

मित्त केहेवे करिने आजीविका चलावना

एटले पृथव्यादिक प्राणिनुं मरदन करवुं

ह एटले चौदउपगरण उपरांत राखवुं ते

ग्रहने विशेष॥१०॥रमे एटले आशक्त पाया

कज्जेण<sup>१</sup>विणा<sup>२</sup>उग्गह<sup>३</sup>॥मणुजाणावेइ<sup>४</sup>दिवसउ<sup>५</sup>सु-

अज्झियत्ताभं<sup>६</sup>भुंजइ<sup>७</sup>॥इत्थिनिसिद्यासु<sup>८</sup>अ<sup>९</sup>

॥३॥

१॥कार्य॥२॥विना एटले फोगटा॥३॥अवग्रह प्र  
वे स्थान प्रते॥४॥जणावे एटले काम पड्या वि  
स्थानि आज्ञा लेइने तेमनी भूमिका प्रते ग्रह  
॥५॥दिवसने विशे॥६॥सुइ रहे एटले कारण वि  
से उंघे॥७॥साध्विना लाज प्रते एटले साध्वि  
णेल आहारादिक प्रते॥८॥भोगवे॥९॥स्त्रीयोना  
ने विशे॥१०॥समस्त प्रकारे क्रिडा करे एटले स्त्री  
उठ्या पछी ततकाल ते स्थानकने विशे वेसे॥३६६॥

॥वासवणे॥॥खेले॥सिंघाणए॥अणाउत्तो॥॥

॥गडवहीणं॥॥पडिकमइ॥सवासणाउरणो॥॥३६७॥

॥१॥ठंडिलने विशे॥२॥मुत्रने विशे॥३॥मुखना श्ले  
विशे॥४॥नासिकाना मलने विशे॥५॥असावधान  
उपयोग विना ठंडिलमात्रु श्लेप्म नासिकानुं म  
टलां वानां प्रते परठवे॥६॥संधाराने विशे अथवा  
ने विशे वेठो सतो॥७॥वस्त्रनुं ओढवुं तेणे करिने  
न एटले वस्त्र ओढीने॥८॥पडिकमणुं करे॥३६७॥

॥इ॥वाहे॥नइणं॥॥तळियाणं॥॥तह॥करेइ॥परिभोगं॥॥

॥द॥अपुवदवासे॥॥नपखवपरपखवउमाणे॥॥३६८॥

॥१॥नार्गने विशे॥२॥जतना प्रते॥३॥ना॥४॥करे

एटले रस्ते चालतां इर्या समिति साचवे  
 मजा॥६॥खासडां तथा मोजाओनो ॥  
 ॥८॥करे एटले पगरखां प्रते तथा कारण  
 प्रते पेहरे॥९॥वर्षा कालने विशे पण॥१०॥  
 ॥११॥पोताना पक्षनी मध्ये एटले साधुओनी  
 ने परपक्षनी मध्ये एटले अन्य दर्शनियोनि  
 पमान थये सते अजोग्य सतो विहार करे॥  
 संजोअइ<sup>१</sup>अइबहुअं<sup>२</sup>॥इंगालसधुमगं<sup>३</sup>अणडाए<sup>४</sup>॥  
 भुंजइ<sup>५</sup>स्वन्नलडा<sup>६</sup>॥न९धरेइ<sup>७</sup>अ<sup>८</sup>पायवुंछणयं<sup>९</sup>  
 अर्थ॥१॥संजोजना करे एटले जुदाजुदा  
 हवा जे द्रव्य तेहने स्वादने अर्थे एकठा  
 तिसे बहू आहारादिक प्रते॥३॥जिमे॥४॥५॥  
 करीने रूडा आहारादिक प्रते राग बुद्धिये  
 मे सधूमगं एटले अनिष्ट आहारादिक प्रते  
 करिने एटले मुख मचकोडिने जिमे॥६॥  
 टले क्षुधा वेदनादि तथा वैयावचादिक छ  
 आहारपाणीवावरे॥६॥नत बलवयाएवा  
 जन करे॥७॥वली॥८॥रजो हरण प्रते॥९॥ना  
 अइमउट्टचउथं॥संवच्छरचाठमासपल्लवेसु॥

॥३७०॥ सायबहुलो ॥ नद्यविहरइ ॥ मासकषेणं ॥ ३७०॥  
 ॥१॥ सुखशीलियो सतो ॥ २॥ संवत्सर पर्वने विशे  
 ॥ चोमासि पर्वने विशे तथा पस्वि पर्वने विशे ॥ ३॥  
 ॥ तप प्रते छठ तप प्रते तथा चतुर्थ ऋक्त तप प्र  
 ॥ ५॥ करे एटले संवत्सर पर्वने विशे सुखशीलि  
 ॥ करिने न करे ए रिते चोमासि पर्वादिकने विशे  
 ॥ जाणवुं ॥ ६॥ वली ॥ ७॥ मास कल्पे करिने ॥ ८॥  
 ॥ विचरे एटले शिखाकाल एटले उनाला सीयाला  
 ॥ नव कल्पि विहार करे नहि ॥ ३७०॥

॥ गिहइ पिंडं ॥ एगागी ॥ अछए ॥ गिहथकहो ॥  
 ॥ अहिगारो ॥ लोगगहणंमि ॥ ३७१॥  
 ॥ १॥ नित्या ॥ २॥ पिंड प्रते ॥ ३॥ ग्रहण करे अमुक घे  
 ॥ आटलुं लेवुं एहवा निमपुर्वक ग्रहण करवुं ते नि  
 ॥ पिंड कहिये ॥ ४॥ एकजो ॥ ५॥ रहे एटले साधुना समु  
 ॥ विशे वसेनहि ॥ ६॥ ग्रहस्थ लोकोनि पठम प्रवर्त्ति  
 ॥ एटले व्यवहार चलावे ॥ ७॥ पापश्रुत प्रते एटले जो  
 ॥ वेदकशास्त्र, कोकशास्त्रादिक प्रते धर्मनी बु  
 ॥ करीने ॥ ८॥ भणे ॥ ९॥ लोकनां मन रंजित करवाने  
 ॥ एटले मनावा पूजाववाने अर्थे लोकनां चित्त वश क

स्वाने विशे॥१०॥ अधिकार प्रते करेछे एटले  
 थायछे पण पोताना अनुष्ठानने विशे अथेसर  
 पारिभवइ<sup>१</sup> उगकारो<sup>२</sup>॥ सुहुं<sup>३</sup> मगं<sup>४</sup> निगुहए<sup>५</sup> बालो<sup>६</sup>॥  
 विहरइ<sup>१</sup> सायागुरुउ<sup>२</sup>॥ मंजमाविगलेमु<sup>३</sup> त्वित्तेसु<sup>४</sup>  
 अर्थ॥१॥ अज्ञानि एटले अजाण एहवो  
 टले सुख तेहने विशे गुरुक एटले लंपट  
 लिक सुखने विशे लंपट थयो सतो॥२॥ उभ  
 रनार मुनिराज प्रते॥४॥ पराजव करे॥५॥ शुद्ध  
 दोषण एहवा॥६॥ मार्ग प्रते एटले मोक्ष मार्ग  
 ओलवे एटले ढांके॥८॥ संजमे करीने रहित  
 मना पालनार मुनियोयें करीने रहित एहवा  
 त्राने विशे॥१०॥ विचरे॥ ३७२॥

उग्गाइगाइ<sup>१</sup> हसइ<sup>२</sup> थ<sup>३</sup>॥ असंवुडो<sup>४</sup> सइ<sup>५</sup> करेइ<sup>६</sup> कां  
 कज्जचित्तगो<sup>७</sup> वि<sup>८</sup> य<sup>९</sup>॥ उसन्ने<sup>१०</sup> टेइ<sup>११</sup> गिण्हइ<sup>१२</sup> वा  
 अर्थ॥१॥ आक्राशपणे करीने एटले मोहोटा  
 ने गांन करे॥२॥ बली॥३॥ हांसिकरे॥  
 पोहलुं छे मुख ते जेहनुं एहवो सतो॥५॥  
 कंदर्प प्रते एटले कांमनी चेष्टा प्रते॥७॥  
 वली॥९॥ ग्रहस्थना कार्य प्रते चिंतन करे॥

साधुने एटले साधु मारग पालवानेवि  
ह्वाने वस्त्र पात्रादि प्रते॥१२॥आपे॥१३॥

पासे थकि॥१४॥ग्रहण करो॥३७३॥

हिंसइ<sup>१</sup>॥धराघरं<sup>२</sup>भमइ<sup>३</sup>परिकहंतो<sup>४</sup>य<sup>५</sup>॥

य<sup>६</sup>॥अइरित्तं<sup>७</sup>वहइ<sup>८</sup>उवगरणं<sup>९</sup>॥३७४॥

न कथाओ प्रते केवल लोकना चित्तने रि  
२॥भणे॥३॥वली॥४॥धर्म कथाओ प्रते क

घरघर प्रते॥६॥नमे एटले धर्म कथा क

घर प्रते निक्षाने अर्थे नमे॥७॥वली॥८॥

माणे करीने एटले साधुना चौद उपकर

ना पच्चीस उपकरण जेटलां लांवां पो

कह्यां छे ते थकि ॥९॥अधिक एटले सं

गांण थकि वधारे॥१०॥उपकरण प्रते॥११

एटले राखे॥३७४॥

तेनि<sup>१</sup>य<sup>२</sup>काइय<sup>३</sup>उच्चार<sup>४</sup>काल<sup>५</sup>भूमीउ<sup>६</sup>अंतो<sup>७</sup>

इयासे<sup>८</sup>॥अणहियासे<sup>९</sup>न<sup>१०</sup>पडिलेहे<sup>११</sup>॥३७५॥

॥१॥२॥लघुनितिने जोग्य एटले मात्रु कर

ग्य एहवी ॥३॥वार॥४॥वडिनितिने योग्य ए

डिल करवाने जोग्य एहवी॥५॥वली॥६॥त्रयण

॥७॥कालग्रहणनेजोग्य एहवी॥८॥भुमिओ  
 न प्रते॥९॥उपाश्रयनी मध्ये॥१०॥  
 यनी बाहिर॥१२॥मात्रा ठंडिल प्रते सहन  
 मर्थ॥१३॥मात्रा ठंडिल प्रते सहन न करि  
 वा साधुने अर्थ॥१४॥ना॥१५॥पडिलेहवे  
 त्रु ठंडिल सहन करि साकिएतो छेटे म  
 ठववाने जोग्य एहवी भुमिओ प्रते नपडि  
 सम्यक प्रकारे जुवे नही अने जो सहन न  
 एतो समिप रहेली एहवी मात्रा ठंडिल ५८  
 भुमि प्रते सम्यक प्रकारे जुवे नहिए प्रकारे  
 ठंडिलनी चुमीयो प्रते उपाश्रय मांहि तथा  
 पयोग सहित जुवे नहि॥३७५॥

गीयथ्यं<sup>१</sup> संविगं<sup>२</sup>॥आयारेअं<sup>३</sup> मुअइ<sup>४</sup> वलइ<sup>५</sup>  
 य<sup>६</sup> अणापुच्छा<sup>७</sup>॥नं<sup>८</sup> किंचिवि<sup>९</sup> देइ<sup>१०</sup> गिण्हइ<sup>११</sup> वा<sup>१२</sup>

अर्थ॥१॥गीतार्थ एटले सूत्रना जाण एहवा  
 क्षना अभिलापि एहवा॥३॥पोताना यमा  
 ४॥मुके एटले कारण विना तजे॥५॥साधुना  
 ने शिखामणना देनारा एहवा॥६॥गुरुप्रते  
 बोले॥८॥वली॥९॥गुरुमाहाराजने

ना विना॥१०॥जे॥११॥कांइपण वस्तु परने ॥१२॥  
॥१३॥अथवा॥१४॥गुरुमहाराजनी आज्ञाविना प  
सेयी ग्रहण करे॥३७६॥

सरेभोगं भुंजइ॥॥शिडजासंधारउवगरणजायं॥

सियं नुनंति भासइ॥अविणीउ॥गविउ॥लूदो॥॥३७७॥

या॥१॥गुरु महाराजने भोगववा जोग्य एहवो॥२॥

ग एटले रहेवानी वसति, संस्तारक एटले त्रणादि

संधारो उपकरण कपडा कांवलियादिक तेमनो

एटले समुह ते प्रते॥३॥पोते भोगवो॥४॥गुरु महा

बोलाव्यो सतो॥५॥अविनीत एहवो॥६॥अहंकारी

॥७॥विषयादिकने विशेषे लंपट एहवो थयो सतो॥

ए प्रकारे टुकारे करिने॥९॥गुरुमहाराज प्रते बोला

व हे भगवन ए प्रकारे बहू मांन सहित नबोलावे.

बिलवाणागिलाणसेहवालाउलस्स गच्छस्स॥

रेइनेय पुच्छइ॥निदम्मो लिंगमुवजीवि॥॥३७८॥

॥१॥ मोहटा पचखाणना करनारा एटले अनश

तपना करनारा ग्लान एटले रोगी॥शिष्य एटले

भित साधु, बाल एटले नाना साधुए पूर्वे कह्या ए

साधुओए करीने, व्याप्त एटले सहित एहवो॥२॥



જે ગચ્છે એટલે સાધુનો સમુદાય તેહનિ વેય. .  
 તે પોતે ॥૩॥ન ॥૪॥કરે અને વલિ જાણપુરુષ ૫.  
 હિંજા ॥૬॥પુછે એટલે હુંસ્યું કરું એ પ્રકારે ૬.  
 ધર્મ રહિત એહવો સતો ॥૮॥લિંગ પ્રતે એટલે  
 મુહપત્તિ પ્રતે ॥૯॥જીવાંડનારો એટલે લોકોનિ  
 વલ એક લિંગની થાપના કરિને તેજ લિંગે  
 જીવિકાનો ચલાવનારો એહવો હોય ॥૩૭૮॥

પહગમણવસહિઆહારસુઅળથંડિલવિહિ<sup>૧</sup>પરિઠવણ<sup>૨</sup> ॥  
 ના<sup>૩</sup>ચરદ્ધ<sup>૪</sup>નેવ<sup>૫</sup>જાણદ્ધ<sup>૬</sup> ॥અદ્યાવદ્ધાવણ<sup>૭</sup>ચેવ<sup>૮</sup> ॥૩૭૯॥  
 અર્થ ॥૧॥માર્ગને વિશે ચાલવું, રહેવાને અર્થ  
 નું જાચવું, આહારનું ગ્રહણ કરવું, શયન કરવું  
 વું, થંડિલનું સોધવું એટલે શુદ્ધ યુમિનું જોવું, ૫.  
 એટલાં વાનાંનો જે વિધિ તે પ્રતે ॥૨॥અશુદ્ધ  
 ણિનું પરઠવવું એટલે તજવું તે પ્રતે જાણતો  
 મ રહિત છે એ કારણ માટે ॥૩॥ન ॥૪॥  
 સિદ્ધાંતમાં કહ્યા પ્રમાણે વિધિ સાચવે નહિ  
 જાણવાનો સ્વપ કરેજ નહિ ॥૫॥સાધિને  
 એટલે સંજમને વિશે ઉદ્યમ કરાવવો તે પ્રતે  
 નહિજા ॥૭॥જાણે ॥૮॥નિશ્ચે ॥૩૭૯॥

अपने मन उठापसो अणो अपनेण चरपेण ॥

अपने मन उठापसो अणो अपनेण चरपेण ॥ २८० ॥

॥ पोताना छंदे करिने चालवुं सुवुंछे जेहने ए  
पोतानी इच्छाए करिने चालनारो अने पोतानी  
करिने उठनारो अने पोतानी सुझिये करिने  
हेनारो एहवो ॥ २ ॥ पोतानि मति कल्पनाए करि  
हेनारो एहवो ॥ ३ ॥ आचारित्र तेणे करिने चालनारो ए  
हेनारो एहवो ॥ ४ ॥ नायु नुनिराजना गुण ज्ञानादिक नेहने ए  
हेनारो एहवो ॥ ५ ॥ वेपार ते जेणे एहने ज्ञानादिक  
करिने रहित एहवो ॥ ६ ॥ आयणा जेदने एहने  
एहने उठनारो देवनाए करिने एहने एहने  
एहने चालनारो एहवो ॥ ७ ॥ निराए एहने  
एहने पातय्यानां एहने एहने ॥ ८ ॥

॥ १ ॥ अने मन उठापसो अणो अपनेण चरपेण ॥

॥ २ ॥ पोताना छंदे करिने चालवुं सुवुंछे जेहने ए

॥ ३ ॥ पोतानि मति कल्पनाए करि हेनारो एहवो ॥

॥ ४ ॥ नायु नुनिराजना गुण ज्ञानादिक नेहने ए

મત પ્રતે એટલે રાગાદિ રૂપ રોગનું ઉત્કૃષ્ટુ-  
 જિનરાજ નાપિત ધર્મ પ્રતે ॥ ૩ ॥ ન જાણતો  
 અહંકારિ એહવો ॥ ૫ ॥ જ્ઞાન રહિત એહવો  
 રિધ્મણ કરેછે ॥ ૭ ॥ વલી ॥ ૮ ॥ કિંચિત માત્ર  
 પોતાને તુલ્ય ॥ ૧૦ ॥ ના ॥ ૧૧ ॥ દેખે એટલે સર્વ  
 પ્રતે ત્રણા સમાન ગણે ॥ ૩૮૧ ॥

સચ્છંદગણણડઠાણસોઅણો ॥ મુંજદ ॥ ગિહીનંચ ॥

પાસથાદઠાણા ॥ હવંતિ ॥ એમાદયા ॥ એ ॥ ૩૮૨ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ પોતાની સુશી પ્રમાણે ચાલવું  
 છે જેહને-આ વિશેષણનું ફરિને ગ્રહણ કરવું  
 હનું કારણજાણવું જે ગુરૂનિઆજ્ઞા ॥ ૨ ॥  
 થાય નહિ એ પ્રકારે જણાવાને અર્થ ॥ ૨ ॥  
 મધ્યે ॥ ૩ ॥ નોજન કરે એટલે ગ્રહસ્થાનિ સાથે  
 આહાર પાણિ કરે ॥ ૪ ॥ એ આદિ દેહને ॥ ૫ ॥  
 જે સર્વતે ॥ ૬ ॥ પાસથાદિકનાં સ્થાનકા ॥ ૭ ॥  
 પૂર્વે કહ્યાં જે લક્ષણ તે સર્વે પાસથાદિકનાં  
 નો ॥ હુમ્મ ૩ ॥ અસમથો ॥ રોગેણ ॥ ૧ ॥ વ ॥ પોલિ ૩ ॥ પ્રિયદેહ  
 મહમપિ ॥ જહામણિયં ॥ ૧ ॥ કયાદં ૮ ॥ ન ૧ ॥ તારેદ ૧ ॥ કાડં ૧ ॥

એ પાસથાદિકના લક્ષણનુ દ્વાર સમાપ્ત ॥

प्रभ करेछे त्वारे स्युं साधु नधि ए प्रकारनि आशं  
 दुर करवाने अर्थे गुरु महाराज उत्तर कहेछे॥  
 ॥१॥ जे साधु॥२॥सन्नावे करिने असमर्थ एट  
 सहित एहवो॥३॥होय॥४॥अथवा॥५॥रोगे क  
 एटले खांसि स्वास ज्वरादिके करिने॥६॥पिडा  
 मनो एहवो॥७॥जिरण थयोछे देह ते जेहनो एट  
 एहवो सतो॥८॥कदाचित एटले कोइक वखत  
 पण एटले समस्त पण॥९॥जेम कह्युं तेम  
 करवाने अर्थे॥१०॥ना॥११॥समर्थ थाय एटले न  
 मके॥१२॥वाक्य शोभवाने अर्थे॥१३॥३॥  
 ॥१४॥निधनरकमवदसायधीइवलं अगूहंतो॥  
 ॥१५॥कुडचरियं॥१६॥जदंतो अस्त॥१७॥॥१८॥  
 ॥१९॥वली॥२०॥ते पण एटले पूर्वे कह्यो एहवो  
 ॥२१॥तावु॥२२॥पोतानुं प्राक्रम एटले पोताना संघय  
 बल॥व्यवसाय एटले शरीरनों उद्यम॥धीरज  
 संतोष॥बल एटले मननु बल एटलां वांनां प्र  
 ओलवतो एटले न गोपवतो सतो॥६॥कुट  
 प्रते एटले कपट सहित आचरण प्रतो॥७॥मु  
 एटले तजिने॥८॥वारित्रने विशे उद्यम करतो ए

हवो सतो॥९॥जरुरंते॥१०॥साधु कहीये  
नो भगो संबंध जाणवो ॥३८४॥

अलसो<sup>१</sup>सदो<sup>२</sup>बलित्तो<sup>३</sup>॥आलंबणतणरो<sup>४</sup>

एवं<sup>५</sup>धिउवि<sup>६</sup>मन्नइ<sup>७</sup>॥अप्यणं<sup>८</sup>मुछिउ<sup>९</sup>मित्त<sup>१०</sup>

अर्थ ॥१॥ हवे कपटी साधुनु स्वरूप कहें

रणीने विशेष आलसु॥२॥मायावि एटले क

हंकारि॥४॥आलंबनने विशेष तत्पर एटले

पे करिने प्रमाद सेववाने विशेष तत्परा॥५॥

मादि एटले निद्रा विकथा करनारो॥६॥ए

रहेलो एहवो सतो पणा॥८॥सुस्थितछुं

छुं॥९॥ए प्रकारनि बुद्धिये करिने॥१०॥

॥११॥मानेछे एटले पोताना आत्मा प्रते

ते कपटी समकित रहित जाणवो ए

जो<sup>१</sup>वि<sup>२</sup>य<sup>३</sup>पाडेऊणं<sup>४</sup>॥मायामोमोहिं<sup>५</sup>खाइ<sup>६</sup>मुद्रा<sup>७</sup>

निगाममझवामी<sup>८</sup>सो<sup>९</sup>सोअइ<sup>१०</sup>कवडावगुव<sup>११</sup>॥३

अर्थ ॥१॥वली॥२॥ज मायावि॥३॥माया

ने एटले कपट सहित जुटु बोलवे करीने॥

ने पोताने वश करीने॥५॥अजाण लोक

निश्चो॥८॥ते पुरुषा॥९॥अपण गामनि

एले त्रइण गामानि वचे रहेलि जे अटावे तेहने  
 वसतो एहवो॥१०॥ कपट तपस्वी एटले कपट  
 मासखमण तपनो करनारो तेहनी पठेमा॥११  
 करशे एटले जेम ते कपटी तापस पोताना आ  
 ते शोच करतो सतो अतिशय दुःखनु भाजन  
 ए प्रकारे बीजोय पण जे पुरुष धर्मने विशे कप  
 छे एटले इह लोक परलोकना सुखने अर्थे त  
 म कित्यादिकने अर्थे धर्म करणि करेछे ते पुरु  
 नो सेवनार थायछे ते कारण माटे कपट दुर  
 जोग्यछे ए भावा॥३८६॥

पसधो॥ मच्छंदो॥ ठाणवासी॥ उसत्रो॥

संतोगा॥ नह॥ बहुआ॥ तह॥ गुरु॥ हुंति॥॥३८७॥

॥१॥ एकाकी धर्मनो बंधव एहवो जे शिष्य ते  
 रने रहित एहवो॥२॥ ज्ञानदर्शन चारित्र तेहने  
 रेहेनारो॥३॥ गुरुनी आज्ञाये करिने रहित एह  
 निरंतर एक स्थानकने विशे रेहेनारो॥४॥ प्रति  
 दि क्रियाने विशे सिधिल॥५॥ ए पूर्वे कहा ए  
 पासध्यादि दोष तेमनी मध्ये द्विकादिक संजो  
 एटले वे संजोगि त्रण संजोगि चार संजोगि

પાંચ સંજોગિ તે થાકી ॥ ૭ ॥ જે પ્રકારે જે પુરુ  
 ॥ ૮ ॥ ઘણા દોષા ॥ ૯ ॥ હોય છે ॥ ૧૦ ॥ તે પ્રકારે ॥  
 કરિને નારે થાય છે એટલે વિરાધક પાય છે  
 પની વૃદ્ધિના નાંગા દેખાડિયે છે ॥

## દ્વિકસંયોગી ભાંગા ૧૦

## ત્રિકસંયોગી ભાંગા ૧

|           |           |        |           |    |
|-----------|-----------|--------|-----------|----|
| एकाकी     | पास्थो    | एकाकी  | पास्थो    |    |
| एकाकी     | सछंदो     | एकाकी  | पास्थो    | २५ |
| एकाकी     | स्थानवासि | एकाकी  | पास्थो    | ३  |
| एकाकी     | उसन्नो    | एकाकी  | सछंदो     | ४  |
| पास्थो    | सछंदो     | एकाकी  | सछंदो     | ५  |
| पास्थो    | स्थानवासि | एकाकी  | स्थानवासि | ६  |
| पास्थो    | उसन्नो    | पास्थो | सछंदो     | ७  |
| सछंदो     | स्थानवासि | पास्थो | सछंदो     | ८  |
| सछंदो     | उसन्नो    | पास्थो | स्थानवासि | ९  |
| स्थानवासि | उसन्नो    | सछंदो  | स्थानवासि | १० |

## चतुष्संयोगि भांगा ५

|        |        |           |    |
|--------|--------|-----------|----|
| एकाकी  | पास्थो | सछंदो     | २५ |
| एकाकी  | पास्थो | सछंदो     | ३  |
| एकाकी  | पास्थो | स्थानवासि | ४  |
| एकाकी  | सछंदो  | स्थानवासि | ५  |
| पास्थो | सछंदो  | स्थानवासि | ६  |

पंचसंयोगी भांगो १

भांगो | पासथो | छंदो | स्थानवासि | उत्तरो  
रीते सर्व मलीने छविस भांगा जाणवा श्रेटले  
एक साधु एकाको होय अने पासथो पण होय  
एक साधु एकाको होय अने पासथो होय अने  
छंदो पण होय कोइ एक साधु च्यारें पद सहीत  
कोइक पांच पद सहीत होय ए रीते छवीस  
भांगोपनी वृद्धीना जाणवा॥३८७॥

अनुसंगी ॥ गुरुत्वेरी अनियवासि वाउत्तो ॥

संजोगी ॥ संजम आराहगा भणिया ॥३८८॥

॥१॥ हवे आराधक साधुनु स्वरूप केहेछे ॥

अने विशे रहेलो॥२॥ ज्ञानादिक सेवन करवाने वि

यनवंत॥३॥ गुरुनी सेवानो करनार॥४॥ एक ठेका

रहे नहि एटले मास कल्पादिके करिने विहारनो

नारो॥५॥ प्रतिक्रमणादिक क्रियाने विशे उपयोग

॥६॥ पूर्वे कथां जे पांच पद तेमना॥७॥ संजोगे

ने एटले पूर्वे गाथानि पठेम द्विकादिक संजोगे क

॥८॥ संजमना आराधक एहवा॥९॥ कथाछे एटले

एक साधु गच्छ गत होय अने ज्ञानादिकनो सेव



नार पण होय ए रिते कोइक त्रइण पद सहित  
चार पद सहित कोइक पांच पद सहित ए रिते  
स भांगा जाणवा ॥३८८॥

निम्मम<sup>१</sup>निरहंकारा<sup>२</sup> ॥ उवउत्ता<sup>३</sup>नाणदंसणचरित्ते<sup>४</sup> ॥

एगाखित्तेवि<sup>५</sup>ठिया<sup>६</sup> ॥ खवंति<sup>७</sup>पोराणयं<sup>८</sup>कम्मं<sup>९</sup> ॥३८९॥

अर्थ ॥ १ ॥ ममत्व जावे करीने रहित एहवा ॥ २ ॥

कारे करिने रहित एहवा ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र्ये

शे एटले विशेष बोध रूप ज्ञानने विशेष तबनि

न रूप दर्शनने विशेष आश्रयनु रोकयुं ते रूप चारि

विशे ॥ ४ ॥ उपयोगवंत एटले सावधान एहवा जे महा

राजा ॥ ५ ॥ एक क्षेत्रने विशेष एटले एक देशने विशेष

रह्या सता ॥ ७ ॥ पूर्वभवनुं उपार्जन करेलुं एहवा ॥

वर्णादि कर्म ते प्रते ॥ ९ ॥ स्वपावेछे एटले विनाश

जिपकोइमाणमाया<sup>१</sup> ॥ जियलोहपरीसहा<sup>२</sup>य<sup>३</sup>ने<sup>४</sup>ध्या<sup>५</sup>

तुदावासेवि<sup>६</sup>ठिया<sup>७</sup> ॥ खवंति<sup>८</sup>चिरसंचियं<sup>९</sup>कम्मं<sup>१०</sup> ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जित्याछे क्रोध मान माया ते

वा ॥ २ ॥ वली ॥ ३ ॥ जित्याछे लोभने परिसह

टले लोभ संज्ञा रहित एहवा क्षुधा

रिसहना सहन करनार एहवा ॥ ४ ॥ जे

साधु ते॥६॥वृद्धा अवस्थाने विशे पण॥७॥एक क्षेत्र  
विशे रह्या सता॥८॥घणाकालसुधी संचेलुं एटले  
कठुं करेलुं एहवुं जे॥९॥कर्म ते प्रते॥१०॥खपावेछे  
मजे सत आचारवंत साधु मुनिराजने कोइक कार  
करिने एक ठेकाणे रेहेवानी पण जिनराजनी आ  
छे ए हेतु माटे॥३९०॥

पंचसमिया<sup>१</sup>तिगुत्ता<sup>२</sup>॥उद्युत्ता<sup>३</sup>संयमे<sup>४</sup>तवे<sup>५</sup>चरणे<sup>६</sup>॥  
ससंयपि<sup>७</sup>वसंता<sup>८</sup>॥मुणिणो<sup>९</sup>आराहगा<sup>१०</sup>भणिया<sup>११</sup>॥३९१॥  
अर्थ॥१॥पांच समितिये करिने समिता एटले साव  
न एहवा॥२॥त्रइण गुप्तिये करिने गुप्ता एटले मन  
न कायाने अशुच वेपारथि निवारिने शुच जोगने  
शे एटले शुच वेपारने विशे जोडता एहवा॥३॥सं  
मने विशे एटले सत्तर प्रकारे संजमने विशे अथवा  
कायनी रक्षा रूप संजमने विशे॥४॥तपने विशे ए  
ले छ प्रकारे अभ्यंतर अने छ प्रकारे बाज्य ए वार  
कारे तपने विशे॥५॥चारित्रने विशे एटले पंच महा  
नी क्रियारूप चारित्रने विशे॥६॥उद्यमवंत एहवा  
मुनिराज जे ते॥८॥सो वरस सुधी पण॥९॥एक  
ने विशे रह्या सता॥१०॥आराधक॥११॥कह्याछे केम

जे जिन आज्ञाना पालनार साधुओने एक ठेका पण  
पण दोष नथी ए कारण माटे आराधक कहा

तह्या १ सवाणुजा १ ॥ सवनिसे हो १ य १ परयणे १ नथि १ ॥

आयं १ वयं १ नुलिगजा १ ॥ लाहाकंस्वि १ व १ वाणियउ १ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ ते कारण माटे ॥ २ ॥ प्रवचनने विशे

न शासनने विशे ॥ ३ ॥ सर्व वस्तुनि अनुज्ञा १

ज्ञा आज प्रमाणे करवुं ए प्रकारे ॥ ४ ॥

करिने सर्व वस्तुनो निषेध एटले आ न करवुं

रे ॥ ६ ॥ नथि केमजे स्याद वाद रूपपणुंछे ए

॥ ७ ॥ जेम ॥ ८ ॥ लाज नो आकांक्षि एटले लाज

॥ ९ ॥ वांणियो ॥ १० ॥ लाभ प्रते ॥ ११ ॥ हांनि प्रते

लना करे एटले विचारे तेम साधु जे ते

णना लाज प्रते तथा ज्ञानादिक गुणनी

विचारे एटले जेम लाज नो अर्थि एहयो वां

वस्तुने विशे लाज जाणे ते वस्तु प्रते

तेहनी पठम साधु पण पोताना पदने

दैनपणे लाजालाज विचारे ए जाव ॥ ३१ ॥

धम्मोसि १ नथि १ माया १ ॥ न १ य १ रुवदं १ आणुअचिभाजं १

दुदगागदं १ मुकुटलं १ ॥ धम्मयणं १ मुत्तयं १ ॥ ज्ञानं १ ॥

॥१॥ गुरु महाराज शिष्य प्रते कहेछे हे शिष्य  
 ने विशेष एटले सत्य एहवो जे साधु धर्म तेहने वि  
 ॥२॥ माया एटले ठगाइपणुं॥३॥ नथी केंमजे माया  
 ने धर्मने अतिशय बैरिपणुंछे ए हेतु माटे॥४॥ वली  
 ॥५॥ धर्मने विशेष कपट एटले परने ठगवुं॥६॥ नथी॥७॥  
 ॥८॥ अनुवृत्ति ए करिने बोलवुं एटले परने वश क  
 ॥९॥ अर्थे मायाकारि एहवुं परनिंदा दाक्षणाता ए करि  
 जे बोलवुं ते पण धर्मने विशेष पण नहोय॥१०॥ प्रगट  
 अक्षर ते जेहना एहवुं अने प्रगट एटले लज्या र  
 ॥११॥ एहवुं॥१२॥ अकुटिल एटले माया रहित एहवुं  
 ॥१३॥ सरल एटले मोक्षनुं कारण एहवुं जे वचन हो  
 ॥१४॥ धर्मनुं वचन॥१५॥ जाण्य एटले जाणवुं॥१६॥

॥१७॥ धम्मस्स भडक्का॥१८॥ उक्कोडा वंचणा वक्कवडं वा॥१९॥  
 निच्छंमो॥२०॥ किरि॥२१॥ धम्मो॥२२॥ सदेवमणुआसुरे॥२३॥ लोए॥२४॥३९४॥

॥२५॥ वलि॥२६॥ अतिशय आडंबर देखाडवा थकि  
 ॥२७॥ धर्मनुं साधन॥२८॥ नहोय॥२९॥ जो आ वस्तु मने  
 ॥३०॥ तो माहरि करिने राखुं ए प्रकारनी वृष्णाए क  
 ॥३१॥ धर्मनुं साधन नहोय॥३२॥ वलि॥३३॥ परने ठगवुं  
 ॥३४॥ करिने॥३५॥ वलि॥३६॥ कपटे करिने एटले मायानि



१॥ चारीत्राचार एटले चारीत्रनो आचार ॥ २॥ वे  
 ३॥ मूल गुणरूप ॥ ४॥ उत्तर गुणरूप ॥ ५॥ नि  
 ६॥ वली ॥ ७॥ मूलगुणने विशेष ॥ ८॥ छ स्थानक छे एट  
 ९॥ महाव्रतने छठुं रात्रिभोजन ते रूप छभेदछे ॥ १॥  
 १०॥ ते स्थानकने विशेष एटले पूर्वकह्यां छ महा  
 ११॥ पेहेलुं महाव्रत ॥ १२॥ नव प्रकारे ए  
 १३॥ पांचवेरिंद्रियादिकचार एनव प्रकारे प्रा  
 १४॥ विपातयकि विराम पांमवुंते रूप नवभेद वालुं होय.

१५॥ शोचमाग्निमनहन्नड<sup>१</sup>वा<sup>२</sup>भवे<sup>३</sup>चडडाउ<sup>४</sup> ॥

१६॥ गुणनेगविहो<sup>५</sup> ॥ दंसणनाणेसु<sup>६</sup>अठठ<sup>७</sup> ॥ ३९७॥

१७॥ शेष एटले वाकि रह्यां पांच बीजां महावृता  
 १८॥ मूलगुण उत्कृष्ट मध्यम जघन्य जेदे करिने त्रण  
 १९॥ वालां जाणवां ॥ २॥ अथवा द्रव्यक्षेत्रकाल भाव  
 २०॥ करिने ॥ ३॥ च्यार प्रकारे ॥ ४॥ होय ॥ ५॥ उत्तरगुणने  
 २१॥ एटले गोचरि समिति जावनादिरूप तेहने विशेष  
 २२॥ प्रकारनो आचार जाणवो ॥ ६॥ दर्शन ज्ञानने वि  
 २३॥ आठआठ आचार जाणवा एटले दर्शनने विशेष  
 २४॥ समकितने विशेष निरुसंकिय निकंखिय इत्यादि  
 २५॥ आचार जाणवा ज्ञानने विशेष कालेविणये बहुमा

ए० इत्यादि आठ आचार जाणवा॥३९७॥

नं० नयह० अगीयथो॥ नं० च० अ० . अनिस्तिउ नयह०

वद्रवेद्गच्छं॥अणंतसंसारिउ०होइ॥३९८॥

अर्थ॥१॥अंगितार्थ एतले सिद्धांतनो अजाण

संतो॥२॥जे कांड ॥३॥तपक्रियाने विशे उद्यम

४॥वलि॥ ५॥अगीतार्थनी निश्रायें रह्यो सतो

कांड ॥ ७ ॥ उद्यम करेछे एटले क्रिया अनुष्ठानं

टले अंगितार्थना हकम प्रमाणे चाले २

तार्थ सतो गच्छ प्रते॥९॥प्रवर्तवि छे एटले

नृष्टानने विशे प्रेरे छे॥१०॥अनंत संसारि॥११॥

एटले' पूर्वे कल्या जे त्रण परुष उत्कृष्ट नांगे

लसुधि संसारने विशे परिभ्रमण करेछे गीत।

याश्च नृपान् मोक्ष फलदाइ थायछे ॥ ३९८ ॥

कहउ नयंतो साह ॥ बड़ा वेद ॥ य तो उ गच्छं तु ॥

संनमनुत्तो११होउ११॥अणंतसंसारिउ११होइ१॥३९१

अर्य॥१॥हवे शिष्यगुरु प्रते पछेछे,हे नभपं

जमने विशे उद्यम करतो एहवो ॥५॥

ले शी रीते॥४॥अनंतसंसारि॥५॥

साध॥८॥गच्छप्रते॥९॥तपसंजमने विशे भवत

अथैवमस्मात्प्रत्ययानामेव प्रतीतिरिति चेन्न



अचित्त मिश्र प्रते न जाणे॥६॥निश्चे॥७॥वलि:

ल्प अकल्प प्रते एटले आ वस्तु कल्पवा

आ वस्तु नथि कल्पवा जोग्य ए प्रकारे न

वलि॥१०॥तेमज॥११॥जेने एटले वाल

॥१२॥जे॥१३॥जोग्य॥१४॥होय ते प्रते पण

जहठियं<sup>१</sup>खित्तं<sup>२</sup>न<sup>३</sup>जाणाइं<sup>४</sup>अज्ञाणे<sup>५</sup>जणवए<sup>६</sup>अ<sup>७</sup>જાણ

પિ<sup>૮</sup>ચ<sup>૯</sup>નવિ<sup>૧૦</sup>જાણइ<sup>११</sup>।सुभिखस्वदुभिखस्वजं<sup>१२</sup>कपं<sup>१३</sup>

अर्थ॥१॥वली अगीतार्थ एहवो सतो जथार्थ

॥२॥क्षेत्र प्रते एटले आ क्षेत्र रुडुंछे अथवा

ए प्रकारे क्षेत्रना स्वरूप प्रते ॥३॥ न॥४॥

विहार करवा जोग्य एहवा मारगने विशे ॥६॥

॥७॥विहार करवा जोग्य एहवा देशने विशे

॥९॥कह्यું વિધિનું સ્વરૂપ તે પ્રતે॥૧૦॥

એ એટલે મારગ સંબંધી તથા દેશ સંબંધી

કહેલો એહવો જે વિધિ તે પ્રતે જાણે

॥૧૩॥કાલ પ્રતે પણ એટલે કાલના સ્વરૂપ

જાણે॥૧૪॥સુચ્છિ કાલને વિશે તથા દુર્ચ્છિ

વિશે એટલે સુકાલ દુકાલને વિશે જે વસ્તુ

લ્પવા જોગ્ય અકલ્પવા જોગ્ય પ્રતે ન જાણે

हृगिलाणं१॥नवि३जाणइ३गाढागाढकप्पं९च९॥

महुगुरिस्वयं०॥वथू८मवथं१०च९नवि११जाणइ१२॥४०३॥

॥आवा द्वारने विशे॥२॥ निरोगी तथा ग्लानं  
एले आ साधु निरोगीछे ए कारण माटे एहने  
स्तु आपवा जोग्य छे अने आ साधु ग्लानं छे  
ए माटे एहने तो आहिज वस्तु आपवा जोग्य  
करे॥३॥ नहिं जा॥४॥जांणे॥५॥वलि॥६॥ गाढा  
कल्प प्रते एटले गाढ कारण सते एटले मोहटुं  
पड्ये सते आ करवा जोग्य छे अगाढ कारण  
एले स्वभाविक कारज पड्ये सते आ प्रमाणे  
जोग्य छे ए प्रकारे न जांणे॥७॥समर्थ शरिरवा  
समर्थ शरिरवालुं एहवुं पुरुपरूप वस्तु प्र  
ते समर्थ पुरुष प्रते तथा असमर्थ प्रते न जांणे  
स्तु प्रते एटले आचारजना स्वरूप प्रते॥९॥वलि  
अवस्तु प्रते एटले सामान्य साधुना स्वरूप प्र  
॥नहिंजा॥१२॥जाणे॥४०३॥

॥आ३चउद्धा१॥आउद्धिपमायदप्पकप्पे९च९॥

॥जाणइ३अगीउ१॥पच्छितं१०चैव११जंतथ८॥४०४॥

॥१॥अगीतार्थ एटले नथी जांण्यो सिद्धांतनो र

કરતો એહવોય પણ ॥૩॥ અગીતાર્થ જે તેને  
 હ્યા એહવા ॥૫॥ દોષ લાગે છે ॥૬॥ ધીર  
 કરિને એટલે અગીતાર્થના વચને કરિને તપ  
 શે ઉદ્યમ કરતો એહવો જે બીજો પુરુષ તેહને  
 વેં કહેલા દોષ લાગે છે ॥૭॥ વાનિ ॥  
 તાવતો એહવો જે અગીતાર્થ તેને પણ પૂર્વે  
 લાગે છે ॥૮॥ વલી ॥૯॥ જે પૂરુષ ॥૧૦॥  
 ગચ્છ પ્રતે ॥૧૧॥ આપે એટલે મૂરખને  
 પ્રતે આપે તે પુરુષને પણ પૂર્વે કહેલા એહવા  
 ની આજ્ઞાનંગાદિક દોષ લાગે છે ॥૧૨॥

અંબહુસ્સુડ ૧ તવસ્તી ૧ ॥ વિહારે ઉકામો ૧ અજાણિ કુળ ૧ પદ ૧  
 અવરાહ પયસયાદ ૧ ॥ કાકુળ વિલો ૧ ન ૧ જાણેદ ૧ ॥ ૪૧  
 અર્થ ॥ ૧ ॥ અવહુશ્રુત ૧ ૮ લે ૧ ૧ ૧ ૧ ૧  
 વો ॥ ૨ ॥ તપસ્વી એટલે ઘાડ તપનો કરનારો ૧૯  
 મોક્ષ મારગ પ્રતે ॥ ૪ ॥ જાણ્યા વિના ॥ ૫ ॥ વિહાર  
 એટલે વિચારવાની છે ઇચ્છા તે જેહને ૧  
 સાધુ ॥ ૭ ॥ અપરાધનાં પદ એટલે સ્થાન તેમનાં  
 પ્રતે એટલે શિક્કડો દોષ પ્રતે ॥ ૮ ॥ કરિને પણ  
 શિક્કડો દોષ સેવતો સતો પણ ॥ ૯ ॥

अल्प श्रुति छे ए हेतु माटे॥४१२॥

क्याइयसोहि॥व्याइचारे॥य॥नो॥न॥भ्याणेइ॥

विदुस्स॥न॥वदुइ॥॥गुणसेदी॥तत्तिया॥ठाइ॥॥४१३॥

॥॥॥॥जे॥२॥दिवस संवंधि रात्रि संवंधि जे अति

तेमनि शुधि प्रते एटले ते अतिचार टालवाना उ

प्रते॥३॥वलि॥४॥व्रतना एटले मूलगुण उत्तरगुण

अतिचार प्रते एटले दोष प्रते॥५॥न॥६॥जाणे ए

अल्प श्रुतपणाथकि विशुद्ध धाय नहि॥७॥ए का

माटे विगुद्धि रहित एहवो जे पुरुष तेहने॥८॥गुण

मेणि॥९॥न॥१०॥वृद्धि पांमे॥११॥तेटलि॥१२॥रहे

जे जेटली होय तेटलि रहे अधिक वधे नहि॥४१३॥

न॥नो॥किलस्सइ॥॥नइवि॥करेइ॥अइदुकरं॥वु॥ववं॥

वुइइकयं॥॥वहुं॥पे॥न॥॥सुंदरं॥॥होई॥॥४१४॥

॥॥॥॥जोपणा॥२॥अल्पछे आगमते जेहने एटले

जान रहित एहवो सतो॥३॥अतिशय दूष्कर एहवो

समणादि॥४॥तप प्रते॥५॥करेछे॥६॥तोयपण क

पांमेछे एटले कष्टज पांमेछे॥७॥वलि॥८॥सुंदर

करिने एटले मोक्षनी इच्छाये करिने करयुं एहवुं

वपुंनेतप॥१०॥ते तप सुंदर एटले मोक्ष फलदाय

का॥१॥न॥१२॥होय एटले अज्ञान कष्ट  
 अपरिच्छिद्यसुयानेहसस्स॥किवल॥  
 सवुद्धमेणवि॥कयं॥अत्राणतवे॥बहुं॥पडइ॥४१५॥  
 अर्थ॥१॥ नथि जाण्यो सूत्रनो सार ते ज  
 ॥२॥एक॥३॥टिकादिके करिने रहित एहवुं  
 तेणे करिने चालतो एटले टीका जाण्यो  
 करिने रहित एहवुं केवल एक सूत्र तेहने  
 चालतो एहवोजे पुरुष तेणे॥४॥सर्वउद्यमे  
 एटले घणि मेहेनते करिने॥५॥करयुं एहवुं  
 क्रिया अनुष्ठानादि ते॥७॥अज्ञान तपने  
 अज्ञान कष्टने विशे॥८॥पडेछे एटले अज्ञान  
 पायछे ए उपर दृष्टांत कहेछे॥४१५॥

बह॥दायंमिवि॥पहे॥तस्स॥  
 किलिस्सइ॥धिय॥तह॥लिंगायार॥सुभमित्तो  
 अर्थ॥१॥जेम कोइक पुरुषे रस्ताना  
 ने॥२॥मार्ग॥३॥देखाडे सते पण॥४॥  
 ॥६॥विशेष प्रते एटले आ जमणो मारगछे  
 मारगछे ए प्रकारे॥७॥न जाणतो एहवो  
 चालनारा॥९॥क्लेश प्रते पांमेछे

मोहटा दुख प्रते पांमेछे ॥ १० ॥ निश्चे ॥ ११ ॥ तेम ए  
 एट्टांते करिने ॥ १२ ॥ केवल सूत्रना अक्षर मा  
 जाण एहवो ॥ १३ ॥ साधुनो वेश अने आचार ए  
 क्रिया ते बेनो धारण करनार एट्टले सूत्रना पर  
 अनो अजाण एहवो सतो पोतानि मतिये करिने  
 अनो वेश लेइने क्रिया करतो सतो कलेश प्रते पांमेछे  
 ॥ १४ ॥ १ ॥ सण ॥ २ ॥ मणे सण ॥ ३ ॥ चरणकरणे ॥ ४ ॥ सेहाविहिं ॥ ५ ॥  
 ॥ ६ ॥ उत्तविहिं ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ द्वाइ गुणे सु ॥ ९ ॥ अट्टसमगं ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥  
 ॥ १४ ॥ कल्प अकल्प्य प्रते एट्टले साधुने लेवा जो  
 अपवा अलेवा जोग्य प्रते ॥ १५ ॥ आहारनि श्रुद्धि प्रते  
 आहारना दोष प्रते ॥ १६ ॥ चरणसितरि करण सितरि  
 एट्टले मूल गुण उत्तर गुण प्रते ॥ १७ ॥ शीष्यना विधि  
 एट्टले नवा दिक्षित साधुने शिखामण देवाना विधि  
 ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ प्रायश्चित्तना विधि प्रते एट्टले आलो  
 दिक दश प्रकारना प्रायश्चित्त आपवाना विधि  
 ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ द्रव्यादि गुणने विशे एट्टले द्र  
 व्यकाळ जावने विशे अने उत्तम मध्यम गुणोने  
 ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ समग्र एट्टले संपूर्ण प्रते अजाणतो सतो एट  
 जाणतो सतो. (आपद सर्व ठेकाणे जोडवुं) ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥

पञ्चावणविहिं१ मुद्रावणं१ च१॥ अञ्जाविहिं१ निरवसेसं१॥

उरसग्गाववायविहिं१॥ अयाणमाणो१ कहं१ जयउ१॥ ४१

अर्थ॥ १॥ दिक्षा आपवाना विधि प्रते ५०

पुरुषोने दिक्षा आपवाना व्यवहार प्रते न

सतो॥ २॥ वलि॥ ३॥ उपस्थापना प्रते एटले

च्चारण कराववाना विधि प्रते॥ ४॥ संपूर्ण॥

ना विधि प्रते एटले साध्विने

ते॥ ६॥ उत्सर्ग अपवादना विधि प्रते एटले

पालवो ते उत्सर्ग कहिए अने कारण पड्ये स

वुं पडे ते अपवाद कहिये ते बे व्यवहार

गाथाने विशेष कहा एहवा सर्व प्रकार प्रते न

सतो एटले अवहुश्रुत एहवो लिंग धारण

तो॥ ८॥ शिरिते॥ ९॥ मोक्ष मारग आराधवाने

म करि शके अपितु न करि शके॥ ४१८॥

सीमापरियक्रमेण१ य॥ तणेण१

नम्रान्ते१ बहुविहाइं१॥ न१ चरुसुमित्तानुसरियाइं१॥ ४१

अर्थ॥ १॥ लोक जे तेंणे॥ २॥ शिष्य आचार

क्रमे करिने एटले जेम विद्यानो अर्थि विनय

जाचाजादिक प्रते प्रसन्न करिने विद्या प्रते

ए प्रकारे विनय सहित गुरु पासें थकि एटले क  
 ारज पासैथि॥३॥ गृहण कर्यां एटलेशिख्यां ए  
 ॥४॥नांना प्रकारनां एटले बहु प्रकारवालां एहवां  
 शिल्प शास्त्रादिक एटले चित्रामण वेपारादिकनि  
 श्रो॥६॥जांणीए छीए एटले लौकिकमां पण लो  
 नय सहित सिखे छे तो तेहनेसम्यक प्रकारे जां  
 णुं थायछे॥७॥निश्चे॥८॥चक्षु दर्शन मात्रे करिने  
 सर्यां एटले पोतानी मेले शिख्यां एहवां जे शा  
 ॥९॥न शोभा पांमे एटले गुण नणि थाय नहि जे  
 माटे लौकिकमां पण ए प्रकारे छे तो लोकोत्त  
 रगनुं शुं कहेवुं ए भाव॥४१९॥

॥उद्यमिउं१॥जाणइ॥२॥नाणी३॥तवसंयमे४॥उवायविउ॥५॥  
 ॥६॥सुमित्तदरिसण॥७॥सामायारि॥८॥न१०॥याणंति॥११॥४२०॥  
 ॥१॥जेमा॥२॥उपायनो जांण एटले कर्म रहित  
 ॥उपाय प्रते जांणतो एहवो॥३॥ज्ञानी पुरुष॥४॥  
 संजमने विशे॥५॥उद्यम करवाने॥६॥जांणे छे ए  
 सिदांतना जांण पणे करिने जेहवी रीते उद्यम क  
 षटे छे ते प्रकारे जांणे छे॥७॥तेम॥८॥केवल च  
 ते देखवे करिने॥९॥साधुनि समाचारि प्रते॥१०॥



ना॥११॥ जाणे एटले पोतानां जथार्थ जाण  
 ने जेहवुं ज्ञान थायछे तेहवुं केवल परना  
 रिने जाणपणुं थाय नहिं ए कारण माटे  
 पासे पोताने जथार्थ जाणपणुं करवानो  
 सिष्णाणि१य१सुत्थाणि१य८॥ ज्ञाणंतोवि१नय१जुंजइ१  
 फलं१०न११जुंजइ१२॥ इय१३अजयंतो१५जई१५नाणी१

अर्थ॥१॥ जे पुरुष॥२॥ शिल्प प्रते एटले  
 प्रते॥३॥ बलि॥४॥ शास्त्रप्रते एटले व्याकर  
 प्रते॥५॥ जाणतो सतो पण॥६॥ जे  
 प्रवर्तवि एटले ते शास्त्रमां कहेली क्रिया प्रते  
 रतो॥८॥ पादपूर्णे॥९॥ ते पुरुष ते शिल्पा  
 ॥१०॥ फलधन लाजादिक रूप ते प्रते॥११  
 जोगवे एटले न पांमे॥१३॥ ए प्रकारे॥१४  
 हवो॥१५॥ साधु॥१६॥ अजतना प्रते करतो  
 साधु थइने सिद्धांतमां कह्या प्रमाणे जतना  
 सतो मोक्ष रूप फल प्रते न पांमे॥१८१॥  
 गारवातियपडिबद्धा१॥ संयमकरणुद्गमंभि१सीअंता॥  
 निर्गनूष१गणाड॥ हिडंति१पमायरत्रंभि१॥१८२॥  
 अर्थ॥१॥ गारवनात्रिकने विशे एटले



नाणाहियस्स<sup>१</sup>नाणं<sup>२</sup>पुब्जइ<sup>३</sup>नाणा<sup>४</sup>पवत्तए<sup>५</sup>चरणं<sup>६</sup>॥  
 पुणं<sup>७</sup>दुन्हइ<sup>८</sup>कंपि<sup>९</sup>नत्थिं<sup>१०</sup>तस्स<sup>११</sup>पुब्जए<sup>१२</sup>काइं<sup>१३</sup>॥  
 अर्थ॥१॥ज्ञाने करिने अधिक एटले स  
 रिने पूरणं एहवो जे पुरुष तेहनुं॥२॥ज्ञानं॥३॥  
 एटले ज्ञानि पुरुष स<sup>४</sup>यक<sup>५</sup>॥६॥ करिने पू  
 जे कारण माटे ज्ञान थकि॥७॥ चारित्र  
 टले ज्ञानवांन पुरुष चारित्र प्रते प्रवर्तवि छे॥  
 ॥८॥जे पुरुषने॥९॥वेनि मध्येथी एटले ज्ञान  
 वे मांहिथी एके पण॥१०॥नथी॥११॥ते पुरु  
 ॥१३॥पूजनीक थाय एटले स्युं पूजवा जोग्य  
 पितु काइ नहि एटले ज्ञान चारित्र रहित  
 रुप ते मानवा पूजवा जोग्य न जांणवो ५  
 नाणं<sup>१</sup>चरित्तहीणं<sup>२</sup>॥लिंगगहणं<sup>३</sup>च<sup>४</sup>दंसणविणं<sup>५</sup>च॥  
 संयमहीणं<sup>६</sup>च<sup>७</sup>तवं<sup>८</sup>जो<sup>९</sup>चरइ<sup>१०</sup>निरत्थयं<sup>११</sup>तस्स<sup>१२</sup>  
 अर्थ॥१॥जे पुरुष॥२॥चारित्रे करिने रहित ५  
 नाव वे प्रकारे चारित्रे करिने रहित ५ ह्युं ३  
 टले द्रव्य ज्ञान ते प्रते॥४॥आचरे छे॥५॥  
 शन विना एटले समकित विना॥७॥लिंगनुं  
 प्रते एटले साधुना वेश प्रते धारण करे

मे करिने रहित एहवुं॥१०॥तप प्रते आचरे छे ए  
स्वदया परदया विना तप प्रते करेछे॥११॥ते पु  
॥१२॥सर्व निरर्थक एटले निस्फल जाणवुं एटले  
न कह्या ज्ञान तपादिक, मोक्ष फलदायक थाय न  
॥ भाव॥१३॥निश्चे॥४२५॥

॥१॥खरो१चंदनभारवाही१॥भारस्स१भागी१नहु०  
चंदनस्स१॥एवं१खुं१नाणे१२चरणेण१०हीणो११  
कपस्स११भागी११नहु११सुगईए१५॥४२६॥

॥१॥जेम॥२॥चंदनना चार प्रते वहन करनारो ए  
॥३॥गधाडो॥४॥चारनो॥५॥उपाडनार थायछे एट  
केवल बोजानो उपाडनार होय॥६॥चंदननो एट  
चंदनना सुगंधनो॥७॥नहिंज भोगी होया॥८॥ए प्र  
॥९॥निश्चे॥१०॥द्रव्यजाव चारित्रे करिने॥११॥रहित  
॥१२॥ज्ञानि एटले द्रव्य ज्ञान वांना॥१३॥ज्ञाननो  
द्रव्य ज्ञाननो॥१४॥जागी थायछे एटले केवल  
ज्ञाननो जाण थायछे॥१५॥नहिंज॥१६॥सुगति  
एटले ज्ञाननो सुगंध रूप मोक्ष गतिनो भागी था  
एटले केवल समकित रहित जाण पणायें करिने क  
रहित थाय नहि ए कारण माटे शुद्ध क्रिया सहि

त जे ज्ञान ते श्रेष्ठ कहिये॥४२६॥

संपागडपडिसेवी॥१॥काएसुखएसुखजो न उज्जमई॥

पवयणपाडणपरमो॥२॥समत्तंकोमलं॥३॥तस्स॥४२७॥

अर्थ॥१॥लोकने देखतेनिपेध करेला आपा

नारो एहवो॥२॥छकायने विशे एटले छकाय

ने विशे॥३॥वृत्तने विशे एटले वृत्तनी रक्षाने

नथी॥४॥उद्यम करतो एटले प्रमाद सेवे छे

जिनशासननी लघुता करा॥५॥विशे तत्पर

जे पुरुष॥६॥ते पुरुषनुं॥७॥समकिता॥८॥

एवुं एटले तेहने मिथ्यात्वज होय॥४२७॥

घरणकरणपरिहीणो॥१॥अद्वैतं तत्त्वं चरद्द सुखं

सो तिलं विकिणंतो॥२॥कांसिग बुद्धो मुनेयवो॥३॥

अर्थ॥१॥चरण एटले महाव्रतनुं आचरण

टले आहारादिकनी शुद्धि करवी तेमणें करिने

हवो सतो॥२॥जोषणा॥३॥रुडि

तिशय मोहटुं एहवुं॥४॥तप प्रते॥५॥करे

ते पुरुषा॥६॥दर्पणे करिने॥७॥तिल प्रते॥८॥

अने तेल ग्रहण करतो एटले उंधा दर्पणने

करिने आपतो अने समा दर्पणने विशे तेल

घणा तिल प्रते हारे छे एटले जेम थोडुं तेल पांम  
करिने घणा तल हारचा तेम थोडो स्याय पण चा  
नासियल पणायें करिने घणा तप प्रते हारे छे।११।  
नारेले।१२॥ मूरखले।१३॥ इहांद्रष्टांतजाणवुं.

मोक्षिकायमहव्याणं परिपालणाइ जइधम्मोजइ पुण  
नंरखवइ॥ भणाहि को१० नाम१२ सो१धम्मो१॥४२९॥

या॥१॥ छजीवनि काय एटले पृथवि अप तेउ वायु  
रूपति त्रसकाय रुप महाव्रत एटले प्राणातिपात वि

णादि रुप तेमनि॥२॥ प्रतिपालणा एटले सम्यक प्र  
रक्षण करवुं तेणेकरिने, जति धर्म एटले साधु धर्म

॥३॥ वलि॥४॥ जो॥५॥ ते छजीवनिकाय तथा महा  
प्रतो॥६॥ न॥ ७॥ रक्षा करे एटले पाले नहि तारे।८।

तप्य तुं केहे एटले वोल्या॥९॥ ते॥१०॥ श्यो॥११॥ धर्म  
खेरी रीते धर्म कहिये अपितु महाव्रत पाल्या विना

होयज नहि ए भावा॥१२॥ निओ॥४२९॥

मोक्षिकायदयाविशजिउ नेव पदवि सउ न विर्गिनी॥  
मनाउ चुको॥ चुकइ विर्गिनीपणमादना॥४३०॥

या॥१॥ छजीवनिकायनी दयाए करिने रहित एहो  
पारि॥२॥ नहिज॥३॥ दिक्षति एटले साधु एटले तिम

साधु न कहिये॥४॥नहिंज॥५॥ग्रहस्थ एटले  
 स्थ पण न कहिये केंमजे मांथु मूडेलुं छे ५  
 ॥६॥जति धर्म थकि॥७॥भ्रष्ट थयो सतो एटले  
 म थकि चुक्यो सतो॥८॥ग्रहस्थना दांन धर्म  
 चुके छे एटले जो गृहस्थ होयतो कोइक ५९  
 नियोने आहार पांणि वस्त्र पात्रादिक प्रते  
 तैटलार्थी पण चुक्यो जे कारण माटे तेहनूं  
 मुनियोने कल्पे नहिं॥४३०॥

सबाउगे १ सह १ कोइ १॥अमद्यो १ नरवइस्स १ ग्रिनुण १॥  
 आणाहरणे १ पावइ १॥नहबंधणदवहरणं १ च १॥४३१॥

अर्थ॥१॥जेंम॥२॥कोइक॥३॥प्रधान॥४॥  
 सर्व वेपार प्रते एटले सर्व अधिकार प्रते॥५॥  
 रिने॥७॥पछी राजानि आज्ञा हरण करे सते  
 गें सते एटले उलंघन करे सते॥८॥वध एटले  
 यादिके करिने मारवुं,बंध एटले सांकोर्यादि  
 बांधवुं,द्रव्यनुं हरण करवुं एटले पडावी लेवुं  
 नां प्रते॥९॥पांमे॥१०॥मरण प्रते पांमे॥११॥

तह १ उक्तायमहाय ॥मग्नान्विस्तीर १ गिन्हउण १ अइ १॥  
 एगमवि १ विराहेतो १॥अमद्यरत्रो १ हणइ १ बोहि १॥४३२॥

उपदेशमाला.

२७१

॥१॥तेन॥२॥जति एटले साधु॥३॥छकाय अने पां  
हाव्रत तेननि सर्वनी वृत्तियो प्रते एटले द्रव्य जा  
प्रकारे निम प्रते एटले छकायनुं रक्षण करवुं अने  
महाव्रतनुं पालवुं ए प्रकारे निम प्रते॥४॥ग्रहणक  
॥तेननि मध्येथि एक पण जीवकाय प्रते अथवा  
पण नहाव्रत प्रते॥५॥विराधतो सतो॥६॥तीर्थंकर  
एटले तीर्थंकरनी आपेलि एहवी॥७॥समकितनि  
प्रते॥८॥नाशकरेछे एटले जिनरूप राजानि आ  
भंग करचे सते समकितनो नाश थाय अने सम  
गये सते अनंत संसारि पणुं थाय ए जावा॥९॥३२॥  
॥५॥तेही पच्छा॥१॥कयावराहाणुत्तरि च भियं भमियं॥  
॥२॥अहिपाडिउ॥३॥भमइ॥४॥जरामरणदुग्गामे॥५॥४३३॥  
॥६॥त्यार पछि॥७॥हणि छे बोधि एटले समकि  
वैणे एहवो सतो॥८॥पछि॥९॥करयो जे अपराध  
जिन आज्ञानो भंग तेहने अनुसारे एटले जिन  
नो भंग करवे करिने॥१०॥आ प्रत्यक्षा॥११॥प्रमाण  
एहवुं फल प्रते पांमे छे श्युंफल ते कहेछे॥१२॥व  
॥१३॥जरा एटले वृद्धपणुं मरण एटले प्राणनो  
म तेमणे करिने दुर्ग एटले अतिशय उंडो एहवो



॥९॥ संसार रुप समुद्र तेहने विशे  
मे छे एटले संसारने विशे भमवा रुप फल

जइया १ नेणं १ चत्तं ॥ अण्णयं १ नाणदं सण चरित्तं ॥

तइया १ तस्स १ परेसु ॥ अनुकंपा १ नथि १ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ ज्यारे ॥ २ ॥ आ जाग्य रहित एहवो  
णे ॥ ३ ॥ पोताना आत्माने हितकारी एहवुं ॥

नचारित्र ॥ ५ ॥ त्याग करयुं एटले जे अवसरे जे  
तकारि एहवुं ज्ञानादिक प्रते छांडेछे एटले

वरते छे ॥ ६ ॥ त्यारे एटले ते अवसरे ॥ ७ ॥ ते  
पर एटले पोताथि निन्न एहवा ॥ ९ ॥ जीवोने

दया ॥ १ ॥ नथि एटले परजीवोनि उपर दया  
टले जे पुरुष पोतानो हितकारी न होय ते

हित शी रीते करे केमजे स्वदया सहित पर  
ए हेतु माटे अने स्वदयाना उपयोग विना जे

ते परमार्थे करिने दया कहैवायज नहिं  
छकायारे उण १ असंजयाणं १ ॥ लिंगावसे सामेत्ताणं १ ॥

वहुअस्संघमपवहो १ ॥ खारो १ मइलेइ १ सुदुअरं १ ॥ ४३५  
अर्थ ॥ १ ॥ छकायना शत्रु एटले छकायना

हवा ॥ २ ॥ असंजत एटले मोकला मुक्याछे ॥ ४३५



जा॥१०॥ना॥११॥होय एटले जेम प्रधात  
सेनादिक विना राजा कहेवाय नहिं तेम  
धु कहेवाय नहिं॥४३६॥

नो मुत्तथाविणिच्छियकयागमो भूलोत्तरगुणोह॥

द्वहहसयाखलिड॥सो

अर्थ॥१॥जे साधु॥२॥सूत्र अर्थने विशे विशे

कारिने करिने

एटले सूत्र अर्थनी प्रतिते करिने जाण्युंछे

णे एहयो॥३॥मूल उत्तर गुणना समुह

रा॥५॥अतिचार रुप दुपणे करिने रहित एहवो

वहन करेछे एटले धारण करेछो॥

खाने विशे एटले साधुनी गणतरिने विशे॥

छिये एटले साधुनी पंक्तिमां गणाय छे॥६॥

बहुदोससंकलिष्टो॥नवरं॥मदलेद॥चंचलसहस्रो

मुद्रविवायामनो॥कायं॥नकरेद॥किंचि॥

अर्थ॥१॥बहु राग द्वेष रुप दोषे करिने

टले नरेलो एटले दुष्ट चित्त वालो

जाववालो एटले विषयादिकने विशे

निप्राय ते जेहनो एहवो सतो॥३॥कायापे

निराय करिने पण ॥५॥परिषहादि दुख प्रते सहन  
 नो॥६॥योडोपणा॥आगुण प्रते॥८॥ना॥९॥करे एटले  
 भयादि रूप गुण प्रते न पांमे॥१०॥केवल ॥११॥  
 मा प्रते मलिन करेछे॥४३८॥

॥६॥॥६॥॥६॥॥जीविच॥मन्नेसि॥मुभय॥मन्नेसि॥॥  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥अहियं॥॥केसि॥॥च॥॥उभयंपि॥॥४३९॥  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥देवतां॥देवतानि इच्छा सते एटले अ  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥प्रकारे कहुं ते प्रकारे कहेछे॥२॥संसा  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥विशे केटलाएक पुरुपोनुं॥३॥मरवुं॥४॥श्रेष्ट छे॥५॥  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥अन्य एटले विजा केटलाएक पुरुपोनुं॥७॥जी  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥श्रेष्टछे॥८॥केटलाएक बीजा पुरुपोनुं॥९॥जीववुं म  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥वेय श्रेष्टछे॥१०॥वलि ॥११॥ केटलाएक पुरुपोनुं  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥जीववुं मरवुं वे पण॥१३॥अहितकारिछे ए रीते  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥देवतानोअभिप्राय सतेप्रनुए कहुं एम जाणवुं॥

॥६॥॥६॥॥६॥॥विच॥परलोगो॥॥अन्नेसि॥इत्थ॥होइ॥इहलोगो॥॥  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥नोदि॥॥हया॥॥कस्सवि॥॥लोगा॥॥४४०॥  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥केटलाएक पुरुपोनो॥२॥परलोक रुडोछे॥३॥  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥अन्य केटलाएक पुरुपोनो॥५॥इहांजादि॥आ  
 ॥६॥॥६॥॥६॥॥रुडो॥॥होया॥८॥कोइक पण पुरुपना॥९॥वेय

पण लोक रुढा होय एटले कोइक पुन्यवंत  
 हलोक परलोक बे . . . जो . . .  
 पण पाप कर्मतो करनार एहवो जे . . .  
 बे पण॥१२॥लोक एटले इहलोक परलोक  
 या एटले नाश पांम्या एटले बगड्या॥१४॥

छबजीवकायविरंड॥१॥कायकिलेसेहि सुदुगुरुएहि॥  
 नहुतस्सइमो॥लोगो॥हवइस्सेगो॥परलोगो॥  
 अर्थ॥१॥छ जीवनि कायनि एटले  
 वोनि विराधनानेविशे विशेषे करिने रक्त ५८  
 एहवोज पुरुषा॥२॥ते पुरुषतो॥३॥अतिशय  
 करा॥४॥काय कलेशे करिने एटले चामि  
 एादिक कष्ट करवे करिने॥५॥आ प्रत्यक्ष  
 हवो॥६॥लोक॥७॥नहिंज॥८॥रुढो होय एटले  
 कष्ट क्रियाना करनार तापसादिकनो आ नव  
 होय॥९॥ते तापसादिकने एका॥१०॥परलोक  
 एटले राज्यादिक सुखनि प्राप्तियें करिने रुढो  
 पुद्गलिक सुखनि अपेक्षाए करिने ०५५६  
 जाणवुं परमार्थ करिने तो ते पण दुखरूपज  
 नरयनिरुद्धमर्दण॥१॥हिंडियमाइण॥जीवियं॥सेयं॥

वि० देहे ५॥ विसुझमाणस्त्ववरं १० मरणं ५॥ ४४२॥

१॥ नरकने विशे थापन करिछे मति ते जेमणे

२॥ मंत्रि प्रमुख एटले राज्यनी चिताना करनारा

जे पुरुष तेमनुं ॥ ३॥ जीववुं ॥ ४॥ श्रेयछे एटले रु

केमजे पाप कर्म आचरवें करिने परजवने विशे

कादिक दुखनि प्राप्तीछे ए हेतु माटे ॥ ५॥ बहु उत्प

योछे रोग ते जेहने विशे एहवो ॥ ६॥ देह सते एटले

सहन करवाने असमर्थ एहवुं शरिर सते ॥ ७॥

८॥ विशुद्ध मांनछे ध्यांन ते जेहने एहवो जे पुरुष

९॥ मरण ॥ १०॥ श्रेष्ठछे जे कारण माटे ते पुरुष

परजवने विशे सदगतिनि प्राप्ति थायछे ॥ ४४२॥

नियम सुठियाणं १॥ कल्याणं ४ जीविअं पि २ मरणं पि ३॥

जन्तुं १ गुणा ५॥ मया वि ५ पुण सुगगदं १० जन्ति १॥ ४४३॥

१॥ तप एटले वार भेदे तप, नियम एटले ग्रह

रेलुं जे वृत्त तेमने विशे अतिशयें करिने दृढ एहवा

साधुओनुं ॥ २॥ जीववुं पण ॥ ३॥ मरवुं पण ॥ ४॥ क

कारि छे ॥ ५॥ जीवता सता ॥ ६॥ ज्ञान दर्शन चारीत्र

गुणो प्रते ॥ ७॥ उपार्जन करेछे ॥ ८॥ वलि ॥ ९॥ मरण

सा सता पण ॥ १०॥ सदति प्रते एटले स्वर्ग मोक्षा

पण लोक रुढा होय एटले कोइक पुन्यवंत  
 हलोक परलोक बे ... एवा जोय हो  
 पण पाप कर्मनो करनार एहवो जे  
 बे पण॥१२॥लोक एटले इहलोक  
 या एटले नाश पांम्या एटले बगडया॥४०॥

छब्जीवकायविरड॥कायकिलेसेहि सुदुगुरुहि॥

नहु तस्स इमो लोगो॥हवइ स्सेगो परेलोगो॥

अर्थ॥१॥छ जीवनि कायनि एले

वोनि विराधनाने विशे विशेषे करिने रक्त

एहवोज पुरुपा॥२॥ते पुरुपनो॥३॥अतिशय

करा॥४॥काय कलेशे करिने एटले चंचासि

णादिक कष्ट करवे करिने॥५॥आ प्रत्यक्ष

हवो॥६॥लोक॥७॥नहिंज॥८॥रुढो होय

कष्ट क्रियाना करनार तापसादिकनो आ नव

होय॥९॥ते तापसादिकने एका॥१०॥परलोक

एटले राज्यादिक सुखनि प्राप्तियें करिने रुढो

पुद्गलिक सुखनि अपेक्षाए करिने

जाणवुं परमार्थे करिने तो ते पण दुखरूपज

नरयनिरुद्धमदं॥१॥दंडियमादण जीवियं सेयं॥

वि० देहे ॥ विसृज्यमाणस्त्वं वरं १० मरणं ॥ ४४२ ॥  
 १॥ नरकने विशेष धापन करिछे मति ते जेमणे  
 २॥ मंत्रि प्रमुख एटले राज्यनी चिताना करनारा  
 ३॥ जे पुरुष तेमनुं ॥ ३॥ जीववुं ॥ ४॥ श्रेयछे एटले रु  
 ५॥ जे पाप कर्म आचरवें करिने परजवने विशेष  
 ६॥ दुखनि प्राप्तिछे ए हेतु माटे ॥ ५॥ बहु उत्प  
 ७॥ रोग ते जेहने विशेष एहवो ॥ ६॥ देह सते एटले  
 ८॥ सहन करवाने असमर्थ एहवुं शरिर सते ॥ ७॥  
 ९॥ विशुद्ध मानछे ध्यान ते जेहने एहवो जे पुरुष  
 १०॥ मरण ॥ १०॥ श्रेष्ठछे जे कारण माटे ते पुरुष  
 ११॥ परजवने विशेष सद्गतिनि प्राप्ति थायछे ॥ ४४२ ॥  
 १२॥ सुखियापं ॥ कलापं १ जीविअं पि २ मरणं पि ३ ॥  
 १३॥ जंति ॥ गुणा ५॥ मया वि ५ पुण ५ सुगदं १० जंति १५ ॥ ४४३ ॥  
 १४॥ तप एटले वार भेदे तप, नियम एटले ग्रह  
 १५॥ जे वृत्त तेमने विशेष अतिशयें करिने दृढ एहवा  
 १६॥ साधुओंनुं ॥ २॥ जीववुं पण ॥ ३॥ मरवुं पण ॥ ४॥ क  
 १७॥ मरि छे ॥ ५॥ जीवता सता ॥ ६॥ ज्ञान दर्शन चारीत्र  
 १८॥ गुणो प्रती ॥ आउपार्जन करेछे ॥ ९॥ मरण  
 १९॥ सता पण ॥ १०॥ सद्गति प्रते एटले स्वर्ग मोना



पण लोक रुडा होय एटले कोइक पुन्यवंत  
हलोक परलोक बे वखां. ॥ ६ ॥

पण पाप कर्मनो करनार एहवो जे ॥ ७ ॥  
बे पण ॥ १२ ॥ लोक एटले इहलोक परलो

या एटले नाश पांम्या एटले बगड्या ॥ ४ ॥

छब्बीवकायविरड ॥ कायकिलेसेहि सुदुगुरुएहि ॥

बहु तस्स इमो ॥ लोको ॥ हवइ ॥ स्सेगो ॥ परेलोको ॥

अर्थ ॥ १ ॥ छ जीवनि कायनि एटले

वोनि विराधनाने विशे विशेषे करिने रक्त

एहवोज पुरुषा ॥ २ ॥ ते पुरुषनो ॥ ३ ॥

करा ॥ ४ ॥ काय कलेशे करिने एटले पंचाभि

णादिक कष्ट करवे करिने ॥ ५ ॥ आ प्रत्यक्ष

हवो ॥ ६ ॥ लोक ॥ ७ ॥ नहिंज ॥ ८ ॥ रुडो होय

कष्ट क्रियाना करनार तापसादिकनो आ नब

होय ॥ ९ ॥ ते तापसादिकने एका ॥ १० ॥ परलोक

एटले राज्यादिक सुखनि प्राप्तियें करिने रुडो

पुद्गलिक सुखनि अपेक्षाए करिने ॥ ११ ॥

जाणवुं परमार्थे करिने तो ते पण दुखरूपज

नरयनिरुद्धमर्दण ॥ दिंडियमाइण ॥ जीवियं ॥ सेयं ॥

॥१॥ विदेहे ॥ वितुझमाणस्तु ॥ वरं १ ॥ मरणं १ ॥ ४४२ ॥

॥१॥ नरकने विशे थापन करिछे मति ते जेमणे  
॥२॥ मंत्रि प्रमुख एटले राज्यनी चिताना करनारा  
॥ जे पुरुष तेमनुं ॥ ३ ॥ जीववुं ॥ ४ ॥ श्रेयछे एटले रु  
॥ केमजे पाप कर्म आचरवें करिने परजवने विशे  
॥ कदिक दुखनि प्राप्तीछे ए हेतु माटे ॥ ५ ॥ बहु उत्प  
॥ योछे रोग ते जेहने विशे एहवो ॥ ६ ॥ देह सते एटले  
॥ सहन करवाने असमर्थ एहवुं शरिर सते ॥ ७ ॥  
॥ ८ ॥ विशुद्ध मानछे ध्यान ते जेहने एहवो जे पुरुष  
॥ ९ ॥ मरण ॥ १० ॥ श्रेष्ठछे जे कारण माटे ते पुरुष  
॥ परजवने विशे सदगतिनि प्राप्ति धायछे ॥ ४४२ ॥

॥ १ ॥ कलाणं ॥ जीविअं पि ॥ मरणं पि ॥

॥ १ ॥ गुणा ॥ मया वि ॥ पुण सुगदं ॥ १ ॥ जंति ॥ १ ॥ ४४३ ॥

॥१॥ तप एटले वार भेदे तप, नियम एटले ग्रह  
॥ रेळुं जे वृत्त तेमने विशे अतिशयें करिने दृढ एहवा  
॥ साधुओनुं ॥ २ ॥ जीववुं पण ॥ ३ ॥ मरवुं पण ॥ ४ ॥ क  
॥ कारि छे ॥ ५ ॥ जीवता सता ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन चारीत्र  
॥ गुणो प्रते ॥ ७ ॥ उपार्जन करेछे ॥ ८ ॥ वलि ॥ ९ ॥ मरण  
॥ सता पण ॥ १० ॥ सद्गति प्रते एटले स्वर्ग मोक्षा

पण लोक रुढा होय एटले कोइक पुन्यवंत  
 हलोक परलोक बे वखांणवाजोग्य होया॥१॥  
 पण पाप कर्मनो करनार एहवो जे पुरुष तेह  
 बे पण॥१२॥लोक एटले इहलोक परलोक॥१॥  
 या एटले नाश पांम्या एटले बगड्या॥४॥

छद्मजीवकायविरुद्ध॥१॥कायकिलेसेहि॥सुदुगुरुएहि॥॥

नहु॥तस्स॥इमो॥लोगो॥हवइ॥स्सेगो॥परेलोगो॥॥॥

अर्थ॥१॥छ जीवनि कायनि एटले ८

योनि विराधनानेविशे विशेषे करिने रक्त

एहयोज पुरुषा॥२॥ते पुरुषनो॥३॥अतिशय

करा॥४॥काय कलेशे करिने एटले पंचाग्नि

णादिक कष्ट करवे करिने॥५॥आ प्रत्यक्ष

हयो॥६॥लोक॥७॥नहिंज॥८॥रुढो होय ९

कष्ट क्रियाना करनार तापसादिकनो आ जय

होय॥१॥ते तापसादिकने एका॥१॥परलोक ८

एटले राज्यादिक सुखनि प्राप्तिये करिने रुढो

पुद्गलिक सुखनि अपेक्षाए करिने ८५५॥१॥

जाणवुं परमार्थे करिने तो ते पण दुखरूपन

नरपानिन्दमर्दन॥१॥द्विष्टयमादृण॥क्षीनियं॥सेयं॥॥

॥१॥ विदेहे ॥ विसुद्धमाणस्तत्वरं ॥ मरणं ॥ ४४२ ॥

॥१॥ तरकने विशे थापन करिछे मति ते जेमणे

॥२॥ मंत्रि प्रमुख एटले राज्यनी चिताना करनारा

॥ जे पुरुष तेमनुं ॥ ३ ॥ जीवुं ॥ ४ ॥ श्रेयछे एटले रु

॥ जे पाप कर्म आचरवें करिने परजवने विशे

॥ दिक दुखनि प्राप्तिछे ए हेतु माटे ॥ ५ ॥ बहु उत्प

॥ रोचें रोग ते जेहने विशे एहवो ॥ ६ ॥ देह सते एटले

॥ सहन करवाने असमर्थ एहवुं शरिर सते ॥ ७ ॥

॥ विशुद्ध मानछे ध्यान ते जेहने एहवो जे पुरुष

॥ मरण ॥ १० ॥ श्रेष्ठछे जे कारण माटे ते पुरुष

॥ जवने विशे सदगतिनि प्राप्ति थायछे ॥ ४४२ ॥

॥ कल्याणं ॥ जीविअं पि ॥ मरणं पि ॥

॥ ब्रह्मं ॥ गुणं ॥ मया वि ॥ पुण सुगदं ॥ जंति ॥ ४४३ ॥

॥ तप एटले वार भेदे तप, नियम एटले ग्रह

॥ जे वृत्त तेमने विशे अतिशयें करिने दृढ एहवा

॥ मायुओनुं ॥ २ ॥ जीवुं पण ॥ ३ ॥ मरुं पण ॥ ४ ॥ क

॥ रारि छे ॥ ५ ॥ जीवता सता ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन चारीत्र

॥ प्रती ॥ आउपार्जन करेछे ॥ ७ ॥ वलि ॥ ८ ॥ मरण

॥ सता पण ॥ १० ॥ सद्गति प्रते एटले स्वर्ग नोना

दि रुप गति प्रते॥११॥पांमे छे ते कारण माटे  
नियोनुं जीववुं मरवुं बे श्रेष्ठ जाणवुं ॥४४३॥

अहियं मरणं अहियं च ॥ १ ॥ तमसं विपश्यन्ति मया ॥ २ ॥ निरं ॥ ३ ॥ वर्द्धति ॥ ४ ॥ जीवता ॥ ५ ॥ ॥४॥

अर्थ॥१॥पाप कर्मना करनारा एहवा

पोनुं॥२॥मरण॥३॥अहितकरि छे एटले रुडु

लि॥४॥जीववुं एटले प्राणनुं धारण करवुं ते

अहितकारी एटले रुडु

॥५॥मुवा सता॥६॥नरकने विशे॥७॥पडे छे॥८॥

ता सता॥९॥वेरभाव प्रते॥१०॥वधारे छे

जीव मारवे करिने ते जीवोनी साथे वेरभाव

अवि इच्छन्ति अ मरणं ॥ १ ॥ नय परपीडं करन्ति ॥ २ ॥

मृविद भ्रमुग इपहा ॥ ३ ॥ मो अरिय मुउ ॥ ४ ॥ तहा ॥ ५ ॥ मुल सो ॥ ६ ॥

अर्थ॥१॥बलि॥२॥भलि प्रकारे जाण्या छे

मारग ते जे मणे एहवा॥३॥जे पुरुषा

प्रते॥४॥वछेछे॥५॥पणा॥६॥परजीवन पोडा

मने करिने पणा॥७॥नहिजा॥८॥करे एटले

वचन कायायें तो क्षीरते उपजाये॥९॥नेमा

रिक एटले कालक क्षीकरिक कसाइ तेहनी

॥१०॥

॥११॥

॥१३॥ सुलस परजीवनी पीडा प्रते न करतो हवो तेम  
जेम सुलस जे तेणे परजीवनी पीडा न करितेम  
॥ उत्तम पुरुषो पण जीवने पीडा नथी उपजावता.

कुदंडगादामगाणि ॥ उच्छूलघंटियाड १ य ॥

अपरितंतो ॥ चउत्पयानथि १ अ १ पसूवि ॥ ४४६ ॥

॥१४॥ पशु बांधवाने अर्थे मूलकिलक एटले मोह  
सुंटा, कुदंडग एटले नाना वाछडा बांधवाने अर्थे  
॥ सिला, दामग एटले पशुने बांधवानां दामण ते

॥ वलि ॥ १५ ॥ पशुने गले बांधवानां दोरडां तथा गं

॥ इत्यादिक पशुने जोग्य एहवां उपकरण प्रते

॥ स्तेद रहित सतो ॥ १६ ॥ एकटां करेछे एटले मेलवेछे

॥ पण घरने विषे गाय भेसादिक नथि ॥ १७ ॥ वलि

॥ न करि घेटा पण नथि जेम पशु विना पशुना उप

॥ नुं मिलववुं ते फोगट छे ॥ ४४६ ॥

॥ नय १ पाय १ दंडगडवगरणे १ नयणकड १ मुझूत्तो १ ॥ जस्सडाए १

॥ स्सडा १ ॥ तं १ धन्य १ १ मूढो १ १ नवि १ १ करेइ १ ॥ ४४७ ॥

॥१५॥ तेम अविवेकी पुरुषा ॥ १२ ॥ जतना करवाने अर्थे

॥ एटले कपडादिक ॥ १४ ॥ पात्रां ॥ १५ ॥ डांडो इत्यादि

॥ एटले विशेष एटले उपकरण मेलववाने विशेष ॥ १६ ॥

उद्यमवंत सतो उपकरण प्रते मेलवे छे॥८॥

एटले जे जतना पालवाने अर्थे॥८॥केश

एटले कष्ट पांमे छे॥९॥ते जतना

॥११॥नहिजा॥१२॥करे एटले जतना प्रते

॥१३॥निश्चे॥४४॥

अरिहंता भगवंतो॥१॥अहियं॥२॥अहियं॥३॥

वारंति॥४॥कारवंति॥५॥॥६॥धित्तुणं॥७॥अणं॥८॥बला॥९॥

अर्थ॥१॥ज्ञानवंत एहवा॥२॥अरिहंत एटले

रहित एहवा तिर्यंकर महाराज जे तो॥३॥आ

विशे अहित आचरनारा पुरुषोत्तुं॥४॥योडुंय

अहित प्रते एटले अहितकारी आचरण

ना॥५॥निवारण करो॥६॥अथवा॥७॥

रुपौनी पास हित प्रते एटले हितकारी आ

॥१०॥नहि करावे स्युं करिने न करावे ते

बलानकारे करिने॥१२॥लोक प्रते॥१३॥

हाथने विशे॥१४॥गृहण करिने एटले

जेम राजा लोकने पकडिने जोरावरिणी

निवारण करावे अने मलाकारज प्रते करावे तेम

देव बलात्कारे करिने अकारज प्रते

भारज प्रतेकरावेनहि॥१५॥निश्चे॥१६॥पादपूर्ण.

१॥पुण॥दिति॥१॥जेण॥चरिएण॥कित्ति॥निलयाइं॥देवा

१॥ने॥पहु॥या॥कि॥१॥मंग॥१॥पुण॥१॥मणुअमित्तणं॥१॥४४२॥

॥१॥बलि त्यारे ते तिर्थंकर महाराजस्युं करेछे

गायामां कहेछे॥२॥उपदेश प्रते एटले तेहवाते

उपदेश प्रते॥३॥दे छे॥४॥जे उपदेश॥५॥आचरवे

एटले जे उपदेश आचरें सते॥६॥कीर्त्तिना स्या

टले कीर्त्ति करवा लायक एहवा॥७॥देवताओ

॥आत्वांमि॥१॥होय एटले ठाकोर धायछे॥१०॥

॥१॥हे शिष्य॥१२॥मनुष्य मात्रनो एटले मनु

॥त्वांमि धाय तेहमां॥१३॥स्युं आश्चर्य॥४४९॥

॥१॥इकरोडधरो॥१॥चिचइउं॥१॥चवलकुंडलाहरणो॥१॥

॥१॥हिउएना॥१॥एरावणवाहनो॥जाड॥४५०॥

॥१॥हितोपदेशधकि एटले हितकारि एहवा जि

ना उपदेशयकि॥२॥अष्ट एहवोछे आगल्यो जा

नेहनो एहवो जे मुगट तेहनो धारण करनारो

॥३॥वानुबंधादिक आचरणे करिने शोभायनांन

॥४॥कानने विशे देदिप्यमांन कुंडलरूप आज

नेहने एहवो॥५॥ऐरावण नामे हायिछे वाहन

॥६॥

॥७॥



ना॥८॥थाया॥९॥तेमा॥१०॥ते नणेलु॥११॥

नणेलुं केवुं थायछे ते केहेछे॥१२॥सर्वपण॥१३॥

भणवा जेवुं थायछे एटले जेम नटनुं नणेलुं नि

छे तेम मिथ्या द्राष्टिनुं सूत्रनुं भणवुं ते पण

॥१४॥एकारण माटे लघु कर्मि जिवनुं नणवुं

पद१ नडो वैरगंग१॥निविडिज्जन्नाउ१ बहुजणो जेण१

उण१ तं१ तह१ सढो८॥जालेण११ जलं१२ समोअर११॥

अर्थ॥१॥जेम नट एटले न जिया

वैराग्यनीवार्ताओ प्रत्ये॥३॥भणेछे एटले लो

गल केहेछे॥४॥जे वैराग्यनां वचन बोलवे का

घणा लोका॥६॥निर्वेद प्रते एटले वैराग्य प्रते

एटले संसार प्रते खोटो जांणेछे॥७॥ते नट मू

वो सतो॥८॥नणिने पण पछि पोते॥९॥ते

ले पोताना बोल्या प्रमाणे॥१०॥ते आचरणा

करतो एटलेज पोताने विशे जुठो फटा टोप

ने लोकोनि पासेयी धन लेवानी लालचे

ला लोकोने धर्म देखाडिने रिझवेछे तेम

ए रहीत एहचो केवल वेश धारि पोताने

पणानो मद धारण करतो सतो पोताना पू

अर्थे मुग्ध लोकोनि आगल वैराग्यनि वार्ताओ क  
 ते लोकोने रिझवेछे ते केवि रिते करेछे ते कहेछे  
 ॥जेम मछिगर जाल ग्रहण करिने एटले हाथमां  
 लेइने मछ ग्रहण करवाने अर्थे एटले माछला  
 वाने अर्थे ॥१२॥ जल प्रते एटले पांणि मध्ये  
 ॥३॥ उतरेछे एटले प्रवेश करेछे तेम फकत वेश  
 एटले रजो हरण मुख वस्त्रिका रूप वेशनो धा  
 र सिधांतनो अजाण एहवो सतो विपरित आ  
 करवे करिने एटले सिद्धांतथी उलटु आचण क  
 रिने एटले सुत्रनुं जे नणवु ते प्रते व्यर्थ करेछे  
 निष्फल करेछे केमके पोते सम्यक् प्रकारे चा  
 पालतो नथी अने शुद्ध परुपणा करिने लोकोने  
 अर्थ मार्ग प्रतेदेखाडतो नथी एकारण माटे ॥४७४॥

कहकह<sup>१</sup>करोमि<sup>२</sup>कह<sup>३</sup>वा<sup>४</sup>न<sup>५</sup>करोमि<sup>६</sup>॥कह<sup>७</sup>कह<sup>८</sup>कयं<sup>९</sup>  
 बहुकयं<sup>१०</sup>मो<sup>११</sup>॥जो<sup>१२</sup>हियइवहुसंपसारं<sup>१३</sup>॥करेइ  
 सो<sup>१४</sup>अइ<sup>१५</sup>करेइ<sup>१६</sup>हियं<sup>१७</sup> ॥४७५॥

॥ आत्म हितवंचक पुरुषोनुं लक्षण ॥  
 ॥१॥हूं केवी केवी रीते॥२॥ धर्म अनुष्ठान प्रते  
 ॥३॥ बली॥४॥केवी रीते॥५॥ना॥६॥करु अने ॥७॥

केवी॥८॥केवी रीते॥९॥धर्म अनुष्ठानादिक  
 माहरे॥११॥बहू करेलु थाय एटले घणु  
 य ए प्रकारे॥१२॥जे पुरुष॥१३॥रुदयने विशे  
 प्रसार प्रते एटले आलोचन प्रते एटले वि  
 ॥१४॥करेछे एटले विचारेछे॥१५॥ते पुरुष॥१  
 शये करिने॥१७॥पोताना हित प्रते॥१८॥जे  
 जे पुरुष नीरंतरहेयज्ञेयउपादेयनो एटले  
 करवा जोग्यछे आ नथी करवा जोग्य आ  
 ग्यछे ए रीते नीरंतर विचार करेछे ते पुरुष  
 त करी शकेछे एटले पोताना आत्माने  
 उधरीने पांचमी गति पांमवाने जे :करेछे

सिंहिलो॥अणायरकठ॥अवस्स॥वसन्त॥

मययं॥ममत्तसीलस्स॥मंजमो॥केरिसो॥हुता॥॥॥

अर्थ॥१॥सीयल एटले संजम अनुष्ठान

जे आलसु एटले पंचमाहावृत पांच समिति

पालवाने विशे आलसु एहवो॥२॥अनादरवा

संजम पालवाने आदर रहीत एहवो एटले

ना कांडक अनुष्ठानादिक प्रते करतो एहो॥३॥

परवशपणे करीने करतो एटले गुरुनी प्रे

॥४॥

पोताना उत्साह विना धर्म अनुष्ठानादी उपर उ  
 करतो एहवो॥४॥कांडक पोताना वशे करीने कर  
 एटले जो हूं नही करु तो लोक मने मानसे पूज  
 नही एवु धारीने प्रतीकसण प्रतिलेषणादिक लो  
 क्षववाने पोतानी मेले करतो एहवो॥५॥ते प्रका  
 ण्डक अनुष्ठान संपुरण करतो अने कांडक विराध  
 एटले धर्म अनुष्ठानादिकने वीशे गडवड सडवड  
 तो एहवो जे पुरुष॥६॥अने निरंतर॥७॥प्रमादी  
 से प्रमाद आचरवानो स्वभाव ते छे जेनो एटले  
 पादीकनुं चीतवन करतो एवो जे पुरुष होय ते  
 संजम एटले पांच आश्रवथी वीराम पामवुं॥  
 ते केवुं॥१०॥होय एटले सीरिते होय अपितुं स  
 प्रकारे ते पूर्वे कहेला लक्षणोए करीने सहीत ए  
 पुरुषने सर्वथा प्रकारे चारित्रनज होय केमके प्रमा  
 विशेषे वर्ततो सतो पोताने विशेषे साधुपणु देखाड  
 सतो घणा लोकने प्रवाह मारगने विशेषे प्रवर्त्तावेछे  
 कारणने माटे॥४७६॥

॥काल्यस्त्रवे॥परिहाइ ३पए ५पएपमायपरो ३तह॥उग्वर०  
 ॥रावे ॥निरंगणो॥०॥अ ६नय १२इच्छियं १२लहइ १३॥४७७॥

अर्थ॥१॥क्रुण्णपक्ष संबंधी एटले अंधारा ...  
 बंधी॥२॥चंद्रमा जेमा॥३॥हानी पामेछे एटले ...  
 रा पखवाडा संबंधी चंद्रमा नीरंतर हानी ५ ...  
 छे॥४॥तेमा॥५॥प्रमादने वीशे तत्पर एवो ...  
 गले पगले हानी पामेछे एटले थोडे थोडे सं ...  
 त थायछे अने॥७॥ग्रहस्थपणानु घर मुकी ...  
 दीक रहित सतो एवो॥९॥वली॥१०॥स्त्री प्रते ...  
 एटलेस्त्रीआदीक कुटुंब रहित सतो॥११ ...  
 १२॥नहिज॥१३॥पामे एटले घरकुटुंबादीक ...  
 ... त सुख भते न ... पां ...  
 ... रहि ... पुन्यर कुटुंब ... त्यागक ...  
 भीठ १॥विग्न २॥निलुको ३॥पागडपच्छन्नदोससयकारि ...  
 अपश्यं ४॥जणंतो ५॥जणस्स ६॥धी ७॥जीवीअं ८॥जअइ ...  
 अर्थ॥१॥वहीनेलो एटले हवे केम थशे ...  
 रनारो एवो अने वली॥२॥मननी समाधि ...  
 ॥३॥पोताना पापने ढांकनारो एवो अने ...  
 ट अने छानां दोपनु सैकडो तेनो करनारो ...  
 डां अथवा छाना सैकडो दोपनो सेवनारो ...  
 वली॥५॥लोकोने॥६॥अविस्वास भते ...

सतो जे पुरुषा॥८॥जीवेछे तेना॥९॥जीवीत प्रते॥  
॥धिकार पडो एटले पूर्वोक्त लक्षण सहीत पुरुष  
जीवुं निष्फल जाणवुं एज॥४७८॥

॥दीवसा पखवा॥मासा वरिचावी संगणिज्जांति॥  
॥उत्तरगुणा॥अस्त्रिलियाते॥गणिज्जांति॥४७९॥

॥१॥नही॥२॥ते॥३॥दीवस आनकार सर्वत्र जोड  
॥नही ते पखवाडीआं॥५॥नही ते महीना॥६॥

॥ते वर्ष पण॥७॥सम्यग् प्रकारे गणीए एटले ध  
॥हीत एहवा ते दीवस पखवाडा महीना अने वर

॥प्रमाण पणे करीने न गणीए एटले सुद्ध धरम रही  
॥दीवसादिक निष्फल जाणवा॥८॥जे॥९॥मुल उत्तर

॥गणे करीने॥१०॥अस्त्रिलीत एटले नीरआतिचार ए  
॥जे दिवसादिक ते दिवसादिक॥११॥गणीए एट

॥प्रमाणपणे करीने मानीए एटले सुद्ध धरमे  
॥ने आराधन कर्या एहवा दीवस पक्ष मासा

॥जे तेज लेखे गणवा जोग्यछे ते कारण माटे  
॥मय जीवो आजस्य प्रमाद छांडीने धर्मना अव

॥ने करीने दीवस गमाववा पण वीकथावे करीने  
॥स गमाववा नही एभाव॥४७९॥

जो नवि दिणे दिणे संकले अ॥ के अन्नं  
 मिथुणा अगणेषु ११ अ॥ नरु ११ खलिद ११ कह  
 ११ सो ११ अ॥ करिद्र ११ अप्यहियं ११ ४८०॥

अर्थ॥ १॥ जे पुरुषा २॥ नीरंतरा ३॥ नहि  
 ना प्रते करे एटले विचार नथीज करतो ॥  
 आज ॥ ७॥ कीआ ॥ ८॥ गुण एटले ज्ञानादीक  
 उपार्जन कर्या एटले आज ॥ ९॥ कीआ ज्ञान  
 नीरूपन थयो ए प्रकारे नीरंतर जे सम्यग्  
 थी विचारतो अने ॥ १०॥ वली ॥ ११॥ प्रमाद  
 अवगुणोने विशेष ॥ १२॥ नहीज ॥ १३॥ अना  
 द अतिचाररूप माहा चेष्टीतने विशेष तत्पर  
 प जे होया ॥ १४॥ ते पुरुषा ॥ १५॥ सीरिति ॥ १६॥  
 हीत प्रते ॥ १७॥ करे एटले अपितु नहीज  
 जे पुरुषने कांड सम्यग् विचारणा नथीते  
 लहीत थइ शके नही ॥ १८॥ नीश्वे ए कारण  
 त्मार्थि पुरुषो ए उत्तम पुरुषोनी नीश्राए  
 र सारा सारा विचार करवा ए भावा ॥ ४८०

इयं गणिअं इयं तुलिअं ॥ इअं बहुहा ॥ ४८०  
 नियमयं च नद ११ तहवि १० न ११ पडिमुअ ११

किं० कीरद० १० नुणं १० भवोयव० ॥४८२॥

॥१॥ आ प्रकारे करिने एटले पूर्वोक्त प्रकारे करी  
 रोखन तीर्थकरनी पठम धर्मने विशे उद्यम क  
 ए रीते ॥२॥ प्रमाण करचुं छे एटले रोखभ  
 स्वामीनी पठम धर्मने विशे उद्यम करवो एज  
 छे ॥३॥ आ प्रकारे करिने एटले पूर्वोक्त  
 करिने ॥४॥ तुलना करिछे अवंती सुकुमालादीक  
 प्राणनो अंत धये सते पण धर्मनो त्याग न  
 ए प्रकारनी तुलना करवी एवी रिते पूर्वे जणा  
 ॥५॥ ए प्रकारे एटले पूर्वोक्त प्रकारे करिने आ  
 शगोरी प्रमुख पुरुषोनां द्रष्टांत कहेवे करिने ॥६॥  
 प्रकारे ॥७॥ देखाडयुंछे ॥८॥ वली बहु प्रकारे करिने  
 नियंत्रित कर्युंछे एटले समिती कपायादिकना स्व  
 देखाडवे करिने पूर्वे जणाव्युंछे ॥९॥ तोय पण ॥  
 जो आजीव ॥१२॥ नयी ॥१३॥ प्रतीबोध पामतो त्या  
 ॥१४॥ स्यु ॥१५॥ करीण ॥१६॥ नीअे ते जीवनी ॥१७॥  
 निव्यता एटले जे जीव जे घणा काल संनारनां  
 बनण करवुं होय तेने सुद्ध धरमनो उपदेश ला  
 मही अने उजटो सुद्ध धरमना अनिलापि पुनयो



ने देखीने हासी करेछे अने बली एवं बो  
 कालने विशे सुद्ध धरमनी खोल करवा जइ  
 वं मार्ग उठी जाय एवं बोलिने घणा जोला  
 शल्य घालीने सुद्ध मारग उपर अरुची  
 रण माटे एम जाणवुं के ए पुरुषने दरशन  
 रमनो तीव्र उदय वरतेछे अने संसारमां ध  
 रुलवुंछे तें कारण माटे तेने सुध वारता  
 तेमां कोइनु जोर नथी ए जाव॥४८१॥

कि०मंग०तु०पुणो०जेण०॥संजमसेढी०सीढिली०कया  
 सं०चिअं०पडिबबुइ०दुख्खं०पच्छा०

अर्थ॥१॥पादपूर्णे॥२॥बली॥३॥हे शिष्या॥४  
 ॥५॥संजमनी श्रेणी एटले ज्ञानादिक गुणनी  
 सीथील॥७॥करी॥८॥होय एटले संजम  
 शे ढीलास करी होय ते पुरुषे करीने॥९  
 ते पुरुष स्याकामनो अपीतु कांइ कामनो  
 ॥१०॥ते पुरुषा॥११॥नीश्वे करीने॥१२॥ते  
 प्रते॥१३॥अंगीकार करे एटले सीथीलपणा  
 म करेछे॥१४॥पछी॥१५॥दूखे करीने॥१६  
 एटले सीथीलपणुं अंगीकार कया पछी

करवो ते घणोज कठणछे ए कारण माटे हीत  
पुरुषोए प्रथमधीज सम्यग् प्रकारें संजम पा  
वीशे आलसु न धवुं ए उपदेश॥४८२॥

सर्व उवलदं॥ जइ अप्पाभाविउ उवसमेण॥ कायं

वचनं॥ उपहेणं॥ जहं न देही॥४८३॥

आत्मायें पुरुष प्रते गुरुनो उपदेश कहेछे

॥१॥ हे भव्य जीव जो तें पूर्वे कहेलुं॥२॥ सर्व

पाम्युंछे एटले तने पाप ध्युछे अने वली॥४॥ जो

उपसमे करीने॥६॥ आत्मा जाव्योछे एटले जो

पसमजावे करीने आत्मा वासीत कयों छे एटले

करिने सहित कयों छे त्यारे तुं हे भव्य

॥७॥ काया प्रते॥८॥ वली॥९॥ वचन प्रते

॥१०॥ मन प्रते एटले मन वचन कायाना व्यापा

॥११॥ उन्मारगे करिने एटले सीद्दांतथी उलटा

विशे॥१२॥ जेमा॥१३॥ न जाय तेमा॥१४॥ प्रवर्त्ता

मन वचन कायाना जोग सुध मारगने वि

केमके सुध मारग पामवानुं एज सारछे॥४८३॥

कायं निहिउवे॥ कायं चालिइ तं पि कज्जेण॥

एअंगे॥ अंगोवंगाइ गोविंदा॥१५॥४८४॥

नथी तेवा पुरुषने एटले पूर्वे कहां लक्षण सह  
 रुपने॥७॥अनंतो॥८॥संसार होय एटले अनंत  
 रीपणु जाणवुं॥९॥नीश्वे ए कारण माटे जीनराजनी  
 ज्ञानुं पालवुं एज चरित्र धर्म अने जीनराजनी  
 नु सदहवुं ए समकीत धर्म जाणवो॥५०६॥

नकरेमिति<sup>१</sup>भणित्ता<sup>२</sup>॥तंचेव<sup>३</sup>निसेवए<sup>४</sup>पुणो<sup>५</sup>पाव<sup>६</sup>॥

पञ्चखस्वमुसावाइ<sup>७</sup>मायानियडिपसंगो<sup>८</sup>य<sup>९</sup>॥५०७॥

हेस्वामिन् तेने अनंत संसारीपणुं केम कहयुं?

आशंकानो गुरु उत्तर कहेछे:-

अर्थ॥१॥जे पुरुष सावद्य जोग प्रते नही  
 करावुं,अने करता प्रते रुडो नही जाणुं ए  
 व कोटी सहीत पापना व्यापारना त्याग प्रते  
 णिने एटले कहीने पण॥३॥फरीने॥४॥तेज प्रते  
 जे पाप व्यापारनुं पचखाण कयुंछे तेज॥५॥पाप  
 पार प्रतं॥६॥अतीशे करीने शेवेछे तें पुरुष  
 मृखावादी जाणवो केमके जेवुं बोलेछे तेवुं  
 ए कारण माटे॥८॥बली॥९॥

ते जेने एटले माया शब्दे

णुं अने निकृति शब्दे

बे प्रकारना असत्यपणानो छे प्रसंग तेजे-  
 जाणवो एटले बे प्रकारे जुठो जाणवो ए कार  
 माटे हे शिष्य जे जुठुं बोलवुं ते अनंत संसारमां  
 करवानुं कारण जाणवुं. हे स्वामिनाथ आ  
 उपर फरमावुं के जे पाप त्यागीने फरी शेवेछे ते  
 दीछे ते सांजलतां महारा मनमां संशय उत्प  
 षायछे केमके सिद्धांतोने विशे एवं सांजलवामां आ  
 जे साधु तथा श्रावके जे वृत अंगीकार करेलां  
 तेमां जे दूषण लागे ते गुरु महाराज आगल आ  
 नि तेनुं प्रायश्चित अंगीकार करीने शुद्ध थायछे अ  
 री फरीने कोइ वखत तेज पाप शेववामां आवेछे  
 तेज प्रमाणे प्रायश्चितादीक अंगीकार करेछे अने  
 श्चितादीक अंगीकार करीने साधु श्रावकना पद  
 रहेछे अने इहां तो मृखावादी कह्यो तेनुं शीरीते  
 त्यारे गुरु माहाराजे कह्युं के हे शीष्य तने तर्क  
 घणो सारो उत्पन्न थयो पण तेनो उत्तर थीर चि  
 राक्षीने सांभल के जे पूरुशे प्रथम जे वस्तुनो त्या  
 होय अने फरीथी ते पाप शेवन करवानी इछा  
 । अने चित्तमां घणी दाझ वरतेछे के आकाम मा

नथी तेवा पुरुषने एटले पूर्वे कह  
 रुपने॥७॥अनंतो॥८॥संसार होय  
 रीपणु जाणवुं॥९॥नीश्वे ए कारण  
 ज्ञानुं पालवुं एज चरित्र धर्म -  
 नु सदहवुं ए समकीत धर्म ज  
 नकरेमिति भणित्ता १ चेव निरे  
 पद्यख्वमुसावाइ भाषानिय २ ३  
 हेस्वामिन् तेने अनंत ४ ५

आशंकानो गुरु

अर्थ॥१॥जे पुरुष सावद्य ज  
 करावुं,अने करता प्रते रुडो  
 व कोटी सहित पापना  
 णिने एटले कहीने पणा॥३॥  
 जे पाप व्यापारनुं पचखाण  
 पार प्रते॥६॥अतीशे करीने  
 मृखावादी जाणवो केमके जेवुं  
 ए कारण माटे॥८॥वली  
 ते जेने एटले माया  
 पुं अने निरुति १ २

आववे प्रकारना असत्यपणानो छे प्रसंग तेजे-  
 णवो एटले वे प्रकारे जुठो जाणवो ए कार  
 हे शिष्य जे जुठुं बोलवुं ते अनंत संसारमां  
 ए करवानुं कारण जाणवुं. हे स्वामिनाथ आ  
 फरमावुं के जे पाप त्यागीने फरी शेवेछे ते  
 छे ते सांजलतां महारा मनमां संशय उत्प  
 छे केमके सिद्धांतोने विशे एवुं सांजलवामां आ  
 साधु तथा श्रावके जे वृत्त अंगीकार करेलां  
 तां जे दूषण लागे ते गुरुमहाराज आगल आ  
 तेनुं प्रायश्चित अंगीकार करीने शुद्ध थायछे अ  
 फरीने कोइ वखत तेज पाप शेववानां आवेछे  
 प्रमाणे प्रायश्चितादीक अंगीकार करेछे अने  
 तादीक अंगीकार करीने साधु श्रावकना पद  
 छे अने इहां तो मृखावादी कह्यो तेनुं शीरीति  
 रे गुरु महाराजे कह्युं के हे शिष्य तने तर्क  
 ते सारी उत्पन्न थयो पण तेनो उत्तर थीर चि  
 ति सांभल के जे पूरुहो प्रथम जे वस्तुनो त्या  
 होय अने फरीथी ते पाप शेवन करवानी इछा  
 ने चित्तनां घणी दाज वरतेछे के आकाम मा

हारे घणु खोटुं थयुं हवेथी फरी आबुं काम कदी  
करुं एवी रीते जेना प्रणाम थायछे ते प्रायश्चित्त  
गिकार करेछे एम करतां वली फरी कोइ वखत  
पापनुं शेवन थइ गयुं तो फरी प्रायश्चित्त अंग  
करवाने अवसरे तेना तेवाज प्रणाम रहेछे के आ  
फरीथी हवें कदी नही करुं एवी रीते आलोवण  
वसरे जेने वीरती प्रणाम थायछे तो तेने मृखा  
ना कहिए पण इहांतो प्रथमथी पचखाणतो कयुं  
ने ते पाप सेववामां आव्युं अने तेथी वीरती प्र  
तो थया नथी एटले फरीथी हू शेवन नही करुं  
अध्यवसाय थयो नथी अने जे आलोवण करेछे  
मृखावादी जाणवो. तो प्रथमथी पचखाण तो क  
नथी अने आश्रवथी वीराम पाम्योज नथी अने ते  
लोवण लेइ वेसेछे तेनुं तो शुं कहेवुं. ते तो माया  
खावादीज होय एटले मीथ्या द्रष्टी जाणवो  
म्यग् द्रष्टी जे पुरुशोछे ते नींदा गृहातो करेछे पण  
श्रवथी वीराम पाम्या वीना तेनां पचखाण करता  
थी अने जुठी बार छतनी आलोवण करता नथी  
श्रेणीक माहाराजा वली जेम आणंद कामदेव

भावकोए जेटलां वृत्त पोते अंगिकार कयाँछे तेटलां  
 नी नव्ये जे दोष लागेछे तेनी आलोचण करेछे पण  
 दोष नहावृत्तनी आलोचण करता नयी केनके एमां  
 जुठ आवेछे नाटे. एकारण नाटे हे शीष्य आ गाथा  
 तेना प्रणाम वीरान नयी पत्स्या तेने आश्रीने जाण  
 नी आ गायानो विशेष वीस्तार अर्थ गीतार्थ नाहारा  
 ननी समीपे धारण करवोः हनने तो आवस्यक नीरजु  
 लेने अनुसारे तथा ठाणांगजीने अनुसारे तथा दृढत  
 कस्य ज्ञाप्यने अनुसारे कींचित् जेवुं जासन थयुं तेवुं  
 कस्युं आगल अतीशे ज्ञानी कहेते खल॥५०७॥

केलौं दो'स्तुगो'॥अलिअं'सहस्र'न'भास'किंचि'अह'॥  
 केलौं दो'विअलिअं'॥भासइ'२'तो'॥कि'॥वि'॥दिख्ताए'॥  
 के पुन्य जुठ बोलेछे तेने दीक्षानुं नीप्फलपणुं देखाडेछे.  
 अयो॥१॥लोकने विशे पण॥२॥जे॥३॥शुके करीने स  
 न होय एटले पाप थकी बीहीतो होय के रखे मने  
 जुठ बोल्यानुं पाप लागे ए प्रकारे डरतो होय ते पुन्य  
 ॥२॥एकदम विचार्या विना॥५॥काइपण॥३॥जुठो॥७  
 ॥८॥बोले एटले पापथी बीहीतो एवो जे पुन्य ते वि  
 रानेन बोले॥९॥अय एटले अने बली॥१०॥जोदी



ક્ષીત એવો સતો પણ એટલે ગ્રહણ કર્યું છે ચારિત્ર તે  
 એ એવો સતો પણ ॥૧૧॥ અસત્ય પ્રતે ॥૧૨॥ બોલે છે  
 લે ચારિત્રીઓ થઈને પણ જુઠું બોલે છે ॥૧૩॥ ચારે  
 દીક્ષા કરીને ॥૧૪॥ શું ॥૧૬॥ અપીતું કાંઈ નહીં એટ  
 લે જાણા સમીતી નથી જાણતો તેની દીક્ષા ની  
 જાણવી એટલે કાયકેશરુપ જાણવી એ કારણ  
 ભવ્યજીવો જો ધર્મના અર્થે હોતો પ્રથમથી સદગુ  
 ની પાસે જાણા સમીતીનું જાણપણું કરવું જાણા સ  
 તી શ્રાવ્યા વિના ધર્મ અનુષ્ઠાન લેશે લાગે નહીં ॥૧૫॥

મહાવય અણુવયાહં ॥ છંડેડં ॥ તવં ॥ ચરદ્ ॥

અન્નં ॥ સો ॥ અન્નાણો ॥ મુદો ॥ નાવા ॥ બુડો ॥ મુણેયવો ॥ ॥૨॥

જે પુરુષ પોતાનાં લીધેલાં વ્રત તેને વિશે દૂષણ

લગાડીને બીજા તપાદિક કરે છે તેનું મૂર્ખપણું

દેખાડતા સતા કહે છે :-

અર્થ ॥૧॥ જે પુરુષ ॥૨॥ માહાવ્રત અણુવ્રત પ્રતે એટ

સાધુનાં માહવ્રત અને શ્રાવકનાં અણુવ્રત તે પ્રતે ॥૩॥

છાંડીને એટલે ત્યાગ કરીને ॥૪॥ તે ॥૫॥ અજાણ એવો

ને ॥૬॥ મૂર્ખ એટલે સીદ્ધાંતનો અજાણ અને ન્યાય

હીત એવો સતો ॥૭॥ બીજો ॥૮॥ તપ પ્રતે ॥૯॥ આચરે છે

ले प्राणातीपात वीरमणादिक पांच महावृत्ते करीने  
 हीत अने स्थूल प्राणातीपात वीरमणादिक पांच अ  
 वृत्ते करीने रहीत एवा तप कष्टादिक प्रते करेछे ए  
 ले अज्ञान, कष्टकारी जाणवो. अनेवली केवो जाणवो  
 कहेछे॥१०॥ नावेकरिने एटले हाथमां आवेलुं नावेक  
 ने पण ॥११॥ बुडयो एटले संसार समुद्रमां पडयो  
 हवो॥१२॥ जाणवो एटले जेम कोइ मूरख पुरुष हा  
 मां आवेलुं एवुंय पण नाव ते प्रते भागीने तेना लो  
 ढाना खीलाए करीने समुद्र प्रते तरवानी वांछा क  
 छे तैम आ पुरुष पण संसार समुद्र तारवाने नाव स  
 खां महावृत्त अणुवृत्तादीक, ते प्रते जागीने एटले  
 वृत्तोमांदुशण लगाडीने एटले आर्तध्यान रुद्रध्याना  
 कि करीने बाह्य तपे करीने संसार समुद्र तरवानी  
 छि करेछे ते मूरख जाणवो. कह्युं छे के:-

“तद्देवहितपः कार्यं-दुर्ध्यानं यत्र नोन्नवेत्-

येन योगान्हीयन्ते-क्षीयन्ते नेंद्रियाणि च”

अर्थ. तेज तप करवा जोग्य छे जे तप करे सते  
 रध्यान एटले माठुं ध्यान न थाय अने जे तप करवे  
 रीने संजमना व्यापार हानी न पामे अने वली जे

तप करवे करीने इंद्रीओ क्षय न पामे एटले इर्या  
मीत्यादीक पाळवाने विशे सीथळ न थाय तेज  
आत्माने हीतकारी जाणवो ए कारण माटे हे ज  
जीवों जेम जाव तप हानी न पामे तेम द्रव्य त  
शे उद्यम करवा जोग्य छे ए जावा॥५०९॥

सुबहुं<sup>१</sup>पासथ्यजनं<sup>२</sup>नाउणं<sup>३</sup>जो<sup>४</sup>न<sup>५</sup>होइ<sup>६</sup>मध्यधो<sup>७</sup>॥नय<sup>८</sup>  
साहेइ<sup>९</sup>सकब्जं<sup>१०</sup>॥कागं<sup>११</sup>च<sup>१२</sup>करेइ<sup>१३</sup>अष्पाणं<sup>१४</sup>॥५१॥

जे पुरुष पारकी नींद्या करे ते आत्मकारज  
साधी न शके ते देखाडे छे:-

अर्थ॥१॥जे पुरुष॥२॥अतीशे बहु प्रकारे॥३॥पार  
स्थ जन प्रते एटले ज्ञान दर्शन चारीत्र रहीत पुरुष  
सीथीलपणा प्रते॥४॥जाणीने॥५॥मध्यस्थ एटले  
द्वेश रहीत॥६॥न॥७॥होय ते पुरुष ॥पोताना क.  
प्रते॥८॥नहीज॥९॥साधे एटले मोक्ष रुप पोताना  
रज प्रते न करीशके॥१०॥वली॥११॥पोताना आव  
प्रते॥१२॥कागडातुल्य॥१३॥करेछे एटले पारको दूख  
देखीने जे राग द्वेशमां पडेछे ते पुरुष कागडा तुल्य  
जावो जेम कागडानो स्वभाव उत्तम चिज मुकीने  
फेंदवानोछे तेम उत्तम पुरुषोना गुणनी स्तवना

मेध्याद्रष्टीनो स्वप्नाव पारका दुशण देखवानोछे ते माटे  
गडा तुल्य कह्योः ए कारण माटे हे भव्य जीव  
पारका दुशणमां पडवुं नही ए तत्व बोधनुं लक्षणछे.

पतिचिच्छिदणं धनिदणं ॥ जय धनियमभरो धन तीरण ॥

बोहुं धराचिच्छिदणं ॥ न १ वेसनिच्छेण साहारो ॥ २१ ॥

जे पुरुषे वृत्त अंगीकार करीं होय अने तेथी न पली  
शक्तां होय अने लोकने रीझववाने अर्थे ते वृत्ती  
नाम धरावेछे अने वृत्तनो फटाटोप मूकतो नथी  
तेनुं नीप्फलपणुं जणावता सता कहेछे:-

अर्थ ॥ १ ॥ निपुणपणे एटले सुक्ष्म बुद्धीए करीने एटले  
मीणी बुद्धीए करीने ॥ २ ॥ समस्त प्रकारे चिंतवन करी  
ने एटले जेन आत्महीसा न थाय तेम विचारीने ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ शान्तिमनो समुह एटले मुल उतर गुणोना समुह  
प्राप्तो ॥ ५ ॥ ब्रह्मन करवाने एटले धारण करवाने ॥ ६ ॥ न

॥ ७ ॥ तमर्थ धइए एटले जावजीव सुधी ग्रहण करेलां  
पाली न शकीए त्यारो ॥ ८ ॥ लोकोना चिंतने रंजन

रनार एवो एटले मुग्ध लोकोना चिंतने प्रीती उपजा  
नार एवा ॥ ९ ॥ केवल शाधुना वेशे करीने एटले गुण

हीत वेशे करीने ॥ १० ॥ नही ॥ ११ ॥ आधार एटले परम

वने विशे जता एटले दुरगतीने विशे पडता एवा  
 पुरुषो तेमने आधाररूप न थाय एटले गुण रहीत  
 दुरगतीथी धारण करी शके नही एटले राखी शके  
 ही; ए कारण माटे आत्मार्थि पुरुषो ए सारी रीते वि  
 र करवो जोइ ए के आ वृत माहारार्थी पळेछे के  
 पळतुं ए विशे नीरंतर उपयोग राखवो जोइ ए ५  
 ठो फटाटोप राखवो ए श्रेष्ठ नथी ए रहस्य॥५१

निच्छयनयस्स<sup>१</sup> चरस्सुवघाए<sup>२</sup> नाणदंसणवहोवि<sup>३</sup>॥

ववहारस्स<sup>४</sup> उ<sup>५</sup> चरणे<sup>६</sup>॥ हयंमि<sup>७</sup> भयणाउ<sup>८</sup> सेसाणं<sup>९</sup>॥५२॥

नीश्वयनयमते करीने चारीत्रनो नाश थये सते स  
 ज्ञानादीक गुणनो नाश थाय ते देखाडेछे:-

अर्थ॥१॥ नीश्वयनयमते करीने एटले परमार्थ  
 ए करीने॥२॥ चारीत्रनो उपघात थये सते एटले  
 त्रनो नाश थये सते ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शननो बीना  
 पण थाय एटले नीश्वे चारीत्रनो नाश थये सते  
 श्रव सेवन करवे करीने ज्ञान दर्शननो नाशज  
 य-नीश्वय चारीत्र ते कोने कहीए जे सशुक्ल  
 अंतरंगने वीशे दाज्ञ सहीत पणुं के आ काम  
 नथी करवा जोग्य अने माहारे त्यागवा जोग्य छे

कर्म बने करीने हुं त्यागी नयी शक्तो एवो जे बीचा  
 र ते दाह कहीये अने तेज नीश्वे चारीत्र कहीए एवो  
 बीचारणा रहीत आश्रवनुं सेवन करेछे अने बली वो  
 लेछे के आनां अनने शुं पाप लाग्युं एवा पुरुषने स  
 म्यग्ज्ञानदर्शनतो नाशज थाया शिवली॥ व्यवहार नय  
 ने करीने एटले बाह्यवृत्तीए करीने॥ आचारीत्रनो॥ आ  
 नाशयये सतो॥ वाकी रहेजां एवां जे ज्ञान दर्शन तेमनो  
 शिवनाए करीने एटले भजनाए करीने नाश थाय ए  
 टले नाश थाय वा अथवा नयाय एटले व्यवहारनां चा  
 रीत्र नयी पाळी शक्तो एटले आश्रव नयी टाली श  
 क्तो पण चीतने बीशे दाह वरतेछे तोते पुरुषने सम्यग्  
 ज्ञानदर्शन होय अने जे पुरुष अंतरंगने बिशे पण दाह  
 हांतछे अने उपरयी पण चारीत्र पाळतो नयी तेनेतो  
 सम्यग् ज्ञान दर्शन होय नही एटले तेने तो समकीत  
 न होय केनके नीश्वय सहीत व्यवहारनुं बलवान  
 छे अने नीश्वय बीना जे व्यवहार छे ते व्यर्थछे.

॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥

॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥ इहं ब्रह्म ॥

जे ब्रह्मनाव बे प्रकारे वीरतीवत होय ते



क्षीनां लक्षण कहेवे करीने तेनुं स्वरूप जणावेछे.  
 अर्थ॥१॥संवेगपक्षी पुरुशोनुं एटले मोक्षना अभि  
 शी एवा मुनीराजनोछे पक्ष ते जेमने एटले तेमनी  
 न्याअनुष्ठानने विशे रक्त तेमनुं॥२॥आ॥३॥लक्षण॥  
 ॥संक्षेपे करीने॥५॥तीर्थकरदेवे कहयुंछे॥६॥जे लक्ष  
 वडे करीने॥७॥सीथीलछे चरण करण ते जेमने ए  
 ने मुल उतर गुण पालवाने विशे सीथील एवा सता  
 ॥८॥कर्म प्रते एटले ज्ञानावरणादीक कर्म प्रते॥  
 ॥विशेपे करीने शोधेछे एटले क्षण क्षण प्रते स्वपा  
 ॥१०॥नीश्चे फरी संवेग पक्षीनुं लक्षण आगली गा  
 ओमां प्रगट पणे जणावेछे॥१४॥

सुसाधुधर्म॥कहेइ॥निंदइ॥अ॥निय॥मायारं॥५॥  
 सुतस्सिआण॥पुरउ॥होइ॥सबोमरावणीउ॥॥५१५॥  
 अर्थ॥१॥शुद्ध एटले जीनराजनी आज्ञा सहीत एवा  
 ॥सुसाधुना धर्म प्रते॥३॥कहेछे एटले लोकोनीआ  
 ॥निरवद्य एटले पाप रहीत क्षांत्यादि दश प्रकार  
 जती धर्म ते प्रते परुपेछे एटले जणावेछे॥४॥वली  
 ॥जला तपस्वीओनी एटले सुसाधुओनी॥६॥आ  
 ॥७॥पोताना॥८॥आचार प्रते एटले सिथिल पणा





क्षीनां लक्षण कहेवे करीने तेनुं स्वरूप जणावेछे.  
 अर्थ॥१॥संवेगपक्षी पुरुशोनुं एटले मोक्षना अभि  
 लाशी एवा मुनीराजनोछे पक्ष ते जेमने एटले तेमनी  
 क्रियाअनुष्ठानने विशे रक्त तेमनुं॥२॥आ॥३॥लक्षण॥  
 ॥१॥संक्षेपे करीने॥५॥तीर्थकरदेवे कहयुंछे॥६॥जे लक्ष  
 ण वडे करीने॥७॥सीथीलछे चरण करण ते जेमने ए  
 टले मुल उतर गुण पालवाने विशे सीथील एवा सता  
 पण॥८॥कर्म प्रते एटले ज्ञानावरणादीक कर्म प्रते॥  
 ॥९॥विशेषे करीने शोधेछे एटले क्षण क्षण प्रते खपा  
 वेछे॥१०॥नीश्चे फरी संवेग पक्षीनुं लक्षण आगली गा  
 थाओमां प्रगट पणे जणावेछे॥११॥

सुदं<sup>१</sup> सुसाहुधम्मं<sup>२</sup>॥कहेइ<sup>३</sup> निंदइ<sup>४</sup>अ<sup>५</sup>निय<sup>६</sup>आयारं<sup>७</sup>॥  
 सुतवस्तिआण<sup>८</sup>पुरउ<sup>९</sup>॥होइ<sup>१०</sup>सत्त्वोमरावणीउ<sup>११</sup>॥५१५॥  
 अर्थ॥१॥शुद्ध एटले जीनराजनी आज्ञा सहीत एवा  
 ॥२॥सुसाधुना धर्म प्रते॥३॥कहेछे एटले लोकोनीआ  
 गळ निरवद्य एटले पाप रहीत क्षांत्यादि दश प्रकार  
 को जती धर्म ते प्रते परुपेछे एटले जणावेछे॥४॥वली  
 ॥५॥जला तपस्वीओनी एटले सुसाधुओनी॥६॥आ  
 ला॥७॥पोताना॥८॥आचार प्रते एटले सिथिल पणा

દિક પ્રતે॥૧॥નીંદેછે એટલે સાધુ મુનીરાજની  
 એવું બોલેછે કે ધન્યછે આપને જે આપ શુદ્ધ  
 ને વિપે વરતોછો અને હૂંતો ચારિત્ર પાલવાને  
 હું માહારાથી પછી શકતું નથી તે માટે હું  
 એવી રીતે કહે છે અને વલી॥૧૦॥સર્વ મુનિઓ  
 લગ્ન॥૧૧॥થાયછે એટલે એક દિવસના દિક્ષિત  
 થકી પણ પોતાના આત્માને નાનો માનેછે એટલે  
 નું નીચત્વપણું જાવેછે॥૫૧૫॥

વંદન નંવંદાવર્દન॥કિંકરમંકુણદ્વાકારવેળેયં॥  
 અત્ત્યાદ્યનવિદિલ્લિવદ્વંદેદ્વંમુસાદુગ્ધંબોહેડં॥  
 શ્રયં॥૧॥વંદન કરેછે એટલે મોક્ષાભિલાશી  
 થી નાહાના સાધુ પ્રતે પણ વંદન કરેછે  
 ॥૩॥વંદન કરાવે એટલે તે સાધુ મુનીરાજની પા  
 તાને વંદન કરાવે નહીં અને વલી॥૪॥કૃતી કર્મ  
 એટલે સંયોજ સાધુઓની પોતે વીથામણાદી એટ  
 આવચાદીક પ્રતે॥૫॥કરે॥૬॥નહીજા॥૭॥કરાવે  
 તે સાધુઓ પાસેથી પોતે વીઆવચાદિક કરાવે  
 અને વલી॥૮॥પોતાના શ્રયં॥૯॥નહીજા॥૧૦॥દોષ  
 પે એટલે કોઈ વૈરાગ્ય પામીને દિક્ષા લેવા આવે

तेने पोतानो शिष्य करवाने अर्थे पोते दीक्षा आपे न  
ही त्वारे शुं करे ते कहेछे॥११॥बोध पमाडीने एटले  
शुद्ध उपदेशदेइने सम्यक्त्वादीक धर्म पमाडीने॥१२॥  
जला मुनीओनी समीपे॥१३॥दीक्षा लेवरावे पण पो  
ते तेने दीक्षा आपे नही केमके चेला करवाथी शुद्धप  
रूपणा रहे नही ए कारण माटे॥५१६॥

उसन्नो<sup>१</sup> अत्तठा<sup>२</sup> पर<sup>३</sup> मण्णाणं<sup>४</sup> च<sup>५</sup> हणइ<sup>६</sup> दिख्खंतो<sup>७</sup>॥  
नं<sup>८</sup> च्छंहइ<sup>९</sup> दुग्गइए<sup>१०</sup>॥अहिअयरं<sup>११</sup> बुडइ<sup>१२</sup> सयं<sup>१३</sup> च<sup>१४</sup>॥५१७॥  
पोताने अर्थे चेलो करवाथी शुं थाय तेनु फळ गुरुमाहा  
राज आ नीचेनी गाथाए करीने जणावे छे:-  
अर्थे॥१॥अवसन्नो एटले चारित्र पालवाने सीथील ए  
सतो॥२॥पोताने अर्थे एटले पोताने नीर्मित्ते॥३॥वी  
ना॥४॥आत्मा प्रते एटले बीजा पुरुष प्रते॥५॥दीक्षाआ  
तो एटले पोतानो शिष्य करतो सतो॥६॥हणे छे ए  
ले जाव थकी पोतना आत्मानो नाश करेछे॥७॥वली  
शुं करेछे ते कहेछे॥ ८ ॥ते शिष्य प्रते॥९॥दुरगतीने  
शि॥१०॥नाखेछे अने॥११॥वली॥ १२॥पोते॥१३॥अ  
शि अधिक॥१४॥बुडे छे एटले पूर्व अवस्था थकी वि  
प्रकारे संसार समुद्र मध्ये बुडे छे.केमके पोतानी

पासेतो महावृत्त नथी अने बीजाने महावृत्त  
 छे तेमां मृखावाद आवेछे ते कारण माटे बने  
 डे छे. त्वारे शिष्येर्तर्क कर्यो के देनारतो मृखा  
 यो माटे बुडे पण लेनारे श्यो अपराध कर्यो के  
 बुडे? हे शिष्य तर्कतो घणी समजणनो कर्यो पण  
 उतर सांजल, जेम कोइ पुरुष समुद्र तरवाने  
 गाने करीने सहीत एवी लोढानी नावने  
 णीने माही बेठो अने तेना प्रणाम पण  
 छे तो ते पुरुष समुद्र तरी शके नही तेम ज्ञाना  
 करीने रहीत पांच आश्रवनों सेवनार अने आ  
 हीत जुठी कीरीआनो फटाटोप करनार तेने रु  
 धु जाणीने संसार समुद्र तरवाने अर्थ अंगीकार  
 पण संसार समुद्रमां बुडेज बली जेम कोइ पुरु  
 ल अने गोळ ते बेडनी परीक्षा कर्यो बीना सोम  
 गोळ जाणीने खाय तोते पुरुष नीश्रे मरेज तेम  
 तने अनुसारं गुरुकु गुरुनी परीक्षा कर्यो बीना कुम  
 जाणीनेज दीक्षा अंगीकार करे अथवा आयक  
 गोकार करे अथवा सम्यक्त्व अंगीकार क  
 ते बुडेज केमके पोताना प्रणामतो रुद्र अंग

र करवाना छे पण जेवो पुरुष मीले तेवुं आपे.  
ते माटे प्राये खोटाना संसर्गे तरी शकेजनही ए नाव.

जह<sup>१</sup>सरणं<sup>२</sup>मुवगयाणं<sup>३</sup>॥जीवाण<sup>४</sup>निकितए<sup>५</sup>सिरे<sup>६</sup>जोउ<sup>७</sup>॥

एवं<sup>८</sup>आयरिउविहु<sup>९</sup>॥उस्मुत्तं<sup>१०</sup>पन्नवितो<sup>११</sup>य<sup>१२</sup>॥५१८॥

उत्सूत्र प्ररूपक उपर द्रष्टांत आ नीचेनी गा-  
थामां जणावे छे:--

अर्थ॥१॥जेमा॥२॥सरणप्रते॥३॥आवेला एवा॥४॥जी  
व तेमनुं॥५॥मस्तक प्रते॥६॥जे पुरुष॥७॥छेदेछे एटले  
जे पुरुष पोताना शरणे आवेला एवा प्राणीओना मा  
थां प्रतेकापेछे॥८॥ए प्रकारे॥९॥उत् सूत्रप्रते एटले सू  
त्रथी विरुद्ध प्रते॥१०॥प्ररूपणा करतो एटले भव्य प्रा  
णीओने कुमारगने विशे प्रवर्तावतो एवो॥११॥आचार  
जजे ते पण शरणे आवेला एवा भव्य जीवोनुं माथुं का  
पेछे॥१२॥नीश्चे एटलेनीश्चे वीश्वासघात करेछे,आ गा  
थामां एटलो शब्द वाक्य शोभावाने अर्थेछे. जेम ते  
जुठुं सुभट नाम धरावनारो पुरुष पोताने आश्रीने रहे  
ला प्राणीओने पोताने वीशे वचने करीने वीश्वास उप  
जावीने तेमनुं माथु कापी नाखे छे जेम नाम मात्र ए  
टले गुण रहीत एवो आचारज जे ते पण पोताने आ

श्रीने रह्या एवां भव्य प्राणीओने नाम मात्र धर्म  
 डवे करीने वीश्वास उपजाववे करीने जुठा धरमने  
 एटले कपायादि सहीत धर्मने विशे प्रवर्तावीने  
 थी मांथु कापेछे एटले दुरगतीने विशे परीभ्रमण  
 वे छे एं कारण माटे आत्मार्थी पुरुषोए तेवा  
 संसर्ग करवो नही ए उपदेश ॥५१८॥

सावज्जजोगपरिवज्जणाउ ॥ सव्वुतमो १ जइधम्मो १ ॥

बीउसावगधम्मो ४ ॥ तइउंसंविगगपख्खपहो ५ ॥ ५१९ ॥

॥ मोक्षना त्रण मारगछे ते देखाडेछे ॥

अर्थ ॥ १ ॥ सावद्ययोग एटले पाप सहीत व्यापार  
 मनुं परीवर्जन एटले समस्त प्रकारे त्याग करवे  
 ने एटले पाप सहीत व्यापार मुकवे करीने ॥ २ ॥  
 नी मध्ये उत्तम एटले सर्व धर्मनी मध्ये श्रेष्ठा ॥ ३ ॥  
 धर्म एटले साधुनो धर्म होय ए पहेलो मोक्षनो  
 ग ॥ ४ ॥ बीजो श्रावकनो धर्म ए बीजो मोक्षनो म  
 ॥ ५ ॥ अने त्रीजो संवेग पक्षीनो मारग ए त्रीजो म  
 नो मारग ए त्रणे कर्म रहीत थवाना मारग ज  
 त्यारे शिष्य बोल्यो के स्वामीनाथ वे मारगतो म  
 जवाना समजायछे पण त्रीजो संवेग पक्षीनो

ते मोक्ष मारग शी रीते कहेवाय केमके पोते तो सीध-  
ला चारीछे अने एक शुद्ध उपदेश करवे करीने पोताने  
शुं गुण याय ए मारा मनमां संशयछे त्यारे गुरु मा-  
हाराज बोल्या के हे शिष्य तर्क तो घणो सारो कयों  
पण तेनो उत्तर सांभली? शिद्दांतने विशे कहयुंछे:-

उसन्नोविविहारे॥कम्मंसोहेइसुलहवोहिअ॥

चरणकरणविसुद्धं॥उवबुहितोपरुवितो॥

अर्थ:-साधु मारगने विशे सीधलछे एटले मुनी मा-  
ग पाली शकतो नथी एवो सती पण कर्म प्रते सोधे  
छे एटले क्षण क्षण प्रते कर्मनो नाश करेछे ते शुं कर  
तो सतो कहेछे के चरण सीतरी अने करण सीतरीनी  
विशुद्धी प्रते एटले शुद्ध मुल उत्तर गुणो प्रते अनुमो-  
दना करतो सतो अने नव्यजीवोनी आगल प्ररुपणा  
करतो सतो एटले नव्यजीवोनी आगल एवं कहेछे  
के मुनीराजनो मार्ग ए आसीद्दांतमां कहयो ए प्रकारे  
छे अने हुंतो ते मारग पालवाने असमर्थहुं एवी रीते  
बोलीने शुद्ध मारगने विशे श्रधा करावतो सतो पोता  
ना पूर्व करेला ज्ञाना वरणादी कर्म प्रते टालेछे एका-  
रण नाटे हे शिष्य जे शुद्ध प्ररुपणा करवी ए पण ए



क मोहोंटो गुणछे तेनुं लक्षण आगळ ॥५१॥  
ने सारी रीते समजण पडशे एजावा ॥५१९॥

सेसामिच्छहिंदी ॥ गिहिलिंगिकुलिंगद्वलिंगेहिं ॥

बह ॥ तिन्नेड ॥ मुखपहा ॥ संसारपहा ॥ तहा ॥ तिन्नि ॥ ॥५२॥

हवे संसारना त्रण मारग देखाडेछे:-

अर्थ ॥ १ ॥ तेथी न्यारा उटले आ पुर्वे कह्या जे

मारग तेथी जुदा शेश एटले बीजा पण मीथ्या

जाणवा ते कीया ॥ २ ॥ गहीलींगना धरवा वाला

ग्रहस्थ लोको अने कुलींग एटले द्रव्य थकी जत

ना धारवावाला ए त्रणे मीथ्या द्रष्टी जाणवा ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ मोक्षना मारग ॥ ५ ॥ त्रण कह्या ॥ ६ ॥ तेम ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ संसारना मारग जाणवा एटले पूर्वे कह्या ए

हस्थ लींगादीकि त्रण ए संसारमां परीभ्रमण कर

मारग जाणवा ॥ ५२० ॥

संसारसागर ॥ मिणं ॥ परिभ्रमंतोहिं ॥ सबजीवेहिं ॥

गहियाणि ॥ अ ॥ मुक्ताणि ॥ य ॥ ॥ अणंतसो ॥ द्वलिंगाई ॥ ॥ ५२१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ आ ॥ २ ॥ संसाररूप समुद्र प्रते ॥ ३ ॥ रि

करता एटले जन्मजरा मरणकरता एहवा ॥ ४ ॥ सर्व

जे तेमणे एटले सर्व प्राणियोए ॥ ५ ॥ अनंतिवार ॥



तिपणा प्रते॥१०॥ करय एटले साधु मुनिराज  
 क थडनें निर्देभपणें करिने विशुद्ध एवि जे चर  
 तरि करण सितरितेहनिजथारथ प्ररूपणा करय  
 ते संविग्न पाक्षिकपणाए करिने एटले जेवो छे  
 वोतरागनो बतावेलो मारग परूपवे करिने १२  
 मि भवने विशे मोक्ष मार्ग प्रते॥१३॥ पामिश ए  
 माटे जो सम्यक् प्रकारे साधुपणुं नहि पालि  
 सुद्ध प्ररूपणा करवि घटीत छेपण साधुपणानो  
 खिने चेला चेलि करवा ते घटित नथि ए उपदेश  
 कंतारोहमद्वाणउम<sup>१</sup> गेलत्तमाइकज्जेसुसद्वायरेण<sup>१</sup>  
 जयणा<sup>१</sup> कुणइ<sup>१</sup> जं<sup>१</sup> साहुकरणीजं<sup>१</sup> ॥ ५२३ ॥

हवे साधुनुं लक्षण कहिए छिए.

अर्थ ॥१॥ माहा अटवि एटले पाणि छाया  
 मोटि अटवि, रोध एटले राजादिकनि लढाइन  
 कोटे करिने रोकावुं विपम मार्गने विशे चाल  
 निक्ष काल एटले दुकाल ग्लानिपणुं ए अ  
 एटले पुर्वे कह्युं ते आदिक कार्योने विशे ५०  
 कहां एहवां कारण पडे सते ॥२॥ सर्व आदरे  
 एटले जेटलि पोतानि शक्ति होय तेटलि फोरववे

॥३॥ जत्ना ए करिने एटले पूर्वे कहेलि एवि जत्ना स  
हिता ॥४॥ जे ॥५॥ साधुओने करवा जोग्य होय ते प्रतेदि  
करे एटले साधुनिराज कारण पडे सते पण साधुओ  
ने जे करवाने उचित होय ते जतना सहित करे ॥५२३॥

आपरतर संमाणं ॥ तुदुकरं ॥ माणसंकडे ॥ लोए ॥

संवेगपक्षित्व अत्तं ॥ उत्तरेणं ॥ फूडं ॥ काउ ॥ ५२४ ॥

हवे संवेगपक्षपणानुं दूर्लभपणुं देखाडेछे.  
अर्था ॥१॥ माने करिने एटले अहंकारे करिने सांकडो  
एटले भरेलो एहवोजे ॥२॥ लोक एटले संसार तेने वि  
॥३॥ अतिशे आदरे करिने उत्तम साधुओनुं सन्मान  
करवुं एटले उत्तम साधु आवे सते उच्चा थवुं सामा ज  
तेमना गुणनी प्रसंस्या करवी इत्यादिका ॥४॥ अति  
दुष्करछे एटले अतिशे करिने दुर्लभछे ॥५॥ शिथी  
लाचारि जे तेने ॥६॥ संवेग पक्षपणुं ॥७॥ प्रगट एटलेनि  
दुर्लभपणे ॥८॥ करवाने दुर्लभछे एटले पोते शिथीलाचा  
रे थडने मुनीराजनुं वहु मान करवुं अने कपट रहि  
पणे शुद्ध प्ररूपणा करवि ए कठणछे ए कारण माटे  
संवेग पक्षि पुरुष जे ते पण आत्मारथि पुरुषोने मा  
वा ज्योगछे ए भाव ॥ ५२४ ॥

सारणचेइया<sup>१</sup>जे<sup>१</sup>गच्छनिगया<sup>३</sup>पविहंति<sup>४</sup>पासथ्या<sup>५</sup>॥  
 जिणवयणवाहिरा<sup>६</sup>वि<sup>७</sup>य<sup>८</sup>ते<sup>९</sup>अपमाणं<sup>१०</sup>न<sup>११</sup>कायवा<sup>१२</sup>॥  
 अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥सारणा एटले भुलि गये.  
 संनारवुं एटले आ काम आ रिते करो आ काम  
 रिते करो ए प्रकारे वारवार शिखामण देवे करिने  
 दवेग पाम्या एहवा अने॥३॥गछ थकि निकलेल  
 टले उत्तम साधुओना समुदाय थकि बाहार निकलेल  
 हवा॥४॥विचरेछे एटले पोतानि इछाए करिने फरत  
 हवा॥५॥पासथ्यादिक एटले ज्ञान दर्शन चारित्र  
 त एहवा॥६॥जिनराजना वचन थकि बाहिर थएल  
 टले प्रथम शुद्ध चारित्र पालिने पछि प्रमादि थए  
 एहवा॥७॥ते पुरुषो॥८॥पण॥९॥निओ<sup>१०</sup>॥अप्रम  
 ॥११॥नहि॥१२॥करवा एटले पूर्वे कहैला एहवा  
 रुप ते साधुपणाने विशे गणवा जोग्य नाथि॥५२॥  
 हीणस्सवि<sup>१</sup>सुद्धपरुपगस्स<sup>२</sup>॥संविग्गपख्खवायस्स<sup>३</sup>॥जा<sup>४</sup>जा<sup>५</sup>  
 विज्ज<sup>६</sup>जइणा<sup>७</sup>॥सा<sup>८</sup>सा<sup>९</sup>॥से<sup>१०</sup>निज्जरा<sup>११</sup>होइ<sup>१२</sup>॥५२६॥

हवे सुद्ध परुपकपणानो गुण केहछे.

अर्थ॥१॥हीन एहवो पण एटले कांडिक उत्तर गुणे  
 रिने शिथिल एवो पण॥२॥शुद्ध .रु .जानो .॥

वो एटले शुद्ध वीतराग देवनो मार्ग देखाडनार॥३॥  
 वेगी मुनियोनो पक्षपात करनार एटले मोक्षना अ  
 भेलापि मुनियोनि साहाज्य करनारो एहवो जे पुरु  
 तेनि॥४॥जे॥जे॥६॥जतना एटले बहु दोषवालि व  
 स्तुनु वर्जवुं अने अल्प दोष वालि वस्तुनुं लेवुं ते रुप  
 ॥५॥जतना॥८॥होया॥९॥ते॥१०॥ते पुरुषनो॥११॥कर्म  
 नोक्षय करनारि एटले कर्मनो नाश करनारि॥१२॥धा  
 यछे ए कारणमाटे जयार्थ चारित्र पालि शके नहि तो  
 षण शुद्ध प्ररुपणा करवि ए उपदेश॥५२६॥

सुहाइयपरिसुद्धे॥सइ॥लाभे॥कुणइ॥वाणिउ॥चिहं॥  
 एमेइ॥प॥गीयथो॥आयं॥दुहुं॥सनायरइ॥॥५२७॥  
 आत्माथिं पुरुष लाज खराजातनो विचार करे ते कहेः  
 अर्या॥१॥वाणिक् एटले व्यापारि॥२॥शुल्कादिके करिने  
 एटले राजाने आपवा जोग्य द्रव्यादिके करिने परिशु  
 द एटले समस्त प्रकारे शुद्ध एटले राजाने दाण भर  
 रिने पछी॥३॥लाज॥४॥सते एटले लाज रहे सते  
 चेष्टा प्रते एटले वेपार प्रते॥६॥करे छे॥७॥वालि  
 एज प्रकारे॥९॥गीतार्थ एटले सम्यक् प्रकारे शास्त्र  
 गाण एहवो पुरुष पणा॥१०॥लाज प्रते॥११॥देखि  
 टले विचारिने॥१२॥सम्यक् प्रकारे आचरे छे ए

सारणचेइया<sup>१</sup>ने<sup>१</sup>गच्छनिगया<sup>३</sup>पविहरंति<sup>४</sup>पास<sup>५</sup>था<sup>५</sup>॥

जिनवयणवाहिरा<sup>६</sup>वि<sup>७</sup>थ<sup>८</sup>ते<sup>९</sup>अपमाणं<sup>१०</sup>न<sup>११</sup>कायवा<sup>१२</sup>

अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥सारणा एटले भुलि गे.

संनारवुं एटले आ काम आ रिते करो आ काम

रिते करो ए प्रकारे वारवार शिखामण देवे करिने

दवेग पाम्या एहवा अने॥३॥गछ थकि निकलेला

टले उत्तम साधुओना समुदाय थकि वाहार निकलेला

हवा॥४॥विचरेछे एटले पोतानि इछाए करिने फरत

हवा॥५॥पासध्यादिक एटले ज्ञान दर्शन चारित्र

त एहवा॥६॥जिनराजना वचन थकि वाहिर थएल

टले प्रथम शुद्ध चारित्र पालिने पछि प्रमादि

एहवा॥७॥ते पुरुषो॥८॥पण॥९॥निश्चो॥१०॥अत्र

॥११॥नहि॥१२॥करवा एटले पूर्वे कहेला एहवा

रूप ते साधुपणाने विशे गणवा जोग्य नाथि॥५२॥

हीणस्सवि<sup>१</sup>सुद्धपरुषगस्स<sup>२</sup>॥संविग्गपस्सववायस्स<sup>३</sup>॥जा<sup>४</sup>जा<sup>५</sup>

विज्ज<sup>६</sup>जइणा<sup>७</sup>॥सा<sup>८</sup>सा<sup>९</sup>॥से<sup>१०</sup>निब्बनरा<sup>११</sup>होइ<sup>१२</sup>॥५२६॥

हवे सुद्ध परुषकपणानो गुण केहछे.

अर्थ॥१॥हीन एहवो पण एटले कांडक उत्तर गुणे

रिने शिथिल एवो पण॥२॥शुद्ध परुषपणानो करना

वो एटले शुद्ध बीतराग देवनो मार्ग देखाडनार॥३॥  
वेगी मुनियोनो पक्षपात करनार एटले मोक्षना अ  
मेलापि मुनियोनि साहाज्य करनारो एहवो जे पुरु  
तेनि॥१॥जे॥जे॥६॥जतना एटले बहु दोषवालि व  
स्तुनु वर्जवुं अने अल्प दोष वालि वस्तुनुं लेवुं ते रुप  
अजतना॥८॥होया॥९॥ते॥१०॥ते पुरुषनो॥११॥कर्म  
क्षय करनारि एटले कर्मनो नाश करनारि॥१२॥था  
छे ए कारणमाटे जयार्थ चारित्र पलि शके नहि तो  
ण शुद्ध प्ररूपणा करवि ए उपदेशा॥५२६॥

मुक्कइयपरिचुद्धे॥॥चइ॥लभे॥कुणइ॥वाणिउ॥चिहुं॥  
एने॥य॥गीयथो॥॥आयं॥॥दहुं॥॥समायरइ॥॥५२७॥  
आत्मार्यि पुरुष लाज खराजातनो विचार करे ते कहेः  
अर्थ॥१॥वणिक् एटले व्यापारि॥२॥शुल्कादिके करिने  
एटले राजाने आपवा जोग्य द्रव्यादिके करिने परिशु  
द्ध एटले समस्त प्रकारे शुद्ध एटले राजाने दाण भर  
वे करिने पछी॥३॥लाज॥४॥सते एटले लाज रहे सते  
॥५॥वेष्टा प्रते एटले वेपार प्रते॥६॥करे छे॥७॥वालि  
॥८॥एज प्रकारे॥९॥गीतार्थ एटले सम्यक् प्रकारे शास्त्र  
नो जाण एहवो पुरुष पण॥१०॥लाज प्रते॥११॥देखि  
एटले विचारिने॥१२॥सम्यक् प्रकारे आचरे छे ए



टले जे वस्तुमां दोष थोडो होय अने लाभ घए  
य एहवुं काम जतनाए करिने करे ए कारण मां  
त्मारि पुरुषोने लाभ टोटानो विचार करिने जे  
न वधारे होय ते काम जतनाये करिं कएवा जो  
आमुक्वजोगिणु<sup>१</sup> चिय<sup>२</sup> ॥ हवइ<sup>३</sup> थोवा<sup>४</sup> शवि<sup>५</sup> तस्स<sup>६</sup> जीवदया<sup>७</sup>  
संवेगपखखयणा<sup>८</sup> ॥ तो<sup>९</sup> दिडा<sup>१०</sup> साहुंगस्स<sup>११</sup> ॥ ५२ ॥

संवेगपक्षिनि जतनानुं प्रमाण पणुं कहेछे.  
अर्थ ॥ १ ॥ समस्त प्रकारे मूक्याछे संजमना जो  
ले व्यापार ते जेणे एवो जे पुरुष ॥ २ ॥ तेना मनं  
शे ॥ ३ ॥ निश्चे करिने जो ॥ ४ ॥ थोडि ॥ ५ ॥ पण ॥ ६ ॥ ज  
दया एटले जीवनि दया ॥ ७ ॥ छे ॥ ८ ॥ ते जीव दया  
साधु वर्गसमंभिनि एटले साधुना समुह मध्येनि  
तीर्थकर माहाराजे दिठिछे एटले कहीछे एकारण  
टे ॥ १ ॥ संवेग पक्षिनी जतना प्रमाणछे केमके ते  
क्षनु अनिलापिपणुछे माटे; ए कारण माटे कोइ या  
वर्णीना उदयवडे करिने संजमपालिशके नहीतोचि  
विशे संजम निजतनानो भाव राखवो ते पणुणका  
किं<sup>१</sup> मुसगाण<sup>२</sup> अध्येणं<sup>३</sup> किं<sup>४</sup> वा<sup>५</sup> कागाण<sup>६</sup> कणगमालाए<sup>७</sup> ॥  
मोहमळखविठिआणं<sup>८</sup> ॥ किं<sup>९</sup> कब्ज<sup>१०</sup> मुवएसमालाए<sup>११</sup> ॥ ५३ ॥

आ उपदेशमाला अजोग्य पुरुषने आपवि

अजोग्यछे ते कहेछे:-

अर्थ॥१॥उंदराओने॥२॥अर्थे करिने एटले सुवर्णादि  
 क अर्थे करिने ॥३॥ शुं एटले शुं प्रीयोजनछे आपितुं  
 कांड प्रयोजन नथि॥४॥बलि ॥५॥ कागडाओने॥६॥  
 नोनानि मालाए करिने ॥७॥ शुं आपितु कांड नहि  
 ए द्रष्टांते करिने ॥८॥ मिथ्यात्वादि कर्म रुप नले क  
 रिने लेपाएला एहवा जे पुरुषो तेनने॥९॥उपदेशना  
 लाए करिने एटले उपदेशनी परंपराए करिने॥१०॥  
 शुं॥११॥कारज धाय एटले नारे कर्मि जीवोने आ उ  
 पदेशनाला पण कांड कारजनि करनारि नथि॥५२९॥

वरणकरणात्तत्प्राप्तं॥अविनयवहुलान् सयययोगमिजं॥

रत्नमयी सयसहस्तो॥अविज्ञइ कुच्छूनास्तत्॥५३०॥

जोग्य पुरुषने आ उपदेश माला आपवा

जोग्य छे ते कहेछे:-

अर्थ॥१॥वरणात्तितरि करणात्तितरि ने विपे एटले पं  
 चनहा व्रतादिकने विशेषे अने पिंड विपुध्या दिकने विशेषे  
 भाखन वाला एहवा अने॥२॥विनये करिने भरेला एट  
 ले विनय गुणकरिने रहित एहवा जे पुरुषो तेनने॥३॥  
 आ उपदेशनाला रुप प्रकर्षा॥४॥निरंतर अजोग्य छे  
 एटले तनने आपवा जोग्य नथि॥५॥खोटि छे जाना ते

जेनि एहवा जानवरने एटले कागडाने॥६॥  
 तुं॥७॥रत्न॥८॥नथि॥९॥पेहेरावा जोग्य नथि एटले  
 ग कागडाने रत्न पेहेराववा जोग्य नथि तेम  
 तने पण उपदेशमाला आपवा जोग्य नथि ए  
 माटे विनितने जशास्त्र जणावतुं केमके अविनितने  
 जणावतां घणा दोषनुं कारण छे माटे; ए उपदेश  
 नाउण<sup>१</sup> करतल गयामलं<sup>२</sup> सभा<sup>३</sup> उ<sup>४</sup> पहं<sup>५</sup> सबं<sup>६</sup>॥

धर्म<sup>७</sup> मि<sup>८</sup> नाम<sup>९</sup> सी<sup>१०</sup> इ<sup>११</sup> ज<sup>१२</sup> इ<sup>१३</sup> ग<sup>१४</sup> ति<sup>१५</sup> क<sup>१६</sup> मा<sup>१७</sup> इ<sup>१८</sup> ग<sup>१९</sup> रु<sup>२०</sup> आ<sup>२१</sup> इ<sup>२२</sup>॥५३॥

हवे नारे कर्मिपणानी स्वरूप कहु छे:-

अर्थ॥१॥करतलने विपे एटले हाथेलिने विपे  
 लानि पटमा<sup>२</sup> सदभावथकि एटले सत्यबुद्धि करिने  
 सर्वे ज्ञानादि रूप एहवो॥२॥मार्ग एटले मोक्ष मार्ग  
 ते॥३॥जाणिने पण आजીवा॥६॥धर्मने विपे॥<sup>५</sup> ति  
 य छे एटले शुद्ध धर्म करवाने विपे प्रमादि थायछे॥  
 निश्चे॥९॥हीयां शुं कारण छे एहवि रिते शिष्य  
 करे सने गुरुमहाराज उत्तर कहेंछे ते प्राणिने॥१०॥कि  
 एटले ज्ञाना वणादि कर्म॥११॥गुरु वतें छे एटले  
 जीव जाणनो सनो पण नारे कर्मो पणे करिने शुद्ध  
 मनो उद्यम नथि करता॥५३॥

धर्म<sup>१</sup> अ<sup>२</sup> काम<sup>३</sup> मु<sup>४</sup> ख<sup>५</sup> ने<sup>६</sup> मु<sup>७</sup>॥ज<sup>८</sup> स<sup>९</sup> भा<sup>१०</sup> वो<sup>११</sup> ज<sup>१२</sup> हि<sup>१३</sup> ज<sup>१४</sup> हि<sup>१५</sup> र<sup>१६</sup> म<sup>१७</sup> ॥



पण रुचे नहि।६।निश्चो।७।संवेग पक्षि पुरुषोने एटले  
क्षणा अभिलाशी पुरुषोने वैराग्यानि वारता कान  
सकारि।८।होय।९।बलि।१०।केटलाएक।११।  
पुरुषोने एटले सम्यग् ज्ञानवंत पुरुषोने वैराग्या  
रता एटले समकितसहित वीरतिपणानि वारता  
कारि होय एटले सारी लागे।५३३॥

सोडण<sup>१</sup> पगरण<sup>२</sup> मिणं<sup>३</sup>॥ धम्मे<sup>४</sup> जाउ<sup>५</sup> न<sup>६</sup> हुझमो<sup>७</sup> जरम<sup>८</sup>॥

न<sup>११</sup> य<sup>१२</sup> जणियं<sup>१३</sup> वैरागं<sup>१४</sup>॥ ज्ञाणिज्ज<sup>१५</sup> अनंतसंसारि<sup>१६</sup>॥

अर्थ॥१॥आ॥२॥उपदेशमालारूप प्रकरण प्रते॥:

भलिने॥३॥जे पुरुषने॥५॥शुद्ध धर्मने विशे एटले

कित पूर्वक वस्तुधर्मने विशे॥६॥उद्यम एटले

॥७॥नयिज॥८॥ययो एटले नयि उत्पन्न थयो॥९

॥१०॥वैराग्य एटले संसारथी उदासि जाय।११।न

उत्पन्न थयो एटले पांचडंदिना विषयना त्याग

राग्य न आव्यो त्यारे।१३।जाणवुंके आजीव।१४।

संसारिक अनंतसंसारि वर्तछे केमके अनंत संसा

वोने बहु उपदेश देवे करिने पण वैराग्य न थाय

कम्माण<sup>१</sup> सुवहुत्राणुव<sup>२</sup>॥ ममेणउवगच्छउ<sup>३</sup> इमं<sup>४</sup> मरि<sup>५</sup>॥

कम्मनलंघिक्खिगणं<sup>६</sup>॥ वधइ<sup>७</sup> पामेण<sup>८</sup> भन्नत्तं<sup>९</sup>॥२३५॥

अर्थ॥१॥कर्मना॥२॥अतिशैं वहु उपसमे करिने एटले  
 ज्ञानावर्णादि कर्मना क्षयोपसमवडे करिने॥३॥ आ  
 प्रत्यक्षा॥४॥सर्व उपदेशमालारूप तत्व अर्थना समुह प्र  
 ते॥५॥पामेछे एटले जे प्राणिने ज्ञानावर्णादि कर्मनो  
 क्षय उपसम थायछे ते प्राणि तत्व वस्तु प्रते जाणेछे  
 ॥६॥कर्मरूप मले करिने अतिशे लेपायेला एहवा जे  
 पुरुषो तेमनि आगला॥७॥केहेवामाड्युं एहवुं आ उप  
 देशनाला प्रक्रणा॥८॥पडखे थडने॥९॥जायछे एटले  
 नारेकर्मिजीवोना हृदयने विशेष नथि प्रवेश करतुं॥५३॥  
 उपसमालने॥५४॥जो॥पडइ॥तुणइ॥कुणइ॥वा॥हियए॥  
 सो॥जाणइ॥अप्यहियं॥नाउण॥सुहं॥समाइरइ॥५३६  
 अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥आ॥३॥उपदेशमाला प्रते॥४॥  
 जाणेछे॥५॥अथवा॥६॥सांभलेछे॥७॥हृदयने विशेष॥८॥  
 करेछे एटले ते उपदेशमालाना अर्थ प्रते हृदयने वि  
 शे विचारेछे॥९॥ते पुरुषा॥१०॥आत्माना हित प्रते ते ए  
 टले इहलोक परलोकना साधन प्रते ॥११॥जाणेछे॥  
 ॥१२॥आत्माना हित प्रते जाणिने॥१३॥शुभ प्रते एट  
 ले सम्यक् प्रकारे आत्माना कल्याण प्रते॥१४॥आच  
 रेछे एटले करेछे॥५३६॥

धंतमणिदामससिगणिणिहिपयपढमख्खराभिहाणेणं॥

उवएसमालपगरणं॥मिणिमो२रईअं५हिअट्टाए॥५३७॥

आ उपदेशमाला करनार पुरुशनुं नाम गर्जित  
शुचव्युं छे ते केहेछे:-

अर्थ॥१॥धंतशब्दमणिशब्द दामशब्द ससिशब्द  
णिशब्द एहिशब्द एटला पदोना जे पेहेला अक्षर  
कार मकार दकार सकार गकार णिकाररुपते अक्षर  
करिने छें नाम ते जेनुं एहवो जे पुरुष तेणे एटले  
दास गणिजे तेमणे॥२॥आ॥३॥उपदेशमाला  
४॥पोताना आत्माने अर्थ॥५॥रच्युं छे एटलेपोताने  
र्थं तथा भव्य जीवोने अर्थं सूत्ररुप समुद्र मध्येधि  
र भूत लेइने आ प्रकरण बनाव्युं छे॥५३७॥

निणवयणकप्पख्खो॥अणेगमुतथ्यसालिबिच्छिन्नो॥

तवनियमकुसुमगुच्छो॥सुगगदफलचंधणो॥अयइ॥५३८॥

जीनराजना वचननुं माहात्म्य पणुं केहेछे:-

अर्थ॥१॥अनेक सूत्र अर्थ रुप शाखा एटले डाला  
ऐ करिने विस्तीर्ण एटले विस्तारवंत एहवो॥२॥नप  
यम रुप कुसुमना गुच्छा एटले फुलना समुह छे  
विशे एहवो॥३॥सद्गति देव मनुष रुप ते रुपफल

तेनुं बंधन एटले निष्पत्ति छे जेने विशे एहवो॥ ४॥ जि  
न वचन एटले द्वादशांगरुप तेज कल्पव्रक्ष एटले मन  
वंचीतपूर्ण करनार॥ ५॥ जयवंतो छे एटले सर्वानि मध्ये  
उत्कृष्ट पणे वैं छे॥ ५३८॥

जुगा<sup>१</sup>सुसाहुवेरागिआण<sup>१</sup>॥ परलोगपथिआणं<sup>१</sup>च<sup>१</sup>॥

संवेगपखित्वाणं<sup>१</sup>॥ दायवा<sup>१</sup>बहुसुआणं<sup>१</sup>च<sup>१</sup>॥ ५३९॥

अर्थ॥ १॥ भला साधुओने अने वैराग्यवंत एहवा आ  
वकोने॥ २॥ वलि॥ ३॥ परलोक साधनने विशे उद्यमवंत  
एहवा पुरुषोने॥ ४॥ आ उपदेशमाला आपवा जोग्यछे  
एटले भणावा जोग्यछे॥ ५॥ वलि॥ ६॥ संवेगपक्षि पुरु  
षोने॥ ७॥ बहु श्रुति पुरुषोने॥ ८॥ आपवा जोग्यछे केम  
के आ उपदेशमाला पंडित पुरुषोने आनंदनि उपजा  
वनारीछे पण मूर्ख पुरुषोने आनंदनि उपजानारीनाथि.

इदं<sup>१</sup>धम्मदासगणिणा<sup>१</sup>॥ जिणवयणूवएसकज्जमालाए<sup>१</sup>॥

मालच्च<sup>१</sup>विवेहकुसुमा<sup>१</sup>॥ कहिआ<sup>१</sup>उ<sup>१</sup>सुसिसवग्गस्स<sup>१</sup>॥ ५४०॥

उपदेशमालानुं माहात्म्य केहेछे:-

अर्थ॥ १॥ ए प्रकारे॥ २॥ धर्मदास गणि जे तेमणे ॥ ३॥  
जिनराजना वचननो उपदेश तेनुं जे कार्य तेनि माला  
एटले श्रेणि तेणे करिने॥ ४॥ फुलनि मालाना जेवि॥ ५॥



जला शिष्यना समुहनी आगला॥६॥ कहि एटले शि  
 ने भणवाने अर्थे आ उपदेशमाला कहिछे ते उप  
 माला केहवि छे॥७॥ नाना प्रकारना उपदेश रुप  
 र ते रुपछे फुल ते जेने विशे एटले फुलनी माल  
 विशे नांना प्रकारना फुल होय अने उपदेशमा  
 रुपमालाने विशे नांना प्रकारना उपदेश रुप अ  
 ते रुप फुल होया॥८॥ पादपुर्ण करवाने विशे॥५४॥  
 मंति करी १ बुद्धि करी ४॥ कलाण करी ५ मुमंगल कारि ५५॥  
 होइ ५ कहगस्स १ परिसाए १॥ तहय ९ निर्वाण फलदाइ १०॥५४॥  
 अर्थे॥१॥ केहेनार पुरुषने एटले उपदेशक पुरुषने २  
 ॥२॥ परखदाने विशे सांजलनार पुरुषने॥३॥ आ उ  
 शमाला शांतिनि करनारि एटले क्रोधादिकनि दूर  
 रनारि छे॥४॥ अने ज्ञानादिक गुणनि वृद्धि करनारि  
 ॥५॥ अने कलाणनि करनारि छे एटले इहलोक पर  
 कने विशे मृत्तनी आपनारि॥६॥ बलि॥७॥ जलामंगा  
 कनी करनारि॥८॥ छे॥९॥ अने तिमज ॥१०॥ परलोक  
 विशे निर्वाण फलने एटले मोक्षरुप फलने आपना  
 छे एटले आ उपदेशमाला केहेवा यकि अने सांज  
 वा यकि मोटुं फल थायछे॥५२॥

## उपदेशमाला.

३५९

इत्थं समप्यहं इणमो१॥मालाउवएसपगरणं२पगयं३॥

गाहाणं४सज्ञाणं५॥पंचसया६चेव१०चालिसा१॥५४२॥

आ उपदेशमालानी गाथानि संख्या केहेछे:-

अर्थ॥१॥आ॥२॥ आ उपदेशमाला प्रकरण ॥३॥

कह्युं ते॥४॥हियां एटले आ स्थलने विशे॥५॥संपूर

ण करिए छीए एटले प्रथमयकि आरंभिने हियां सु

धि पूरि करिछे ज्यारे आ उपदेशमालानि संख्या ग

णिए छीए त्यारे॥६॥सर्व॥७॥गाथाओनुं॥८॥ पांचसें

॥९॥चालिस अधिक॥१०॥निश्चे एटले आ उपदेश

मालाने विशे सर्व गाथाओ मलिने पांचसेने चालिस

छे अने उपरली चार गाथा विजा शास्त्रनिछे॥५४२॥

तावय१लवणसमुद्रो२॥जावय३नखवत्तमांडिउ४मेरु५

तावय६रइया७माला८जयमि९धिरथावरा१०होइ११॥५४३॥

अर्थ॥१॥ज्यां सुधि॥२॥लवणसमुद्र शास्वतो वर्ते छे

॥३॥ज्यां सुधी॥४॥नक्षत्रे करिने सोभायमान एहवो॥५॥

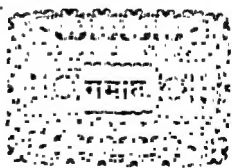
मेरुपर्वत वर्ते छे॥६॥त्यां सुधि॥७॥जगतने विशे॥८॥रचे

लि एहवि आ॥९॥उपदेशमाला॥१०॥थिर द्रव्यनि पे

ठे एटले शास्वता द्रव्यनि पेठे स्थिर॥११॥थाओ एटले

सदाकाल अविचलपणे वर्तो॥५४३॥

अखखरमत्ताहीणं०॥ सं० चिय० पटियं० अप्पाणमाणेणं०॥  
 तं० खमउ०॥ म० भ० सु०॥०॥ जिणवयणविणिग्गया० वाणी०॥५॥  
 अर्थ॥१॥ जिनराजना वचनथकि एटले जिनराज  
 मुखथकि विपेपे करि निकलि एहवि॥२॥ श्रुतदेवि  
 ते॥३॥ अजाण एहयो हुं जे तेणे॥४॥ जे॥५॥ अक्ष  
 रिने अथवा मात्राए करिने हीन उपलक्षणथी  
 क एटले ओछुं वतुं॥६॥ कहयुं एटले आ ग्रंथने  
 जे कांड में ओछुं वधारे नण्युं होय॥७॥ निश्चे ॥८॥  
 एटलेहीन अधिकपणानोदूपण॥९॥ मारासंबंधि॥१०॥  
 सर्व एटले समग्र॥११॥ खम एटले खमजो ए प्र  
 श्रि धर्मदास गणि विरचित उपदेशमाला प्रकरण  
 चालावबोध संपूर्ण.





अखरमत्ताहीणं१॥ जं० चियं० पदियं० अण्णमाणेणं१॥  
 तं० खमउ१॥ म० भ० सुव०१॥ जिणवयणावेणिग्गया१ वाणी१॥  
 अर्थ॥१॥ जिनराजना वचनथकि एटले जिनरा  
 मुखथकि विपेपे करि निकलि एहवि॥२॥ श्रुतदे  
 ते॥३॥ अजाण एहवो हुं जे तेणे॥४॥ जे॥५॥ अद  
 रिने अथवा मात्राए करिने हीन उपलक्षणथी  
 क एटले ओछुं वतुं॥६॥ कहयुं एटले आ ग्रंथने  
 जे कांड में ओछुं वधारे-जण्युं होय॥७॥ निश्चे ॥  
 एटलेहीन अधिकपणानोदूपण॥८॥ मारासंवंधि॥  
 सर्व एटले समग्र॥११॥ खम एटले खमजो ए ५  
 श्रि धर्मदास गणि विरचित उपदेशमाला प्रकर  
 वालावबोध संपूर्ण.



